हिंदी रंगमंच का इतिहास

पहला भाग

(हिंदी नाटक मंडलियों का इतिहास)

डा० चन्दूलाल दुबे

एम० ए०, पी-एच० डी०

जवाहर पुस्तकालय मथुरा

प्रकाशक : कुंजविहारी पचौरी, एम० कॉम०,
जवाहर पुस्तकालय, मथुरा

वसंत पंचमी १९७४
मूल्य : ~~पैंतीस रुपया~~ ४० ०
मुद्रक : नत्थाराम 'पुष्पध'
क्वालिटी प्रिन्टर्स, रंगेश्वर, मथुरा

HINDI RANGMANCH KA ITIHAS

हिंदी

के

मूर्धन्य समीक्षक

स्वर्गीय आचार्य

नंददुलारे वाजपेयी जी

को

समर्पित

जिनके चरण-कमलों में बैठकर

हिंदी साहित्य का समुचित

अध्ययन कर

एम० ए० तथा पी-एच० डी०

की

उपाधियाँ

प्राप्त

कीं

मेरा निवेदन

सन् १९५६ ई० के मई माह में सागर विश्वविद्यालय में पी-एच० डी० के लिए शोध-विषय चयन के हेतु जब गुरुवर्य आचार्य नंददुलारे वाजपेयी जी के दर्शन किये तब आपसे मैंने 'हिंदी रंगमंच' सम्बन्धी विषय का प्रस्ताव किया था। लेकिन पण्डित जी ने समझाया कि इस विषय पर अनुसधान करने के लिये पर्याप्त भ्रमण करना पड़ेगा और नियत अवधि के भीतर कार्य सम्पन्न होने की संदिग्धता भी आपने प्रकट की। चर्चा के उपरांत 'हिंदी और कन्नड़ नाटक-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन' नामक विषय शोध-कार्य के लिए निर्धारित हुआ। इस विषय का पंजीकरण भी हुआ। एक वर्ष कार्य करने के बाद मैंने महसूस किया कि हिंदी में नाटकों का शिल्पगत अध्ययन नहीं हुआ है। अत: मैंने पण्डित जी का परामर्श लिया और आज्ञा माँगी कि मुझे इस पहलू पर शोध-कार्य करने दिया जाय। पण्डित जी ने सहर्ष अनुमति प्रदान की। आपके पाण्डित्य पूर्ण निर्देशन के फलस्वरूप सन् १९६० ई० में 'हिंदी नाटकों का रूप-विधान वस्तु विकास' नामक शोध-प्रबंध मैंने उपाधि-हेतु प्रस्तुत किया। उपाधि तो प्राप्त हुई, साथ ही उत्तरप्रदेश शासन से प्रकाशित पुस्तक को पाँच सौ रुपये के पुरस्कार का सम्मान भी मिला। लेकिन 'हिंदी रंगमंच' पर अनुसंधान कार्य करने की लालसा मन में दबी बैठी ही रही।

सन् १९६२ ई० में पूना विश्वविद्यालय ने सौ रुपये का यात्रा-अनुदान दिया। इससे सुषुप्त लालसा जागृत हुई। मैं बंबई तक गया। 'टाइम्स आफ इण्डिया' की पुरानी फाइलें उलटीं-पलटी। फिर बंबई विश्वविद्यालय के विशाल पुस्तकालय में बैठ कर कुछ सामग्री खोजने का प्रयास किया। स्वतंत्र रूप से इस परियोजना पर कार्य कर रहा था। सही दिशा निर्देश के अभाव में कार्य शिथिलता आने लगी। शिथिलता का और भी एक कारण है। पैसे के लोभ ने परीक्षकत्व के गोपनीय कार्य में उलझा दिया। इसलिये छुट्टियों के अवकाश का सदुपयोग शोध-कार्य के लिए नहीं हो सका।

सन् १९६६ ई० में शासकीय महाविद्यालयों के प्राध्यापकों के अनुसंधान-कार्य को प्रोत्साहित करने के लिये महाराष्ट्र शासन ने अनुसंधान-अनुदान (Research grant) देने की योजना कार्यान्वित की। इस पत्रक से

और आशा बँधी। महाराष्ट्र शासन ने मुझे तीन किस्तों में कुल मिला कर तीन हजार रुपये का अनुदान प्रदान किया। सन् १९६५ ई० में आचार्य नंददुलारे वाजपेयी जी ने प्रथम जो बात कही थी उसकी पूर्ति का अवसर अब आया। इस अनुदान के फलस्वरूप प्रयाग, वाराणसी, पटना, कलकत्ता, आगरा, मथुरा, दिल्ली, जयपुर, जोधपुर, उज्जैन आदि स्थानों में जाकर विविध सामग्री संकलित की।

प्रारंभ में जो प्रारूप बना था उसके अनुसार हिंदी रंगमंच का इतिहास एक ही भाग में पूरा करना था जिसमें विविध नाट्य-मंडलियों एवं संस्थाओं के इतिहास के अतिरिक्त रंगकर्मी, नाट्यशालाओं एवं मंचित नाटक तथा उनके नाटककारों का विवरण एवं मूल्यांकन भी सम्मिलित था। लेकिन लेखन-कार्य जैसे-जैसे आगे बढ़ता गया वैसे-वैसे सामग्री की विपुलता का अनुभव हुआ। संकलित समस्त सामग्री को एक ही ग्रंथ में समेटना उसका कलेवर बढ़ाना था। इसलिए मैंने निश्चित किया कि हिंदी रंगमंच के इतिहास को चार भागों में निकाला जाय।

पहला भाग : हिंदी नाटक मंडलियों का इतिहास
दूसरा भाग : हिंदी रंगमंच के रंगकर्मी
तीसरा भाग : नाट्य शालाओं का इतिहास
चौथा भाग : मंचित हिंदी नाटकों का अध्ययन

इनमें से अब पहला भाग प्रकाशित हो रहा है जिसके पहले अध्याय में रंगमंच संबंधी प्रवृत्तियों का अध्ययन प्रस्तुत है। दूसरे और तीसरे अध्याय में क्रमशः उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी की व्यावसायिक मंडलियों का इतिहास दिया गया है। उत्तर प्रदेश का रंगमंच विस्तृत है। इसलिये उसे तीन विभागों में मैंने विभक्त किया है। प्रथम विभाग के रूप में चौथे अध्याय में वाराणसी के रंगमंच का इतिहास प्रस्तुत है। पाँचवें अध्याय में दूसरा विभाग दिया गया है जिसमें प्रयाग का रंगमंच का विवरण दिया गया है। छठे अध्याय में उत्तरप्रदेश के शेष शहरों के रंगमंच का विवरण दिया गया है। सातवें अध्याय में राजस्थान, मध्यप्रदेश और बिहार का रंगमंच चित्रित है। आठवाँ अध्याय दिल्ली और बंबई के रंगमंच के लिये रखा गया है। अगले अध्याय में बंगाल और आँध्र के शहरों के रंगमंच का विवरण है। वास्तव में इस में दे ही शहर आ पाये हैं—कलकत्ता (बंगाल) और येलूरु (आँध्र)। पहले विचार था कि शौकिया रंगमंच को भी उन्नीसवीं शताब्दी, स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व और स्वातंत्र्योत्तर के रूप में विभक्त किया जाय। उसकी अपेक्षा शहरों के अनुसार विवरण देना अधिक उपयुक्त लगा, क्योंकि इससे प्रत्येक शहर के रंग आंदोलन का चित्र स्पष्ट हो जाता है और वहाँ की विशेषताएँ आसानी से परिलक्षित होती हैं।

मैं यह दावा नहीं करता कि इस पहले भाग में सभी संस्थाओं का सम्पूर्ण विवरण आ ही गया है। मेरी सीमित शक्ति और साधन के कारण मैं सब कुछ जुटा नहीं सका। कई संस्थाओं के अभाव में जानकारी प्राप्त करने में मैं असमर्थ रहा। कुछ संस्थाओं ने पत्रोत्तर दिया ही नहीं। कहीं-कहीं से मेरे पत्र लौटकर मुझे ही मिले। कुछ संस्थाओं ने जानकारी तो भेजी लेकिन अधूरी। हाँ, अनेक संस्थाओं ने समय-समय पर प्रकाशित संस्मरणिकाएँ तथा अन्य सामग्री भेजकर मुझे उपकृत किया है। वास्तव में अधिकाधिक संस्थाओं से विस्तृत विवरण पाने के प्रयत्न में पर्याप्त समय व्यतीत हुआ। मेरे मित्रों ने भी सलाह दी कि एक बार आप एकत्रित सामग्री प्रकाश में तो लायें। सम्भव है कि इस पुस्तक के अवलोकन से प्रोत्साहित होकर कुछ संस्थाएँ सामग्री भेज दें। अतः इस समय उपलब्ध जानकारी के आधार पर यह पुस्तक प्रकाशित करा रहा हूँ। इसलिये इससे यह स्पष्ट है कि जान बूझ कर किसी संस्था की जानकारी छोड़ी नहीं गई है। फिर भी सामग्री जुटाने की मेरी असमर्थता के कारण मैं उनसे क्षमा माँगता हूँ और आश्वासन देता हूँ कि उनसे सामग्री उपलब्ध होने पर अगले संस्करण में अवश्य समावेश कर लूँगा।

इस प्रकार की पुस्तक की आवश्यकता का अनुभव अरसे से बहुत से नाट्य प्रेमी एवं समीक्षक कर रहे थे। श्री अमृतलाल नागर ने एक जगह कहा है कि एक समय में मैं स्वयं इस काम को करना चाहता था, किंतु अर्थाभाव से न कर सका, अब स्वास्थ्य मेरा साथ बहुत अधिक नहीं दे पाता।[1] इसी प्रकार डा० लक्ष्मी नारायण लाल ने भी खीझ कर कहा है कि यहाँ तक भी न हुआ कि पारसी थियेटर और हिंदी शौकिया रंगमंच कार्य-कलापों का कुछ लेखा-जोखा करता, या मात्र तथ्य-संग्रह ही कर डालता।[2] प्रस्तुत पुस्तक के द्वारा इस दिशा में जो अल्प प्रयास मैंने किया उससे कुछ नाट्य-प्रेमियों एवं समीक्षकों को सन्तोष हुआ हो तो मैं अपने परिश्रम को सार्थक समझूँगा। फिर सुधी विद्वज्जनों से प्रार्थना करता हूँ कि इस पुस्तक की त्रुटियों की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट करेंगे तो मैं बहुत उपकार मानूँगा और पुस्तक को और भी अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास करूँगा।

डा० लक्ष्मी नारायण लाल ने जिस रूप में चाहा है उस रूप में व्यावसायिक तथा शौकिया रंगमंच से संबद्ध समस्त संस्थाओं का इतिहास

---

१. अमृतलाल नागर : रंगमंच के इतिहास की आवश्यकता (पत्राचार), नटरंग, खण्ड २, अङ्क ७, जुलाई-सितम्बर १९६८, पृ० ४९।

२. डा० लक्ष्मी नारायण लाल : पारसी हिंदी रंगमंच पृ० १९८।

देने वाली हिंदी में मेरी पहली पुस्तक है। इसका अर्थ यह नहीं है कि इसके पूर्व इस दृष्टि से कोई प्रयत्न नहीं हुआ है प्रयत्न हुए है, या तो वे संक्षेप में हैं या अधूरे।

सर्व प्रथम डा० सोमनाथ गुप्त ने अपने प्रथम शोध-प्रबंध 'हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास' में पाँचवें अध्याय में 'रंगमंच और रंगमंचीय नाटक' पर विवरण प्रस्तुत किया। आपने व्यावसायिक तथा शौकिया रंगमंच दोनों का इतिहास दिया है। अव यह पुस्तक काफी पुरानी हुई है। नए अनुसंधान से नूतन सामिग्री सम्मुख आई है। स्वयं डा० सोमनाथ गुप्त ने अपने दूसरे शोध प्रबंध 'पारसी थियेटर-उद्‌भव, विकास और नाट्य में योगदान'[1] में वहुत ही मेहनत से हिंदी साहित्य में प्रथम वार प्रामाणिक सामिग्री प्रस्तुत की है। किंतु उस प्रबंध की सीमा पारसी रंगमंच तक ही है।

डा० दशरथ ओझा ने भी अपने शोध प्रबंध 'हिंदी नाटक : उद्‌भव और विकास' के ग्यारहवें अध्याय में व्यावसायिक रंगमंचीय नाटक की चर्चा की है लेकिन नये तथ्यों के प्रकाश में आने के कारण वह चीज भी अव पुरानी पड़ गई है। और आपने भी शौकिया रंगमंच को स्पर्श नहीं किया है। डा० वेदपाल खन्ना 'विमल' के शोध-प्रबंध 'हिंदी-नाटक-साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन' की भी यही वात है।

डा० कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह ने अपनी पुस्तक 'हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा में कुछ संस्थाओं का मूल्यांकन किया है। लेकिन उसमें द्विवेदी काल तक ही विवेचन है। उसी प्रकार डा० भानुदेव शुक्ल ने 'भारतेंदु-युगीन हिंदी नाट्यसाहित्य' में तथा डा० वासुदेवनंदन प्रसाद ने 'भारतेंदु-युग का नाट्य-साहित्य और रंगमंच' में रंगमंच पर पर्याप्त प्रकाश डाला है लेकिन इन पुस्तकों की मर्यादा भारतेंदु युग तक ही है। अपने शोध विषय की सीमा, के कारण दोनों अनुसंधित्य उस युग के वाहर नहीं जा सके। डा० (सौ) विद्यावती लक्ष्मणराव नम्र ने अपने शोध-प्रबंध हिंदी रंगमंच और पं० नारायण प्रसाद 'वेताव' में 'हिंदी रंगमंच का प्रादुर्भाव और विकास' पर १२१ पृष्ठों की शोधपूर्ण सामिग्री दी है। उसमें भी हिंदी के आधुनिक शौकिया रंगमंच का विवरण नहीं है। वह उनका विषय भी नहीं था। पं० 'वेताव' जी के मूल्यांकन के लिए तत्कालीन रंगमंच का परिचय नितांत आवश्यक था, अतः आपने वहुत ही परिश्रम से प्रामाणिक रूप से तत्संवंधी सामिग्री दी है।

धीरेंद्रनाथ सिंह ने सर्व प्रथम नागरी प्रचारिणी पत्रिका में जव 'जानकी मंगल' को प्रकाशित कराया तव नाटक की भूमिका के स्वरूप[1]

---

१. धीरेंद्र नाथ सिंह : नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ७३, सं० २०२५, अंक १-४, पृ० ५-५३।

आपने 'हिंदी रंगमंच की परंपरा : १८६८-१९६८' प्रस्तुत की है। इसमें पारसी रंगमंच तथा शौकिया रंगमंच का विवरण अवश्य आया है। लेकिन पारसी रंगमंच पर प्रस्तुत सामिग्री बहुत ही संक्षेप में है। कुल अड़तालीस पृष्ठों में आपने सागर में गागर भर दिया है। वास्तव में विस्तार के लिये वह उपयुक्त अवसर नहीं था। फिर भी उसमें आपकी मेहनत स्पष्ट झलकती है, और प्रस्तुत पुस्तक में उस भूमिका से पर्याप्त सहायता एवं दिशा निर्देश प्राप्त हुआ है।

हाल में डा० विश्वनाथ शर्मा ने भी इस दिशा में स्तुत्य कार्य किया है। आपकी पुस्तक 'भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ' जनवरी १९७३ में प्रकाशित हुई है। इसमें हिंदी के व्यावसायिक रंगमंच पर कुछ भी प्रकाश नहीं डाला गया है। लेकिन शौकिया रंगमंच की विभिन्न संस्थाओं का परिचय इसमें उपलब्ध है। इसमें नाट्यशालाओं का परिचय भी समाविष्ट होने के कारण, संस्थाओं का विवरण सिर्फ ७९ पृष्ठों में संक्षेप में सिमट कर रह गया है। अब इस प्रकार का कार्य कर चुकने के बाद मेरे लिए यह अनुमान लगाना कठिन नहीं है कि डा० विश्वनाथ शर्मा ने सामिग्री जुटाने के लिए कितना कष्ट उठाया होगा। खासकर उन जैसे व्यक्तियों के लिए जो भिन्न व्यवसाय में रहकर शौक के तौर पर हिंदी रंगमंच संबंधी शोध-कार्य कर रहे हैं यह काम और भी दुस्तर है। हाल ही में प्रकाशित होने पर भी मैंने आपकी पुस्तक से पर्याप्त लाभ उठाया है।

इस संदर्भ में डा० झब्बूलाल सुल्तानिया का कार्य भी विशेष प्रशंसनीय है। आप अपने शोध-प्रबंध 'बंगला, मराठी और गुजराती रंगमंच के संदर्भ में 'हिंदी मंच का अध्ययन' तथा फुटकर लेखों के रूप में पर्याप्त सामिग्री प्रकाश में लाये हैं। अनुसंधान के इस क्षेत्र में आपकी लगन सराहनीय है।

विभिन्न नाट्य संस्थाओं के विवरण को एकत्रित करने में 'नटरंग' के विभिन्न अंकों ने मेरी बहुत ही सहायता की है। इस दिशा में नटरंग के माध्यम से उसके संपादक नेमिचंद्र जैन की सेवा अविस्मरणीय रहेगी।

उपर्युक्त उपलब्ध विवरणों से तुलना करने पर पता चलेगा कि मैं इस विषय को कितना विस्तार देने में सफल हुआ हूँ।

सामिग्री संकलन के हेतु निम्नांकित पुस्तक संग्रहालयों से मुझे सहायता प्राप्ति हुई है। अतः उनके अधिकारी एवं ग्रंथपालों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ :—

आर्यभाषा पुस्तकालय, वाराणसी
भारती भवन पुस्तकालय, प्रयाग

हिंदी साहित्य सम्मेलन, संग्रहालय, पटना
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता
हनुमान पुस्तकालय, कलकत्ता
बड़ा बजार लाइब्रेरी, कलकत्ता.
राजाराम महाविद्यालय पुस्तकालय, कोल्हापुर
विलिंग्डन महाविद्यालय पुस्तकालय, सांगली
जयकर पुस्तकालय (पुणे विद्यापीठ), पुणे
बंबई विश्वविद्यालय पुस्तकालय, बंबई
राजस्थान ,, ,, जयपुर
जोधपुर ,, ,, जोधपुर
आगरा ,, ,, आगरा
विक्रम ,, ,, उज्जैन
अंजुमन इस्लाम रिसर्च सेंटर, बंबई।

शोध-यात्रा के दरमियान कई विद्वानों से मिलकर कुछ सामग्री की सहायता प्राप्त की है। उन सबकी सूची जोड़ना पृष्ठों को बढ़ाना है, मैं उन सबका आभारी हूँ। सहायक एवं संदर्भ ग्रंथों में मराठी, गुजराती, कन्नड़ और उर्दू की पुस्तकें भी सम्मिलित हैं। कन्नड़, मराठी और गुजराती की पुस्मकें मैंने खुद पढ़ ली हैं। केवल गुजराती की पुस्तकों को समझने के लिए कहीं-कहीं मुझे प्रो० एस०एस० खानवेलकर, प्रो० निमकर तथा प्रो० एस० के० कुलकर्णी से सहायता लेनी पड़ी। उर्दू की पुस्तकें पढ़ने में नेहरू हाई स्कूल कोल्हापुर के शिक्षक श्री इमानदार ने मेरी मदद की है। अतः ये सभी विद्वान धन्यवाद के पात्र हैं।

पूना विश्वविद्यालय (पुणे विद्यापीठ) के तत्कालीन हिंदी विभागाध्यक्ष डा० भगीरथ मिश्र तथा विद्यापीठ के अधिकारी, राजाराम महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षाविभाग के निर्देशक तथा महाराष्ट्र शासन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना नितांत आवश्यक है, जिन्होंने अनुसंधान-अनुदान देकर मेरा बहुत सा आर्थिक भार कम कर दिया। मेरे शिष्य वर्ग विशेषकर डा० व्यंकटेश कोटबागे, प्रो० अरविंद मोरे तथा प्रो० रा० तु० भगत ने पांडुलिपि तथा नामानुक्रमणिका तैयार करने में मेरी मदद की है। इन्हें धन्यवाद देना केवल औपचारिकता होगी। सुधी विद्वानों के कई ग्रंथों से मैंने सामिग्री ली है, प्रमाण दिये हैं और पर्याप्त सहायता ली है, अतः मैं उनका उपकार कभी भूल नहीं सकता। मैंने जो छोटी-सी इमारत तैयार की है उसकी समस्त नींव उन्ही के ग्रंथों में है। यदि अनजाने में किसी पुस्तक का उल्लेख

करना रह गया हो तो मैं उसके लेखक से क्षमा चाहता हूँ और ज्ञान होने पर अगले संस्करण में अवश्य जोड़ लूँगा। यह इतिहास ग्रंथ होने से प्रमाण देना आवश्यक था इसलिए मैंने भरसक संदर्भ देने का प्रयास किया है।

परिवार के सदस्यों में पत्नी श्रीमती सावित्री तथा पुत्र नीरज कुमार ने मुझे गृहस्थी की कई जिम्मेदारियों से मुक्त रखकर अपने अनुसंधान के लिए पर्याप्त समय देने की सुविधा कर दी। लेकिन अपने आत्मीय जनों को धन्यवाद क्या दूँ पर भविष्य में इसी की आशा रखता हूँ जिससे इस पुस्तक के शेष भाग शीघ्र प्रकाश में ला सकूँ।

बहुत ही अल्प समय में इस पुस्तक के प्रकाशक का दायित्व स्वीकार कर प्रकाशित करने के कारण, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा के कर्मठ पिता-पुत्र सर्व श्री केदारनाथ पचौरी एवं कुंजविहारीलाल पचौरी एम० कॉम० का भी मैं आभारी हूँ।

—डा० चन्दूलाल दुबे
कोल्हापुर
२७ अक्टूबर १९७३
(कार्तिक प्रतिपदा सं २०३० वि०)

विषय-सूची

पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय—

द्वितीय अध्याय—

सप्तम् अध्याय—

राजस्थान, मध्य प्रदेश और विहार का रंगमंच

प्रथम भाग

हिंदी रंगमंच का इतिहास

(विविध नाट्य-संस्थाओं का इतिहास)

हिंदी रंगमंच का प्रवृत्तिगत अध्ययन

प्रथम अध्याय

हिन्दी रंगमंच का प्रवृत्तिगत अध्ययन

विभिन्न संस्थाओं के संदर्भ में

हिंदी का व्यवहार सिर्फ उत्तर भारत तक ही कभी सीमित नहीं रहा है। भारतीय भाषाओं में हिंदी का विशिष्ट स्थान है। इसी कारण हिंदी समस्त राष्ट्र में व्यवहृत होती रही है। अतः हिंदी रंगमंच की परंपरा के अनुसंधान के अवसर पर केवल उत्तर भारत की ओर ही दृष्टिपात करने से वह एकांकी तथ्य-निरूपण होगा। जहाँ-जहाँ जनता का संपर्क उर्दू हिंदी-हिंदुस्तानी से रहा है वहाँ-वहाँ इसी भाषा का संबंध रंगमंच से जुड़ा हुआ है। आधुनिक रंगमंच के मूल पर प्रकाश डालते हुए नेमिचंद्र जैन ने कहा है कि लगभग एक शताब्दी पहले जब अन्य भारतीय भाषाओं के साथ हिंदी में भी आधुनिक रंगमंच का प्रारंभ हुआ तो यह जहाँ एक ओर अंग्रेजी साहित्य के परिचय-अध्ययन का, अंग्रेज शासकों के मनोरंजन प्रकारों के अनुकरण का परिणाम था, वहीं, साथ ही, वह देश की प्राचीन संस्कृति और मध्ययुगीन प्रादेशिक नाट्य-परंपराओं के नए सिरे से अन्वेषण का परिणाम भी था। यही कारण है कि उस समय देश की लगभग प्रत्येक भाषा में जो नई रंगमंचीय गतिविधि प्रारंभ हुई उसकी तात्कालिक प्रेरणा विजातीय होने पर भी उसकी भाववस्तु और रूपाकृति किसी भी पाश्चात्य नाट्य-प्रकार से भिन्न ही नहीं थी बल्कि समसामयिक प्रादेशिक नाट्य-रूपों से अत्यधिक प्रभावित भी थी।[1]

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एक तरफ रामलीला, रासलीला, नौटंकी आदि लोकधर्मी नाट्य-परंपरा तो विराजमान थी ही, दूसरी तरफ बड़े-बड़े शहरों में विदेशी नाटकों का मंचन भी शिक्षितों का ध्यान आकृष्ट कर रहा था। लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह द्वारा लिखित एवं निर्देशित 'रहस' सन् १८४३ ई० में मंचस्थ हुआ था। सन् १८५० ई० में उन्हीं के 'दरयाए तअश्शुक' नाटक को खेला गया। फिर 'अफसाना-ए-इश्क' और 'बहरे उल्फत' का मंचन हुआ। सन् १८५५ ई० में सैयद आगा हसन 'अमानत' की रचना 'इंदर सभा' का प्रदर्शन लखनऊ के एक बाजार में निर्मित रंगमंच पर हुआ इसका मंचन दर्शकों को खूब भाया। सन् १८५३ ई०

१. नेमिचद्र जैन : रंगदर्शन : पृ० १९७।

में बंबई में विष्णुदास अमृत भावे की हिंदू ड्रामेटिक कोर द्वारा 'राजा गोपिचंद और जालंदर' का आरंगण हुआ। इन नाटकों के आरंगण के बावजूद भी इनका प्रभाव किसी नई परंपरा का प्रारंभ नहीं करा सका। ये नाटक हिंदी रंगमंच के इतिहास में मील के पत्थर अवश्य हैं। लेकिन इनके प्रदर्शनों से हिंदी रंगमंच को कोई दिशा-निर्देशन नहीं प्राप्त हुआ। सन् १८६८ ई० तक और कहीं हिंदी नाटक के मंचन का समाचार प्राप्त नहीं होता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने सर्व प्रथम इसका उल्लेख किया कि हिंदी भाषा में जो सबसे पहला नाटक खेला गया गया वह 'जानकी मंगल' था। स्वर्गवासी मित्रवर बाबू ऐश्वर्यनारायण सिंह के प्रयत्न से चैत्र शुक्ल ११ संवत् १९२८ में बनारस थियेटर में बड़ी धूमधाम से से यह खेला गया।[1] 'इंदर सभा' और 'जानकी मंगल' का मंचन जहाँ शौकिया तौर पर हुआ था वहाँ 'राजा गोपीचंद और जालंदर' का आरंगण व्यावसायिक रूप में हुआ था। इस तरह हिंदी रंगमंच की दो धाराओं का प्रचलन प्रारंभ हो जाता है। एक व्यावसायिक कलाकारों का रंगमंच बनता है तो दूसरा शौकिया रंगकर्मियों का रंगमंच, जिन्हें क्रमशः व्यावसायिक रंगमंच तथा शौकिया (या अव्यावसायिक) रंगमंच कहा जाता है।

व्यावसायिक रंगमंच—

बंबई के पारसियों ने विदेशियों के नाटक देखकर पहले शौकिया तौर पर नाटक खेलना शुरू किया और फिर उन्होंने नाट्याभिनय को व्यवसाय का रूप दिया। विक्टोरिया नाटक मंडली सन् १८६८ ई० में व्यावसायिक रूप में सामने आई। प्रारंभ में पारसी नाटक कंपनियाँ अंग्रेजी या गुजारती नाटक अभिनीत करती थीं। बहुभाषी बंबई में अधिक दर्शक-वर्ग को आकृष्ट करने के उद्देश्यसे विक्टोरिया नाटक मंडली ने सन् १८७१ ई० में 'सोने के मूल की खुरशीद' नामक गुजराती से अनूदित हिंदी-उर्दू मिश्रित नाटक का अभिनय किया। इस खेल की पर्याप्त प्रशंसा हुई। इस प्रदर्शन ने पारसी नाटक कंपनियों को एक नई दिशा दी जिसके कारण उनका क्षेत्र इतना व्यापक हुआ कि लगभग सारा भारत पारसी रंगमंच से प्रभावित हुआ। सन् १८७२ ई० में पारसी एलफिस्टन ड्रमेटिक क्लब ने एदलजी खोरी के गुजराती नाटक 'नूरजहाँ' का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया। हिंदी-उर्दू नाटकों के आरंगण से आमदनी अच्छी होने लगी। फलतः व्यावसायिक रंगमंच अधिकाधिक रूप में इसी माध्यम से नाटकाभिनय करने लगा।

---

१. भारतेन्दु हरिश्चंद्र : भारतेन्दु ग्रन्थावली-पहला खंड सं० ब्रजरत्नदास : पृ० ७५५।

विक्टोरिया नाटक मंडली ने हिंदी के माध्यम से व्यावसायिक रंगमंच के पैर मजबूत करने की दृष्टि से और एक कदम उठाया। वह था बंबई छोड़ कर कंपनी को यात्रा पर ले जाना। सन् १८७२ ई० में सर सालारजंग के निमंत्रण पर यह कंपनी हैदराबाद गई। इसी के अनुकरण पर व्यापारिक कंपनियाँ बंबई के बाहर घूमकर धनार्जन करने लगीं। मंडलियों के इतिहास से विदित होता है कि कुछ ने तो विदेश तक जाने का साहस किया। लगभग अर्ध-शताब्दी तक व्यावसायिक रंगमंच ने अपना खूब रंग जमाया था। इस व्यावसायी रंगमंच के प्रति रुचि जागृत की और करोड़ों की तादाद में प्रेक्षकों का निर्माण किया।

पारसी रंगमंच का नामकरण—

व्यावसायिक रंगमंच के प्रतिष्ठापन में पारसी रंगमंच का सबसे बड़ा हाथ है। वास्तव में पारसी लोग प्रारंभ में अंग्रेजी खेल करते थे। बाद में गुजराती के नाटक खेले जाने लगे, फिर उर्दू के। धीरे-धीरे हिंदी ने उर्दू का स्थान ले लिया। इसलिए कुछ समीक्षक पारसी-गुजराती रंगमंच तथा पारसी-हिंदी रंगमंच के रूप में इस मंच का विभाजन करते हैं। हिंदी का व्यावसायिक रंगमंच केवल पारसियों का ही नहीं था। विविध मंडलियों के इतिहास से ज्ञात होता है कि इसमें हिंदीभाषी, गुजराती-मराठी भाषी, कन्नड़ भाषी एवं तेलुगु भाषी रंगकर्मियों का सहयोग था। 'पारसी रंगमंच' के नाम के बारे में मराठी के प्रख्यात नाटककार मामा वरेरकर कहते हैं— बंबई में कुछ लोगों ने उर्दू नाटकों को रंगमंच पर लाने का प्रयत्न किया। इसको कभी-कभी 'पारसी रंगमंच, कहा जाता है, परंतु यह एक भूल है, क्योंकि जो पारसी इसके प्रवर्तक थे उनकी मातृभाषा गुजराती ही थी। पारसी, गुजराती तथा मराठी इन तीनों के सहयोग से इस तथाकथित पारसी, परंतु वास्तव में उर्दू रंगमंच का आरंभ हुआ। वालीवाला, कावसजी खटाव आदि गुजराती बोलने वाले पारसी जहाँ इस रंगमंच में थे वहाँ बन्यावापू डोंगरे, पुरुषोत्तमलाल आदि मराठी तथा गुजराती भाषी अभिनेता भी उर्दू की प्रमुख भूमिकाओं को सफल बनाकर उर्दू रंगमंच स्थापित करने में समर्थ हो सके।[1]

पारसी व्यक्तियों द्वारा संचालित सब कंपनियाँ अपना नाम 'अंग्रेजी' का रखती—और कहीं की भी कंपनी क्यों न हो—नाम के अंत में 'आफ

१. मामा वरेरकर : 'राष्ट्रीय रंगमंच' : प्रसारिका-जनवरी-मार्च १९५६ वर्ष ३. अंक १।

वंवई' (वंवई की) जरूर लगाती थीं। 'वंवई' के नाम से उन कंपनियों के मालिक यह समझते थे कि 'हमारी शान वढ़ जाती है'।[1]

व्यावसायिक कंपनियों में अधिकतर मालिक ही हुआ करते थे। कहीं-कहीं भागीदारी से कंपनी चलाने के उदाहरण भी मिलते हैं। पारसी कंपनियों के मालिक तो पारसी लोग ही हुआ करते थे। ये मालिक जैसे व्यवसाय में दक्ष हुआ करते थे वैसे ही निर्देशन एवं अभिनय में भी कुशल हुआ करते थे।

कई वार आपसी झगड़े के कारण एक कंपनी टूट जाती और एक की जगह दो कंपनियाँ वन जातीं। इसी कारण व्यावसायिक कंपनियाँ प्रायः अल्पायु हुआ करती थीं।

व्यवस्थापक—

इन कंपनियों में एक ऐसा व्यवस्थापक होता था जो हमेशा कंपनी की यात्रा के पूर्व-नियोजित स्थान पर जाकर रहने का प्रवंध करता था। नाट्यमंडली के उतरने के लिऐ किराये का वड़ा घर लेता था। नाट्य-गृह किराये से लेना हो तो उस संवंध में वातचीत करता था। मँडुवा वाँधना हो तो उसके लिए जगह निश्चित करता था। नाटक कंपनी के पहुँचने के पहले वह वड़े-वड़े विज्ञापन छपवाकर लगवाता था।

नाटककार—

हरेक व्यावसायिक मंडली के पास अपना एक नाटककार होता था। लेकिन नाटककार के लिए थियेट्रिकल कंपनी में 'मुंशी' कहते थे। वाद में कंपनी में जव शुद्ध हिंदी नाटक लिखे जाने लगे तव हिंदी नाटककार का नाम 'पंडितजी' चल पड़ा।[2] कभी-कभी वड़ी कंपनियों में दो मुंशी भी रहा करते थे। ये नाटककार कंपनी के वैतनिक नौकर होते थे। कंपनी नाटककार की नियुक्ति के पूर्व कुछ शर्तों के साथ उससे अनुवंध लेती थी। कंपनी वाले नाटककार को अनुवंध या वातचीत के लिए जव वुलाते थे तव नाटककार को किराया भी देते थे। पं० नारायणप्रसाद 'वेताव' ने जव जमादार की नाटक मंडली छोड़ दी और वंवई की पारसी थियेट्रिकल कंपनी आफ वाँवे में जाने के लिए निवेदन-पत्र भेजा तो उन्हें उत्तर मिला था—"यहाँ आकर वात करो। अगर मुआमिला तय न होगा तो आने-जाने का किराया तुम्हें

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल : पृ० २३।
२. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल : पृ० १०४।

दे देंगे । तय हो जाएगा तो कुछ नहीं मिलेगा ।"[1] कहीं-कहीं नाटककार को आने-जाने का किराया, रहने के लिए बिना किराये का घर और भोजन-खर्च भी दिया जाता था। राधेश्याम कथावाचक ने लिखा है कि उन्होंने तत्काल ही कहा—रेल-भाड़ा जब-जब आप आएँगे सेकिंड (आजकल के फर्स्ट) और थर्ड क्लास का बदस्तूर दिया जाएगा। भोजन के लिए २) की जगह ३) रोज दिए जाएँगे। रहने के लिए कंपनी में अलग स्वतंत्र मकान (या उसका किराया) दिया जाएगा।[2] अनुबंध में उल्लिखित अवधि तक वह नाटककार और किसी कंपनी के लिए कुछ भी नहीं लिख सकता था। पूर्वाभ्यास के समय मुंशीजी को भी उपस्थित रहना पड़ता था। कभी-कभी अनुभवी मुंशी जी निर्देशन का भी काम करते थे। पूर्वाभ्यास के समय उपस्थित रहने के कारण नाटककार प्रत्येक अभिनेता की अभिनय-कला एवं प्रकृति से परिचित रहता था। सदा कंपनी के साथ रहने से रंगमंच संबंधी ज्ञान भी रखता था। इसलिए कंपनी के नाटककारों द्वारा लिखित नाटक रंगमंच की दृष्टि से प्रायः सफल होते थे। नाटक लिखते समय इन नाटककारों को सदैव एक वाधा का सामना करना पड़ता था। कंपनी के मालिकों की इच्छा के अनुसार नाटक को घटाना-बढ़ाना या काटना-छाँटना पड़ता था।

नाटककारों का वेतन सन् १९१०-११ ई० के आसपास सौ रुपये मासिक से भी कम होता था।[3] पं० नारायणप्रसाद 'बेताब' जब जमादार की नाटक कंपनी छोड़कर, दी पारसी थियेट्रिकल कंपनी में आए तो उनका वेतन पचास रुपये महावार तय हुआ था। क्योंकि उस वक्त बड़े मुंशीजी की तनख्वाह भी उतनी ही थी। यों अमृतलाल ने उन्हें सलाह दी थी कि ५० रुपये तो बहुत हैं, २५ रुपये भी मिलें तो स्वीकार कर ला।

अभिनेता—

व्यावसायिक रंगमंच के अभिनेता के लिए गाना, नाचना, तलवार चलाने का ज्ञान आवश्यक समझा जाता था। उसका कद-काठ और चेहरा

---

१. डा० सौ० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायणप्रसाद 'बेताब' : पृ० १४६।

२. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल : पृ० ११७।

३. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल : पृ० २७।

४. डा० विद्यावती ल० नम्र : हिन्दी रंगमंच और पं० नारायणप्रसाद 'बेताब' : पृ० १४७।

रोबीला होता था। वह घंटों गाने और संवाद बोलने का अभ्यास करता था। स्वर का विशेष ध्यान रखा जाता। उसकी आवाज ऊँची और भुरभुरी होनी थी। दो-दो हजार दर्शकों से भरे हुए पंडाल में, जो टीन की चादरों और तख्तों का बना होता, एक्टर की आवाज आखिरी दर्शक तक भी साफ पहुँचती थी। नायक बनने वाले मुख्य मुख्य अभिनेताओं का वेतन पाँच सौ से लेकर सात सौ रुपये तक होता था। बड़े एक्टर किसी पराए व्यक्ति के हाथ से पान या कोई और खाने की चीज नहीं लेते थे।[1] छोटे अभिनेताओं को चालीस-पचास की तनख्वाह मिलती थी। मुख्य पात्रों के अभिनय करने के लिए अभिनेताओं की दो-दो जोड़ियाँ होतीं। यह व्यवस्था केवल इसलिए ही नहीं थी कि बड़े एक्टर को आराम का अवसर मिले, बल्कि इसलिए भी थी कि यदि वह किसी अवसर पर बिगड़ जाए तो झट दूसरा एक्टर उसके स्थान पर काम कर सके।[2]

व्यावसायिक रंगमंच पर स्त्रियों के प्रवेश होने तक पुरुष ही स्त्री की भूमिका निभाते थे। वे लंबे-लंबे बाल रखा करते थे। अधिकतर अठारह वर्ष से कम उम्र वाले लड़के ही स्त्रियों का अभिनय करते थे। प्रायः आवाज फटने पर फिर उन्हें स्त्री-पात्र नहीं बनना पड़ता था।

कुछ अभिनेता खास-खास पात्र के अभिनय के लिए प्रसिद्ध होने लगे। आगा महमूद का बिल्वमंगल, मिस गौहर की द्रोपदी और चिंतामणि, रहीमबख्श का फजीता, मास्टर भगवानदास का कृष्ण और मास्टर निसार की उत्तरा और शारदा प्रसिद्ध पात्र थे। भगवानदास जब कृष्ण के रूप में आता तो हजारों लोग दर्शन के लिए बाहर खड़े होते।[3]

स्त्री अभिनेत्रियों का आगमन—

रंगमंच पर स्त्री-पात्रों को प्रवेश देने का श्रेय पारसी रंगमंच को ही है। अभिनय में स्वाभाविकता लाने की दृष्टि से यह सराहनीय कदम था। कावसजी खटाऊ ने मेरी फेंटन को रंगमंच पर प्रस्तुत कर रंगमंच पर अभिनेत्रियों के प्रवेश का द्वार खोल दिया। प्रारंभ में बाजारू स्त्रियों ने इन कंपनियों में अभिनय करना प्रारंभ कर दिया। धीरे-धीरे मध्यम-वर्ग की महिलाओं ने भी रंगमंच पर उतरने का साहस किया।

कंपनी की यात्रा—

कंपनी जब दौरे पर जाती तो प्रायः स्पेशल गाड़ियों से ही सारा सामान और रंगकर्मी तथा कर्मचारियों को भेजा जाता। वहाँ किराये का

१. बलवंत गार्गी : रंगमंच : पृ० १७४।
२. बलवंत गार्गी : रंगमंच : पृ० १७४।
३. वही, पृ० १७५।

बड़ा मकान लिया जाता और एक परिवार के जैसे ही रहा करते थे। उनके खाने-पीने का सारा प्रबंध कंपनी ही किया करती थी। समय पर कोई अभिनेता न आए तो कभी-कभी उसे भूखा भी रहना पड़ता।

रईस लोग कंपनी मैनेजर ओर मशहूर एक्टर-एक्ट्रेसों को अपने घर खाने की दावत दिया करते थे, बड़े-बड़े उपहार दिया करते थे।[1] इनके अभिनय से खुश होकर राजा लोग किस प्रकार उपहार दिया करते थे इसके कई उदाहरण मंडलियों के इतिहास में उल्लिखित हैं।

ड्राप ऊपर उठाने की विधि——

नया ड्राप उठाना हो तो रस्म के साथ उठाते थे। इस समय पहले पारसी पूजा-सी करते थे हिंदुओं ही की भाँति थाली में धूप, कपूर, फूल, बताशे आदि रखते थे। बाँटने को पेड़े, लड्डू भी आवश्यकतानुसार मंगाते थे। ड्राप उठाने के पहले एक नारियल तोड़ते थे। ड्राप उठते ही एक प्रार्थना-गान गाते फिर प्रसाद बाँटते थे। यह सब रस्म प्रायः कंपनी का मालिक ही करता था।[2]

नाटक का प्रारंभ——

नाटक प्रायः कोरस से प्रारंभ होता था। परदा उठता था, सभी कलाकार पूरी वेशभूषा और बनाव-शृंगार से सजेधजे किसी देवी-देवता की स्तुति में वंदना गाते थे। कहीं-कहीं सूत्रधार और नटी आते और नाटक को आरंभ करते। आगाहश्र 'कश्मीरी' का प्रसिद्ध नाटक 'विल्वमंगल' कृष्ण और नारद के वादविवाद से शुरू होता है। स्वर्ग में इन दोनों का वार्तालाप दर्शकों को नाटक के मुख्य विषय से परिचित करवाता है। वे एक प्रकार से नट और नटी के कर्तव्य को ही पूरा करते हैं।[3]

नाटकों के कथानक——

उन्नीसवीं शताब्दी में रंगमंचीय नाटकों के कथानक अधिकतर या तो फारसी की प्रेमकथाओं से लिए जाते थे या अंग्रेजी से अनूदित होते थे। बीसवीं शताब्दी में इनमें स्पष्ट अंतर आया। पुराण, रामायण और महाभारत से वस्तु का चयन होने लगा। इस परिवर्तन का श्रेय मुख्य रूप से राधेश्याम कथावाचक और पं० नारायणप्रसाद 'बेताब' जी को है।

नाटक में प्रहसन——

व्यावसायिक रंगमंच पर मनोरंजन की पर्याप्त सामग्री रहती थी।

---

१. अमृतलाल नागर : पारसी रंगमंच : पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रन्थ : सं० देवदत्त शास्त्री पृ० २९१।

२. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल—पृ० ६२।

३. बलवंत गार्गी : रंगमंच : पृ० १७२

उसमें हास्य भी एक उपकरण था। प्रारंभिक दिनों में यह हास्य प्रायः अश्लील, भद्दा और अशिष्ट होता था।[1] वीसवीं शताब्दी में आते-आते इसका स्वरूप वदलने लगा। इस समय नाटककार दो स्वतंत्र कथानकों की योजना करने लगे। ये दोनों कथानक साथ-साथ चलते थे। इनमें से पहला कथानक मुख्य और गंभीर हुआ करता था और दूसरा गौण और हास्यपूर्ण। यह प्रथा आगा हश्र 'कश्मीरी' ने प्रारम्भ की। कला की दृष्टि से ये हास्योत्पादक कथानक बड़े भद्दे और कुरुचिपूर्ण होते थे। उनका मुख्य उद्देश्य दर्शकों को मुख्य कथानक की गंभीरता के बीच विश्राम के क्षण उपस्थित करना था अथवा एक दृश्य के समाप्त होने पर दूसरे दृश्य को रंगमंच पर जमाने के लिए कुछ समय निकाल लेना था।[2] इसलिए प्रहसन का प्रदर्शन एक चित्रित पर्दे के सामने ही होता था। प्रहसन का पात्र प्रायः खुशामदी नौकर, बूढ़ा कंजूस, सिर-चढ़ी पत्नी और विगड़ा हुआ पुत्र होते थे।[3] यदि नाटककार प्रहसन लिखने में असमर्थ होता तो कभी-कभी दूसरे लेखक का लिखा प्रहसन भी गंभीर कथानक के साथ जोड़ देते थे। वहुमंतव्यी और विविध पक्षीय प्रहसन हर प्रकार के दर्शक को तृप्त करता था।

जैसे-जैसे समय गुजरता गया इस प्रहसन के प्रस्तुतीकरण में और प्रगति हुई। गंभीर कथानक और प्रहसन को अलग-अलग न रखकर उन दोनों में परस्पर संवंध स्थापित करने लगे। राधेश्याम कथावाचक और आगा हश्र 'कश्मीरा' ने इस प्रकार विशेष रूप से लिखा। पंडित नारायण-प्रसाद 'वेताव' ने इसमें और प्रगति की। इन्होंने हास्य की दूसरी कथा का अवतरण न करके मुख्य कथानक में ही हास्य की योजना की। इस प्रकार अव हास्य और व्यंग्य का पुट मूल कथानक के पात्रों के संवादों, क्रियाओं और प्रसंगों आदि में ही दिया जाने लगा।[4]

उर्दू-हिन्दी

पारसी रंगमंच के नाटकों में प्रधानतया उर्दू का ही वोलवाला था। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक यही रवैया रहा। वीसवीं शताब्दी में भाषा प्रयोग में अंतर स्पष्ट दिखाई देने लगा। इसमें भी राधेश्याम कथावाचक

१. रामनाथलाल 'सुमन' : हमारे नाटक और उनका अभिनय'—'सुधा' वर्ष ५ खं० १, सं० २—सितंवर १९३१ ई० : पृ० १५०।
२. वेदपाल खन्ना : हिंदी नाटक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन : पृ० ६७।
३. वलवंत गार्गी : रंगमंच : पृ० १७३।
४. वेदपाल खन्ना : हिंदी नाटक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन : पृ० ६७।

और पं० नारायणप्रसाद 'बेताव' ने साहस से काम लिया। व्यावसायिक रंगमंच पर हिंदी को प्रतिष्ठित करने का श्रेय इन्हीं को है।

गीत और संगीत--

व्यावसायिक रंगमंच के आकर्षण का जबरदस्त केन्द्र था गीत और संगीत। नाटक देखने वाला सबसे पहले यह पूछता था कि गाने कैसे हैं। अगर खेल हलका होता तो लोग अपने मनपसंद एक्टर के किसी विशेष गीत को सुनने के लिए आते। एक बार प्रसिद्ध एक्टर मास्टर निसार 'सती मंजरी' में हीरोइन का पार्ट कर रहा था। वह बीमार पड़ गया और मंच पर न आ सका। उसको देखने के इच्छुक दर्शकों ने, जो उसका गाना सुनने को उतावले थे, सीटियाँ बजाई और कुर्सियाँ तोड़नी शुरू कर दीं। उन्होंने नाटक को आगे न बढ़ने दिया। हारकर मास्टर निसार को खाट पर लिटा कर बीमारी की दशा में ही मंच पर लाना पड़ा। जब उसने गीत गाया तो लोगों ने ग्यारह बार तालियाँ बजाकर बार-बार उसको वही गीत गाने के लिए मजबूर किया।[1]

इस रंगमंच पर प्रयुक्त संगीत की निम्नांकित विशेषताएँ[2] बताई गई हैं—

१. सभी नाटकों में सगीत का प्रयोग।
२. संगीत के तीन अंग—गीत, वाद्य, नृत्य—में से गीत की प्रधानता, नृत्य की अल्पता और वाद्य का अभाव।
३. शास्त्रीय संगीत की अपेक्षा प्रचलित संगीत की प्रधानता तथा तुकबंदी एवं थियेट्रिकल तर्ज का प्रचार।
४. सगीत पर उर्दू शैली का प्रभाव।
५. सखियों के गीतों का बाहुल्य।
६. दरबारी नर्तकियों के नृत्य, अप्सरा नृत्य, वेश्या-नृत्य एवं नृत्य गीत का प्राधान्य।
७. विदूपक से लेकर ईश्वर तक सभी पात्रों द्वारा गायन।
८. समय-असमय गाने की प्रणाली।
९. गीत-संख्या का आधिक्य।
१०. गीतों में श्रृङ्गारिकता तथा अश्लीलता की प्रचुरता।

---

१. बलवंत गार्गी : रंगमंच : पृ० १७३।
२. डा० गिरीश रस्तोगी : आधुनिक हिंदी नाटक : पृ० १८२।

गीत[1] ही इन नाटकों के प्रमुख अंग हैं। अधिकतर नाटकों में गीतों की अधिक संख्या की परंपरा वनी है। अधिक गीतवाले नाटक भी पाए जाते हैं और कम गीत वाले भी। लेकिन पहली कोटि के नाटक ही अधिक हैं। उदाहरणार्थ—

द्रौपदी स्वयंवर	२३ गीत
श्रवणकुमार	२३ गीत
रुक्मिणी मंगल	२४ गीत
परमभक्त प्रह्लाद	२४ गीत
विल्वमंगल	२६ गीत

'वनवीर नाटक,' 'हिंद महिला' और 'न्यू-लाइट' में केवल चार-पाँच गीत हैं। सामान्य रूप में गीत-वाहुल्य इन नाटकों की विशेषता मानी जा सकती है। चलता-फिरता तथा हल्का-फुल्का संगीत इन गीतों की विशेपता है जो किसी न किसी तर्ज पर वैठा दिए जाते थे। इसे थियेट्रिकल तर्ज का नाम दिया गया। इन गीतों में तुकवंदी ही प्रधान होती थी।

इन नाटकों का संगीत उर्दू शैली से अत्यधिक प्रभावित है। उर्दू सगीत का प्रभाव गजल और शेरों-शायरी के रूप में पड़ा है। उर्दू का यह प्रभाव इन नाटकों के गीतों की भापा पर भी पड़ा है।

रंगमंचीय नाटकों के संगीत की एक अन्य विशेषता है सखियों के गीतों की प्रचलित परंपरा। अधिकतर नाटकों में कई स्थलों पर सखियाँ अवश्य गाती हैं, कभी अपनी सखी-प्रधान नायिका-के मनोरंजनार्थ, कभी उसके प्रणय की छेड़-छाड़ के लिए, कभी मंगल-गान के लिए, कभी दुःख में सांत्वना देने के लिए, कभी शुभकामना प्रदान करने के लिए। जमुनादास मेहरा के 'देवयानी' में सोलह गीतों में से आठ गीत सिर्फ सखियों के ही हैं। सखी-गीतों के अतिरिक्त अन्य प्रचलित परंपरा है—दरवार-नर्तकी के नृत्य-गीत, गायक व गायिकाओं के गीत, अप्सराओं के नृत्य-गीत तथा वेश्याओं के नृत्यगीत। इस प्रकार के गीत अधिकतर पौराणिक एवं ऐतिहासिक नाटकों में ही पाए जाते हैं।

व्यावसायिक रंगमंच पर प्रत्येक पात्र गाता था। नायिका और उसकी सखियों का गाना तो ठीक ही है, नौकरानियाँ, रानियाँ, अप्सराएँ सभी गाती हैं। पुरुष-पात्र भी गाते हैं। सामान्य से सामान्य पुरुप-पात्रों से लेकर नायक तक सभी गाते हैं। और तो और विप्णु, शंकर, कृष्ण भगवान

1. डा० गिरीश रस्तोगी ने हिंदी नाटकों का विश्लेपण एवं मूल्यांकन विशेपकर संगीत के सदर्भ में किया है। अतः उन्हीं का मंतव्य यहाँ उल्लिखित है।

भी गाने से नहीं चूकते । सबसे भद्दी बात तो यह होती थी कि गाने के लिए समय-असमय का ध्यान नहीं रखा जाता था । इसलिए कहीं-कहीं संगीत हास्यास्पद बन जाता था । कहीं-कहीं पात्रों का आवागमन भी संगीत के साथ होता था । मसखरे और उसकी 'फूलझड़ी' के दुगाने में मजेदार अटपटापन होता । इनकी धुन और ताल में तेज चलत और चटक-मटक होती । मसखरा जब पहली बार किसी सीन में आता तो वह तबले की तान पर गुटकता हुआ प्रवेश करता । उदाहरण के लिए आगाहश्र 'कश्मीरी' के 'खावे हस्ती' में जब मालिक अपने बिगड़े हुए नौकर मनुवा को आवाज देता है तो वह चुटकियाँ बजाता और तबले पर नाचता हुआ इस तरह गाना गाता है, "आया हूं सरकार ! मैं तो आया हूँ सरकार ! मैं तो आया हूँ सरकार !" वाद्य बजाने वाले—हारमोनियम, वायलिन, क्लारनेट, तबला, पाश्चात्य आपेरा के साजिदों की तरह पद-प्रकाश के आगे एक गहरी-सी जगह में बैठे होते थे । लेकिन शराब पीने, मार-धाड़, हत्या या रात के अँधेरे दृश्यों में चलती धुनें और भयभीत करने वाले पश्चिमी संगीत का प्रयोग किया जाता था ।[1]

हमेशा हल्के संगीत का ही प्रयोग होता था सो बात नहीं । वास्तव में व्यावसायिक रंगमंच के संगीत पर मुख्यतया उत्तर-भारत के संगीत का, जिसमें शास्त्रीय और लोक-संगीत दोनों समान रूप से सम्मिलित हैं,अत्यधिक प्रभाव पड़ा । शुद्ध शास्त्रीय और लोकसंगीत के अतिरिक्त 'इंदर-सभा' की संगीत परंपरा और इन तीनों के संयोग से भी अनेक प्रयोग इस रंगमंच के संगीत में मिलते हैं । यही नहीं, बल्कि विदेशी संगीत के तत्वों का भी उन लोगों ने प्रयोग किया था । यूनानी, अरबी धुनें भी उन लोगों ने सहर्ष ग्रहण की थीं । पश्चिमी (अंग्रेजी) गानों की धुनें भी सामाजिक नाटकों में मिल आई थीं ।[2]

पारसी रंगमंच के संगीतकारों और संगीत-निर्देशकों ने ठुमरी गायन को ड्रामा के कथ्य को प्रकट करने के लिए प्रमुख आधार माना था ।[3] ठुमरी और ख्याल के अतिरिक्त जो अन्य राग और ताल पारसी रंगमंच पर अधिक लोकप्रिय थे उनके नाम हैं—गजल, दादरा, कहरवा, कजरी, होरी, धमार और ध्रुपद । निस्संदेह इन रागों और तालों का

१. बलवंत गार्गी : रंगमंच पृ०—१७३-७४
२. डा० लक्ष्मीनारायणलाल : पारसी-हिंदी रंगमंच—पृ० १४५, १४७
३. वही—पृ० १४२

व्यवहार शास्त्रीय पद्धति के अनुसार होता था, किंतु दर्शकों को सम्मोहित करने के लिए इन रागों और तालों में अन्य रागों और तालों का मिश्रण भी प्राय. किया जाने लगा। यही नहीं इसमें वाहवाही प्राप्त करने के लिए कुछ ऐसे भी प्रयोग किए गए जो पारसी रंगमंच की अपनी निजी उपलब्धि है।[१] ध्रुपद के अलावा धमार और होरी नाटक की विशेष परिस्थितियों में, अत्यधिक व्यवहृत हैं और जहाँ-जहाँ नाटक के दृश्यों में, अनुक्रमों में, कोमलता और नाजुक ख्याली को प्रकट करना था, वहाँ देस, विहाग, वागेश्वरी, ललित, भालकोंस आदि को भी नए ढंग से इस्तेमाल किया गया है।[२]

वाद्य—

सन् १८७४ ई० के आसपास सारंगी और तबला के साथ गाया जाता था। उस वक्त हारमोनियम का प्रचलन नहीं था।[३]

अंक की समाप्ति----

व्यावसायिक रंगमच पर जैसे नाटक के प्रारंभ को आकर्षक बनाते थे वैसे ही प्रत्येक अंक की समाप्ति पर भी कोई विशेषता प्रदर्शित करते थे जिसे देख प्रेक्षक दाँतों तले अँगुली दबाते थे। व्याकुल भारत कंपनी के 'बुद्धदेव' में नायक को अपनी तपस्या से भग्न करने के उद्योग में निम्नांकित दृश्य प्रस्तुत होना था—

[दृश्य बदलता है। आँधी चलती है। अंधकार में बिजली की चमक और कड़क होती है। बादल गरजता है। आकाश में तारे टूटते है। बड़ी-बड़ी भयंकर विकराल नारकीय मूर्तियाँ दिखाई देती हैं। किसी के मुँह से आग और किसी के मुँह से साँप निकलते हैं। अंतरिक्ष में इधर से उधर तीर चलते हैं।]

'महाभारत' नाटक के द्रोपदी के चीरहरण के समय का दृश्य—
[दुःशासन का द्रोपदी को नग्न करने के लिये चीर खींचना, चीर का बराबर बढ़ते जाना, परदे के भीतरी भाग में श्रीकृष्ण भगवान का अनन्त चीर प्रदान करते दिखलाई देना।][४]

---

२. डा० लक्ष्मीनारायणलाल : पारसी-हिंदी रंगमंच : पृ० १४७
१. वही—पृ० १४३
३. डा० धनजीभाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख : पृ० १२९
४. डा० सोमनाथ गुप्त : हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास : पृ० १४७

कहीं-कहीं अंक की समाप्त मौन-झाँकी पर होती थी। अभिनेता उस समय मंच पर अपनी-अपनी जगहों पर पथरा जाते। धार्मिक नाटकों की बहुत सी मौन-झाँकियों की रचना राजपूती कला के चित्रों और मंदिरों के भित्तिचित्रों के आधार पर की जाती थी। इनमें राधा, कृष्ण, गोपियाँ रासलीला और अन्य वहुत से विषय प्रदर्शित किए जाते। ऐसी मौन-झांकी पर जब परदा गिरता तो उत्तेजित दर्शक तालिया बजाते। परदा फिर उठता और चतुर निर्देशक क्षणभर में ही इस मौन झाँकी को एक नई बनावट और नए रूप में पेश करता। कई बार ऐसी झाँकी अंक के बीच में ही किसी विशेष अवसर को उभारने के लिए दिखाई जाती। उदाहरण के लिए 'प्रह्लाद भक्त' में जव नरसिंह लोहे के तपते स्तंभ को फाड़कर प्रकट होता है तो हिरण्यकश्यप का सारा दरबार भय और आश्चर्य से स्तंभित हो जाता है। उस समय वह दृश्य मौन झाँकी में बदल जाता है। यहाँ परदा नहीं गिरता। कुछ पल यह झाँकी इसी तरह रहती है और फिर कार्य व्यापार आगे बढ़ता है।[1]

नाटक का प्रस्तुतीकरण—

व्यावसायिक रंगमँच पर रूप-विन्यास, वस्त्रालंकरण, दृश्यविधान, संगीत और नृत्य-नियोजन अधिक उभरकर सामने आते थे। आरकेस्ट्रा मंच के सामने नीचे रहता था। अधिकतर प्रदर्शन 'फुल लाइटेड स्टेज, (पूर्ण प्रकाशित रंगमंच) पर होते थे। कभी कदाचित् चमत्कारिक दृश्यों की नियोजना में भले ही मंच पर एकदम अंधकार कर दिया जाता हो या अर्द्ध प्रकाशित मंच दीख पड़ता हो। कुछ क्षणों के लिए अंधकार करके वड़े-बड़े काम निकाल लिए जाते थे। ध्वनि-संयाजक (Stage noises and sound effect) की वला तब उतनी नहीं थी, प्राय: नहीं थी।[2]

व्यावसायिक रंगमंच पर खेलों का प्रदर्शन मंच-सज्जा के साथ होता था। 'सेटों' का प्रयोग यहाँ प्राय: नहीं ही हुआ है।[3] एक बड़ा अंतिम परदा मंच के पीछे टँगा होता था। यह परदा समस्त पृष्ठभूमि का का काम देता था।[4] ड्राप और अंतिम परदे के बीच लिपटवाँ परदे होते थे। इन पर यथार्थवादी ढंग के दृश्य चित्रित होते थे जो दृश्यमूलक तत्त्वों का भड़कीला,

१. वलवंत गार्गी : रंगमंच : पृ० १७२
२- सर्वदानंद : रंगमंच : पृ० १२१-१२२
३. वही : वहीं : पृ० ५०
४. बलवंत गार्गी : रंगमंच : पृ० १७१

रंगीन और आकर्षक बनाने में सहायक समझे जाते थे।[1] पारसी रंगमंच पर परदों की अपनी विशेषता होती थी। इन परदों ने अन्य भाषाभाषी रंगकर्मियों को भी प्रभावित किया था। अन्य भाषी रंगभूमि वाले इन पारसी रंगमंचीय परदों का अनुकरण करते थे। नरहर कुवा सरडे (सवाशे) सन् १८७५ ई० में हैदराबाद गए थे। वहाँ पारसी कंपनी के नाटक देखकर उन्होंने अपनी कंपनी के लिए कुछ परदे बनवा लिए थे।[2]

इन कंपनियों में कीमती, चित्ताकर्षक, भड़कीली वेषभूषा रहा करती थी। नए-नए नाटकों के लिए नई-नई वेशभूषा हजारों रुपया खर्च करके तैयार कराते थे। इस वेषभूषा का प्रयोग कभी-कभी बेवक्त पर भी कर देते किसी हिंदुस्तानी राजा के दरबार अंगरेजी वेशभूषा से सुसज्जित नर्तकियों का नाच केवल इसीलिए कराया जाता था कि एक दृश्य में दर्शकों ने उन नर्तकियों को जिस पोशाक में देखा था उससे दूसरे दृश्य में भिन्नता हो और कंपनी के मालिक को यह सुनने के लिए मिले कि उसके पास कितने प्रकार की ड्रेसें हैं।[3]

उस समय एक नाटक प्रस्तुत करने में आज की फिल्मों की तरह बहुत रुपया खर्च होता था। पौराणिक नाटकों को तैयार करने में कई बार एक-एक लाख रुपया खर्च हो जाता था (आज के मूल्यों में दस लाख रुपया) पंडित नारायणप्रसाद 'बेताब' के लिखे हुए 'महाभारत' में एक दृश्य है, जहाँ कृष्ण रास रचाता है तो अनेक कृष्ण प्रकट हो जाते हैं। यह दृश्य-छल मंच पर बहुत से शीशे जोड़कर और उनके प्रतिबिंबों से उत्पन्न किया गया। इस तरह के एक ही दृश्य पर बहुत-सा रुपया उड़ जाता था।[2]

अभिनय–

पारसी रंगमंच पर अभिनय पर विशेष बल होता था।[5] रंगमंचीय नाटकों में स्वगत-कथन, नेपथ्य, आकाशभाषित और समूहगान का खूब प्रयोग होता था। स्वगत कथन में कलाकार को अपनी अभिनय-कला दिखाने

---

१. नेमिचंद्र जैन : रंगदर्शन : पृ० १९८
२. बाबूराव देशपांडे : 'कोल्हापुरची नाट्यपरम्परा' (कोल्हापूर दर्शन : संपा० ग० र० भिडे और पु० ल० देशपांडे) : पृ० १८१
३. डा० सोमनाथ गुप्त : हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास : पृ० १४६-१४७
४. बलवंत गार्गी : रंगमंच : पृ० १७१-१७२
५. सर्वदानंद : रंगमंच : १२१

का अद्वितीय अवसर मिलता था। आरपार जाते हुए, पीछे आगे वढ़ते हुए वह मंच के किनारे खड़े होकर सीधा दर्शकों को संबोधित करते हुए स्वगत-कथन के संवाद बोलता था।[1] सामान्यतः संवादों को अत्यंत उछल-कूदकर बोलने की प्रथा थी।[2] अधिकतर सभी पात्रों के अभिनय में अतिरंजना (over acting) का दोष पाया जाता था।[3]

रंगभूषा—

रंगमंच पर उतरने के पूर्व रूप-सज्जा की जाती थी। अभिनेताओं के चेहरों पर शोख रंगों का लेप होता था। नायिकाओं के मुखड़े अवरक मलकर और भी अधिक चमकाए हुए होते थे। रानियों और परियों के सिरों पर झिलमिल-झिलमिल करते मुकुट सजे होते थे।[4]

रोमांचकारी दृश्य—

व्यावसायिक रंगमंच पर रोमांचकारी दृश्य एव घटनाओं को दिखाने की होड़-सी लगी रहती थी। इस मंच पर देव हवा में उड़ते थे, पटाखा फटने पर सिंहासन और जंगल चलते थे। हीरो महल की दीवार पर से नदी में छलांग लगाता था। मंच इस प्रकार वना होता था कि इसमें चोर दरवाजे और गुप्त गढ़ होते ताकि किसी भी स्थान पर देवता या कोई देव अचानक प्रकट हो सके। पुष्पक विमानों को हवा में उड़ाने और आकाश से परियों को उतारने के लिए जटिल यंत्र प्रयोग में लाए जाते थे।[5] कृष्ण-चंद्र 'जेवा' के 'भारत दर्पण' का निम्नांकित दृश्य इसी कोटी का है—

(शब्द—दृश्य परिवर्तन—एक वड़ा सा चर्खा दृष्टिगोचर होता है, चर्खा कठिन कृपाण के रूप में परिवर्तित हो जाता है. तलवार पर 'राष्ट्रीय अस्त्र' (कौमी तलवार) यह शब्द अंकित है। एक शब्द होता है और योरोपीय व्यापार एक राक्षस के रूप में प्रकट होता है। पुनः शब्द होता है और भारत माता प्रवेश करती है। माता चर्खा के समान आकार वाले उसी कठिन कृपाण को लेकर तीव्र गति से राक्षस को दिखाती है। योरोपीय व्यापार नामधारी राक्षस का हृदय भयभीत और शरीर कंपित होता है।)

---

१. बलवंत गार्गी : रंगमंच : पृ० १७२।

२. सर्वदानन्द : रंगमंच पृ० १७७।

३. डा० वेदपाल खन्ना : हिंदी नाटक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन पृ० ९४।

४. बलवंत गार्गी : रंगमंच : पृ० १७२।

५. वही, पृ० १७१।

राधेश्याम कथावाचक के 'वीर अभिमन्यु' का निम्नांकित दृश्य भी अद्भुत घटना का अच्छा उदाहरण है—

(सीन वदलना । वृद्धक्षत्र का तपस्या करते हुए दिखाई देना, उसकी गोद में जयद्रथ का कटा हुआ शीष पहुँचना । वृद्धक्षत्र का उठना और उनके शीष का भी टुकड़े-टुकड़े होकर गिरना ।)[1]

प्रकाश-योजना—

प्रारंभ में रंगमंच पर एवं नाट्यगृह में मशालें जला करती थीं । वाद में गैस के हंडे जलने लगे । जव विजली का प्रचार हुआ तो प्रकाश-व्यवस्था अधिक वैज्ञानिक होने लगी । प्रारंभ में न्यू अल्फ्रेड कंपनी जव वरेली जाती तो मशालें जला करती थीं ।[2]

टिकटदर—

सन् १८६६ ई० में 'वेजन मनीजेह' पहली वार खेला गया । उस समय टिकट दर रु० पाँच से शुरू होकर रु० एक तक थी । पहली वार जव यह नाटक खेला गया तो भीड़ इतनी वढ़ी कि पाँच रु० के टिकट १५) में विके और अन्तिम दर्जे के एक रुपये के टिकट ३) में विके ।[3]

सन् १८७४ ई० में रंगमंच पर जब स्त्रियों का प्रवेश हुआ तो पिट एक रु० का चार आना हुआ ।

विज्ञापन—

सन् १८७५ ई० के आसपास अर्थात् दादी पटेल के समय अखवारों में सादे ढंग से छोटे-छोटे अक्षरों में संक्षेप में नाटकों का विज्ञापन दिया जाता था । और हैंडविलों के द्वारा भी नाटकों का प्रचार करते थे । कम-से-कम दस हजार हैंडविल छपवाते थे । उन्हें फुटकर रूप में वेचते थे ।

नाटक-कंपनी के विज्ञापनों के वारे में वलवंत गार्गी लिखते हैं[4] नाटक-कंपनी के आने से कई सप्ताह पहले शहरों और कस्वों में वड़े-वड़े रंगीन इश्तिहार लग जाते थे । इन पर इस तरह के वाक्य लिखे होते थे । "डाकू जो संत वन गया," "श्रवणकुमार जो अन्धे माता-पिता को वहँगी में उठाए फिरा," "राजकुमारी जिसने लँगड़े भिखारी से व्याह किया,"

---

१. डा० वेदपाल खन्ना : हिंदी नाटक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन पृ० ९६ ।

२. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल पृ० ३ ।

३. जहाँगीर पे० खंभाता : मारो नाटकी अनुभव पृ० ७० ।

४. वही : पृ० १०१ ।

५. वलवंत गार्गी : रंगमंच पृ० १७०

"मेनका अप्सरा जिसने विश्वामित्र का तप भंग कर दिया"। साथ ही बड़े अक्षरों में यह वाक्य भी लिखा होता था : "दंगा-फसाद करने वाले को हवालाए पुलिस किया जाएगा।"

नाटक के जो पर्चे बँटते थे उनमें लोकप्रिय कलाकारों के नाम भी छापे जाते थे। अमृतलाल नागर कहते हैं कि शहर भर में मैनेजर 'कंपनी हाजा' नाम से इश्तहार बाँटते, मिस पुतली, गौहर, मिस बिजली, मास्टर मोहन, मास्टर भगवानदास, खटाऊ जी कॉमिक वाला, मास्टर बेंजामिन, मुन्नीबाई आदि उस जमाने में मशहूर और मारूफ एक्टर–एक्ट्रेसों के नाम उस पर्चे में छपे होते।[1]

प्रेक्षक—

पारसी रंगमंच ने जब उर्दू में नाटकाभिनय प्रारंभ किया तब हिंदुओं की अपेक्षा मुसलमान भाई ही नाटक के ज्यादा शौकीन थे।[2] धीरे-धीरे जैसे-जैसे पारसी रंगमंच प्रगति करता गया, अधिकाधिक स्थानों में दौरा करने गया तो सभी प्रकार के लोग इसके प्रेक्षक बन गए। केवल साहित्यिक रुचि रखने वाले बुद्धिजीवी लोग ही इस मंच से घृणा करते थे। रंगमच पर स्त्री-पात्रों के प्रवेश का असर सुशिक्षित प्रेक्षकों पर हुआ। खानदानी शिक्षित लोग ऐसे नाटकों को नहीं देखने जाते।[3] लेकिन जब राधेश्याम कथावाचक, पं० नारायणप्रसाद 'बेताब' जैसे नाटककार इस रंगमंच के निकट आए तो प्रेमचंद जैसे साहित्यिक ने भी इस रगमंच की तारीफ की। देश के जाने माने नेता लोग इन कंपनियों के नाटकों का उद्घाटन करते थे।

नाटक रात के दस बजे शुरू होता और सुबह के तीन या चार बजे समाप्त होता।[4]

नाट्यगृह—

प्रारंभ में पारसी नाटक कंपनियों का नाट्यगृह अस्थायी रहा है। ये कंपनियाँ जब बंबई में नाटक खेलती थीं तब जो थियेटर मिल जाता था उसी में अभिनय करती थीं। धीरे-धीरे बंबई, कलकत्ता, अहमदाबाद में स्थायी नाट्यगृहों का भी निर्माण कर लिया गया। जब ये कंपनियाँ दूसरे नगरों की यात्रा करती थीं तब थियेटर मिलने पर उसमें खेलती थीं अन्यथा खुली

---

१. अमृतलाल नागर : पारसी रंगमंच : पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रन्थ, सं० देवदत्त शास्त्री पृ० २९१।

२. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल पृ० १३।

३. जहाँगीर पे० खंभाता : मारो नाटकी अनुभव पृ० १०१।

४. बलवंत गार्गी : रंगमंच पृ० १७३।

जगह पर अलग रूप से अस्थायी नाट्यगृह बाँध लेती थीं। मोटे तौर पर नाट्यगृह के दो भाग होते थे—एक भाग प्रेक्षकों के वैठने के लिए, दूसरा नाटक के मंचन के लिए। वास्तव में यह दूसरा भाग रंगमंच (Stage) कहलाता है।

पारसी नाट्यगृह का वर्णन डा० सोमनाथ गुप्त ने निम्नलिखित रूप में किया है—

साधारणतया पारसी रंगमंच एक चतुर्भुज क्षेत्र होता है जिसकी लंबाई और चौड़ाई कंपनी के पर्दों पर अवलंबित होती है। यह चारों ओर से ढँका हुआ रहता है। संस्कृत के रंगशीर्ष और रंगपीठ जैसा विभाजन इसमें नहीं होता। हाँ, दोनों ओर कक्ष (Wings) अवश्य रहते हैं। सारा ढाँचा वल्लियों और बाँसों से बनाया जाता है जिन्हें सुगमता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सके। पर्दे एक के पीछे एक लगे रहते हैं और घिर्री के आधार पर कक्षों में से ऊपर उठाए और नीचे डाले जाते हैं। पर्दों का क्रम नाटक के दृश्यों के अनुकूल प्रस्थान और प्रवेश का दृष्टि में रख कर किया जाता है। सबसे आगे बाह्यपटी (Drop Scene) रहती है और उसके दोनों ओर ढँके हुए दोनों कक्ष। इस बाह्य दृश्य का प्रयोग प्रायः कंपनियाँ अपने विज्ञापन के लिए करती हैं। संगीत का प्रबंध रंगमंच के आगे प्रेक्षागृह में होता है। इस सीमा के पश्चात् प्रेक्षागृह आरंभ हो जाता है। प्रेक्षागृह में भी उतार-चढ़ाव रहता है जिससे सबसे पीछे बैठने वाले भी सुगमता से अभिनय देख सकें।

नेपथ्य अन्तिम पर्दे के पीछे होता है और वैसे कक्ष से नेपथ्य का काम लिया जाता है।[1]

पंडाल में चहल-पहल और भाँति-भाँति का शोर होता। अफसरों के वैठने के लिए विशेप स्थान नियत होता। अगर शहर का डिप्टा कमिश्नर या तहसीलदार जरा देर कर लेता तो उसकी प्रतीक्षा के बाद नाटक शुरू किया जाता। स्त्रियाँ एक ओर बैठतीं और पुरुप दूसरी ओर। जनाने दर्जे के लिए एक बड़ा जालीदार परदा होता, जो खेल शुरू होने पर उठा दिया जाता।[2]

अड़चनें—

अभिनेताओं की दृष्टि से मालिकों को किस बात की अड़चन होती है इसका विवरण राधेश्याम कथावाचक ने एक जगह दिया है। नाटक

१. डा० सोमनाथ गुप्त : हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास पृ० ३७० ।
२. बलवंत गार्गी : रंगमंच पृष्ठ १७२ ।

कंपनी बनाने में खर्च खूब होता है, 'खर्च करके भी—अच्छा नाटक लिखवा कर भी—एक्टरों की रोज की सताने वाली हर्कतों को सहते रहना बड़ा कठिन है—हम उन्हें सिखाते हैं—स्टेज पर उनको अच्छा पार्ट दे देकर पब्लिक में लाते हैं। वही जब 'शोहरत' हासिल कर लेते हैं—तब कंपनी छोड़ने की बात कहा करते हैं। हर महीने तनख्वाह बढ़ाने की बात-किसी न किसी प्रकार सामने रखते हैं। नहीं तो रात को 'सिरदर्द' या 'पेटदर्द' का नखरा करके 'पार्ट' नहीं करना चाहते हैं।[1]

ईर्ष्यावश एक कंपनी वाले दूसरी कंपनी को नुकसान पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। कभी-कभी मंच-सज्जा को जला भी डालते हैं। जैसे पारसी थियेट्रिकल कंपनी आफ बाँबे को जलाया था।

फ्री-पास न देने पर कई लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कंपनी के कामकाज में बाधक सिद्ध होते हैं। इनमें पुलिस, पत्रकार आदि का समावेश हो सकता है।

व्यावसायिक नाटक मंडलियों का ह्रास—

डा० 'अज्ञात' ने व्यावसायिक रंगमंच विशेषकर पारसी रंगमंच के ह्रास के निम्नांकित कारण गिनाए हैं।[2]

(१) आय-व्यय के लेखा-जोखा की विषमता एवं व्यय की अधिकता,
(२) दुष्प्रबंध,
(३) मुख्य भूमिकाओं की दोहरी तैयारी के कारण कलाकारों का बाहुल्य,
(४) वेतन-विवरण की अनियमितता,
(५) चल-चित्रों—विशेषकर सवाक् चित्रों—की प्रतियोगिता,
(६) रेडियो और टेलेविजन के आविर्भाव से नए प्रकार के श्रोता-दर्शकों के घर बैठे मनोरंजन,
(७) अव्यावसायिक मंच का अभ्युदय,
(८) व्यावसायिक मंच की उपेक्षा।

पारसी रंगमंच का मूल्यांकन—

विक्टोरिया नाटक मंडली के कर्णधार जब कुंवरजी नाजर बन गए तो वे कंपनी को लेकर सन् १८७४ ई० में दिल्ली पहुँच गए। वहाँ से लखनऊ, कलकत्ता होते हुए सन् १८७५ ई० में वाराणसी पहुँचे। इनके पास उस समय

---

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल : पृ० ७९।

२. डा० 'अज्ञात': पारसी रंगमंच : नागरी पत्रिका, मार्च-अप्रैल १९६८, पृष्ठ० ११२।

'शकुन्तला' आपेरा के रूप में था। 'काशी पत्रिका' ने इस नाटक के खेले जाने की तिथि १० जून, १८७५ बताई है। पत्रिका ने यह टिप्पणी भी लिखी है—

"बनारस—१० तारीख की रात को 'नाचघर' में बंबई के पारसी लोगों ने 'गुलबकावली' और 'शकुंतला' नाटक का खेल दिखलाया। अंग्रेज थोड़े ही जमा हुए पर हिंदुस्तानी महाराजाओं और रईसों की भीड़ नाचघर में इतनी कभी न हुई थी परंतु अफसोस की बात है कि हम लोगों की आशा के मुताबिक कुछ भी न हुआ।[1]

इसी अभिनय को देखकर ही भारतेंदु ने लिखा है—"काशी में पारसी नाटक वालों ने नाचघर में जब शकुंतला नाटक खेला और उसमें धीरोदात्त नायक दुष्यंत खेमटेवालिनों की तरह कमर पर हाथ रखकर मटक-मटककर नाचने और 'पतरी कमर बल खाय' यह गाने लगा तो डाक्टर थिबो, बाबू प्रमदादास मित्र प्रभृति विद्वान, यह कहकर उठ आए कि अब देखा नहीं जाता। ये लोग कालिदास के गले पर छुरी फेर रहे हैं।[2]

यह स्मरण होना चाहिए कि सन् १८६८ ई० में हिंदी-उर्दू में मंचन प्रारंभ हुआ, उसके सात वर्षों बाद 'शकुंतला' की प्रस्तुति ऑपेरा के रूप में हुई। उस समय पारसी रंगमंच की नाट्यकला प्रारंभिक अवस्था में थी। संस्कृत-साहित्य से अपरिचित वृंद से अभिनीत नाटक के प्रदर्शन को देखकर भारतेंदु जैसे परिष्कृत संस्कार के प्रतिभावान बुद्धिजीवी को तिरस्कार हुआ हो तो बिलकुल सही है।

लेकिन भारतेंदु के उक्त कथन को आधार बनाकर पूरे एक शताब्दी तक जीवित व्यावसायिक रंगमंच की सेवा को, रंगमंच को प्रतिष्ठित करने के श्रेय पर पानी फेरना उन रंगकर्मियों के प्रति अन्याय करना होगा। लेकिन दुर्भाग्य से हिंदी नाटक साहित्य में यही होता आया है।

संतोष की बात है कि कुछ निष्पक्ष नाट्य-समीक्षकों ने निर्भीकता से झूठ का परदा हटाकर सत्य को प्रतिष्ठापित करने का प्रयास किया है सर्वदानंद लिखते हैं—'पारसी कंपनियों का काल थियेटर का, रंगमंच का स्वर्णकाल था। मान अपमान, सामाजिक उदासीनता और प्रतिकूलता के बावजूद तब का रंगधर्मी-समुदाय आज से अधिक समर्थ, सक्षम

१. काशी पत्रिका, भाग १, संख्या २, ३० जून, १८७५ पृ० १६
(डा० वासुदेवनंदन प्रसाद : भारतेंदु-युग का नाट्य-साहित्य और रंगमंच पृ० २३५ से उद्धृत)

२. भारतेंदु हरिश्चंद्र : भारतेंदु ग्रंथावली (संपादक-व्रजनन्दन दास) पृ० ७५३

और प्रभावशाली था। आज रंगमंच की पुन:प्रतिष्ठा के लिए आंदोलन करना पड़ रहा है, जनता और सरकार का मुँह जोहना पड़ता है। तब बिना किसी आंदोलन के जिस नगर में कोई थियेटर कंपनी पहुँच जाती वहाँ के सामाजिक जीवन में कुछ दिनों के लिए उथल-पुथल मच जाती।[१] जहाँ इनका डेरा लगता, वहाँ एक छोटा-सा शहर बन जाता। पास-पड़ौस के गाँवों और मंडियों तक मशहूरी फैल जाती और लोग खिंचे चले आते।[२] यह थी उन कंपनियों की लोक प्रियता।

व्यावसायिक रंगमंच की देन—

व्यावसायिक रंगमंच ने—मुख्यतया पारसी रंगमंच ने—हिंदी रंगमंच के उद्‌भव और विकास में जो योगदान दिया है उसकी कई लोगों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। डा० हेमेंद्रनाथ दास गुप्ता लिखते हैं—

The Parsees have made considerable progress in the matter of improvement of the stage and to them alone we should remain grateful for preformances in Urdu and Hindi.[३]

श्री भगवतीचरण वर्मा भी मानते हैं कि कुछ समय तक पारसी रंगमंच सफलता के साथ चला, यद्यपि उस रंगमंच की स्थापना से एक रंगमंच तो हमारे यहाँ आया पर नाटक-साहित्य की अभिवृद्धि नहीं हुई।[४]

डा० वेदपाल खन्ना भी उल्लेख करते हैं कि—'फिर भी थियेट्रिकल कंपनियों से हिंदी नाटक को एक बड़ी आवश्यक और उपयोगी वस्तु मिल गई और वह था रंगमंच। इनसे पूर्व रासलीला और नौटंकी आदि में रंगमंच का उपयोग होता था, किंतु वह रंगमंच बहुत सादा, घरेलू ढंग का और अवैज्ञानिक होता था। परंतु इन कंपनियों ने हमें व्यवस्थित और वैज्ञानिक ढंग का रंग-मंच दिया।[५]

हिंदी का व्यावसायिक रंगमंच एक ऐतिहासिक सत्य है, अतः इस पर परदा पड़ा रहने से आधुनिक रंगमंच के मूल्यांकन में गलत दिशा-निर्देशन की संभावना है। भावी व्यावसायिक रंगमंच के निर्माण में भी हमारा अतीत मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है। इसी हेतु आगे विभिन्न मंडलियों का इतिहास प्रस्तुत किया जा रहा है।

---

१. सर्वदानन्द : रगमंच पृ० १९
२. बलवंत गार्गी : रंगमंच पृ० १७४
३. डा० हेमेन्द्रनाथ दास गुप्त : The Indian Stage Vol IV पृ० २२७।
४. भगवतीचरण वर्मा : 'रुपया तुम्हें खा गया'—भूमिका पृ० ञ।
५. डा० वेदपाल खन्ना : हिंदी नाटक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन पृ० ९८।

शौकिया या अव्यावसायिक रंगमंच—

इस रंगमंच के विशेषण में प्रयुक्त 'शौकिया' शब्द अपने अभिधार्थ से स्पष्ट है। लेकिन 'अव्यावसायिक' शब्द कुछ हद तक भ्रमात्मक है। 'व्यावसायिक रंगमंच' में लगे व्यावसायिक विशेषण जैसे वणिक-वृत्ति को स्पष्ट करता है वैसे 'अव्यावसायिक' शब्द स्पष्ट निर्देश नहीं करता। इस संदर्भ में दो वृत्तियाँ पाई जाती हैं।

एक तो वे संस्थाएँ होती हैं जो दान स्वीकार कर लेती हैं, चंदा एकत्रित करती हैं और दर्शकों को प्रेक्षणार्थ निमंत्रित करती हैं। इसमें टिकट लगाकर नाट्य-प्रदर्शन नहीं होता है। इसी का एक सभ्य रूप निकला है जिसमें सदस्य-शुल्क स्वीकार कर दर्शकों के हेतु नियमित प्रदर्शन होते हैं, जैसे कलकत्ता की संस्था 'अनामिका' करती है।

दूसरी वे संस्थाएँ हैं जो टिकट लगाकर प्रदर्शन करती हैं। इस आय से प्रस्तुतीकरण का खर्च निकाला जाता है। इसमें कहीं अभिनेताओं को कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाता है। कहीं कुछ दिया जाता है तो वह प्राय: प्रतीक रकम हो जाती है। वास्तव में जिस संस्था में पारिश्रमिक देकर अभिनय कराया जाता है उन्हें पूर्णत: अव्यावसायिक नहीं कह सकते। उन्हें नीम-अव्यावसायिक कहना अधिक अच्छा होगा। ये कलाकार इसी पारिश्रमिक पर ही अपनी आजीविका नहीं चलाते हैं। इसलिए इस प्रकार की संस्थाओं को व्यावसायिक मंडलियों के समकक्ष नहीं रख सकते हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लखनऊ का शाही रंगमंच शौकिया ही रहा। लेकिन राजाश्रय के अंतर्गत उसका विकास हुआ और सामान्य जनता उस मनोरंजन से वंचित रही।

भारतेंदु ने पारसी रंगमंच की असाहित्यिक प्रवृत्ति से खीजकर अव्यावसायिक रंगमंच को प्रारंभ किया। प्रथम 'जानकी मंगल' में लक्ष्मण का अभिनय किया। तदुपरांत खुद ही नाटक लिखकर खेलने लगे। भारतेंदु की साधना ने अव्यावसायिक रंगमंच पर नवजागरण लाकर खड़ा कर दिया। पारसी रंगमंच की प्रतिक्रिया-स्वरूप काशी, प्रयाग में शौकिया रंगमंच की स्थापना का प्रयास किया जाने लगा। लेकिन उनका रूप सुसंगठित न होने के कारण उसके विकास के लिए सही दिशा नहीं प्राप्त हो सकी।

द्विवेदी युग में विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय का रंगमंच जागृत हुआ। लेकिन इनके प्रदर्शन मौसमी और सीमित हुआ करते

थे। केवल वार्षिक स्नेह-सम्मेलनों में एकाध बार नाटक खेलकर वे अपने कर्तव्य की इतिश्री समझते थे। नाट्यकला या अभिनय-कला के विकास में इन प्रदर्शनों का विशेष सहयोग नहीं हुआ। इस मंच के दर्शक तो निष्क्रिय ही रहते थे। उनकी क्रिया या प्रतिक्रिया का कोई सवाल नहीं उठता था। नाट्यकला के विकास में जैसे नाटककार या अभिनेता का स्थान है वैसे ही दर्शक-वृन्द का भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है।

बीसवीं शताब्दी के तीसरे चौथे दशक से हिंदी के व्यावसायिक रंगमंच के ह्रास के कारण शौकिया रंगमंच को अपने आप महत्त्व मिलने लगा पर वह अंधों में काना राजा जैसे ही रहा। लेकिन रंगकर्मियों में धीरे-धीरे रंग जागरण होने लगा। अव्यावसायिक संस्थाएँ स्थापित होने लगीं। वे अपनी सीमा, समझ और ताकत के अनुसार नाटकों का चयन कर उनका मंचन करने लगीं। स्वतंत्रता के बाद तो शौकिया रंगमंच का और विस्तार हुआ। कई संस्थाओं ने जन्म लिया और अल्पायु में समाप्त भी हो गईं। जहाँ संगठन सुस्थिर रहा, सबल नेतृत्व मिला वहाँ शौकिया रंगमंच की जड़ें मजबूत होती गईं। वे इतने आगे बढ़े कि अपना ही प्रेक्षागृह भी बना लिया। उनमें से कुछ रंगकर्मी नाट्य-प्रदर्शन को अधिकाधिक कलात्मक बनाते जा रहे हैं।

नाटक—

शौकिया रंगमंच के नाटक प्रायः छोटे होते हैं। ढाई-तीन घण्टे का अभिनय रहता है। इनके लिए रात भर की नींद खोने की आवश्यकता नहीं है। आमतौर पर रात के १२ बजे के पूर्व खेल समाप्त हो जाता है।

शौकिया रंगमंच पर साहित्यिक नाटकों को खेलने का विशेष प्रयास हुआ। भारतेंदु हरिश्चंद्र के तो अधिकांश नाटक मंचित हुए। उनमें भी 'सत्य हरिश्चंद्र', 'अंधेर नगरी' विशेष लोकप्रिय हुए। शेष नाटककारों में 'महाराणा प्रताप' का मंचन सर्वाधिक हुआ है। यह मानते हुए भी कि जयशंकर प्रसाद के नाटक मंच पर उतारने के लिये सुलभ नहीं हैं, 'चंद्रगुप्त' और 'स्कंदगुप्त' का मंचन एक-आध बार अवश्य हुआ है।

सन् १९४७ ई० के बाद हिंदी रंगमंच पर अनूदित नाटकों के मंचन की फैशन ही चल पड़ी है। सर्वाधिक अनुवाद बंगला नाटकों के हुए। फिर मराठी की बारी आती है, उसके बाद कन्नड़ की। द्विजेंद्रलाल राय के तो कई नाटक मंचस्थ हुए हैं। रवीन्द्र नाथ ठाकुर के नाटकों का भी मंचन हुआ है। हाल ही में बादल सरकार के नाटकों का अभिनय अधिक हुआ। उसी प्रकार मराठी में से वसंत कानेटकर, पु० ल० देशपांडे और आचार्य प्रह्लाद

केशव अत्रे के नाटक अनूदित होकर मंचित हुए हैं। कन्नड़ भाषा में से दो ही ऐसे नाटककार हैं जिनके नाटकों को यह सम्मान मिला है। एक हैं आद्य रंगाचार्य (प्रो० आर० बी० जहाँगीरदार) और दूसरे हैं गिरीश कर्नाड़। तेलुगु के आचार्य आत्रेय के नाटक भी हिंदी मंच पर प्रदर्शित हो चुके हैं।

इस रंगमंच पर प्रदर्शित नाटकों के बारे में नेमिचंद्र जैन कहते हैं कि हिंदी क्षेत्र के विभिन्न नगरों में प्रायः प्रदर्शित होने वाले अधिकांश नाटक तथाकथित 'रंगमंचीय' कोटि के ही होते हैं, जिनमें सस्ती कामदियों, प्रहसनों अथवा उद्देश्यपरक तथाकथित समस्या मूलक नाटकों की ही भरमार रहती हैं।[1]

अभिनेता--

यह जरूरी नहीं कि हिंदी रंगमंच पर हिंदी भाषी ही उतरें। अधिकांश तो हिंदी भाषी ही हैं। फिर भी अन्य भाषा-भाषी भी कम नहीं है। अन्य भाषा-भाषियों में बंगला और मराठी भाषियों की संख्या सर्वाधिक है। हिंदी रंगमंच पर अब हजारों की तादाद में कलाकार पाये जाते हैं। लेकिन इनका स्तर कुछ सराहनीय नहीं होता। इनके बारे में नेमिचंद्र जैन का कथन है कि हिंदी रंगमंच का निर्देशक, अभिनेता और रंगशिल्पी अभी तक आंतरिक, काव्यात्मक यथार्थ को गहराई से अभिव्यक्त करने का अभ्यासी नहीं हो सका है, इसमें निपुणता या सार्थकता की तो बात ही दूर है।[2]

अभिनेता तो पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। लेकिन अब भी उस अनुपात में स्त्रियों का प्रवेश नहीं हुआ है। फिर भी बड़े-बड़े शहरों में संभ्रांत परिवार की पढ़ी-लिखी लड़कियाँ अभिनय में रुचि ले रही हैं

निर्देशक—

राष्ट्रीय नाट्य-विद्यालय के कारण आजकल कुछ शिक्षित निर्देशक प्राप्त हो रहे हैं। अधिकांश निर्देशक अनुभव के आधार पर ही अपना कर्तव्य निभाते हैं।

निर्देशिका के रूप में उंगलियों पर गिनने लायक ही क्यों न हो कुछ निर्देशिकाएँ हैं। उनमें डा० प्रतिभा अग्रवाल, शांता गांधी के नाम उल्लेखनीय हैं।

प्रेक्षक—

इस रंगमंच के प्रेक्षक बहुधा पढ़े-लिखे, सुसंस्कृत, सभ्य लोग ही होते हैं। समाज का उच्चस्तर एवं मध्यमवर्ग इनका प्रेक्षक-समुदाय बनता

१. नेमिचंद्र जैन : रंग दर्शन, पृ० २०२।
२. वही पृ० २०३।

है। इसलिए साहित्यिक नाटक प्रायोगिक तौर पर खप सकते हैं। अव्यावसायिक रंगमंच का प्रेक्षक नाटक की रुचि से ही आता है सो बात नहीं। कई बार संस्थाएँ जबरदस्ती टिकट बेचती हैं। ऐसे जबरदस्ती के प्रेक्षक नाट्याभिनय के प्रति सही सहानुभूति नहीं रखते। शौकिया रंगमंच के प्रदर्शन प्रयोगात्मक या प्रतीकात्मक भी होते रहते हैं। अतः सामान्य प्रेक्षक इन प्रदर्शनों से दूर ही रहता है।

प्रेक्षागृह—

सभी स्थानों में शौकिया रंगमंच के लिए स्थायी नाट्यगृह नहीं है। बड़े-बड़े शहरों में कहीं-कहीं स्थायी नाट्यगृह हैं, प्रदेश की राजधानियों में रवींद्रालय है। लेकिन शौकिया कलाकारों की नाट्य-संस्थाओं की या तो वहाँ तक पहुँच नहीं होती या उतनी बड़ी रकम किराये के रूप में देने में असमर्थ रहते हैं। अक्सर ये लोग विद्यालय या महाविद्यालय के सभागृहों में अस्थायी मंच बनाकर नाटकों का प्रदर्शन करते हैं।

अड़चनें—

शौकिया रंगमंच की अड़चनें बहुत-सी हैं।

१. नाट्यगृह का अभाव।
२. पूर्वाभ्यास के लिए जगह का अभाव।
३. कलाकारों का समय-समय पर पूर्वाभ्यास के लिए न आना।
४. नाट्यगृहों का महँगा किराया।
५. आर्थिक मदद का अभाव।
६. कुशल नेतृत्व की कमी।
७. अच्छे रंगमंचीय नाटकों का अभाव।
८. स्त्रियों का रंगमंच पर न उतरना।
९. साधन-सामग्री की कमी।
१०. रंग कर्मियों में आत्म प्रदर्शन का स्वभाव एवं अहंकार।

अव्यावसायिक संस्थाओं की देन—

हिंदी के अव्यावसायिक रंगमंच पर अन्यान्य भाषाओं से नाटक अनूदित होकर अभिनीत हो रहे हैं। इस प्रकार हिंदी के रंगमंच के द्वारा एक भाषा के नाटक दूसरी भाषा के मंच पर खेले जा रहे हैं। 'तुगलक', 'हयवदन' कन्नड़ से हिंदी में आये और हिंदी से अन्य भाषाओं में गये। 'बाकी इतिहास', एवम् 'इंद्रजित' बंगला से हिंदी में आये, हिंदी से कन्नड़ में गये। इस प्रकार हिंदी का अव्यवसायी रंगमंच अभिनेय नाटकों के आदान-प्रदान का केंद्र बन गया है।

द्वितीय अध्याय

उन्नीसवीं शताब्दी की व्यावसायिक मंडलियाँ

द्वितीय अध्याय

व्यावसायिक रंगमंच

हिंदी का व्यावसायिक रंगमंच पारसी रंगमंच से अनुप्रेरित हुआ। इसलिए प्रथम पारसी रंगमंच का परिचय पाना नितांत आवश्यक है। मूलत: पारसी रंगमंच हिंदी का रंगमंच नहीं था। उसका सबंध गुजराती और अंग्रेजी नाटकों से था।

पारसी रंगमंच की स्थापना—

अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में धीरे-धीरे बंबई की आबादी देशी तथा विदेशी लोगों से बढ़ने लगी। अपने-अपने व्यवसाय की अभिवृद्धि हेतु यहाँ जनता जमती जा रही थी। व्यस्त जीवन में मनोरंजन का भी अपना महत्त्व है। परिणामत: ये विदेशी लोग कभी-कभी अंग्रेजी नाटक खेला करते थे। नाटक खेलने के लिए उन्होंने नाट्यगृह की कमी को महसूस किया। आपसी चंदे से सन् १७७० ई० में एक नाट्यगृह बाँधा जिसका नाम रखा गया 'बंबई थियेटर'। सन् १८३५ ई० तक इस नाट्यगृह में नाटक अभिनीत होते रहे। फार्बस कंपनी से कर्ज लेकर घाटे की पूर्ति की जाती थी। जब कर्ज तीस हजार तक बढ़ा तो सरकार के हस्तक्षेप से बंबई थियेटर का नीलाम हुआ। प्राप्त रकम से कर्ज चुकाया गया। सर जमशेद जी जीजी-भाई ने पचास हजार में नाट्यगृह की इमारत खरीदी थी और वे उसका उपयोग कपास के गोदाम के रूप में करने लगे। इस प्रकार 'बंबई थियेटर' में लगभग पैंसठ वर्षों तक नाटक होते रहे। इसका असर शिक्षित पारसी लोगों पर होना स्वाभाविक था। फलत: अव्यावसायिक पारसी नाटक मंडलियों ने जन्म लिया।

जगन्नाथ शङ्करशेट के प्रयत्न से सन् १८४६ ई० में ग्रांट रोड में 'बादशाही थियेटर' बाँधा गया और १० फरवरी १८४६ को उसका उद्घाटन हुआ। इसमें भी अंग्रेजी नाटक खेले जाते थे। सन् १८५३ ई० में सांगली के विष्णुदास भावे ने इसी नाट्यगृह में अपने नाटक अभिनीत कराये। उसी साल गुजराती नाटक भी अभिनीत हुआ। विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि उसी नाट्यगृह में सन् १८५३ ई० में जगन्नाथ शंकरशेट और डा० भाऊ

दाजी के संयुक्त प्रयत्न से 'राजा गोपीचंद' हिंदी में खेला गया। इस प्रकार ग्रांट रोड के थियेटर में होने वाले नाटकों की ओर कुछ नाटक-प्रेमी पारसी सज्जनों का ध्यान गया। अव्यावसायिक पारसी नाटक मंडलियाँ अंग्रेजी और गुजराती नाटक खेलती ही थीं। बंबई के बहुभाषी प्रेक्षकों को देखते हुए हिंदी, उर्दू में नाटक खेलने की प्रेरणा उन्हें मिली, यह हिंदी के रंगमंच के लिये वरदान सिद्ध हुआ। व्यावसायिक दृष्टिकोण को रखते हुए कई पारसी नाटक कंपनियाँ अस्तित्व में आने लगीं।

पारसी रंगमंच—

बंबई में सन् १८५३ ई० के अक्तूबर महीने में पारसियों ने सबसे पहले नाटक करने की शुरूआत की। पेस्तन जी धनजी भाई मास्टर ने इसके लिये एक क्लब की स्थापना की और नाम रखा 'पारसी नाटक मंडली'।[1] डा० विद्यावती ल० नम्र के अनुसार इस मंडली के मुख्य मालिक थे फराम जी गुस्ताद जी दलाल।[2] इस मंडली के मार्गदर्शन के लिए एक कमेटी बनी थी जिसके सदस्य[3] थे—प्रोफेसर दादाभाई नवरोजी, खरशेद जी न कामा, अरदेशर फ० भुस, जेहाँगीर बरजोर जी वाच्छा, डाक्टर भाई दाजी आदि। सन् १८६७ ई० के पूर्व यह पारसी नाटक मंडली भी बंद हो गई थी।

बबई की नाटक मंडली देखकर सूरत में भी एक नाटक मंडली स्थापित हुई। सन् १८६१ ई० से दस एक साल में कई नाटक मंडलियाँ स्थापित हुईं और जल्दी ही समाप्त भी हुईं। उनमें से कुछ मंडलियों के नाम[4] इस प्रकार हैं—

१. पारसी नाटक मंडली (फराम जी गुस्ताद जी दलाल की)।
२. अमेच्युअर्स ड्रामेटिक क्लब।
३. पारसी स्टेज प्लेअर्स।
४. जेंटलमेन अमेच्युअर्स (फराम जी गुस्ताद जी दलाल की)।
५. झौरास्ट्रियन नाटक मंडली।
६. ओरियंटल नाटक मंडली।
७. परशियन नाटक मंडली।

---

१. डा० धनजीभाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख, पृ० ३९३।
२. डा० सौ० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायण प्रसाद 'बेताब', पृ० ४४।
३. डा० धनजी भाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख (भाग २), पृ० ३।
४. वही पृ०२।

८. परशियन झोरास्ट्रियन नाटक मंडली।
९. बारोनेट नाटक मंडली।
१०. अलवर्ट नाटक मंडली।
११. शेक्सपीअर नाटक मंडली।
१२. दी वालंटीयर्स क्लब।
१३. झोरास्ट्रियन ड्रामेटिक सोसायटी।
१४. एलफिन्स्टन ड्रामेटिक क्लब (नाजरवाली)।
१५. विक्टोरिया नाटक मंडली।
१६. हिंदी नाटक मंडली।
१७. ओरिजिनल विक्टोरिया क्लब।
१८. एलफिस्टन अमेच्युअर्स (नाजर का दल)।
१९. पारसी विक्टोरिया ऑपेरा ट्रूप (नाजर-क्लब)।

विभिन्न पारसी मंडलियों के कुछ प्रमुख अभिनेता[1] निम्न प्रकार थे—

पेस्तन जी धनजीभाई मास्टर, नाह्नाभाई रु राणीना, दादा भाई एलिअट, मनचेरशाह बे० मेहरहोमजी, भीखाजी ख० भुस, कावसजी हो, बिलिमोरिया (डाक्टर), रु० हो० हाथीराम (डाक्टर), कावस जी नशरवान जी कोहीदास।

विष्णुदास भावे की नाटक-मण्डली—

विष्णुदास भावे सांगली के रहने वाले थे। इसलिए इनकी नाटक मंडली को 'सांगलीकर नाटक-मंडली' भी कहते हैं। कहीं यह हिंदू ड्रामेटिक कोर के रूप में उल्लिखित[2] है तो कहीं हिंदू थियेटर के रूप[3] में। विष्णुदास भावे सांगली में राजाश्रय समाप्त होने पर अपनी नाट्य मंडली लेकर दौरे पर निकल पड़े। उनका पड़ाव था कोल्हापुर। कोल्हापुर में महालक्ष्मी मंदिर के 'गरुड़ मंडप' में वे नाटक करते थे। वहाँ से सातारा और पूना होते हुए वंबई पहुँचे। वंबई में उन दिनों ग्रांट रोड थियेटर में नाटक हुआ करते थे। एक तो थियेटर का किराया अधिक था और दूसरा वह शायद ही किसी दिन खाली रहता हो। इसलिए विष्णुदास भावे ने निश्चित किया कि पूना के जैसे ही यहाँ भी मँडुवा डालकर नाटक खेला जाय। ये नाटक ठाकुरद्वार के चौलवाडी या फणसवाडी के आंगन में हुए। विष्णुदास भावे

---

१. डा० धनजीभाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख (भाग २) पृ० ३।
२. The Telegraph and Courier 9-1-1854.
३. वही २४-११-१८५२।

इन मराठी नाटकों के कारण डा० भाऊ दाजी, डा० नारायण दाजी, श्री जीवनजी महाराज, श्री आबासाहेब शास्त्री, नाना शंकर शेट, सर जमशेदजी जीजीभाई, भाऊ रसूल आदि बड़े लोगों के कृपापात्र बने। इन नाटकों से ढाई सौ-तीन सौ रुपये की आमदनी होती थी। उसके बाद गिरगाँव के आत्माराम शिंपी के बंगले के आंगन में नाटक खेलने लगे।[1]

बंबई में एक दिन उन्होंने ग्रांट रोड थियेटर में अंग्रेजी नाटक देखा। इस संबंध में वासुदेव गणेश भावे कहते हैं,[2] यह देखने के लिए कि नाटक खेलने की अंग्रेजी पद्यति और व्यवस्था कैसी रहती है सभी लोग विष्णुपंत के साथ अंग्रेजी नाटक देखने गये। वहाँ उनके परदे, सीन-सीनरी और नाटक की व्यवस्था देखकर विष्णुपंत को लगा कि ऐसी जगह यदि हम अपने नाटक करें तो बड़ा मजा आयेगा। ऐसे स्थान पर नाटक करने से पारसी, युरोपीयन, मुसलमान, गुजराती आदि सभी लोग समझेंगे। ऐसा करना उचित मानकर विष्णुपंत ने वहीं के वहीं 'गोपीचंद' नाटक हिंदुस्तानी में तैयार किया। उसका ८-१० बार पूर्वाभ्यास होने पर और अपने मित्रों को पसंद आने पर उस नाटक को थियेटर में करना तय किया।

"यहाँ मित्रों की मदद से एक रात के लिये विष्णुपंत को थियेटर मिला। अंग्रेजी नाटक के मंच-व्यवस्थापक ने एकबार भावे के पास आकर वह नाटक देखा। उसमें कहाँ-कहाँ क्या दृश्य चाहिए आदि को जान लिया। उसके अनुसार परदे और दृश्य की व्यवस्था की। उस दिन समस्त नाटक खेलने की व्यवस्था अंग्रेजी ढङ्ग से विज्ञापन देकर तथा टिकट छपवा कर की थी। अन्तिम बार नाटक खेलने के एक दिन पहले, रंगमंच पर वेषभूषा सहित पूर्वाभ्यास करके यह निश्चय किया कि कौन-कौन से परदे पर करवाना है।"

ग्रांट रोड थियेटर को प्राप्त करने एवं नाटक-प्रदर्शन के बारे में स्वयं विष्णुदास भावे ने कहा है कि मेरे मित्र भाऊ दाजी, नाना शंकर शेट आदि प्रभृतियों की सहायता से इधर हमें थियेटर प्राप्त कराने का प्रयत्न चला ही था। उस समय थियेटर एक युरोपीयन नाटक वाले के पास था। आखिर मेरे मित्र-वर्ग के प्रयत्नों से एक महीने बाद वह हमें मिला और थियेटर के प्रबन्धक ने वहाँ की व्यवस्था हमें समझाकर बताई। मैंने एक नया नाटक तैयार करके वहाँ उसका प्रयोग किया। उस दिन का खेल

१. वासुदेव-गणेश भावे : विष्णुदास पृ० ६९ के आधार पर (१९४३ का संस्करण)।
२. वही पृ० ६९-७०।

अच्छा रहा और सभी अंग्रेजी, मराठी अखबारों ने उसकी प्रशंसा की। फिर आगे उसी को दस-बारह वार खेलकर हम लोग सांगली लौट आये।[1]

इस नाटक का विज्ञापन बंबई के तत्कालीन अंग्रेजी अखबार 'टेलेग्राफ एण्ड कोरियर' में दिनांक २४ नवंबर १८५३ को छपा था जो निम्न रूप में था :—

HINDU THEATRE

The Hindu Dramatic carps most respectfully beg to acquaint the Bombay public, Native and Europeans, that they will have the honor to appear on the boards of the Grant Road Theatre, on Saturday the 26 th instant, when the interesting play of Raja Gopichand and Jalander will be performed in Hindoostanee,

PRICES OF ADMISSTION

Dress Circle	Rs. 3
Stalls	Rs. 2
Gallery	Rs. 1½
Pit	Rs. 1

Tikets to be had at the Theatre, performances to Commence at 8 P.m. Precisely.[2]

इस नाट्य-प्रदर्शन पर वासुदेव गणेश भावे ने जो मंतव्य प्रकट किया है वह भी उल्लेखनीय है—

"जिस दिन नाटक होने वाला था उसके एक दिन पहले से ही टिकट बिक्री कुल मिलाकर १८०० रुपये की हुई। नाटक देखने के लिए सेठ लोग, शासकीय कर्मचारी, यूरोपियन, पारसी इत्यादि लोग उपस्थित थे। उस दिन नाटक में गणपति, सरस्वती का आवाहन दिखाया और जालंधर के सिर पर की अधर-मौली, मैनावती और जालंधर के महल का सीन सुन्दर ढङ्ग से किया था। इसीलिये प्रयोग सब को पसंद आया। ३–११–१८५३ को दुबारा यह नाटक खेला गया। पहला खेल समाप्त होने पर तत्कालीन राज्यपाल के सचीव नेपथ्य में डा० भाऊ दाजी के साथ गये। विष्णुदास की मुलाकात होने पर उनके नाटक की प्रशंसा की और कहा कि यदि आप

१. विष्णुदास अमृत भावे : नाट्य कविता-संग्रह पृ० ७-८।

२. मराठी दैनिक लोकसत्ता (रविवारची लोकसत्ता) लेखक के० टी० देशमुख दि ०५-११-७२ से उद्धृत।

अपनी मंडली लेकर विदेश आयेंगे तो वहाँ आपको काफी पैसा मिलेगा और काफी कीर्ति भी मिलेगी। पहचान के लिए मैं तुम्हें पत्र दूँगा। धर्मभीरूता के कारण भावे ने जाने से इन्कार कर दिया।"[१]

नाटक के प्रदर्शन संबंधी उद्‌गार निम्न रूप में थे :—

"हम कह सकते हैं कि प्रयोग वहुत सुन्दर रहे और सफलता की पुष्टि पर्याप्त थी। इसमें किसी प्रकार की अनैतिकता नहीं थी। नाटक रात को आठ वजे प्रारम्भ हुआ और १२ वजे समाप्त हुआ।[२]

महाराष्ट्र में दौरा करते समय तो भावे की मंडली मराठी नाटक करती थी। मगर जव महाराष्ट्र के बाहर जाती तो अपने ही मराठी नाटकों का हिन्दी अनुवाद करके खेलती थी।[३]

सन् १८६२ ई० में यह नाटक मंडली वन्द हो गई।

कोकण की नाटक मंडली—

विष्णुभट गोडसे वरसईकर के अनुसार कोकण से एक नाटक मंडली ग्वालियर गई थी। उसमें लगभग पचास रंगकर्मी थे। उस मंडली द्वारा अभिनीत मराठी नाटकों की ख्याति सुनकर झाँसी के लोगों ने उस नाटक मंडली को अपने यहाँ निमंत्रित किया। शहर में इस मंडली ने कई नाटक खेले। रानी लक्ष्मीवाई ने किले में इस मंडली को 'सीधा' देकर निमंत्रित किया। वहाँ भी कई नाटक खेले गए। एक वार 'हरिश्चंद्र' नाटक खेला गया। सरकारी खजाने से उन्हें सच्चे अलंकार और कीमती कपड़े दिये गए। इससे नाटक के अभिनय में चार चाँद लग गए। अंत में इस मंडली को एक भोज दिया गया और विदाई के रूप में किसी को धोती, किसी को टोपी (पागोटा) दी। मंडली के मैनेजर सदोवा को चार हजार रुपये दिये।[४] इस 'हरिश्चंद्र' नाटक की मंचन-तिथि का उल्लेख तो नहीं है। लेकिन इतना

---

१. वासुदेव गणेश भावे : विष्णुदास, पृ० ७०।

२. We could say that the Performances were very excellent and merit every Support. There was not the slightest point of immorality. The play Commenced at 8 p. m and ended after 12.

—The Bombay Times 7th January 1854.

३. डा० रणधीर उपाध्याय : हिंदी-गुजराती नाटक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, पृ० ३०४।

विष्णुभट गोडसे=माझा प्रवास, पृ० ८६।

निश्चित है कि सन् १८५७ ई० के गदर के पूर्व सदोबा की यह महाराष्ट्रीय नाटक मंडली ग्वालियर-झाँसी गई थी। वृन्दावनलाल वर्मा के निम्नांकित कथन[1] से यह स्पष्ट होता है कि वह 'हरिश्चंद्र' नाटक हिन्दी में था।—
"..........नाटक जो खेले जाते थे, उनके भी नाम मिले 'शकुंतला' और 'हरिश्चंद्र' नाटक।..........'हरिश्चंद्र' नाटक का पता लगा है कि यह मराठी में था। रानी लक्ष्मीवाई के समय में भी यह खेला गया था। ग्वालियर से एक महाराष्ट्र नाटक मंडली आई थी। उसने खेला था। खेला गया था हिंदी में खेलने खिलाने वालों में से ही किसी ने हिन्दी अनुवाद किया होगा।"

झोरोस्ट्रियन थिएट्रिकल क्लब—

झोरोस्ट्रियन थिएट्रिकल क्लब ने १८५८ में 'हिन्दी अने फिरंगीराज वच्चे नो मुकावला' नामक नाटक का हिन्दी रूपांतर खेला था।'[2]

इस क्लब के वारे में दूसरी सूचना यह मिलती है कि १८६८ में वंबई थिएटर में वंदा खुदा का लिखा 'खुसरू व शीरीं' प्रस्तुत हुआ था। इसमें नसरवान जी फारवस ने रफीक जानी की भूमिका ग्रहण की थी।[3]

पारसी एलफिस्टन ड्रैमेटिक क्लब, बम्बई—

Parsi Elphinstone Dramatic Club, Bombay

कुँवरजी सोरावजी नाज़र ने वंबई में सन् १८६१ ई० में एलफिंस्टन नाटक मंडली की स्थापना की।[4] डा० सौ० वि० ल० नम्र के अनुसार 'ओरिजिनल एलफिंस्टन क्लब' की स्थापना सन् १८६१ ई० में हुई और नाज़र वाले 'एलफिंस्टन क्लब' की स्थापना सन् १८६३ ई० में हुई।[5] उस समय निम्नांकित व्यक्ति इसमें थे :

१. लेफ्टिनेंट कर्नल धनजी भाई नवरोजी पारेख
२. कुँवरजी सोरावजी नाज़र
३. डी० सी० मास्टर (पालखीवाला)
४. भाणिकजी सुरती
५. के० एच्० कांगा

---

१. सं० देवदत्त शास्त्री : पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रन्थ, पृ० २७५-२७६।
२. डा० धनजी भाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख भाग-२, पृ० १९१।
३. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर दूसरा भाग, पृ० १६।
४. डा० 'अज्ञात' : पारसी रंगमंच : नागरी पत्रिका मार्च-अप्रैल १९६८, पृ० १०६।
५. डा० सौ० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायण प्रसाद 'वेताव' पृ० ६४।

६. मेरवानजी नसखान जी वाडिया
७. नसरवान जी सुरती
८. पेस्टान जी नसरवान जी वाडिया
९. डी० एन्० वाडिया

प्रारम्भ में इस मंडली में अंग्रेजी के ही नाटक होते थे। कुछ समय बाद इसमें गुजराती और हिंदी के नाटक खेले जाने लगे। बंबई में रहते इस मंडली ने केवल 'नूरजहाँ' नाटक हिंदी में सन् १८७२ ई० में खेला था।[1] एदलजी खोरी ने पहले 'नूरजहाँ' को गुजराती में लिखा था जिसे नशरवानजी मेरवान जी खान ने हिंदी-उर्दू में अनूदित किया। इसका अभिनय शंकरशेट की पुरानी नाटकशाला में हुआ था। खरशेदजी वालीवाला ने 'मोहब्बतखाँ' की भूमिका की। इस कंपनी को 'अलादीन और जादुई चिराग' नामक (गुजराती) नाटक के कारण बहुत लोकप्रियता प्राप्त हुई थी। इसके बाद 'इंदरसभा' का प्रदर्शन मंच पर किया। इसको विशेष यांत्रिक साधनों से सज्जित किया गया था तथा प्रकाश के लिए अभूतपूर्व व्यवस्था की थी। पात्र-रचना इस प्रकार थी—

नसरवानजी नवरोजी पारेख : गुलफाम
मास्टर शिवाबक्ष रुस्तमजी : सब्जपरी
खुरशेदजी बेहरामजी हाथीराम : राजा इंदर

'इंदर सभा' के उपरांत 'सुलेमान शमशीर' खेला गया। 'सुलेमान शमशीर' के लेखक थे नसरवानजी पारेख। इस नाटक में नसरवानजी पारेख के साथ जमशेदजी फरामजी मादन ने भी नायक का अभिनय किया था। यह नाटक जगन्नाथ शंकरशेट के 'जूना थियेटर' में खेला गया था।[2] फिर नानाभाई राणीना लिखित 'पाकदामन गुलनार' खेला गया। इसमें नसरवान जी पारीख ने गुलनार का अभिनय किया था।

कुँवरजी नाज़र 'विक्टोरिया नाटक मंडली' के भी साझीदार थे। इसी समय सन् १८७२ ई० में दो-दो कंपनियों का भार उठाना कठिन था। इसलिए उन्होंने 'विक्टोरिया नाटक मंडली' को छोड़ दिया और केवल 'एलफिंस्टन' को चलाने लगे। एक बार नाज़र ने 'एलफिंस्टन' को कलकत्ता ले

१. (i) रमणिक श्रीपतराय देसाई : गुजराती नाटक कंपनीओनी सूचि० गुजराती नाटक शत महोत्सव स्मारक मंच बंबई १९५२, पृ० १२१।
(ii) डा० धनजी भाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख भाग २, पृ० ६ और १०३।
२. डा० धनजी भाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख भाग २, पृ० १४।

जाने का सोचा। किंतु कुछ रंगकर्मी दिन में अन्यत्र नौकरी करते थे। अपने प्रयत्न से नाज़र ने सब को छुट्टी दिलवाई। मंडली को लेकर कलकत्ता चले गए। वहाँ कई नाटक खेले। उनमें फरामजी सोरावजी भरूचा कृत 'अलादीन और जादुई चिराग' अधिक लोकप्रिय हुआ। इसमें जादुगर का काम नसरवान जी पारेख करते थे। सन् १८७४ ई० में कुँवरजी नाज़र ने 'पाकदामन गुलनार' खेला।[1]

बंबई में अपने नाटकों के प्रदर्शन के लिए इस मंडली ने 'एलफिस्टन थियेटर' बँधवा लिया। कुछ वर्षों बाद नाज़र की फिर इच्छा हुई कि मंडली को लेकर कलकत्ता जाए। इस बार बहुत से कलाकार राजी नहीं हुए अधिक पैसे के लालच से निम्नलिखित शर्तों पर कुछ कलाकार जाने को तैयार हुए—

१. कलकत्ते जाने के लिए सेंकड क्लास में मुफ्त यात्रा का लाभ मिले।
२. आवास और भोजन का व्यय अभिनेताओं को नहीं देना पड़ेगा।
३. सुबह चाय दी जावेगी और उसके साथ मक्खन और डबल रोटी होगी।
४. नाश्ता ९-१० बजे के बीच में दिया जावेगा जिसमें एक डिश गोश्त या अंडा, मक्खन तथा ब्रेड व चाय रहेगी।
५. सदस्य ३-४ बजे फिर से चाय-नाश्ता लेंगे।
६. रात का भोजन ८॥ बजे एक साथ होगा। इसमें दो गोश्त (एक पक्का और दूसरा तला हुआ) तथा ब्रेड होगी।
७. हजामत बनवाने का खर्च भी अभिनेता को नहीं देना होगा। (इनके लिये कंपनी ने एक नाई को अपने साथ लिया था)।
८. स्नान करने के लिए गरम पानी की व्यवस्था होगी।
९. कपड़ों की धुलाई आदि का व्यय भार भी अभिनेताओं को नहीं उठाना पड़ेगा।

इस समय कंपनी के संचालन-कर्ता कुँवर जी नाज़र, फराम जी सकलात, जमशेद जी फराम जी मादन, डा० नसरवान जी पारेख थे। कुंवर जी नाज़र Managing Director के रूप में कलकत्ते गये थे। कलकत्ते से से लौटते समय कंपनी ने इलाहाबाद रुक कर कुछ नाटक खेले। इस कंपनी में जमशेद जी मादन जवानी में स्त्री का अभिनय करते थे। स्त्री-भूमिका के लिए वे प्रख्यात भी थे। गायन और हावभाव में कुशल थे।

सन् १८७७ ई० में 'एलफिस्टन नाटक मंडली' भी दिल्ली दरबार के समय पर दिल्ली गई थी। इस मंडली ने लाहौरी गेट के पास अपना मंडवा

---

१. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर भाग २, पृ० १९।

बाँधा था। कुंवर जी नाज़र ने बड़ी कुशलता से प्रबंध किया था। यहाँ कंपनी ने कई नाटक खेले।[1]

जमशेद जी फरामजी मादन का प्रभुत्व इस कंपनी में इतना बढ़ा कि वे इसके मालिक बन गये। मादन एंड संस के रूप में ये कलकत्ते में रह कर कई कंपनी चलाने लगे। मकान नं० ५, धरम तल्ला स्ट्रीट कलकत्ते में इन्होंने 'कोरंथियन थियेटर' बनवाया। सन् १८८४ ई० में यहीं कई नाटक खेले गये। बंगाली समाज के आग्रह से वहीं 'नल-दमयंती' नाटक खेला।[2] यहाँ एलफिंस्टन ने खुदा दोस्त, सुफेद खून, पाकदामन, खूने नाहक, खूबसूरत बला आदि नाटक खेले। इस समय के अभिनेता थे—मुंशी पीरबक्ष, इमाम बक्ष, सैयद हसन, मोहम्मद हुसेन, अब्दुल्ला अब्बास, मास्टर मोहन, मनीराम मास्टर आदि थे। इसमें औरतें भी अभिनय करने लग गई थीं। मिस गौर, मिस इकबाल और मिस आश्चर्य प्रमुख अभिनेत्रियाँ थीं।

सन् १९०१ में इनके अनेक नाटक गुलजार बाग, पटना में भी खेले गए थे।[3] डा० नामी के अनुसार १९०७ ई० में पारसी एलफिंस्टन थियेट्रिकल कंपनी ऑफ कलकत्ते के लिए नशर ने 'इब्रत उर्फ सुनहरी फरेब' नामक नाटक लिखा और कलकत्ते में पहली बार मंचित हुआ।[4] सन् १९१० ई० में नशर ने 'तसवीरे वफा' लिखा और सर्व प्रथम कोरॉथियन स्टेज पर पेश हुआ। इसमें माजबीन और निसार ने काम किया।[5] इसी वर्ष कंपनी ने 'जहरी साँप' का मंचन किया।[6] सन् १९१५ ई० में इसी मंच पर नशर का 'फानी फरेब' मंचित हुआ। इसमें कजन, कोपर, कामलेट, अब्दुर्रहमान, काबुली आदि ने काम किया था।[7] सन् १९२२ ई० में नशर का ही 'शीरी फरहाद' खेला गया जिसमें जहाँआरा, बेगम कजन ने भाग लिया था।[8] सन् १९२७ ई० में नशार ने 'वीर बालक' लिखा और कोरथियन

१. डा० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायण प्रसाद 'बेताब' पृ० ५९।
२. अमृतलाल नागर : पारसी रंगचम (पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रन्थ) पृ० २९२ सं० देवदत्त शास्त्री।
३. डा० एच० एन० दास गुप्ता : दि इंडियन स्टेज भाग ४, पृ० २२७।
४. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर दूसरा भाग, पृ० ३३५।
५. वही पृ० ३३६।
६. डा० एच० एन० दास गुप्ता : दि इंडियन स्टेज भाग ४, पृ० २३०।
७. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर दूसरा भाग, पृ० ३३६।
८. वही पृ० ३३६।

स्टेज पर प्रदर्शित हुआ। इसके रंगकर्मी थे–कजन, शरीफा, सोहराबजी केरावाला, मोहंमद इस्सहाक, सूरजराम और गुलाव हुसेन।[1] सन् १९२७ ई० में नशर का 'महाभारत' खेला गया। इसमें कजन, कोपर, अब्दुर्रहमान काबुली ने अभिनय किया था।[2] इसी वर्ष नशर का 'प्रेमी बालक' भी मंचित हुआ जिसमें कजन, सोहराव केरावाला ने काम किया था।[3] सन् १९२९ ई० में नशर कृत 'रूप कुमारी' मंचस्थ हुआ जिसमें कजन, कोपर, अब्दुल रहमान काबुली ने विभिन्न भूमिकाएँ निभायी थीं।[4] उसी वर्ष आगा हश्र कश्मीरी ने 'धर्मी बालक' लिखा। इस नाटक में भाग लेने वाले कलाकार थे—

अब्दुर्रहमान कावुली : कैलाशनाथ
सूरजराम : भूचाल
लक्ष्मीवाई : एक लड़की
गुलाब हुसेन : दूसरी लड़की[5]

इसी कंपनी के लिए सन् १९२९ ई० में आगा हश्र कश्मीरी ने 'भारती बालक' लिखा। इसके कलाकार निम्न प्रकार थे—

सूरजराम : भूचाल
शरीफा : फूल कुमारी
दादाभाई सरकारी : फूल कुमारी के भाई[6]

इसके वाद आगा हश्र ने सन् १९३० ई० में 'दिल की प्यास' लिखा। निम्नांकित रंग कर्मियों ने भूमिकाएँ निभायी थी—

सूरजराम : डा० गणेश प्रसाद।
महंमद हुसेन : वकील।
मास्टर मोहन : भतीजे का दोस्त।
कोपर : मनोरमा।
लक्ष्मीवाई : नौकरानी।

नशर का लिखा नाटक 'लैला मजनू' का मंचन १९३१ ई० में हुआ और सन् १९३२ ई० में उन्हीं का लिखा 'आज की दुनिया' मंचस्थ हुआ जिसमें

१. डा० ए० ए० नामी : 'उर्दू थियेटर' दूसरा भाग, पृ० ३३६।
२. वही—पृ० ३३६।
३. वही—पृ० ३३६।
४. वही—पृ० ३३७।
५. वही—पृ० २५९।
६. वही—पृ० २६१।

कजन, कोपर, रोजी, वाटवट, गुलाम साविर, महंमद हुसेन, गुलाम मुस्तफा, रहीम वक्ष रंगकर्मी थे।[1] पंडित रेवतीनंदन भूषण का लिखा 'प्रेम के पुजारी' को दिसम्बर १९३२ में कोरंथियन रंगमंच पर पहली वार खेला गया।[2] हरिकृष्ण 'जौहर' का नाटक 'पति भक्ति' का मंचन भी इसी मंच पर हुआ था।[3]

वीच में कुछ समय के लिए एलिफन्स्टन का हस्तांतरण हुआ था जिसके वारे में डा० अज्ञात ने उल्लेख किया है कि एलिफन्स्टन की सुन्दरी अभिनेत्री शरीफा पर मुग्ध होकर महाराजा चरवारी ने मादन थियेटर से एलिफन्स्टन मंडली को तीन लाख रुपये में खरीद लिया और उसका नाम रखा—'कोरंथियन नाटक मंडली।' किंतु मंडली के कलाकारों के वहुत तंग करने पर महाराजा ने उक्त मंडली मादन थियेटर्स को वापस लौटा दी।[4]

जमशेद मादन की मृत्यु के पश्चात एलिफन्स्टन की व्यवस्था सेठ सुखलाल देखने लगे। उस समय नाटक भी होते थे और फिल्में भी वनती थीं। सेठ जी की मृत्यु के वाद सन् १९३५ ई० में एलिफन्स्टन कंपनी वन्द हो गई।[5]

विक्टोरिया नाटक मंडली—

इस नाटक मंडली के वारे में हिंदी नाटक साहित्य के इतिहास में वहुत ही भ्रामक धारणाएँ फैली हुई हैं। डा० सोमनाथ गुप्त लिखते हैं—"सन् १८७७ में खुरशेद जी वल्लीवाला ने दिल्ली में आकर जो कंपनी खोली उसका नाम रखा गया Victoria Theatrical Company इसके मुख्य अभिनेताओं में स्वयं कंपनी के मालिक वल्लीवाला—जो वड़े अच्छे कामिक ऐक्टर गिने जाते थे तथा रुस्तम जी थे। इनके अतिरिक्त इसमें मिस खुरशीद और मिस मेहताव दो वड़ी प्रसिद्ध नर्तकियाँ भी थीं और उनके साथ में एक अंग्रेज महिला भी काम करती थी जिसका नाम मेरी फेंटन था।"[6]

डा० दशरथ ओझा के अनुसार—संवत् १९३४ वि० में दिल्ली में नाटक कंपनी खुली। इस कंपनी का सवसे प्रसिद्ध अभिनेता वल्लीवाला

१. वही—पृ० ३३७।
२. डा० ए० ए० नामी : 'उर्दू थियेटर' तीसरा भाग, पृ० १५३।
३. वही—पृ० १७७।
४. डा० अज्ञात : पारसी रंगमंच-नागरी पत्रिका मार्च-अप्रैल १९६७, पृ० १०७।
५. वही—पृ० १०७।
६. डा० सोमनाथ गुप्त : हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास, पृ० १४२।

था। हास्य रस का इतना बड़ा अभिनेता इस काल में दूसरा नहीं था। इस कंपनी के अन्य अभिनेता थे—रुस्तम जी, मिस खुरशेद, मिस मेहताब और एक अंग्रेज महिला मिस मेरी फैंटन।[1] डा० वेदपाल खन्ना ने 'विक्टोरिया थियेट्रिकल कंपनी' के बारे में ये ही विचार व्यक्त किये हैं।[2] डा० डी० जी० व्यास के अनुसार इसकी स्थापना केखशरू कावराजी ने सन् १८६७ ई० में की थी। सन् १८६८ में यह व्यावसायिक रूप में सामने आई।[3] अब डा० सोमनाथ गुप्त ने अपने नये प्रबंध में लिखा है कि इस मंडली की स्थापना मई सन् १८६८ में हुई।[4] डा० धनजी भाई पटेल ने एक जगह १८६७ की तिथि दी है[5] और दूसरी जगह १८६८।[6]

डा० धनजी भाई पटेल ने[7] विक्टोरिया नाटक मंडली की स्थापना का एक इतिवृत्त दिया है जो संक्षेप में इस प्रकार है—सन् १८६२ ई० में पारसियों ने धोबी तालाब (बंबई) के निकट अपने बच्चों का स्वास्थ्य सुधारने के लिए एक व्यायामशाला बनवाने का निश्चय किया। उसके लिए एक मंडल स्थापित किया। मंडली के सदस्यों में परिवर्तन होता रहा। सन् १८६७ ई० में व्यायामशाला मंडली के प्रमुख श्री केखशरू कावराजी चुने गये। उस व्यायामशाला की आर्थिक सहायता के लिए कावराजी ने 'कामेडी आफ एरर्स' नाटक मंच पर प्रदर्शित किया। इस समय इस नाटक के प्रदर्शन में श्री फराम जी गुस्ताद जी ने इनको बहुत सहायता दी। इस नाटक से इस व्यायामशाला को पर्याप्त मात्रा में अर्थ प्राप्ति हुई। इस नाटक में पेस्तन जी धनाजी भाई मास्तर, कावस जी नसरवान जी, कोहीदारू, दाराशाह रतनजी चीजगर, दादाभाई रतनजी हूँठी, फरामजी गुस्ताद जी दलाल, होरमसजी धनजीभाई मोदी, पेस्तनजी नसरवानजी वाडिया, खर-

१. डा० दशरथ ओझा : हिंदी नाटक उद्‌भव और विकास, पृ० २९०।

२. डा० वेदपाल खन्ना : हिंदी नाटक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन, पृ० ८९।

३. डा० 'अज्ञात' : पारसी रंगमंच : नागरी पत्रिका मार्च-अप्रैल ६८, पृ० १०४।

४. डा० सोमनाथ गुप्त : पारसी थियेटर उद्‌भव, विकास और नाट्य में योगदान पृ० १७३ (मूल स्रोत) (१) पा० त० त० पृ० ८७ (२) पा० प्र० खं० २ में यह तिथि १६ मई १८६८ दी है)।

५. डा० धनजीभाई न० पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख दूसरा भाग १९३१, पृ० २ (जरा ध्यान धरी सांभलो मेहरवान, नाटक मंडली, ई० स० १८६७ ना वरसमा उभी थई हती,........")।

६. वही—पृ० ८७।

७. डा० धनजी भाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख, पृ० ८०-९०।

शेदजी मनचेरजी जोशी, वरजोरजी फरामजी मेजर, होरमसजी मनचेरजी चीजगर, फरामरोज रुस्तमजी जोशी ने अभिनय किया था। व्यायामशाला की सहायता के वहाने इतने कलाकारों का एक मंडल अनजाने में ही एकत्र हो गया। तव श्री केखशरू कावराजी ने इन लोगों के साथ परामर्श कर एक नई नाटक मंडली की स्थापना करने का विचार किया। इसके पश्चात् भिन्न-भिन्न विद्वान और अनुभवी लोगों से परामर्श कर श्री केखशरू कावरा जी ने इस कंपनी की स्थापना की। व्यवस्थित रूप से स्थापित होने वाली यह सर्व प्रथम पारसी नाटक मंडली थी। इस कंपनी के स्वामी सम्मिलित रूप मे चार लोग हुए—

(१) दादाभाई रतन जी हूँठी।
(२) फराम जी गुस्ताद जी दलाल।
(३) कावस जी नसरवान जी कोहीदारू।
(४) होरमस जी धनजी भाई मोदी।

अन्य अभिनेता मासिक नियुक्त किये गये। उस समय जोरोस्ट्रियन नाटक कंपनी का यश चारों ओर फैल रहा था। पर उसमें भी इस प्रकार की व्यवस्था नहीं थी। श्री कावराजी ने कहा कि अभिनेता आदि वेतन पर रखे गये हैं, इसलिए नौकरी के लिये स्पष्ट नियमों और उपनियमों का होना आवश्यक है। इस प्रश्न पर वहुत वाद-विवाद हुआ। पर अंत में नियम उप-नियम बना दिये गये।

इस कंपनी की स्थापना के पश्चात् केखशरू कावराजी ने मंडली को सुचारु रूप से चलाने के लिए एक सलाहकार समिति का निर्माण किया तथा यह निश्चय किया कि इस सलाहकार समिति के परामर्श पर ही मंडली कार्य करेगी। इस सलाहकार समिति के सदस्य थे—

(१) विनायक जगन्नाथ शंकर शेट (सभापति)।
(२) डा० भाऊ दाजी लाड।
(३) सोराब जी शापुर जी बंगाली।
(४) खुरशेद जी रुस्तम जी कामा।
(५) खुरशेद जी नसरवान जी कामा।
(६) जहाँगीर जी मेरवान जी प्लीडर।
(७) मेरवान जी माणेक जी सेठना।
(८) अरदेशर फराम जी भुस।
(९) केखशरू नवरोजी कावरा (मंत्री)।
(१०) पेस्तन जी धनजी भाई मास्टर (निर्देशक)।

सभापति जगन्नाथ शंकर शेट ग्रांट रोड के बादशाही नाट्यगृह (रायल थियेटर) के मालिक थे। विनायक जी के पहले, बादशाही नाट्यगृह के मालिक थे प्रसिद्ध जगन्नाथ शंकर शेट, उनकी मृत्यु के बाद उनके सुपुत्र विनायक उस थियेटर के मालिक बने।

मंत्री केखशरू काबराजी गुजराती के प्रख्यात नाटककार, पत्रकार और समाज-सुधारक थे।

सोराब जी शापुर जी बंगाली ने प्रस्ताव रखा कि इस कंपनी का नाम 'विक्टोरिया नाटक मंडली' रखा जाना चाहिए और सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया। इस तरह सन् १८६८ मई माह में इस कंपनी की स्थापना की गई।

केखशरू काबराने 'शाहनामा' के आधार पर 'बेजन मनीजेह' नामक लिखा। इस नाटक के खेलने से (१८६६) पर्याप्त लाभ हुआ। इसे ५० बार खेला गया। जगन्नाथ शंकर शेट के बादशाही नाट्यगृह में नाटक का अभिनय होता था। इस नाटक में लगभग बीस पचीस कलाकारों ने भाग लिया था। इस मंडली के प्रमुख अभिनेता थे दादा भाई रतन जी ठूँठी, दादाभाई पटेल, खुरशेद बालीवाला, उनके पिता मेहरवानजी बालीवाला, नसरवानजी फराम जी मादन, उनके भाई पेस्तन जी फरामजी मादन, सोराब जी ओगरा।

सोराब जी शापुर जी बंगाली की सिफारिश पर डोसा भाई कराका को प्रबंध समिति पर मान्य सदस्य के रूप में लिया गया था। केखशरू ने 'बेजन मनीजेह'के बाद'जमशेद'नाटक लिखा। लेकिन कराका ने एक प्रस्ताव रखा कि नाटक लिखवाने के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित होनी चाहिए और जो नाटक पसंद आयेगा उसे तीन सौ रुपये का पुरस्कार दिया जायेगा। यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। इसके अनुसार चार नाटक प्रतियोगिता के लिए प्रस्तुत भी हुए। लेकिन यह बात केखशरू को पसंद नहीं आई और अगस्त १८६६ में केखशरू काबरा का कंपनी के साथ इसी बात पर मनमुटाव हो गया और वे कंपनी से अलग हो गये। इससे प्रबंध-समिति में मंत्री-पद रिक्त हो गया। दादाभाई सोराब जी पटेल M. A. मंत्री बनाये गये। ये बहुत धनी पुरुष थे। उस समय मंडली के चारों मालिकों ने सोचा कि यदि कंपनी को सुचारू रूप से चलानी है। तो उसका अपना थियेटर होना चाहिये। अभी तक कंपनी अपने नाटक जगन्नाथ शंकर शेट के थियेटर में खेलती थी। इसके लिए इसे किराया देना पड़ता था। वह किराया अधिक हुआ करता था। अभिनेताओं का वेतन, नाट्यगृह का किराया आदि अन्यान्य व्यय के

कारण कंपनी आर्थिक स्थिति ठीक रखना दुष्कर कार्य मालूम होने लगा। अतः दादा भाई हूँठी, होरमस जी धनजीभाई मोदी, फरामजी गुस्ताद जी दलाल, कावसजी कोहिदारू आदि ने अपने पास के पैसे एकत्रित कर ग्रांट रोड पर ६०) प्रति माह पर जमीन ली। इसी पर १८७० में 'विक्टोरिया थियेटर' बनवाया। बंबई शहर में यह दूसरी नाटक-शाला थी। कावस जी नसरवान कोहिदारू इसके खजाँची बने। दादाभाई रतनजी हूँठी डायरेक्टर (निर्देशक) थे ही। होरमस जी धनजी भाई मोदी Property Manager (संपत्ति व्यवस्थापक) हुए। फराम जी गुस्तद जी दलाल रंगमंच व्यवस्थापक बना दिये गये। सदस्यों में आपसी मतभेद हुआ करते थे। फिर भी कार्य ठीक चल रहा था। कंपनी के सेक्रेटरी अधिक शिक्षित होने के नाते अपने विचारों को अन्यों पर जबरदस्ती लादते थे। विशेषकर स्त्री-पात्रों को लेकर काफी वाद-विवाद हुआ। दादी पटेल ने नवीनता की दृष्टि से स्त्रियों को मंडली में लिया था जब कि अन्य मालिक कंपनी में स्त्रियों के समावेश के बिलकुल खिलाफ थे। इसके फलस्वरूप खटपट और बढ़ती गई और सभी सदस्यों ने त्यागपत्र दे दिया। कंपनी का सारा भार दादी पटेल अकेले ही सम्हालने लगे।

सन् १८७१ में इस मंडली ने 'सोने के मूल की खुरशीद' नामक हिंद-उर्दू मिश्रित नाटक 'विक्टोरिया थियेटर' में खेला। एदलजी खोरी के मूल गुजराती नाटक 'सोनाना मुलनी खोरशेद' का हिंदी अनुवाद वेहरामजी फरदुनजी मर्जबान ने किया था। इस खेल की पर्याप्त प्रशंसा हुई थी।[1] भूमिका इस प्रकार थी—

खुरशेदजी मेहरवान वालीवाला : फीरोज
पेस्तनजी फरामजी मादन : खोरशेद
होरमजी मोदी : दिल्ली का बादशाह
दाराशाह सोहराबजी तारापोरवाला : मलेकशा (सिंध का बादशाह)
धनजीभाई केरावाला : 'अफरखान' कोतवाल
धनजी सोहोला : गाजीखान
कावसजी बा : फैजाबाद का बादशाह[2]

इस नाटक के प्रेक्षकों में मुख्यतया वोहरा, खोजा आदि लोगों की संख्या अधिक थी।

१. डा० धनजी भाई पटेल पा० ना० न० (भा० २), पृ० १०३।
२. इस भूमिका की सामग्री जहाँगीर पेस्तन जी खंभाता कृत 'मारो नाटकी अनुभव' से ली गई है (पृ० ६२)।

सन् १८७१-७२ में दादी पटेल ने 'एलफिस्टन नाटक कंपनी' में भी कुंवरजी नाजर के साथ हिस्सेदारी ग्रहण कर ली।

मंडली के उर्दू नाटक की सफलता देखकर दादी पटेल की इच्छा हुई कि वह स्वयं भी इसमें अभिनय करे। खानसाहब नसरवानजी 'आराम' से दादी पटेल ने 'हातिमताई' नामक नाटक लिखवाया। खुद 'हातिम' बने। इनके अभिनय का अच्छा स्वागत हुआ। इस नाटक में यांत्रिक दृश्यों का उपयोग हुआ था। कीमती पोशाकों का भी प्रयोग हुआ था।

इसी समय पर विक्टोरिया नाटक मंडली में 'गुलबकावली' का प्रदर्शन हो रहा था। इसकी भूमिका निम्न प्रकार थी—

खुरशेद जी बालीवाला : शाहजादा ताजुममुलक
पेस्तनजी फरामजी मादन : गुलबकावली।

इस नाटक में भी पर्याप्त यांत्रिक दृश्यों का प्रयोग था। इसी नाटक में पहली बार जमीन में से किसी व्यक्ति का निकलना बताया था और यहीं से इस प्रकार के दृश्य की याने देवता या परी के जमीन से निकलने की प्रथा प्रारम्भ हुई।

कुंवरजी नाजर ने 'इंदर सभा' ऑपेरा के रूप में प्रदर्शित कर काफी दर्शकों को आकर्षित किया था। इसे देखकर दादी पटेल को लगा कि इसी रूप में एक ऑपेरा तैयार करना चाहिये। इसके लिए उन्होंने 'बेनजीर और बदरे मुनीर' को आधार बनाया। विक्टोरिया नाटक मंडली में नसरवानजी खान साहेब नामक अभिनेता थे जो उर्दू पर अच्छा अधिकार रखते थे। संगीत की भी उन्हें जानकारी थी। उनकी मदद से दादी पटेल ने 'संगीत बेनजीर और बदरे मुनीर' तैयार करवाया। यह नाटक बहुत लोकप्रिय हुआ। हालाँकि इसमें अभिनय के लिये कम गुंजाइश थी। लेकिन पहली बार संगीत प्रधान नाटक होने से इस नाटक ने काफी प्रेक्षकों एवं श्रोताओं को आकृष्ट किया।

इस नाटक में पात्र योजना इस प्रकार थी—

खुरशेद जी बालीवाला : बेनजीर।
पेसु आवान : बदरमुनीर[1]।

अब कंपनी व्यवस्थित रूप से चलने लगी तो दादी भाई पटेल ने सोचा कि कंपनी को देश की यात्रा पर ले जाना चाहिए। इसकी वे तैयारी करने लगे। नए नए पर्दे बनवाने लगे। नाटकों के रिहर्सल लेने लगे। कुछ

---

१. जहाँगीर पेस्तन जी खंभाता : मारो नाटकी अनुभव, पृ० ६७ (१९१४)।

अभिनेता दिन में अन्यत्र नौकरी करते थे और रात को रिहर्सल में आते थे। दादी पटेल ने यह प्रथा बंद कर दी उन अभिनेताओं को पूर्ण वेतन देकर कंपनी में नौकर रख लिया और अब दिन में भी रिहर्सल होने लगे।

संयोग की बात है कि उसी समय हैदराबाद के सर सालार जंग बंबई देखने आये थे। दादी पटेल उनको निमंत्रित कर ले गये और उन्हें अपनी कंपनी का नाटक 'नूरजहाँ' दिखलाया। यह नाटक देखकर सर सालारजंग खुश हुए और कंपनी को हैदराबाद आने के लिये निमंत्रित किया। दादी पटेल ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया और जाने की तैयारी करने लगे। उस समय रेल-यात्रा करना कोई सुखप्रद नहीं था। दादी पटेल को बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बहुत से अभिनेताओं को अपने माँ-बाप से हैदराबाद जाने की आज्ञा नहीं मिली। कुछ अभिनेता बाहर जाने के लिये स्वयं ही घबरा रहे थे और कंपनी के साथ बाहर जाने के लिए इनकार कर दिया। जो अभिनेता कंपनी के साथ गये, दादी पटेल ने उनका वेतन बढ़ा दिया। सन् १८७२ में कंपनी हैदराबाद गई। पारसी नाटक कंपनी की यह प्रथम लंबी यात्रा थी। वहाँ इनके नाटक काफी लोकप्रिय हुये। खुद हैदराबाद के निजाम नाटक देखने आये थे। अभिनय देखकर वे प्रसन्न हुये और शाही जनान खाने के लिये अलग नाटक खेलने की प्रार्थना की। निजाम की इच्छा के अनुसार दादी पटेल ने जनान खाने के लिए अलग नाटक अभिनीत कराये। हैदराबाद में कंपनी को पैसा और यश दोनों की प्राप्ति हुई। यश दिलाने में खुरशेद जी बालीवाला और पेस्तनजी मादन के अभिनय का प्रमुख हाथ था। दादी पटेल को शाही सम्मान मिला। कंपनी खुशी-खुशी बंबई लौट आई।

दादी पटेल ने अभिनय में स्वाभाविकता लाने की दृष्टि से बालकों की जगह औरतों को लेने का सोचा। हैदराबाद की चार सुंदर गायिकाओं को नियुक्त किया। स्त्रियों की नियुक्ति को नापसंद कर कुछ अभिनेता मंडली से अलग हो गए जिनमें से कुछ थे—फरामजी गुस्तादजी दलाल, होरमजी मोदी, कावसजी बा, धनजी भाई केरावाला इत्यादि।[1]

दादी पटेल द्वारा अभिनीत नाटक थे—'हातिम बिन ताई', 'बागी बहार', 'आलमगीर', 'जवाँ बख्ते','गोपीचंद'(१८७४)'गुलबाए सनोबरें' गुल बकावली आदि।

---

१. जहाँगीर पेस्तन जी खंभाता : मारो नाटकी अनुभव, पृ० ३८।

सन् १८७४ में दादी पटेल ने 'विक्टोरिया नाटक मंडली को कुंवरजी नाज़र के हाथ में सौंप दिया और खुद उस कंपनी से हट गए। अब कुंवरजी नाज़र विक्टोरिया के भी स्वामी बन गए। कंपनी के लोग तितर-बितर हो रहे थे, सामानों की भी अव्यवस्था हो रही थी। इन सबको लेकर संगठन करना कठिन था। कुंवरजी नाज़र ने बुद्धिमानी से काम लिया। उन्होंने सभी अभिनेताओं को बुलाया और उन्हें फिर से एकत्रित होने को प्रेरित किया। उसी समय दिल्ली में एक उत्सव का आयोजन था। उसने तय किया कि कंपनी को संगठित कर दिल्ली ले जाना चाहिए। उस समय एक समस्या सामने आई। कोई गायक कलाकार नहीं था। कुंवरजी नाज़र ने एदू कालेजर और वरदेशर को इस कार्य के लिए तैयार कराया। उस समय खुरशेदजी बालीवाला और फरामजी अप्पू को साठ रुपये मासिक वेतन तय हुआ। इस तरह तैयारी कराकर कुंवरजी नाज़र कंपनी को लेकर १८७४ में दिल्ली चले गए। उस वक्त विक्टोरिया कंपनी में नीचे लिखे लोग थे—

१. कुंवरजी सोराब नाज़र (मालिक)
२. खुरशेदजी मेरवानजी बालीवाला
३. फरामजी दादाभाई अपु
४. डोसाभाई फरदूनजी मंगोल
५. धनजीभाई खरशेदजी घडियाली
६. मेरवानजी मनचेरजी बालीवाला
७. कावजी माणकजी कंमाक्टर
८. पेस्तनजी रु० लाली
९. नशरवानजी लाली
१०. एदलजी दादाभाई
११. अरदेशर
१२. सोराबजी बादशाह
१३. पेस्तन मादन (पेंटर)
१४. क्राउस (जर्मन पेंटर)
१५. अरदेशर चीनाई
१६. बमनजी गरदा
१७. एक पारसी बावर्ची

जिस दिन कंपनी ने दिल्ली के लिए प्रस्थान किया उस दिन एदू कालेजर का पता नहीं था। कंपनी उसके बिना ही दिल्ली चली गई।

इससे कुंवरजी बहुत परेशान थे। एदू कालेजर को ढूंढ़कर लाने एक आदमी को बंबई छोड़कर नाज़र आगे बढ़े। दूसरे दिन कालेजर दिल्ली पहुँच गए। ऐसी ही और एक बात हुई। कंपनी में अरदेशर नाम का अभिनेता था जो नृत्य और गायन में निपुण था। उसके घर के लोग उसे दिल्ली नहीं जाने देना चाहते थे। जब गाड़ी चलने को हुई तो उसके घर के लोग तलाशी लेने गाड़ी पर आए। अरदेशर छिपकर बैठ गए। औरों ने कह दिया कि वह कंपनी के साथ नहीं है। जब घर के लोग चले गए तब वह प्रसन्न होकर दिल्ली चला गया। दिल्ली में मोर सराय में मंडली ठहरी हुई थी।

दिल्ली में नसरवानजी खानसाहब लिखित 'गोपीचंद' का अभिनय हुआ। इसमें खुरशेदजी बालीवाला और कावसजी कंमाक्टर ने हास्याभिनय किया था। इसमें लोटन का अभिनय खुरशेदजी बालीवाला ने किया था और जोगन का कंमास्टर ने। जोगन लोटन को चाबुक मारकर नचाती थी। लोटन बने खुरशीदजी नंगे पैर मंच पर नाचते थे। बढ़ई की गलती से एक कील रह गई थी। नाचते वक्त खुरशेदजी की एड़ी में घुस गई। बेचारे को काफी तकलीफ हुई।[1]

दिल्ली से यह कंपनी लखनऊ गई, वहाँ से कलकत्ता, कलकत्ता में १८७४ में पहली बार इस पारसी कंपनी ने अपने हिंदी नाटकों के प्रदर्शन किए। कलकत्ते में चौरंगी स्थित लुईस थियेटर में यह कंपनी अपने नाटक करती थी। सबकी पोशाकें खराब हो गई थीं। फिर से नई वेषभूषा यहाँ बनी। कलकत्ते के बंगाली गायकों की इच्छा हुई कि लोकप्रिय पारसी गायकों का संगीत सुनें। उन्होंने पारसी गायकों को निमंत्रित किया। दोनों पक्षों में संगीत की चर्चा हुई। वास्तव में पारसी गायक सुर-ताल का शास्त्रीय ज्ञान नहीं रखते थे। परिणामतया उन्हें हार खानी पड़ी। खुरशीद जी बालीवाला ने कुंवरजी नाज़र को इस हकीकत से अवगत कराया। कुंवरजी नाजर 'इंद्रसभा' खेलने की तैयारी में थे। इस संगीत घटना से वे परेशान हुए। हो सकता है कि पारसियों की संगीत-संबंधी कमजोरी के कारण बंगाली प्रेक्षक खेल देखने न आएँ। नाटक को अत्यधिक प्रभावशाली बनाने के लिए बंबई तार देकर एलफिंस्टन कंपनी से दादाभाई ढूँठी, नसरवानजी पारेख और डोसाभाई दुबास को बुला लिया। दादाभाई ढूँठी इसके निर्देशक बने और राजा इंद्र का अभिनय भी किया। नसरवानजी पारेख

१. डा० धनजी भाई पटेल पा० मा० त० त० भाग २, पृष्ठ १४८

गुलफ़ाम बने और डोसाभाई दुबाड़ा लालदेव। दो-तीन बार 'इंद्रसभा' का अभिनय हुआ। एलफिंस्टन के ये तीनों कलाकार फिर सीधे बंबई आ गए। विक्टोरिया कंपनी कलकत्ते से बनारस पहुँची। वहाँ दो-एक खेल का प्रदर्शन हुआ। विक्टोरिया नाटक मंडली के लिए नसरवानजी खानसाहब ने बेनजीर, वदरेमुनीर, जहाँगीर, शाह्-गौहर, शकुन्तला और पद्मावत नामक ओपेरा[1] लिखे थे। बनारस में कुंवरजी ने यही 'शकुंतला' आपेरा खेला था जिसे भारतेंदु हरिश्चंद, थीबो आदि प्रभृति देखने गये थे और भारतेंदु हरिश्चंद्र से प्रख्यात उद्गार निकले थे। काशी पत्रिका ने 'शकुंतला' खेले जाने की तिथि १० जून, १८७५ बतलाई है। इस संबंध में पत्रिका में उल्लिखित है– "बनारस, १० तारीख की रात को 'नाचघर में बंबई के पारसी लोगों ने 'गुलबकावली' और 'शकुंतला' नाटक का खेल दिखलाया। अंग्रेज थोड़े ही जमा हुए पर हिंदुस्तानी महाराजाओं और रईसों की भीड़ नाचघर में इतनी कभी नहीं हुई थी परंतु अफसोस की बात है कि हम लोगों की आशा के मुताबिक कुछ भी न हुआ।[2] १८७५ में कुंवरजी नाजर मंडली को पूना भी ले गये थे। जब राजकुमार एडवर्ड सप्तम भारतवर्ष आए थे तब सभी स्थानों से राजा-महाराजा, अमीर-उमराव बंबई आए थे। नाज़िर ने इस अवसर का लाभ उठाया। ये विक्टोरिया थियेटर और एलफिंस्टन थियेटर दोनों के मालिक थे। इस समय ये दोनों थियेटरों में चार-चार नाटक खेलने लगे। आवश्यकतानुसार कलाकार एक थियेटर से दूसरे थियेटर में पिछले दरवाजे से पहुँच जाते थे। दोनों थियेटरों में राजा-महाराजाओं के संदर्शन के फलस्वरूप नाज़र ने खूब धन कमाया।[3] इस समारोह के समाप्त होने पर बड़े-बड़े कलाकारों को एकत्रित करने के लिए कुंवरजी ने प्रकट किया कि ३०) से ६०) तक तनख्वाह लेने वाले अभिनेता अमुक दिन दस बजे नाज़र के घर में हाजिर रहें। सब लोग आए। तब नाज़र ने कहा कि कंपनी चलाने में असमर्थ हूँ। इसलिए आप सब लोग मिलकर कंपनी चलाइए। इस बैठक में नीचे लिखे अभिनेता उपस्थित थे—[4]

१. खुरशेदजी मे० बालीवाला

---

१. वही, पृ० १३१

२. काशी पत्रिका भाग १ संख्या २, ३० जून १८७५ ई०, पृ० १६

३. ज० पं० खंभाता : मारो नाटकी अनुभव, पृ० ११५

४. डा० धनजीभाई पटेल पा० न० त० त० भाग २. पृ० १५७

२. मेरवानजी म. वालीवाला
३. फरामजी दादाभाई अप्पु
४. डोसा भाई फरदुनजी मगोल
५. धनजी भाई घडियाली
६. पेस्तनजी लाली
७. कावसाजी मागेकजी कंमाक्टर

खुरशेदजी वालीवाला, डोसाभाई, फरदुनजी मगोल, धनजी भाई घड़ियाली और फरामजी दादा भाई अप्पु ये चार लोग कंपनी चलाने तैयार हो गए। इस समय कुँवरजी नाज़र 'एलफिंस्टन नाटक मंडली' के भी मालिक थे। वहाँ दादी भाई ढूंठी कंपनी के डायरेक्टर थे। उन्हें सौ रुपया मासिक वेतन मिलता था। इन चारों में से किसी को कंपनी चलाने का अनुभव नहीं था। अतः इन लोगों ने दादी भाई ढूंठी को अपने यहाँ आने का निमंत्रण दिया। इस निमंत्रण को स्वीकार कर दादीभाई ढूंठी भी 'विक्टोरिया नाटक मंडली' में आ गए और कंपनी के पाँचवें मालिक भी हुए और डायरेक्टर भी। इस समय कुँवरजी नाज़र और इन पाँचों मालिकों के बीच जो शर्ते तय हुईं वे इस प्रकार थीं—

१. 'विक्टोरिया थियेटर' का किराया प्रतिमास ढाई सौ रुपया होगा।

२. मंडली 'विक्टोरिया थियेटर' में बुधवार, शनिवार व रविवार के उपरांत त्यौहारों के दिन भी नाटक खेल सकेगी, यदि त्यौहारों पर खेल न करना चाहे तो थियेटर किराये पर भी दे सकेगी।

३. २५० रुपये मासिक किराये के बदले में नए मालिकों को नए-पुराने नाटकों को खेलने तथा प्रकाशित करने का अधिकार स्वाधीन किया जाएगा।

४. नए मालिक मंडली की सीन-सीनरी, वेशभूषा आदि सब वस्तुएँ बाहर भी ले जा सकेंगे।[1]

इस तरह सन् १८०६ जनवरी में यह नाट्य-मंडली नए पाँच मालिकों के हाथ में आ गई। नाटक मडली को ठीक तरह से चलाने की दृष्टि से दादा भाई ढूठी ने सभी मालिकों का काम निश्चित किया जो निम्न प्रकार था—

१. धनजीभाई घडियाल—कंपनी के आय-व्यय का हिसाब रखेंगे और अभिनेता के रूप में काम भी करेंगे।

---

१. डा० धनजीभाई पटेल पा. न. त. त., पृ० ३१९। (हिंदी अनुवाद डा० सौ० वि० ल० नम्र की पुस्तक 'हिंदी रंगमंच और नारायन प्रसाद 'बेताब' से उद्धृत है—पृ० ५३९)

२. खरशेदजी बालीवाला—अभिनय के अतिरिक्त दादाभाई ढूंठी की हर काम में मदद करेंगे।

३. डोसाभाई मगोल—स्टेज के पर्दे और सीन-सीनरी का जाँच-कार्य करेंगे।

४. फरामजी अपु—ड्रेस और प्रोपर्टी की देखरेख करेंगे।

५. दादीभाई ढूंठी—पूर्वाभ्यास का काम, नाटक लिखाने और खिलाने का काम और इनके अतिरिक्त सब सामान्य रूप से निरीक्षण करते हुए Managing Director की हैसियत से कार्यभार सम्हालेंगे[1] कम्पनी सुचारू रूप से चलने लगी। इसने 'अलाउद्दीन' नाटक का अभिनय किया। भूमिका इस प्रकार थी—

दादी भाई ढूंठी—अबनेज़ार खुरशेदजी वालीवाला-अलादीन।

काफी पैसा होने पर मालिक लोग यात्रा पर चलने की सोचने लगे। नाटक मंडली कलकत्ता गई। वहाँ खूब धन कमाया। वहाँ से ढाका होते हुए मंडली बंबई पहुँची।[2] वहीं नाटक करने लगी। फिर मंडली पूर्व की यात्रा पर निकली। पहले रंगून गई। रंगून से सिंगापुर पहुँची। मंडली सिंगापुर से 'बटेविया' जाने को तैयार हुई। हर एक के लिए 'इंग्लिश' पोशाक बनवानी पड़ी। क्योंकि इसके बगैर इंग्लिश क्वार्टरों में प्रवेश नहीं मिल सकता था। मंडली ने बटेविया में अपना नाम 'पारसी वायांग' रखा था। (वायांग का अर्थ होता है नाटक मंडली) अपने ही मंडुवे में मंडली ने कई नाटक अभिनीत किए। वेशभूषा के कट्टर नियम से ऊबकर एक दिन कंपनी का पेंटर गणपतराव मुकुन्द मयूर धोती पहन कर काम करने लगे। कुछ डच बालकों ने यह देख लिया। वे उपद्रव मचाने लगे। अन्त में सरकार ने आदेश जारी किया कि विक्टोरिया नाटक मंडली ब्रिटिश कौंसिल की ओर से आई है, अतः कोई व्यक्ति कंपनी के आदमियों को न सताएँ। बटेविया से चलने के बाद कंपनी को 'मालदीव' टापू पर, तूफान के कारण रुकना पड़ा। वहाँ से वे लोग कुछ समय बाद बंबई पहुँचे।[3]

'बटेविया' से बंबई पहुँचकर मंडली ने थोड़ा-सा विश्राम किया और फिर पहुँची मद्रास। 'ओरिजिनल विक्टोरिया नाटक मंडली' भी मद्रास पहुँच गई थी। इसलिए दोनों में होड़ लग गई। 'ओरिजिनल विक्टोरिया नाटक

---

१. वही : पृ० ३२२।

२. जहाँगीर पे०खंभाता—मारो नाटकी अनुभव : पृ० ११९।

३. (i) वही पृ० १५४ (ii) सौ. डॉ० नि० ल० नम्रः हिं० रं० ना० प्र० वे, पृ० ५७।

मंडली' दूसरी बार मद्रास गई थी। अत: वह शहर से अच्छी तरह परिचित थी। इसका मंडुवा वर्तमान हाईकोर्ट के पास के मैदान में था और पास ही 'विक्टोरिया नाटक मंडली' का भी था। हालांकि 'दादी पटेल' ओरिजिनल में नहीं थे फिर भी चूंकि जनता उनकी ख्याति से परिचित थी, विज्ञापनों में उन्हीं के नाम का प्रयोग करते थे। टिकट-विक्री के लिए रतनशा दावर घर-घर, कार्यालय घूमते थे, उन्हें इसमें दस प्रतिशत कमीशन मिलता था। 'ओरिजिनल विक्टोरिया नाटक मंडली' वाले अंत में फार्स दिखाते थे जो अधिक आकर्षक रहता था। 'विक्टोरिया नाटक मंडली' के जहाँगीर खँभाता ने भी 'क्वैक डाक्टर' नामक फार्स अपनी कंपनी में दिखाने लगे। तूफान के कारण एक दिन इनका मंडुवा गिर गया। सब कुछ ठीक-ठाक करने में हफ्ता भर लग गया। वहाँ से विक्टोरिया नाटक मंडली फिर बंबई पहुँच गई। स्टेज सामान का वेगन उनके साथ ही बंबई नहीं पहुँच सका था। जब मंडली रायपुर पहुँची तब उन्हें ज्ञात हुआ कि सामान का वैगन उनकी गाड़ी से नहीं जुड़ा है। दादीभाई ठूँठी के आदेश से जहाँगीर खँभाता तुरंत नीचे उतरे और यह प्रयत्न किया कि यथाशीघ्र सारा सामान बंबई पहुँचे।[1]

दिल्ली दरबार का अवसर अच्छा था। इसलिए मंडली दिल्ली जाने की तैयारी करने लगी। नए परदे, यांत्रिक दृश्य और नूतन पोशाकें बनने लगीं। यह तय हुआ कि दिल्ली दरबार के एक महीने पहले ही वहाँ पहुँच जाना चाहिए। बनजी भाई घड़ियाली स्टेज मिस्त्रियों तथा पेंटरों को लेकर मंडुवा बाँधने के लिए दिल्ली पहुँच गए। उसके बाद समस्त नाटक मंडली भी 'जबलपुर मेल बोरीबंदर से इलाहाबाद' होती हुई चौथे दिन सुबह छ:बजे दिल्ली पहुँची। सन् १८७६, दिसंबर का महीना, ऐंठा देने वाली सर्दी, सिकरमों में सवार होकर मंडली निवास स्थान पर पहुँची। यह स्थान चाँदनी चौक कोतवाली के सामने विक्टोरिया-पार्क–द्वारके पास था। कंपनी का मंडुवा जामा मसजिद के पास बँध गया था। पहुँचते ही विक्टोरिया नाटक मंडली ने नाटक प्रदर्शन प्रारंभ कर दिया।[2] इस प्रकार १८७७ के दिल्ली दरबार का पूरा-पूरा फायदा उठाकर मंडली अमृतसर गई। वहाँ से जयपुर पहुँची। जयपुर में विक्टोरिया नाटक मंडली ने कई नाटक खेले। उन्हें देख कर जयपुर-नरेश महाराज रामसिंहजी भी प्रभावित हुए। महाराज बड़े उदार थे। उन्हें नाटक का अच्छा शौक था। उन्होंने अपने यहाँ एक नाटक

१. जहाँगीर पेस्तनजी खंभाता: मारो नाटकी अनुभव, पृ० १६०–१६१–१६२

२. डॉ० दा० वि० ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और नारायण प्रसाद 'बेताब', पृ० ५९।

शाला बाँधने का आदेश दिया था। इस नाट्य-गृह में नाटक खेलने के लिए विक्टोरिया नाटक मंडली में से कुछ युवक अभिनेताओं का रोक लिया था। उनमें से थे एदू कालेजर, पेस्तनजी बाटलीवाला, रुस्तम कारियावल। जब तक 'विक्टोरिया नाटक मंडली' जयपुर में थी तब तक इन नटों को राजा की ओर से भी तनख्वाह मिलती थी। और मंडली से भी। यहाँ कुछ लोग इस समय मंडली से हट गए : इनमें दादीभाई ठूँठी और फरामजी अप्पू भी थे। इन लोगों की सहायता से जयपुर-नरेश के संरक्षकत्व में दूसरी कंपनी बन गई। ठूँठी को माहवार ७००) तनख्वाह मिलती थी। उनकी देखरेख में महाराजा ने नाट्य-गृह बँधवाया।[1] जब दादीभाई ठूँठी मंडली से हट गए तो खुरशेद बालीवाला निर्देशक बने।

१८७२ में मंडली ने फिर पूर्व की ओर जाने की तैयारी की। इस समय मंडली में निम्नांकित लोग थे[2]—

(१) खुरशेदजी मेरवानजी बालीवाला (मालिक)
(२) धनजी भाई घडियाली (मालिक)
(३) डोसाभाई फरदुनजी मगोल (मालिक)
(४) पेस्टनजी खुरशेदजी मादन (पेंटर)
(५) मेरवानजी पेस्तनजी मेहता
(६) नसरवानजी वीरजी गोईपुरिया
(७) धनजीभाई बरजोरजी अंजीरबाग
(८) होरमसजी शापुरजी तांतर
(९) दोराबजी कावसजी बजां
(१०) बेहरामजी कावसजी तांतरा
(११) होरमजी कावसजी मुल्ला
(१२) बम्मनजी कावसजी गरदा
(१३) रुस्तमजी पेस्तनजी मेहता
(१४) केखशरू होरमजी लाला
(१५) बापूजी होरमजी पुरोगर
(१६) पेस्तनजी होरमजी लाली
(१७) पेस्तनजी जीजीभाई बाटलीवाला

---

१. ज० पे० खंभाता : मारो नाटकीय अनुभव, पृ० १९७।
२. डा० धनजीभाई पटेल पा० ना० त० त० भाग २, पृ० १६३।

इनके अतिरिक्त नौकर, बावर्ची; सारंगी तथा तबला बजाने वाले और हिसाब किताब रखने वाले मुंशी आदि भी मंडली के साथ थे।

पहले कंपनी फरवरी १८७२ को कलकत्ता गई। वहाँ कोरंथियन के मंच पर (५ धरमतल्ला, कलकत्ता) अपने नाटकों का प्रदर्शन किया।[१] फिर रंगून गई।

रंगून जाने पर कंपनी ने अनुभव किया कि उसे एक दुभाषिया की आवश्यकता है। अतः खुरशेदजी वालीवाला ने रंगून से ही कावसजी गाँधी नामक दुभाषिया को नियुक्त कर लिया। बर्मा के राजा थीबो ने इस कंपनी का अच्छा स्वागत किया।

एक दिन राजा ने कंपनी के निवास स्थान पर टोकरी भर नारंगियाँ भेज दीं। इन नारंगियों की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। किसी एक अभिनेता ने यों ही एक नारंगी छीला तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसमें कीमती हीरे और माणिक भरे हुए थे। वास्तव में उपहार स्वरूप ये चीजें भेजी गई थीं। अन्य अभिनेताओं पर जब यह सत्य प्रकट हुआ तब सभी उन नारंगियों पर टूट पड़े। राजा थिबो और उनकी रानी नाटक देखकर दोनों प्रसन्न हुए और सभी अभिनेताओं को महल में बुलाया। उनके सामने रुपयों का ढेर लगाकर कहा कि जिसके हाथ जितने रुपये आएँ उतने उठा लें। व्यक्तिगत एक-एक अभिनेता को बुलाकर हरेक को ४००-५०० रुपये दिए। कंपनी ने वहाँ ३५ नाटक खेले। वहाँ कंपनी को इतना लाभ हुआ कि समस्त व्यय काटकर पचास हजार रुपयों का लाभ हुआ।[२] १८८३ ई० में विक्टोरिया नाटक मंडली ने बंबई में 'आराम' का लिखा नाटक 'गुल वा सनोवर चौकर्द' का मंचन किया। ऐसा भी कहा जाता है कि यह नाटक मुंशी 'रौनक' का है।[३]

सन् १८७५ ई० में यह कंपनी 'इंडियन और कॉलोनियल प्रदर्शनी' के अवसर पर लंदन गई। कंपनी के मालिक ने कुंवरजी नाजर को अपने खास 'एजेंट' के रूप में साथ में ले लिया था।[४] इस समय कंपनी के साथ २२ लोग गए थे।

---

१. डा० हेमेंद्रनाथ, दास गुप्त, The Indian Stage Vol IV, पृ० २२७

२. डा० धनजीभाई पटेल पा० ना० त० त० भा० २, पृ० १६४

३. डा० ए० ए० जानी : उर्दू थियेटर-दूसरा भाग, पृ० ७

४. डा० धनजी भाई-पटेल : पा० न० त०-त०-भाग २, पृ० १०

नीचे लिखे नए लोग इस बार मंडली के साथ थे—मेरवानजी वे० मुंशी, डोसाभाई ज० दुमाश, दोराव सचीनवाला, कुंवरजी एदलजी सिपाई, फरामजी अ० चोकसी। वहाँ इस कंपनी ने गेइटी थियेटर में 'सुलेमानी शमशीर', 'आशिक का खून उर्फ दामन पर धब्बा', 'इन्साफ महम्मूद शाह' आदि के प्रदर्शन किये। विनायक प्रसाद तालिब कृत 'हरिश्चंद्र' का भी अभिनय किया।[1] डा० भानुदेव शुक्ल के अनुसार लंदन में भारतीय कम संख्या में थे तथा अंग्रेज-दर्शक भाषा की बाधा के कारण इस नाटक को समझ नहीं पाते थे, अतएव दर्शक संख्या बहुत कम रही। इसके अतिरिक्त संपन्न एवं विकसित आंग्ल रंगमंच के सम्मुख इस कंपनी का अभिनय फीका पड़ गया। इस कंपनी को इस यात्रा में आर्थिक घाटा रहा।[2] वास्तव में स्थिति कुछ और ही थी। कानून के अनुसार कंपनी को नाटक खेलने के पहले वहाँ के अधिकारियों से अनुज्ञा लेनी चाहिए थी। अनुज्ञा के अभाव में नाटक खेलना जुर्म माना जाता है। परिणामतः कंपनी को कई हज़ार पौंड जुर्माने के रूप में देना पड़ा। घाटे का सही कारण यह था। मंडली १७७६ में भारत लौट आई। इसी वर्ष कंपनी के एक मालिक धनजीभाई घडियाली मंडली से हट गये। इंग्लैंड के घाटे की पूर्ति के लिए भारत में फिर कंपनी नाटक खेलने लगी। यहाँ से और एक बार मंडली सिंगापुर और मांडले की यात्रा पर गई। बैंकाक में भी मंडली के नाटक हुए। जब मंडली बैंकाक में थी तब धनजीभाई बरजोरजी अंजीर बाग की कालरा से मृत्यु हुई। आर्थिक दृष्टिसे ये यात्राएँ लाभप्रद रहीं।

सन् १७७९ मार्च में जब कंपनी दिल्ली में थी तब डोसाभाई मगोल की मृत्यु हुई। फलतः सारी जिम्मेदारी खुरशेदजी बालीवाला पर आ पड़ी। इसलिए कंपनी जल्दी ही बंबई लौटी। इसी वर्ष मंडली लंका भी गई थी।[3] लंका से लौटकर मंडली बंबई में ही अपने नाटक खेलने लगी। इन नाटकों में विनायक प्रसाद 'तालिब' द्वारा लिखित 'हरिश्चंद्र' बहुत ही लोकप्रिय हुआ। १८९६ में यह नाटक पूना के भवानी पेठ में खेला गया था।[4] १९०६ में यह नाटक कई बार सफलता से खेला गया। इसमें रुस्तम सचिन ने

1. डा० रणधीर उपाध्याय : बम्बई का पारसी रंगमंच (ना० प्र० पत्रिका) पृ० ३२४।
2. डा० भानुदेव शुक्ल : भारतेंदु युगीन नाट्य साहित्य पृ० २९६।
3. डा० सोमनाथ गुप्त : पारसी थिएटर : उद्भव, विकास और नाट्य में योगदान पृ० १७९।
4. ग० गो बोडस : माझी भूमिका पृ० ३४४।

तारामती का अभिनय किया था।[1] इन प्रदर्शनों से प्राप्त आय से खुरशेदजी वालीवाला ने ग्रांट रोड पर 'वालीवाला थियेटर' बाँधा। सन् १९११ ई० में यह मंडली पंचम जार्ज के राज्याभिषेक के अवसर पर दिल्ली गई। वहाँ भी 'हरिश्चंद्र' खूब सफल रहा। सन् १९१२ में मंडली कलकत्ता गई। कोरंथियन स्टेज पर कई नाटक खेले गए। उसमें 'हरिश्चंद्र' नाटक की भूमिकाएँ निम्न प्रकार थी—

खुरशेद बालीवाला—नक्षत्र
मिस बिजाली—तारामती
मिस मुन्नी—अप्सरा
मिस गुलाब—कुल कुंडलिनी
एच तंत्र—हरिश्चद्र

"लैलो नहर' नामक नाटक में वालीवाला न खानसामा अशरफ का अभिनय किया था। १९१३ सितंबर में लकवा लगने से बालीवाला की मृत्यु हुई। फिर होरमस तांतरा ने मंडली का संचालन किया। दिसंबर १९१६ से मार्च १९१७ के बीच यह मंडली दुबारा लंका गई थी। १९१७ में यात्रा के समय हैदराबाद में तांतरा का स्वर्गवास हुआ। हैदराबाद से मंडली सूरत गई और सन् १९१९ ई० में बंबई वापस आ गई। इस समय दोराब मेवावाला मंडली में आये। इसी साल मंडली जहाँगीर आदर जी मास्टर के स्वामित्व में चली गई। तब भी 'हरिश्चंद्र' अक्सर खेला जाता था। इसमें हरिश्चंद्र की भूमिका मास्टर कानजी, मास्टर पिशोरी, होरमस जी किराजी करते थे, तारामती का अभिनय मिस गौहर, मिस गुलनार और मुन्नीबाई करती थीं। १९२२ तक 'हरिश्चंद्र' कुल ४००० बार खेला गया। कुशल संचालकत्व के अभाव में एवं अभिनेत्रियों के प्रवेश के कारण १९२२ में मंडली समाप्त हो गई।

विक्टोरिया नाटक मंडली की विशेषताएँ :—

१. इसी कंपनी ने सबसे पहले देश-विदेश की यात्रा की।

२. धार्मिक नाटक खेलने का प्रचलन इसी कंपनी ने प्रारंभ किया।[2]

३. मंडली के रंगकर्मियों के साथ सद्व्यवहार रहने के कारण बहुत कम लोग यह कंपनी छोड़कर जाते थे। व्यवस्था संबंधी एकाध उदाहरण देना अप्रस्तुत नहीं होगा। दादाभाई ढूंठी ने निम्नांकित नियम बनाये थे :—

१. डा० धनजीभाई पटेल : पा० ना० त० न० भा० २ पृ० ३९७।

२. राधेश्याम कथावाचक, मेरा नाटक-काल पृ० ४०।

(अ) प्रातःकाल उठकर साढ़े आठ बजे तक सब कलाकारों को नित्य कर्मादि से निवृत्त हो जाना चाहिए।

(आ) साढ़े आठ बजे नाश्ता, नाश्ते में कभी को अंडे और पावरोटी तो कभी खीमा और पावरोटी, कभी पाव-मक्खन या मलाई और पाव तथा एक कप चाय दी जाती थी।

(इ) नौ बजे सबको रिहर्सल में उपस्थित हो जाना चाहिए। बारह बजे रिहर्सल समाप्त होने पर घर जाना।

(ई) साढ़े बारह बजे दोपहर का भोजन जिसमें प्रतिदिन बदलती हुई, वस्तुएँ दी जाती थीं।

(उ) संध्या समय चार बजे सब घूमने जा सकते थे किंतु आज्ञा बिना बाहर जाना असंभव था। सात बजे वापस आ जाना अनिवार्य था।

(ऊ) साढ़े सात बजे रात्रि का भोजन। भोजन के पश्चात् प्रत्येक व्यक्ति को थियेटर पर जाना पड़ता था और वहाँ से दो बजे या कभी-कभी अधिक देर से घर लौटना होता था।

यदि प्रातःकाल कोई समय पर न उठ सका तो उसे नाश्ता नहीं दिया जाता था। दूसरे दिन भी यदि ऐसा ही हुआ तो सर्दी के दिनों में नहाने के लिए गरम पानी नहीं मिलता था।[1]

विक्टोरिया नाटक मंडल संबंधी भ्रम—

विक्टोरिया नाटक मंडल की स्थापना तिथि के संबंध में हिंदी-नाटक-साहित्य के इतिहास में जो भ्रम था उसे देख चुके हैं।

डा० सोमनाथ गुप्त[2] और डा० दशरथ ओझा ने[3] लिखा है कि मंडली में मेरी फेंटन नामक अभिनेत्री थी। वास्तव में मेरी फेंटन नामकी अभिनेत्री 'विक्टोरिया नाटक मंडली' में नहीं थी, वह 'अल्फ्रेड नाटक कंपनी' में थी। कावसजी पालनजी खटाऊ और मेरी फेंटन की मुलाकात दिल्ली में हुई थी जो परिणय में परिणत हो गई। खटाऊ ने उसे सिखा सिखाकर अच्छी

---

१. (अ) सौ डा० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायणप्रसाद 'बेताब' पृ० ५३९। (आ) डा० पे० खंम्भाता : मारो नाटकी अनुभव पृ० १७०।

२. डा० सोमनाथ गुप्त : हिं० ना० सा० इ० पृ० १४२।

३. डा० दशरथ ओझा : हिं० ना० आ० उ० वि० पृ० २९०।

अभिनेत्री बनाया। अमृतलाल नगर ने लिखा है—मिस मेरी फैंटन नामकी एक अंग्रेज अभिनेत्री खटाऊजी के कामिक कला पर ऐसी मुग्ध हुई कि फिर उनका साथ ही न छोड़ा। उनके साथ काम करने लगी।[1]

हिंदी नाटक मंडली

दादाभाई रतनजी ठूँठी ने विक्टोरिया नाटक मंडली को छोड़ते ही तुरंत 'हिंदी नाटक मंडली' की स्थापना की। इसमें अच्छे-अच्छे कलाकारों को लिया गया। इस नाटक मंडली के सदस्य निम्न प्रकार थे।[2]

१. दादाभाई रतनजी ठूँठी—मालिक, निर्देशक और अभिनेता
२. दादी अस्पंदियारजी मिस्त्री (दादी जादूवाज)
३. अरदेशर सर्राफ
४. जहाँगीर पेस्तनजी खभाता
५. कावसजी कालिगर
६. नवरोजजी वाटला
७. नवरोजजी एदलजी तंबोली
८. कावजी पालनजी खटाऊ
९. कावसजी मिस्त्री
१०. फरामजी गुस्तादजी दलाल
११. जमशेदजी कावसजी दाजी
१२. जहाँगीर मीनवाला
१३. डोसाभाई फरामजी कांगा
१४. माणिकजी अ० मिस्त्री
१५. वरजोरजी कुटार

बंबई में कामाठीपुरा एक मुहल्ला है। वहाँ एक बड़े मकान में इस मंडली की रिहर्सल होती थी। ग्रांट रोड पर मुसलमानों के कब्रस्तान के सामने ठूँठी ने नाटक खेलने के लिए एक थियेटर बाँधा। इस थियेटर की विशेषता यह थी कि २४ घंटों में उठाकर इसे अन्यत्र ले जा सकते थे।

१.(iv) अमृतलाल नागर : पारसी रंगमंच : पृथ्वीराज कपूर अभिनन्दन ग्रंथ, पृ० २९२
Mr. Khatao was an excellent comic actor and an English actress. Miss Mary Fanton was drown to him for his parts and joined his party—Dr. Hemendra Nath Das Gupta—The Indian stage Vol. IV P. 228.

२. डा० धनजीभाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख (भाग २) पृ० २७८।

इस प्रकार के पोर्टेबल थियेटर को बनाने में उन्हें छः महीने लगे। सुबह नौ बढ़इयों को काम बताकर जाते थे और मुंशी के साथ बैठकर नाटक लिखवाते थे। शाम को सात-आठ बजे से रात के दस बजे तक रिहर्सल चलाते थे। ढूँठी ने एक बढ़िया ड्रापसीन भी बनवाया था। गणपतराव पेंटर ने इस ड्रापसीन को बनाया था। मंदिर में पूजा करने के लिए जाने वाली हिंदू ललनाओं का चित्र उस पर अंकित था।[1]

इस नाटक मंडली का पहला नाटक था 'बेनजीर'। यह नाटक 'बेनजीर बदरेमुनीर' पर आधारित था। जहाँगीर खंभाता ने इसमें महारुख परी का अभिनय किया था। अरदेशर सर्राफ बेनजीर बने थे। इसके बावजूद भी नाटक असफल ही रहा। फिर केशखरू कावराजी ने अपना नाटक 'फरेदुम' खेलने दिया। यह नाटक काफी सफल रहा। इसमें डोसाभाई कांगा ने जोहाक के सिपहसालार जरसाह का अभिनय किया था। पर आर्थिक स्थिति के कारण मंडली शिथिल होने लगी। इस समय दादा भाई को उनके मित्र सर मनचेरजी भावनगरी ने भावनगर के महाराजा के विवाहोत्सव के लिए निमंत्रित किया। मंडली भावनगर गई। केवल दो ही नाटकों का अभिनय दस दिन किया। वहाँ से लौटने के बाद 'फरेदुन' नाटक दो-एक बार खेला। दादाभाई ढूँठी ने हिंदी थियेटर को रेहन रखा था। रकम न चुकाने से उन्हें थियेटर से मुक्त होना पड़ा। इससे १८७३ ई० में 'हिंदी नाटक मंडली' बंद पड़ गई।[2] फिर ढूँठीजी विक्टोरिया नाटक मंडली में निर्देशक हो गए।

(डा० धनजीभाई पटेल के अनुसार हीरजीभाई खंभाता लिखित पहला प्रख्यात नाटक 'आबे इब्लीस' दादी ढूँठी ने अपनी 'हिंदी नाटकशाला' में खेला था जिसमें हीरजी खंभाता ने भी अभिनय किया था।)[3]

पर्शियन जोरास्त्रियन नाटक मंडली

सन् १८७० ई० में ग्राँट रोड थियेटरों में जब ईरानी नाटक खेले जा रहे थे तब शरबत और सोडा वाटर बेचने वाले कुछ ईरानी भाई एकत्रित हुए और उन्होंने पर्शियन जोरास्त्रियन क्लब की स्थापना की[4]। इन

१. डा० धनजीभाई पटेल —पा० न० त० त० भाग २. पृ० ४७६।

२. वही भाग २, पृ० २७८।

३. डा० धनजी भाई पटेल पा० ना० त० त० भाग २, पृष्ठ २१३।

४. डा० धनजीभाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख, पृ० २६१-२६२।

ईरानियों के मुख्य मार्ग दर्शक थे दादाभाई पटेल। इस क्लब में पेस्तनजी फरामजी वेलाती गुरमीन आदि थे। सबसे पहले इस मंडली ने 'बरजोर अने रुस्तम' का मंचन किया। इस क्लब से अलग होकर पेस्तनजी फरामजी वेलाती ने 'पर्शियन जोरास्त्रियन नाटक मंडली' की स्थापना की।

इस नाटक मंडली ने सर्व प्रथम सन् १८७१ में दादाभाई एदलजी पोहचखानावाला 'बंदेखुदा' लिखित 'बरजोर अने मेहरसीमीन 'ओभार' नामक नाटक शंकरसेट के नाट्यगृह में खेला। इस नाटक में लाभ की अपेक्षा नुकसान ही हुआ। इसलिए पेस्तन जी ने ईरानी नाटक के बाद उर्दू नाटक खेलने का सोचा। लेकिन स्त्री-भूमिका के लिए तलाश करने पर भी कोई लड़का नहीं मिला। अन्त में उनके ही भाई कावसजी फरामजी वेलाती को स्त्री-भूमिका निभानी पड़ी। एकाध उर्दू नाटक करने के बाद पेस्तनजी वेलाती अचानक इस क्षेत्र से गायब हो गये। उनकी कंपनी भी समाप्त होगई।

अल्फ्रेड थियेट्रिकल कंपनी

इस नाटक मंडली की स्थापना, तिथि एवं संस्थापक को लेकर हिंदी साहित्य में विभिन्न मतों की अभिव्यक्ति हुई है। डा० सोमनाथ गुप्त ने 'हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि लगभग इस समय (सन् १८७७) में बल्लीवाला के समकालीन साथी कावसजी खटाऊ ने अल्फ्रेड थियेट्रिकल कंपनी (Alfred Theatrical Company) की स्थापना की।[1] डा० 'अज्ञात' का कथन है कि अलफ्रेड नाटक मंडली की संस्थापना कावसजी पालनजी खटाऊ ने सन् १८७१ ई० में की थी। इस मंडली में खटाऊ के अतिरिक्त दो अन्य भागीदार भी थे—माणिकजी जीवनजी मास्टर और मुहम्मद अली।[2] डा० पवनकुमार मिश्र के अनुसार खुरशेदजी बापासोला नामक एक पारसी सज्जन ने अलफ्रेड नाटक कंपनी की स्थापना सन् १८७१ ई० में की थी। इनका लोकप्रिय नाटक था 'जहाँबख्श गुलरुखसार'। इस नाटक में बापासोला जिन्न बने थे।[3] स्वयं डा० सोमनाथ गुप्त ने अपने दूसरे शोध-प्रबंध में उल्लेख किया है कि सन् १८७१ ई० में फरामजी जोशी ने अल्फ्रेड नाटक मंडली की स्थापना की। फरामजी जोशी हटे तो सन्

१. डा० सोमनाथ गुप्त : हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास—पृ० १४३।

२. 'अज्ञात' : पारसी-हिंदी रंगमंच (नागरी पत्रिका : मार्च अप्रैल १९६८) पृ० १०५।

३. डा० पवनकुमार मिश्र : पारसी रंगमंच उसके नाटक और नाटककारों का आलोचनात्मक अध्ययन (अप्रकाशित) पृ० १७०।

१८८१ में नानाभाई रुस्तमजी राणीना इस कंपनी को चलाने लगे। कावसजी पालनजी खटाऊ, मानकजी मास्टर और इब्राहिम मोहम्मद अली इसके भागीदार बने।[1] डा० (सौ०) विद्यावती लक्ष्मणराव नम्र ने अल्फ्रेड नाटक मंडली का परिचय इस प्रकार दिया है—"प्रथम जन्म–सन् १८६८ ई० में फरामरोज जोशी ने 'जेंटलमेन एमेच्युअर्स' क्लब छोड़ दी। सन् १८७१ ई० में 'शाहजादा शियाबख्श' में काम किया और फिर 'जहाँबख्श' अभिनीत किया। मंडली के ये सारे कार्यक्रम वि० ना० मंडली और जोरास्ट्रियन नाटक मंडली के विरोध में थे। मंडली का तीसरा नाटक 'गुल रुखसार' था। इसने 'टेमिंग आफ दी श्रू' भी गुजराती भाषा में अभिनीत किया था। माणिकजी जीवनजी मास्टर भी इसके मालिक थे। 'आबे इबलीस' नाटक 'हिन्दी थियेटर' में खेला गया था। फिर यह मंडली बंद हो गई।.......... जहाँगीर खँभाता की 'एंप्रेस नाटक मंडली' में से मिस मेरी फेंटन के साथ बंबई आकर कावसजी खटाऊ ने अपने क्लब द्वारा कुछ नाटक प्रस्तुत किए, परंतु सफलता नहीं मिली।..........द्वितीय जन्म (सन् १८८४)–क्लब को नानाभाई राणीना ने संभाल लिया और उसका नाम 'अल्फ्रेड नाटक मंडली' रखा।[2]

डा० नम्र ने अपने उसी शोध-प्रबंध में अन्यत्र लिखा है कि कुछ समय पश्चात् खटाऊ ने खंभाता की कंपनी से संबंध-विच्छेद कर लिया और बंबई आकर मेसर्स माणेकजी मास्टर और अहमद अली वोरा की भागीदारी में 'अल्फ्रेड नाटक मंडली' की स्थापना की। माणेकजी मास्टर फेंटन को रंग-मंच पर लाने के विरुद्ध थे, अतएव खटाऊ अलग हो गए एक और दूसरी कंपनी 'अल्फ्रेड कंपनी' के नाम से आरंभ की।[3]

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि उपर्युक्त उद्धरणों में निम्नांकित विभिन्न तिथियाँ दी गई हैं—

(तिथि)	(उल्लेख करने वाले)
(१) १८७७	डा० सोमनाथ गुप्त
(२) १८७१	डा० 'अज्ञात'
(३) १८७१	डा० पवनकुमार मिश्र
(४) १८७१	डा० सोमनाथ गुप्त (१९६८ का प्रबंध)

१. डा० सोमनाथ गुप्त : पारसी थियेटर : उद्भव, विकास और नाट्य में योगदान (अप्रकाशित) पृ० १९६।

२. डा० सौ० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायण प्रसाद 'बेताब' पृ० ६६

३. वही पृ० ९९।

संस्थापकों के संबंध में भी अन्यान्य नाम प्रस्तुत हुए हैं जो नीचे लिखे लिखे अनुसार है—

(संस्थापक)	(उल्लेख करने वाले)
१. कावसजी खटाऊ	डा० सोमनाथ गुप्त
२. कावसजी खटाऊ	डा० 'अज्ञात
३. खुरशेदजी बापासोला	डा० पवनकुमार मिश्र
४. फरामजी जोशी	डा० सोमनाथ गुप्त (१९६८ का प्रबंध)
५. (क) फरामजी जोशी	डा० वि० ल० नम्र
(ख) माणिकजी जीवनजी मास्टर	डा० वि० ल० नम्र
६. कावसजी खटाऊ (मंडली के द्वितीय जन्म के अवसर पर)	डा० वि० ला० नम्र

ऊपर की सूची में अलग-अलग तिथियों और संस्थापकों के नाम देख कर पाठक भ्रम में पड़ जाता है। वास्तव में अल्फ्रेड नाटक मंडली का जन्म और पुनर्जन्म हुआ।[1] ऊपर उल्लिखित तिथियों में १८७१ ई० प्रथम जन्म की तिथि है।[2] खुरशेदजी बापासोला[3], माणिकजी जीवनजी मास्टर[4] और फरामजी जोशी तीनों मंडली के मूल संस्थापको में से थे। हीरजी खंभाता निर्देशक के रूप में काम करते थे। मंचेरशाह, दादी रतनजी दलाल, दादाभाई मिस्त्री आदि इस अल्फ्रेड नाटक मंडली के रंगकर्मी थे।

इस मंडली का पहला नाटक था 'शाहजादा शियावक्ष'। यह ईरानी भाषा में खेला गया। इसका अभिनय शंकरशेट की नाटकशाला में हुआ। इसमें भीखाजी कलियाणी वाला ने शियाबक्ष का अभिनय किया था। माणिक जी मास्टर अफससी आब का वजीर पीरान बना था। फरामजी

१. डा० धनजीभाई न० पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख, पृ० २०७।
('ए मंडलीए बे जनम लीधेला मने याद छे:)

२. डा० धनजीभाई न० पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख, पृ० २०६।
(अल्फ्रेड नाटक मंडली मुंबई मां १८७१ सालमां कांइक चमत्कार करवा बरपा थई हती।)

३. वही : पृ० २०६
(आलफ्रेड नाटक मंडलीना एक आगेवान स्थापक मि० बापासोला.......
आ खरशेदजी बापासोला आलफ्रेड नाटक मंडलीना एक स्थापक हता)

४. वही : पृ०, २१३ (ते आलफ्रेड नाटक मंडलीना आगला मालेको मांहेला एक मि० माणिकजी जीवनजी मास्तरजी पण हता.)।

जोशी ने भी इसमें अभिनय किया था। दादी रतन जी दलाल ने इस नाटक में बढ़िया सीन-सीनरी बनाई थी।

अल्फ्रेड नाटक मंडली ने 'शाहजादा शियावक्ष' के बाद 'जहाँबख्श गुलरुखसार' खेलने का तय किया। उस समय जोरास्ट्रियन क्लब और विक्टोरिया नाटक मंडली के ईरानी नाटकों के खेल से काफी धूम मची थी। अल्फ्रेड नाटक मंडली को इनसे होड़ लेनी थी। इसलिये मंडलियों के सदस्यों में विचार आया कि कोई ऐसी नई बात करनी चाहिए जिससे कि अल्फ्रेड का नाम हो। बापासोला ने अन्य सदस्यों को सुझाया कि जिस दिन नाटक होने वाला हो उस दिन पारसी मोहल्लों में जाकर अपने नाटक का विज्ञापन जोर-जोर से चिल्लाकर करें। इसमें उनका मुख्य उद्देश्य यह था कि इस नाटक में जो चमत्कारिक दृश्य थे उनसे लोगों को अवगत कराएँ। चमत्कारिक दृश्य के बारे में इस रूप में वे चिल्लाते थे—'एक देव का आकाश में से कूद कर अपने जादू के प्रयोग से गुलरूखसार को पकड़ कर हवा में अदृश्य कराना', 'देवों का पृथ्वी के अन्दर समाना और परियों का हवा में उड़कर आसमान में जाना' इत्यादि। इस प्रकार चिल्ला-चिल्लाकर लोगों का ध्यान अपने नाटक की ओर आकृष्ट किया जाता था।

'जहाँबख्श गुलरुखसार' का निर्देशन हीरजी भाई खंभाता ने किया था और उसमें खुरशद जी बापासोला जिन्न बने थे। इस नाटक की लोकप्रियता का मुख्य कारण था उसके चमत्कारिक दृश्य। इन चमत्कारिक दृश्यों को बनाया था दादी रतन जी दलाल ने। जिस यांत्रिक दृश्य में गुलरुखसार को हवा में ऊपर उड़ना था उस दृश्य में गुलरुखसार को अपने बगल में पकड़ कर कूदने का काम करने को एक भी अभिनेता तैयार नहीं था। दादी दलाल ने बहुतों को समझाया कि इसमें किसी को नुकसान नहीं पहुँचेगा। तब भी कोई तैयार नहीं हुआ। इस काम के लिए अन्त में दादी मिस्त्री तैयार हुए। दादी मिस्त्री स्वयं एक कुशल बढ़ई थे और अच्छे अभिनेता भी। वे इस यांत्रिक चमत्कार की रचना से भली भाँति परिचित थे। इस कृत्य के कारण नाटक की दुनिया में वे जल्दी प्रख्यात हुए।

'जहाँबख्श गुलरुखसार' के बाद अल्फ्रेड नाटक मंडली ने शेक्सपियर के 'टेमिंग आफ द श्रू' के गुजराती अनुवाद का मंचन किया। फिर हीरजी खंभाता द्वारा लिखित 'आबे इबलीस' का आरंगण दादी ठूँठी के 'हिंदी थियेटर' में हुआ। इसमें मुख्य भूमिका हीर जी खंभाता ने निभाई थी। कुल इतने नाटक खेलने के बाद अल्फ्रेड नाटक मंडली शिथिल हो गई। सन्

१८७७-७८ ई० के आस-पास नाना भाई रुस्तम जी राणीना का संबंध इस मंडली से जुड़ा।[1]

१८७७ ई० में कावसजी पालन जी खटाऊ मिस मेरी फेंटन को साथ लेकर नाटक खेलने के इरादे से दिल्ली से बंबई आये। दोनों मिलकर एक क्लब के रूप में ग्रांट रोड के एकाध थियेटर में नाटक करने की कोशिश में रहे। उन्होंने दो-एक नाटक खेले भी। कावस जी खटाऊ को आशा थी कि लोग यह सुनकर कि एक अंग्रेज महिला उर्दू भाषा में रंगमंच पर गाती और अभिनय करती है, नाटक देखने टूट पड़ेंगे। पर खटाऊ की आशा निराशा में बदल गई। खटाऊ के नाटकों की असफलता के निम्नलिखित तीन कारण थे—

(१) मेरी फेंटन की पर्याप्त पूर्व-तैयारी नहीं हुई थी।
(२) स्वयं खटाऊ उस समय अनुभवी अभिनेता नहीं थे।
(३) आर्थिक अभाव के कारण ठीक विज्ञापन नहीं कर सके थे।

नाना भाई राणीना को खटाऊ के बारे में उड़ती खबर मिली कि दिल्ली से एक पारसी लड़का एक अंग्रेज महिला को अपने साथ लाया है और उसके खेले गये नाटक असफल हुए हैं और वह आगे अपना काम चलाने में असमर्थ है। बाद में उन्हें पता चला कि वह बात सच थी। खटाऊ से मुलाकात होने पर राणीना ने खटाऊ के क्लब को धन-मन से मदद देने की बात कही और उस प्रकार की सहायता भी दी। इसी क्लब को अल्फ्रेड नाम दिया।[2] इसीलिये कुछ इतिहासकारों ने लिखा है कि कावस जी खटाऊ ने अल्फ्रेड नाटक मंडली की स्थापना की।

---

१. डा० धनजी भाई न० पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख पृ० २१५।
(ई० सं० १८७७-७८ना सालमां आ आलफ्रेड नाटक मंडली साथ निकटना संबंधमां आवेला साहेबो, धोबी तलाव ऊपर रहता हता, ए तमारे जाणवु जरूर नु छे। आलफ्रेड नाटक मंडली ने, पोताना लागवग, अने बलकलनो टेको अने मदद आपी तेने उभी करनार, ते वखतना जाणीता शेहरी मरहूम नाना भाई रुस्तम जी राणीना हता.)।

२. डा० धनजी भाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख पृ० २७६।
(..........एक क्लब नु काम मरहुम नाना भाई नी मदद अने राहबरी हेठल ठीक गबडतु थयु हतु, केम के नाना भाई ए खटाऊनी क्लबने गबड़ती करवा पुरती दिलसाजी अने नाणांनी मदद बरीक करी हती। ए क्लब नु नाम अलफ्रेड आप्यु हतु)।

सन् १८८१ ई० में नानाभाई रुस्तम जी राणीना ने अल्फ्रेड नाटक मंडली को अनेक कलाकारों को लेकर फिर सजीव किया।[1] 'चंद्रावली' नाटक को तैयार किया। इस नाटक को लेकर इसी साल मंडली दिल्ली गई। वहाँ 'चंद्रावली' खेलकर मंडली लौट आई। 'चंद्रावली' के बाद 'हरिश्चंद्र' को तैयार किया। बंबई में १८८३ में इसे खेला। १८८४ में यही नाटक लाहौर में खेला। इसी वर्ष समाप्त हुई उत्तेजक नाटक मंडली के सभी सामान परदे, ड्रेस इत्यादि राणीना ने अल्फ्रेड नाटक मंडली के लिये खरीद लिए। इन्होंने 'फरामजी कावस जी हाल' में एक मंच बंधवाया। वहीं मेरी फेंटन से खेल करवाते थे। यहाँ मेरी फेंटन अपने कार्य से कीर्ति कमा रही थी। उर्दू नाटक के बाद मेरी फेंटन यहीं एक पारसी फार्स करने लगी।

राणीना ने कावस जी खटाऊ की मदद जिस धन द्वारा की थी उस खुद के धन की सुरक्षा के लिए उन्होंने तीन विश्वसनीय गृहस्थों को कंपनी का भागीदार बनाया।[2] उन भागीदारों के नाम निम्न प्रकार थे—

(१) माणिक जी जीवन जी मास्टर।

(२) कावस जी पालन जी खटाऊ।

(३) महमद अली।

इसके बाद माणिक जी जीवन जी मास्टर को मंडली का मैनेजिंग प्रोपाइटर बनाया। पैसे संबंधी सारा व्यवहार और हिसाब-किताब इनके जिम्मे किया। उस समय कंपनी में अन्य कार्यकर्ता निम्न प्रकार थे—

कलाकार : रतनशा दावर, डीसाभाई मालेगाम, फीरोजशा एलरिया, खुरशेद जी चिनाई, फरामी दारूवाला, नौरोजी पादरी, अरदेशर हीरा माणेक।

नारी पात्र का अभिनय करने वाले : कैखशरु लाल, जमशेद जी असलाजी, पेस्तन ठेढ़ी, रणछोड़ दास।

---

१. डा० धनजी भाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख।
पृ० २१३। (एक रोज ई० स० १८८१ ना सालमां बुंबई शहेरना एक आगे वान गृहस्थ, अने एक पक्का जर्नालिस्ट अने जाहेर लेखक नानाभाई रुस्तमजी राणीना ए कुंभकरणनी ऊंघमां पडेली आगला वखत वाला आलफ्रेड नाटक मंडली ने, ते वखतनी जुदी-जुदी नाटक टोलीओना आगेवान एक्टरों ने भेगा करी, पोतानी रेहबरी अने जाती देखरेख हेठक तेने पाछी सजीवन करी हती)।

२. वही—पृ० २१७।

गायक वृंद : मोहनलाल मास्टर—हारमोनियम वादक, हाजी मीठा-सारंगी वादक, शंकरराव—तबला वादक।

सन्निवेशक : गणपत राव पेंटर और पिंटो।

परदे वाले : रावत और घाटी धीरूगनी।

नृत्य शिक्षक : एदल जी बेराम जी, चीचगर (एदू सेलानी)।[1]

बुधवार, २४–९–१८८४ को क्राफर्ड मार्केट, बंबई में 'तिलस्मे सुलेमान उर्फ अकसीरे आजम' नाटक कंपनी द्वारा खेला गया। फिर बुधवार १–१०–१८८४ को उसी स्थान पर 'तिलस्मे जमशेद' का अभिनय हुआ। तीन दिन बाद ही याने शनिवार ४–१०–१८८४ को फिर उसी स्थान पर 'अलीबाबा चालीस चोर' का मंचन हुआ। बुधवार, २०–५–१८८५ को क्राफर्ड मार्केट में ही 'हरिश्चंद्र' खेला गया। इसमें फरामजी गुस्तादजी दलाल, कावसजी कोहीदाख और होरमसजी मोदी ने अभिनय किया था। उसके बाद २८-११-१८८५ को गेइटी थियेटर में नसरवानजी खानसाहब 'आराम' का लिखा हुआ नाटक 'पद्मावत' मंचस्थ हुआ।[2] एदू सेलानी, मिस मेरी फेंटन और खटाऊ के साथ इस कंपनी को लेकर राणीना एक बार रावलपिंडी भी गए थे। वहाँ उन्होंने 'भाज् का तमाशा' नामक उर्दू नाटक दिखाया। इससे काफी आमदनी हुई।[3] १८८६ ई० में फिर कंपनी शिथिल हो गई। कुछ समय के बाद कावसजी पालनजी खटाऊ ने मंडली की बागडोर सम्हाली। उन्होंने सोराब जी ओगरा को निर्देशक नियुक्त किया। इस समय तक अमृत केशव और मेरी फेंटन ने इस कंपनी में काफी ख्याति पाई थी। १७-११-१८८८ को नसरवानजी खानसाहब 'आराम' कृत 'बीमारे बुलबुल उर्फ जईफी' नामक नाटक अल्फ्रेड थियेटर में खेला गया। सोहरावजी ओगरा ने इस नाटक का निर्देशन किया था। इसके अन्य कलाकार थे—अमृत के० नायक, पन्नालाल के० नायक, लल्लूशंकर लीलाधर केवलराम। फिर २४-८-१८८९ को मुरादअली 'मुराद' का लिखा 'किस्मत का सितारा उर्फ अलीबाबा चालीस चोर' का मंचन हुआ। इसमें रतनशा दावर, खरशेदजी चिनाई आदि ने अभिनय किया था। १२-४-१८९० को गेइटी थियेटर में बमनजी कावराजी लिखित 'गामड़ा

---

१. डा० सौ० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायण प्रसाद 'बेताब' पृ० ६८।

२. डा० सौ० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायण प्रसाद 'बेताब' पृ० ६८ :

३. डा० धनजीभाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख पृ० २३८।

नी गोरी' खेला गया। इसमें अमृत के० नायक और फेंटन ने काम किया था।[1] कंपनी बंबई से पूना गई फिर दो महीने बाद अहमदनगर पहुँची। वहाँ से वह हैदराबाद गई। हैदराबाद से २६ मार्च १८६१ को कंपनी बंबई लौट आई।

खटाऊ की धारणा थी कि कंपनी में मेरी फेंटन के रहने से बहुत लाभ होगा। माणिकजी मास्टर मेरी फेंटन को कंपनी में रखने के खिलाफ थे। इस संघर्ष का परिणाम यह हुआ कि १८६० ई० में माणिकजी मास्टर और मोहमद अली, सोराबजी ओगरा के साथ अलग हो गए। अब कावसजी खटाऊ अल्फ्रेड के एकमात्र मालिक हो गए। खटाऊ ने अमृतलाल केशव को अपने यहाँ निर्देशक नियुक्त किया।[2]

शनिवार, ३०-५-१८६१ को मुरादअली 'मुराद' का लिखा 'अलाउद्दीन उर्फ अजीबोगरीब चिराग' नोवल्टी थियेटर में खेला गया। इसमें मेरी फेंटन, वदरूल बादर ने काम किया था। शनिवार, २६-३-१८६२ को काबराजी कृत 'भोलीगुल उर्फ गुल्नी भूल' उसी थियेटर में मंचस्थ हुआ। इसमें भी मेरी फेंटन ने अभिनय किया था। शुक्रवार, २४-६-१८६२ को फिर उसी थियेटर में 'ताराखुरशीद' नामक नाटक खेला गया जिसमें मेरी फेंटन ने काम किया था। मंगलवार, १-१-१८६५ के दिन गेइटी थियेटर में काबराजी कृत 'कलयग' का अभिनय हुआ। इसमें मेरी फेंटन के साथ मिस खयमन ने भी भाग लिया था। फिर बुधवार १५-६-१८६५ को नावेल्टी थियेटर में 'अहसन' लखनवी का लिखा 'खूने नाहक' मंचित हुआ। इस नाटक के कलाकार निम्नलिखित रूप में थे।

अमृत के० नायक : (निर्देशक एवं संगीतज्ञ) जोहरूजिन्नसा
कावसजी खटाऊ : हेमलेट
अता मोहम्मद : फरुख
जोसेफ डेविड : अखतर
मास्टर मोहन : मेहरबानो
हुमायूँ : मरांडा
वल्लभ केशव नायक : रेहाना
रामलाल वल्लभ : फरजीना

१. डा० सौ० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायणप्रसाद 'बेताब' पृ० ६८-६६।
२. डा० 'अज्ञात' : पारसी रंगमंच—नागरी पत्रिका, मार्च अप्रैल १९६८—पृ० १०५।

पन्नालाल : प्रभुदास लहरी

यह नाटक हर शनिवार की रात्रि में और इतवार को दिन में खेला जाता था। ५४ बार इसे खेला गया। 'खूने नाहक' के बाद कंपनी ने 'अहसन' लखनवी का लिखा नया नाटक 'बज्मेफानी' को खेलने को लिया। इंग्लैंड से आये मेहमानों के लिए पुलिस कमिश्नर विंसेट की इच्छा से बुधवार, २८-९-१८९८ को इसका अभिनय हुआ। फिर ९-११-१८९८ को नावेल्टी थियेटर में इसका मंचन हुआ। इसके कलाकार थे—

अमृत के० नायक : (निर्देशक एवं संगीतज्ञ) प्यारीस (असगर)
कावसजी खटाऊ : (रोमियो) खुशरू
मास्टर मोहन : (जूलियेट) शिरीन
वल्लभ केशव नायक : (हेलन) सोसन
रामलाल वल्लभ : गुलनार
पन्नालाल : बशीर

यह नाटक भी हर शनिवार को रात को और हर इतवार को दिन में खेला जाता था।

गुरुवार ६-४-१८९९ को 'नावेल्टी थियेटर' में 'आगा हश्र' कृत 'मुरीदेशक' खेला। अमृतलाल केशव नामक ने इस नाटक का निर्देशन किया था। अन्य कलाकार ये थे—

कावसजी खटाऊ : बादशाह
फरामजी : चौकशी
पन्नालाल : दरोगा का बेटा
रामलाल : रामा
मास्टर मोहन : हुस्नआरा
वल्लभ केशव नायक : गुलनार
अमृतकेशव नायक : हमीदा

हर शनिवार की रात्रि को यह नाटक खेला जाता था।

१६-११-१८९९ को नावेल्टी थियेटर में ही 'आगा हश्र' का लिखा 'मारे आस्तीन' का मंचन हुआ। अमृत केशव नायक ही नाटक के निर्देशक थे।

अता मोहम्मद : मिरजा बेग
अमृत केशव नायक : अशरफ
कावसजी खटाऊ : मसलान
फरामजी चौकसी : दमड़ी बेग

पन्नालाल : दूधवाला
मास्टर मोहन : परवीन
रामलाल वल्लभ : बिजली
वल्लभ केशव नायक : सलीमा

नाटक हर शनिवार रात को खेला जाता था। दि० २४-४-१९०० को यह नाटक खेलकर कंपनी दिल्ली गई। वहाँ पन्नालाल का देहान्त हो गया। दिल्ली में रामा थियेटर में 'हरिश्चंद्र' खेला गया। इसमें कावसजी खटाऊ 'नक्षत्र' बने थे और अमृत केशव नायक 'हरिश्चंद्र' इसके बाद वहाँ उसी थियेटर में 'आगा हश्र' कृत 'असीरे हिर्स' का अभिनय हुआ। इसका निर्देशन भी अमृत केशव नायक ने ही किया था। फिर भी प्रांप्टर उमेदभाई शापुरजी भेदवार ने कई दृश्यों का मार्गदर्शन किया था। इस नाटक के कलाकार थे—

अमृत केशव नायक : नासिरुद्दौला
परसोत्तम नायक : महजबीन
कावसजी खटाऊ : चँगेज़
मास्टर मोहन : नौशारवा
फरामजी चौकसी : रुस्तम
वल्लभ केशव नायक : हसीना
मंचेरशा करारिया : सफदरजंग
रामलाल वल्लभ : झभट

कंपनी दिल्ली से लखनऊ गई। वहाँ ये ही सभी नाटक खेले गए। रानी विक्टोरिया के देहावसान के कारण एक सप्ताह नाटक नहीं खेले गए। नौचंदी के मेले पर कंपनी लखनऊ से मेरठ गई। अप्रैल १९०१ को कंपनी लौटकर बंबई वापस आई।

रायल थियेटर बंबई में शनिवार २२-४-१९०१ को 'अहसन' लखनवी लिखित 'चंद्रावली' नाटक अभिनीत हुआ। अमृत केशव नायक ने इस नाटक का निर्देशन किया था। बुधवार, २८-८-१९०१ को 'आगा हश्र' कृत 'असीरे हिर्स' खेला गया। फिर गुरुवार, २९-८-१९०१, शनिवार, ३१-८-१९२१ को यह नाटक अभिनीत हुआ। इस नाटक को हर शनिवार रात को और इतवार को सुबह खेलते थे। १४-४-१९०२ को यह नाटक खेलकर कंपनी हैदराबाद चली गई। वहाँ से दरबार के समय कंपनी दिल्ली गई। दिल्ली में लाल किले के पास के मैदान में नाटक खेले गए। वहाँ उस्ताद नन्हे खाँ को संगीतज्ञ

के रूप में कंपनी में नियुक्त कर लिया। यहाँ १९०३ में 'आगा हश्र' कृत 'शहीदे नाज़' खेला गया। इस नाटक के कलाकार थे—

अमृत केशव नायक : (निर्देशक) जमील
फराम जी चौकसी : जहाँदार
कावस जी खटाऊ : सफदर जंग
जोहरा : सईदा

दिल्ली से कंपनी लखनऊ गई। वहाँ से मद्रास पहुँची। नवंबर १९०३ ई० तक कंपनी लौटकर बंबई आ गई। बंबई में कोरोनेशन थियेटर में १८-११-१९०३ को 'लैला' नाटक खेला गया। बंबई में हैदराबाद निजाम सरकार के बालकेश्वर स्थित निवास स्थान 'कोजी कारनेर' में बनाये गये मंडुवे में नाटक खेले गये। सन् १९०४ ई० में प्रख्यात अभिनेत्री गौहर को कंपनी में नियुक्त कर लिया। गुरुवार, २१-४-१९०४ रात को सेठ बम्मन जी दिनशा पेटिट की अध्यक्षता में गेइटी थियेटर में 'खूने नाटक' का अभिनय हुआ। इसमें मिस गौहर ने मेहरबानो की भूमिका निभाई थी। कंपनी की अभिनेत्रियों की भूमिकाएँ इस प्रकार रहीं—

दिनांक	नाटक	गौहर	जौहरा
१४-५-१९०४	बज्मेफानी	सोसन	नूरजहाँ
१८-५-१९०४	लैला		लैला
२१-६-१९०४	मारे आस्तीन	बिजली	परबीज
२२-६-१९०४	चंद्रावली	चंद्रावली	कमलावती, मालन
३-८-१९०४ (बुधवार)	शहीदे नाज	सईदा	नाजनी
१९-११-१९०४ (शुक्रवार)	असीरे हिर्स	महेज़बीन	हसीना

('असीरे हिर्स' की पूरी आमदनी 'नेशनल कांग्रेस' को दी)।
(इन्हीं दिनों अमृत केशव नायक ने त्याग-पत्र दे दिया)।

रविवार २७-११-१९०४ को 'शहीदे नाज' खेलकर कंपनी कलकत्ता गई। वहाँ मंचेरशा छापगर निर्देशन का काम देखने लगे। कलकत्ते में यह कंपनी विशेष लोक प्रिय थी। "Mr. Khatao with his Alfred Company next showed performances in Calcutta, Burmah and other places and subsequently he made Curzon Theatre the place of his activities and was so much identified with it that people used to call the place as "Alfred Theatre" after the name of his Theatrical company."[1]

---

१. डा० एच० एन० दास गुप्त : The Indian Stage Vol. IV 1944 Ed. P. 229.

कलकत्ते में आगा 'हश्र' ने भी कंपनी छोड़ दी। मास्टर मोहन, हाथीराम, रामलाल वल्लभ भी अलग हो गये। यहाँ से कंपनी दिल्ली गई। वहाँ उमेद भाई और परसोत्तम नायक ने त्याग-पत्र दे दिया। कंपनी वहाँ से लखनऊ पहुँची। वहाँ मिस गौहर ने भी नौकरी छोड़ दी।

डा० सोमनाथ गुप्त ने 'हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास' में लखनऊ के निवासी सैयद मेंहदी हसन 'अहसन' को इस कंपनी का नाटककार बताया है।[1] जब कि उन्हीं ने अपने नवीनतम प्रबंध में कहा है कि मुराद अली 'मुराद' मंडली के नाटककार थे।[2]

सन् १९०९ ई० में पं० नारायण प्रसाद 'बेताब' कंपनी के वैतनिक नाटककार हुए। १७५) मासिक पर उनकी नियुक्ति हुई थी। उस समय कंपनी में आर्टिस्ट थे भवानीदत्त शर्मा लाहौरी।[3]

डा० ए० ए० नामी के अनुसार 'आसिफ' ने अल्फ्रेड नाटक मंडली के लिए सन् १९११ ई० में 'इंतेकाम' लिखा था और १२ अगस्त को पहली बार स्टेज किया गया।[4] डा० सौ० वि० ल० नम्र ने 'इंतकाम' के बारे में नीचे की जानकारी दी है[5] :—

तौवाशिकन उर्फ इंतकाम (१२-८-१९११)

इस नाटक की कोई भी चीज़ प्राप्त नहीं है, हाँ कावस जी खटाऊ के महाभारत नाटक के गानों की पुस्तिका में जो खटाऊ के दुःखी दिल की दास्तान छपी है, उस पर से निम्न बातें प्रकाश में आई हैं[6] :—

"यह नाटक शनिवार, तारीख १२ अगस्त, १९११ ई० को कॉरोनेशन थियेटर, बंबई में खेला गया था। पुराने इंतकाम नाटक पर से लगभग पूरा नया नाटक तैयार किया गया है। पुराने नाटककार के प्रति न्याय करने की दृष्टि से सेठ कावसजी खटाऊ ने नाटक का नाम परिवर्तित नहीं किया।

१. डा० सोमनाथ गुप्त : हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास पृ० १४३ :
२. डा० सोमनाथ गुप्त : पारसी थियेटर : उद्भव विकास और नाट्य में योगदान (अप्रकाशित) पृ० १९८।
३. नारायण प्रसाद : 'बेताब' चरित्र पृ० ८८।
४. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ७।
५. डा० सौ० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायण प्रसाद 'बेताब' पृ० २०२।
६. सेठ कावसजी खटाऊ : 'महाभारत के गाने', प्रथम आवृत्ति ता० १-५-१९१५ शनिवार, बम्बई।

यद्यपि पुराना नाटक अपने काल की पूरी असफलता थी, तथापि उसका वहुतांश खटाऊ को पसंद आने के कारण नये सिरे से उन्होंने नाटक तैयार किया। ………… ।"

डा० नम्र ने इस नाटक को नारायण प्रसाद 'बेताव' का माना है और डा० नामी ने 'आसिफ' का।

गुजराती की एक कंपनी में 'सती द्रौपदी' खूब चला जिसे देखकर कावसजी खटाऊ ने 'बेताब' से 'महाभारत' लिखवाया।[1] २९ जनवरी १९१३ को यह नाटक दिल्ली के संगम थियेटर में खेला गया।[2] 'महाभारत' की पात्र-रचना इस प्रकार थी—

कावसजी खटाऊ	: दुर्योधन
ग्रोहर	: धृतराष्ट्र
महवूव	: द्रोणाचार्य
मुंशी इस्मत अली	: दुःशासन
कैकई रजना	: प्रातकामी
जहाँगीर खटाव	: विक्रम
अता महम्मद खाँ	: धर्मराज[3]

'महाभारत' के वाद 'बेताब' कृत 'रामायण' १९१५ ई० में खेला गया। कंपनी दिल्ली से लाहौर गई।

'अल्फ्रेड नाटक मंडली' द्वारा 'बेताव' के निम्नांकित अन्य नाटक[4] अभिनीत एहु—पत्नी प्रताप, कृष्ण सुदामा, शंख की शरारत, गोरख धंदा, मीठा जहर, कसौटी।

अमृतलाल नागर के अनुसार "खटाऊ जी की कंपनी ने 'रामायण', 'महाभारत', 'बिल्वमंगल', 'श्रवणकुमार', 'यहूदी की लड़की', 'पत्नी प्रताप', 'धर्म विजय' आदि कई सफल नाटक खेले। मिस ज़रीना इन नाटकों में हिरोइन का काम किया करती थी। 'यहूदी की लड़की' नाटक में मिस पुतली और आगा मुहम्मद शाह के अभिनय की धूम थी। मिस सँवरिया का का नाम भी सरनाम था।"[5]

---

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० ३५।
२. डा० सोमनाथ गुप्त : पारसी थियेटर : उद्भव, विकास और नाट्य में योगदान (अप्रकाशित) पृ० १९८।
३. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर दूसरा भाग पृ० २२४।
४. 'वेताव' लिखित 'कृष्ण सुदामा' में दी गई विज्ञप्ति के आधार पर।
५. अमृतलाल नागर : पृथ्वीराज कपूर अभिनन्दन ग्रन्थ—सं० देवदत्त शास्त्री पृ० २९२।

नाटक कंपनियों को अखबारी दुनिया से बहुत सचेत रहना पड़ता था। 'आलोचनात्मक लेख' बहुत निकलते थे—उन लेखों में आलोचक की पसंद अधिक रहती थी—कावसजी खटाऊ की 'पारसी अल्फ्रेड' तो इसी कारण कमजोर पड़ी और 'मैडन थियेटर्स' के हाथ बिकी। 'कावसजी' का भी इसी दुःख में देहावसान हुआ।[१] डा० वेदपाल खन्ना के अनुसार सन् १९१४ ई० में लाहौर में कावसजी खटाऊ की मृत्यु हुई। उनके पुत्र जहाँगीर ने चार वर्षों तक कंपनी का संचालन किया। फिर उसे मदन को बेचा।[२] डा० सोमनाथ गुप्त का कथन है कि सन् १९१६ ई० में लाहौर में जब मंडली थी, खटाऊ की मृत्यु हो गई।[३] 'बेताब' जी के अनुसार कंपनी जब लाहौर में थी, वहाँ पथरी के आपरेशन में कंपनी के मालिक कावसजी पालनजी खटाऊ का शरीरांत बुधवार, १६ अगस्त १९१६ को हुआ।[४] फिर उनके पुत्र सेठ जहाँगीर ने कंपनी की बागडोर सम्हाली। डॉ० हेमेंद्रनाथ दास गुप्ता लिखते हैं कि सन् १९१७ ई० में जे० सी० खटाऊ इस कंपनी के मालिक हुए। (·······In 1917, Mr. J. C. Khatao became the propriter).[५] केवल डा० पवनकुमार मिश्र ने उल्लेख किया है कि कंपनी में आग लगने के कारण कंपनी बंद हो गई।[६]

उपर्युक्त विवरण से ऐसा चित्र सम्मुख आता है कि सन् १६-८-१९१६ ई० में लाहौर में कावस जी खटाऊ की मृत्यु हुई। अगले वर्ष अर्थात् सन् १९१७ में कावसजी के पुत्र जहाँगीर अल्फ्रेड के मालिक बने। 'बेताब' ने बीच में कंपनी छोड़ दी थी मगर सेठ जहाँगीर ने उन्हें बुलाकर ५००) पर नियुक्त किया और 'पत्नी प्रताप' खेला।[७] माइल देहलवी ने 'तेग-ए-सितम' नामक नाटक भी इस कंपनी के लिये लिखा था।[८] किंतु कंपनी कमजोर

१. डा० राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल पृ० १२६।
२. डा० वेदपाल खन्ना : हिंदी नाटक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन पृ० ८९।
३ डा० सोमनाथ गुप्त : पारसी थियेटर उद्भव विकास और नाट्य में योगदान (अप्रकाशित) पृ० १९८।
४. नारायण प्रसाद बेताब : बेताब चरित्र पृ० ११५।
५. Dr. H. N. Dasgupta : The Indian Stage Vol. IV पृ० २३०।
६. डा० पवनकुमार मिश्र : पारसी रंगमंच, उसके नाटक और नाटककारों का आलोचनात्मक अध्ययन (अप्राकाशित) पृ० १७३।
७. नारायण प्रसाद 'बेताब' : 'बेताब' चरित्र पृ० ११५।
८. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ९७।

होती जा रही थी। इसलिए सन् १९१८ ई० में 'मैडन थियेटर्स' के हाथ बिकी।

'मैडन थियेटर्स' के अधीन रहते हुए 'अल्फ्रेड' में नारायण प्रसाद 'बेताब' का 'गणेश जन्म' कलकत्ते में खेला गया। उसकी सीनरी दीनशा ने इतनी लाजवाब बनाई थी कि सीनरी पर ही नाटक को पास होना चाहिए था। डा० 'अज्ञात' के अनुसार 'सन् १९२७ ई० से १९३२ ई० तक के बीच इस मंडली ने 'हश्र' के 'आँख का नशा' और 'दिल की प्यास' तथा 'बेताब' के 'कृष्ण सुदामा' नाटकों को कलकत्ते में प्रस्तुत किया।[1]

डा० ए० ए० नामी के अनुसार[2] मदन थियेटर्स लिमिटेड के अंतर्गत स्थित पारसी अल्फ्रेड थियट्रिकल कंपनी ऑफ बाँबे के लिये आगा 'हश्र' ने 'भगीरथ गंगा' लिखा। यह उनका दूसरा हिंदी नाटक था। एम० एस० जोहर ने इस नाटक में मामूली परिवर्तन कर इसे 'भागीरथी' के नाम से भाई दयालसिंग एंड संस, लाहौर की तरफ से छपवाया। यह नाटक कलकत्ते में पहली बार मंचित हुआ। इसमें जिन रंगकर्मियों ने भाग लिया था उनका विवरण निम्न प्रकार है—

खुरशीद जी विलिमोरिया : भगीरथ
सैयद हसन चंदा : महादेव
महमद हुसेन : किसान
माधव : गंगा
वीरा पहलवान उर्फ अमीरुद्दीन : जयपाल डाकू
मिस गोहर : रानी

डा० नामी आगे लिखते हैं[3] कि आगा 'हश्र' ने उसी कंपनी के लिए सन् १९१५ ई० में 'हिंदुस्तान' नामक रूपक लिखा। पहली रात के रंगकर्मी इस प्रकार थे:—

पहला ड्राप हुमायूँ :—दादाभाई सरकारी : हुमायूँ
खुर्शीदजी वंडरफुल : बेराम खाँ
कैकी अदा जानिया : कामरान
गोवर्द्धन दास : इब्ने कामरान
नर्मदा शंकर : हमीदा बानू

१. डा० 'अज्ञात' : पारसी रंगमंच-नागरी पत्रिका मार्च-अप्रैल १९६८ पृ० २०७।
२. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर दूसरा भाग पृ० २५२।
३. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर दूसरा भाग पृ० २५३।

दूसरा ड्राप–श्रवण कुमार :–

पोरन	: श्रवणकुमार
कैकी अदा जानिया	: श्रवणकुमार के पिता
दादाभाई सरकारी	: राजा दशरथ
मिस गौहर	: श्रवणकुमार की माँ

तीसरा ड्राप—दौरे जदीद :–

कैकी अदा जानिया	: बैरिस्टर
नर्मदा शंकर	: बैरिस्टर की बीवी
सैयद हसन चंदा	: बैरिस्टर के पिता
दादाभाई सरकारी	: कांग्रेसी लीडर
मिस गौहर	: दो बच्चे वाली औरत

१९२२ में आगा 'हश्र' ने इसी कंपनी के लिये 'तुर्की हूर' लिखा। इसमें भाग लेने वाले कलाकार निम्न प्रकार थे[1] :–

दादाभाई सरकारी	: आरिफ
नर्मदा शंकर	: रशीदा
सूरजराम	: गानम
सैयद हसन चंदा	: शाह जियाद
मनीलाल	: अनवर-बे
मोहन	: अयाज
हाफिज महम्मद अब्दुल्ला	: हामिद बे
लैला	: चपला

१९२४ में उसी कंपनी के लिये आगा 'हश्र' ने 'आँख का नशा' लिखा। इसे खेलने वाले अदाकारों का विवरण[2] यों है :–

शरीफा	: तवाइफ
पूनमचंद्र	: नायिका
दादाभाई सरकारी	: जुगल
महम्मद इस्सहाक	: बेनी प्रसाद
नर्मदा शंकर	: जुगल की बीवी
सूरजराम	: मारवाड़ी

१. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर दूसरा भाग पृ० २५५।

२. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर दूसरा भाग पृ० २५६।

१९२९ को आगा 'हश्र' ने 'भीष्म प्रतिज्ञा' लिखकर मदन थियेटर्स को वेचा। भीष्म प्रतिज्ञा के अभिनेता निम्न प्रकार थे[1] :—

दादाभाई सरकारी	: भीष्म
महम्मद हुसेन	: भीष्म के पिता
सूरजराम	: मछुआ
पूरनचंद	: कृष्ण
बाबू गुलाम कादिर	: दुर्योधन
फ्रामजी भरोचा	: दुर्योधन का छोटा लड़का
हाफीस महम्मद अब्दुल्ला	: शकुनि
मत्स्यवाला	: पार्वती
शरीफा	: काशी की रानी
महम्मद इस्सहाक	: एक राजा

('अल्फ्रेड' द्वारा खेले गए नाटकों का विवरण डा० विद्यावती ल० नम्र की पुस्तक से उद्धृत है)।

नाटक उत्तेजक मंडली

सन् १८७४-७५ ई० विक्टोरिया क्लब में दादी पटेल ने 'इंद्रसभा' खेल के लिए बेगमों को नियुक्त कर लिया। स्त्रियों को नाटक मंडली में लेने के संबंध में मतभेद था। दादी पटेल के अतिरिक्त अन्य मालिक इसके पक्ष में नहीं थे। फलतः फरामजी गुस्तादजी दलाल, कावसजी नसरवानजी कोही-दारू और होरमसजी धनजीभाई मोदी विक्टोरिया नाटक मंडली से अलग हो गए। उस समय गुजराती भाषा में नाटक नहीं होते थे, इसलिए गुजराती भाषा में नाटक खेलने के उद्देश्य से तीनों ने मिलकर नाटक उत्तेजक मंडली की स्थापना सन् १८७४-७५ ई० के आसपास। की केखशरू कावराजी को भी नाटक की दुनिया में विशेष रुचि थी। इन तीनों ने उनकी मदद ली। नई मंडली को सुचारु रूप से चलाने के लिए केखशरू कावरा ने एक कमेटी बनाई। वास्तव में इस मंडली को केखशरू कावरा ने ही 'नाटक उत्तेजक मंडली' का नाम दिया था।

इस मंडली के लिए केखशरू कावरा ने 'सुड़ी बच्चे सोपारी' नामक सामाजिक नाटक ईरानी भाषा में लिखा। दो-तीन महीनों के पूर्वा-भ्यास के बाद इस नाटक का मंचन हुआ, पर यह असफल रहा। इस मंडली की कमिटी में रणछोड़भाई उदयराम नामक गृहस्थ थे। उन्होंने अपना लिखा

१. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर दूसरा भाग पृ० २५८

गुजराती नाटक 'हरिश्चंद्र' खेलने के लिए दिया। इस नाटक को खेलने के लिए कावरा ने धोबी तलाब पर बने फरामजी कावसजी हाल को एक साल के लिए लेकर उसमें कामचलाऊ मंच तैयार किया। 'हरिश्चंद्र' नाटक पूरा साल भर सफलता के साथ खेला गया। अनुबंधक के अनुसार फरामजी कावसजी हाल की अवधि समाप्त हो गई थी। इसलिए नाटक उत्तेजक मंडलीवालों ने क्राफर्ड मार्केट के पास एक लकड़ी का नाट्य-गृह बाँधा। यहाँ रणछोड़भाई उदयराम द्वारा गुजराती में लिखित 'नलदमयंती' नाटक खेला गया। इस नाटक को देखने हिंदू महिलाएँ अधिक आती थीं। उनके छोटे छोटे बच्चे थियेटर में रोते रहते—तो अभिनय में अड़चन उत्पन्न होती थी। इसलिए थियेटर के अहाते में झूले बाँधे गए, औरतें अपने बच्चों को वहाँ छोड़कर जाती थीं, बच्चे रोने लगे तो द्वारपालक से सूचना पाकर उन्हें चुप कराकर फिर नाटक देखने लौट आती थीं। फिर मंडली ने केखशरू का नाटक 'फरीदुन' का अभिनय किया। इसके बाद कवि नर्मदाशंकर लिखित गुजराती नाटक 'सीता-हरण' का मंचन हुआ हुआ। तदनंतर केखशरू कृत 'निंदाखानु' खेला गया। यह नाटक शेरिडन के 'स्कूल फार स्कैंडल' के आधार पर लिखा गया था।

धीरे-धीरे मंडली की आमदनी घटने लगी। मालिकों में आपस में झगड़े होने लगे। अंत में कावसजी नसरवानजी कोहीदारू और होरमसजी धनजीभाई मोदी मंडली से अलग हो गए। अकेले फरामजी दलाल कंपनी के एकमात्र मालिक रह गए। दलाल मंडली में कुछ नवीनता लाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने शंकर बापूजी त्रिलोकीकर के दमयंती स्वयंवर, विक्रम-चरित्र याने शनि ग्रहनो कोप, सुभद्राहरण, चित्रसेन गंधर्व आदि गुजराती नाटक खेले। विक्टोरिया नाटक मंडली से दादी ठूँठी बाहर निकल आए थे। फरामजी दलाल ने ठूँठी से बातचीत की। फलतः दादी ठूँठी नाटक उत्तेजक के साझेदार बने। मालिक के रूप में दादी ठूँठी रोज नाटक उत्तेजक मंडली के साथ एक्सप्लेनेड थियेटर में आते थे। अभी तक रिहर्सल रात को होते थे। दादी ठूँठी ने दिन में पूर्वाभ्यास चलाने का सोचा। इस डे-क्लब के लिए ठूँठी ने एक मुंशी को रखाकर आपेरा लिखवाना शुरू किया। जब उर्दू नाटक 'परिस्तान की परियाँ' लिखना पूरा हुआ तब भिन्न भूमिकाएँ बटीं। फरामजी दलाल को एक छोटी सी भूमिका दी। इस नाटक के लिए नए-नए ड्रेस, सीन-सीनरी परदे आदि बने थे। फरामजी दलाल को लगा था कि दादी ठूँठी इसमें भाग लेंगे और नाटक को खूब सफलता मिलेगी। लेकिन

दादी-ठूँठी ने इसमें भाग नहीं लिया। परिणामतः दो-तीन प्रयोगों में ही नाटक ठप्प हो गया। फरामजी दलाल और दादी ठूँठी दोनों अलग-अलग हो गए। उत्तेजक मंडली बंद पड़ गई और उसकी सारी संपत्ति बेचनी पड़ी। इसे नानाभाई राणीना ने अल्फ्रेड नाटक मंडली के लिए खरीदा।[१]

नाटक उत्तेजक मंडली का इतिहास यहाँ इसलिए दिया गया है कि गुजराती नाटकों के अभिनय के लिए स्थापित होने पर भी अंत में एकाध ही क्यों न हो उर्दू नाटक खेला और उसका सारा सामान अल्फ्रेड को मिला जिसने हिंदी रंगमंच को सुदृढ़ बनाया।

ओरिजिनल विक्टोरिया नाटक मंडली

'विक्टोरिया नाटक मंडली' सन् १८७४ ई० तक ठीक चली। लेकिन उसके बाद दादी पटेल और कुंवरजी नाज़र में आपस में नहीं पटने लगी। इसलिए सन् १८७४-१८७५ ई० के आसपास दादी पटेल विक्टोरिया नाटक मंडली से अलग हो गए और उन्होंने अलग एक नाटक मंडली प्रस्थापित की। उसका नाम रखा गया 'ओरिजिनल विक्टोरिया नाटक मंडली,'।[२] डा० भानुदेव शुक्ल के अनुसार दादाभाई पटेल ने 'विक्टोरिया कंपनी' को नाज़र के हाथ बेचकर सन् १८७७ ई० में 'द ओरिजिनल विक्टोरिया क्लब' खोला।[३]

दादी पटेल ने प्रथम अभिनय के लिए 'इंदरसभा' को चुना। इसके लिए नए परदे नए कपड़े तैयार किये गये। एक नया ड्रापसीन ऐसा बनवाया था जिसमें दादी पटेल ने अपने को बड़ा बताया था और कुंवरजी नाज़र को निम्नकोटि का दिखाया था। इस नाटक में दादी पटेल स्वयं गुलफाम बने थे। 'एलफिस्टन थियेटर' में अभिनीत इस नाटक से 'ओरिजिनल विक्टोरिया नाटक मंडली' ने अपना कार्य प्रारंभ किया। दादी पटेल ने सबसे पहले स्त्री-भूमिका के लिए औरतों को नियुक्त करना प्रारम्भ कर दिया। 'इंदर सभा' के लिए हैदराबाद की चार गाने वाली बेगमों को कंपनी में लिया था। ये बेगमें चार परियों का काम करती थीं। उनमें लतीफा बेगम नाच के लिए प्रसिद्ध थीं। इस मंडली में प्रमुख रंगकर्मी इस प्रकार थे[४] —

१. डा० धनजीभाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख पृ० २८४ से ३०२ के आधार पर।

२. रणधीर उपाध्याय : बंबई पारसी रंगमंच (नागरी प्रचारिणी पत्रिका : वर्ष ६९, अंक ३ सं० २०२१ वि०) पृ० ३२२,३२३।

३. डा० भानुदेव शुक्ल : भारतेंदु युगीन हिंदी नाट्य-साहित्य पृ० २९५ :

४. डा० धनजीभाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख पृ० १३८-१३९।

नसरवानजी मेरवानजी खानसाहेब
पेस्तनजी फरामजी मादन
नसरवानजी फरामजी मादन
कावसजी नसरवानजी दारूवाला
सोरावजी फरामजी ओगरा
खरशेदजी ओमनीबस
खुरशेदजी अस्पांदिआरजी चीनाई
भीखाजी कलिआणीवाला
नसरवानजी दौरावजी पटेल
जमशेदजी दाजी
नसरवानजी (प्रांप्टर)
धनजीभाई फरदुनजी दुभासिया
नवरोजजी आरसीवाला
रतनशा जीवाजी दावर (हास्य-अभिनेता)
रुस्तमजी दादाभाई चीनी-मीनी
गणपत (पेंटर)

इनमें से अधिकाँश अच्छे-अच्छे कलाकारों को दादी पटेल अपने साथ विक्टोरिया नाटक मंडली से लाये थे। वंबई में जवइस मंडली के नाटक सुचारू रूप से चलने चलने तब दादी पटेल अपनी मंडली लेकर दक्षिण की यात्रा पर निकले। सन् १८७६ ई० में मंडली के साथ मैसूर पहुँचे। मैसूर में 'इंद्रसभा' और 'गुलबकावली' का प्रदर्शन हुआ। मंडली मैसूर से मद्रास गई। डा० विद्यावती नम्र के अनुसार जव प्रिंस आफ वेल्स मद्रास गए थे, दादी पटेल भी अपनी कंपनी 'ओरिजिनल विक्टोरिया नाटक मंडली' को लेकर मद्रास गये थे। दादी पटेल ने 'शकुंतला' नाटक में से जोगियों का दृश्य प्रिंस को दिखाया और वदले में पाँच हजार रुपये प्राप्त किये। यहाँ से कंपनी हैदरावाद गई जहाँ दादी पटेल वीमार हो गये।[1] डा० धनजीभाई पटेल के अनुसार मंडली मद्रास से बंगलौर लौट आई। वंगलौर में दादी पटेल वीमार हो गये।[2] वीमार होने पर दादी पटेल वंबई आये। पेट की शल्यक्रिया के कारण १७ मार्च को ३२ वर्ष की अल्पायु में दादी पटेल की मृत्यु हुई।

दादी पटेल के पश्चात् सेठ पेस्तनजी फरामजी मांदन, नसरवानजी

१. जहाँगीर पेस्तनजी खंभाता—मारो नाटकी अनुभव: पृ० ११९ और १५७।
२. डा० धनजीभाई पटेल: पारसी नाटक तख्तानी तवारीख भाग २ पृ० १८४।

फरामजी मादन, काबसजी नसरवानजी दारूवाला और भीखाजी नसरवान जी कलियाणीवाला इस मंडली के भागीदार बने [१]। अन्यत्र चारनामों के साथ धनजीभाई फरेदुनजी घडियाली उर्फ धनजी सेलो का भी नाम भागीदारों में जुड़ा है।[२] नये मालिक गेइटी थियेटर में अपने नाटक खेलने लगे। यहाँ इन्हों ने 'शरारे इश्क' और 'तंबीहुल गुरुर' उर्दू नाटक खेले।

नये मालिक भी मंडली को लेकर फिर सन् १८७७ ई० में मद्रास गये। तब इस मंडली का मंडुवा वर्तमान मद्रास हाईकोर्ट के पास के मैदान में बना था। प्रथम मद्रास यात्रा के कारण वहाँ की जनता दादी पटेल के नाम से परिचित थी। दूसरी यात्रा में दादी पटेल के न रहने पर मालिकों ने दादी पटेल के नाम से विज्ञप्ति निकाली।[३] उस समय विक्टोरिया मंडली भी वहीं थी। दोनों में प्रतिस्पर्धा चल रही थी। मद्रास से मंडली बंगलौर लौटी। वहाँ 'शरारे इश्क' और 'तंबीहुल गुरुर' नाटक खेले गये। जब मंडली ने वहाँ 'बेनजीर बदरेमुनीर' संपूर्ण संगीत नाटक खेला तब हास्य-रस में नीचे की पंक्ति गाई—'मरियम प्यारी मेरी रे, मरियम प्यारी मेरी रे—जाके एक बकरा ला, काट जल्दी।' इस पंक्ति में से मरियम शब्द पर वहाँ के खटिकों ने आपत्ति उठाई, लेकिन दूसरे दिन भी यही गाना गाया गया। इससे झगड़े ने उग्र रूप धारण कर लिया। खटिकों ने कुछ कलाकारों को पीटा। मुकदमेबाजी में पीटने वालों को सजा हुई।[४] मंडली बंबई वापस आई। आमदनी ठीक न होने के कारण एक एक अभिनेता मंडली से अलग होते गये। मालिकों ने कंपनी बंद कर दी। पेस्तनी फरामजी मादन कलकत्ता चले गये। नशरवानजी मादन ने कंपनी का सारा सामान बेच दिया। इस रूप में ओरिजिनल विक्टोरिया मंडली सदा के लिए समाप्त हो गई।[५]

दि शाहे आलम नाटक कंपनी[६]

इस कपनी की स्थापना सन् १८७५-१८७६ ई० में हुई थी। कंपनी के

१. डा० धनजीभाई पाटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख पृ० १८७-१८८।
२. जहांगीर पेस्तनजी खंभाता : मारो नाटकी अनुभव पृ० १५७।
३. सौ०डा०विद्यावती ल०नम्र : हिंदी रंगमंच और पं०नारायणप्रसाद 'बेताब' पृ०५८।
४. डा० धनजी भाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख पृ० १८८।
५. वही पृ० १८८-१८९।
६. (अ) डा० धनजी भाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख पृ० ३१७।
(आ) डा० पवनकुमार मिश्र : पारसी रंगमच उसके नाटक और नाटककारों का आलोचनात्मक अध्ययन पृ० १८५।

संस्थापक थे दोराबजी रुस्तमजी धाभर और उनके भाई सोहराबजी धाभर। 'जाने आलम और अंजुमन आरा' इस कंपनी का पहला उर्दू नाटक था। इसमें दोरावजी ने जाने आलम का अभिनय किया था। इस कंपनी के दूसरे नाटक का नाम था—

जाबुली सेलम अने अफलातून जिन
गुलबाला परी ने पाक दामन शीरीन

यह ईरानी नाटक था। इस नाटक का निर्देशन दोराबजी ने किया था अन्य कलाकार थे—कावसजी पालनजी खटाऊ, जमरू, गुललाला, पेस्तनजी, जीजीभाई वाटलीवाला। दो साल बाद कंपनी बंद हो गई।

एंप्रेस विक्टोरिया थियेट्रिकल कंपनी[1]

दिल्ली दरबार के अवसर पर दिल्ली में नाटक खेलने के हेतु 'विक्टोरिया नाटक मंडली' दिसंबर १८७६ ई० में वहाँ पहुँची। जहाँगीर पेस्तनजी खंभाता जिन्होंने मद्रास से लौटने पर कंपनी छोड़ी थी, दिल्ली दरबार के दर्शन के लालच से इस कंपनी में फिर आ गये थे। सन् १८७७ ई० में दिल्ली दरबार के समय खूब नाटक खेले गए थे। दादा भाई ढूँठी कंपनी में नियम-पालन के संबंध में जबर्दस्त व्यक्ति थे। जो जल्दी नहीं उठते थे उन्हें नाश्ता नहीं मिलता था। एक बार कुछ कारणवश जहाँगीर खंभाता सुबह जल्दी नहीं उठे। दादाभाई ढूँठी ने बावर्ची दादाभाई वेलाती को आदेश दिया कि खंभाता को नाश्ता न दे। और वे रिहर्सल के लिए ऊपरी मंजिल चले गये। यह बात खंभाता को लग गई। खंभाता उठकर नहा-धोकर तैयार हो गये। बावर्ची ने नाश्ता करने के लिए कहा। पर खंभाता ने नहीं खाया। वास्तव में केवल धमकाने की दृष्टि से ही ढूँठी ने नाश्ता न देने की बात कही थी। लेकिन खंभाता ने बाहर से नाश्ता मगाकर खाया और रिहर्सल के लिए ऊपर नहीं गये। ढूँठी फिर नीचे आ गए और खंभाता को ऊपर ले गये। उस रात को अपना 'क्वेक डाक्टर' का फार्स भी किया। लेकिन दूसरे दिन भी सुबह जल्दी न उठने के कारण दादाभाई ढूँठी ने 'रिअर्सल इंप्रिजनमेंट' सुनाया। बावर्ची ने न नाश्ता दिया न नहाने को पानी। खंभाता ने भिश्ती से ठंडा पानी मंगाकर नहा लिया। कल के जैसे ही उन्होंने बाहर नाश्ता कर लिया। फिर विक्टोरिया नाटक मंडली के नाम एक नोटिस लिखा। उसमें लिखा था कि एक महीने बाद अभिनेता के रूप में आपकी सेवा से मुक्त हो

१. इस कंपनी की समस्त सामग्री का मूल स्रोत है—जहाँगीर पेस्तनजी खंभाता कृत 'मारो नाटकी अनुभव पृ० १७१ से २०१।

जाऊँगा। मंडली के साथ 'एग्रीमेंट' तो कुछ था नहीं। उस नोटिस को पंजीकृत डाक से भेज दिया। वे दोपहर औरों के साथ खाने भी नहीं गये। सब का खाना हो जाने के बाद स्टेशन पर जाकर उन्होंने खा लिया। उसी दिन दोपहर को डाक द्वारा वह पंजीकृत नोटिस आया। डोसाभाई मगोल घर में थे। उन्होंने उसे लिया। शाम को जब दादाभाई ढूँठी आये तो मगोल जी ने उनके हाथ में वह नोटिस थमा दिया। ढूँठी ने खंभाता को बुलाकर कहा कि तुम—जा सकते हो। खंभाता ने कहा कि अभी जाऊँ! तो ढूँठी ने कहा कि आज तुम्हारा पार्ट है, उसे पूरा करके कल जाओ। उस रात का अभिनय कर वे दूसरे दिन सुबह अपना सामान लेकर निकले। सब ने काफी समझाया। पर वे रुके नहीं। गाड़ी लेकर काश्मीरी गेट की तरफ गये।

काश्मीरी गेट के आगे दिल्ली के निवासी लाला बतुमल नामक व्यक्ति का नीलामखाना था। विक्टोरिया नाटक मंडली में दादी पोलादवंद नाम का एक टिकट बेचने वाला और हैंडबिल बाँटने वाला था। उन दोनों का परिचय था। कभी लाला बतुमल ने दादी पोलादवंद से कहा था कि हमारा इरादा है कि देहली में एक बड़ी नाटक कंपनी निकाले, इसलिए कोई ऐसा तजुर्बेकार शख्स हो कि जो कुल इंतजाम कर सके, ऐसा कोई हो तो हमसे मिलाइए। पोलादवंद ने जहाँगीर खंभाता से यह बात कही थी। खंभाता ने लाला बतुमल से बातचीत की थी और यह कहा था कि विक्टोरिया नाटक मंडली बंबई लौट जाय तो मैं उसे छोड़कर फिर दिल्ली आऊँगा और नई कंपनी निकालेंगे। लेकिन इस बीच अचानक विक्टोरिया नाटक मंडली के मालिक के नाम नोटिस देने की घटना हुई और वे वहाँ से अलग हो गए। लाला बतुमल ने जहाँगीर खंभाता के रहने का प्रबंध किया।

वहाँ रहकर स्थानीय कुछ रईसों की मदद से खंभाता ने मार्च १८७७ ई० में एक 'जाइंट स्टाक कंपनी'[1] (Joint Stock Company) की स्थापना

---

१. डा० पवनकुमार मिश्र ने अपने अप्रकाशित प्रबंध में जाइंट स्टाक कंपनी को 'एंप्रेस विक्टोरिया थियेट्रिकल कंपनी से भिन्न एक स्वतंत्र कंपनी के रूप में निम्नांकित परिचय दिया है।—

"विक्टोरिया नाटक कंपनी की दिल्ली यात्रा पर जहाँगीर खंभाता ने दिल्ली में ज्वाइंट स्टाक कंपनी की स्थापना की : कावसजी खटाऊ और नसरवानजी सरकारी जहाँगीर खंभाता के सहयोगियों के रूप में काम करते थे। कावसजी खटाऊ बंबई लौट आये : खंभाता विदेश चले गये। इसलिए जल्दी ही यह कंपनी बंद हो गई।"

पारसी रंगमंच उसके नाटक और नाटककारों का आलोचनात्मक अध्ययन पृ० १८३

की और उसका नाम रखा "एंप्रेस विक्टोरिया थियेट्रिकल कंपनी"[1]। एक बड़े व्यापारी लाला लालसिंग दुलासिंग ने खंभाता को 'शेयर्स' खरीदने को रुपये दिये और कंपनी बनाने में लाला लालसिंग का बड़ा हाथ था। कंपनी ने खंभाता को नाटक संबंधी प्रत्येक काम को देखने वाले मैनेजर, एक्टर, डिरेक्टर के रूप में नियुक्त किया। दिल्ली लंदन बैंक में इस कंपनी का व्यवहार था। इनके वकील थे बाबू केदारनाथ कालीचरण। ये शासकीय वकील भी थे। इस कंपनी में वकील साहब के भी 'शेयर्स' थे।

जहाँगीर खंभाता ने अपना कार्य प्रारंभ किया। विक्टोरिया नाटक मंडली में पेस्तनजी खरशेदजी मादन नामक पेंटर थे। खंभाता उन्हें अपनी कंपनी में ले आये, उनसे भी कुछ 'शेयर्स' खरीदवाये और उनको सीन पेंटर और मंच व्यवस्थापक के रूप में नियुक्त किया। खंभाता ने सर्वप्रथम 'इंदर-सभा' नाटक खेलने का तय किया और पेस्तनजी मादन पेंटर को इसके लिए सुन्दर सीनरी तैयार करने को बताया। उन्होंने यह काम प्रारंभ कर दिया। खंभाता ने नाटक करवाने के लिए चाँदनी चौक में 'पुरानी तहसील' नामक हवेली को किराये से लिया और वहीं थियेटर बाँधने का काम शुरू किया। बाबू बेनीप्रसाद नामक शेयरहोल्डर को साथ लेकर अभिनेताओं का लाने के लिए जहाँगीर खंभाता बंबई पहुँचे। बंबई में अभिनेताओं को ढूंढ़-ढूंढ़कर वे एक साल का इकरारनामा लिखवाने लगे। उनके नाम निम्नांकित[2] रूप में थे।—

कावसजी कालिंगर
काळू हाँडो
दोराबजी नवरोजी सचीनवाला
धनजीभाई फोटोग्राफर
नशरवानजी रतनजी सरकारी
कावसजी पालनजी खटाळ
होराजी मुंशी
दादाभाई भोट (बावर्ची)
एदलजी भगल (नाई)

---

१. जहांगीर पेस्तनजी खंभाता : मारो नाटकी अनुभव पृ० १७६।

२. डा० पवनकुमार मिश्र के अनुसार कंपनी के नीचे लिखे और कलाकार थे—रुस्तम जी सचिनवाला, सोराबजी ओगरा, अरदेशरजी चीनाई, मेहरजी सरवेयर। पारसी रंगमंच उसके नाटक और नाकटकारों का आलोचनात्मक अध्ययन पृ० १८४।

खंभाता इन सब को लेकर जबलपुर मेल से दिल्ली पहुँचे। वहाँ कंपनी के हिस्सेदारों ने इन लोगों का अच्छा स्वागत किया। जहाँगीर खंभाता ने वहाँ अच्छा रंग जमाया। कंपनी में लोगों का जमीन पर बैठकर भोजन करना खंभाता को पसद न था। 'डायनिंग टेबुल' तैयार करवायी, काँटे-चम्मच का प्रयोग सिखाया। सभी सदस्य अदब से रहा करते थे।

'इंदर सभा' की तैयारी जोरों से चली। रोज सुबह नौ से बारह बजे तक और दोपहर को दो बजे से ५ बजे तक रिहर्सल चलता था। संपूर्ण तैयारी के बाद शनिवार, १९ मई १८७७ को प्रथम बार 'इंदरसभा' का मंचन हुआ। इसके कलाकार थे—

कावसजी खटाऊ : गुलफाम
नसरवानजी सरकारी : सब्जपरी
दोराबजी सचीनवाला : पुखराज परी
कावसजी कलिगर : लाल देव
काऊ हांडो : राजा इदर

'इंदरसभा' के बाद 'छैल बटाऊ मोहना रानी' का मंचन हुआ जिसके कुछ रंगकर्मियों के नाम ये थे—

नसरवानजी खटाऊ : छैल बटाऊ
नसरवानी सरकारी : मोहना रानी

इस कंपनी ने 'लैला मजनू' भी खेला जिसके प्रमुख पात्र निम्न प्रकार थे :—

नसरवानजी सरकारी : लैला
कावसजी खटाऊ : मजनू

इसके बाद 'गुलबकावली' का भी मंचन हुआ। प्रमुख पात्रों के नाम यों थे—

नसरवानजी सरकारी : बकावली
कावसजी खटाऊ : ताजुलमलुक

सप्ताह में रविवार को छोड़ शेष दिन ये नाटक खेले जाते थे। दिल्ली में कभी राजा लोग भी ये नाटक देखने पधारते थे। इन्हीं नाटको को देख कर ऊबे हुए राजा ने नये नाटक दिखाने का आग्रह किया। तदनुसार 'खुदाबख्श' नाटक को पाँच दिनों में तैयार कर मंचस्थ किया। इसका पारिश्रमिक भी कंपनी को खूब मिला।

कावसजी खटाऊ की मदद से 'अलीबाबा और चालीस चोर' की तैयारी होने लगी। उसमें खटाऊ ने संगीत का भाग जोड़ा। भूमिका इस प्रकार थी :–

जहाँगीर खंभाता	: चोरों का सरदार
कावसजी खटाऊ	: अलीबाबा
नसरवानजी सरकारी	: मरजीना

इसमें चालीस चोरों के लिये प्रतिदिन चार आने देकर चालीस लोगों को बुला लेते थे।

एक दिन 'इंदर सभा' खेलने में अड़चन आई। इंद्र बनने वाले कावसजी हांडा कारणवश बिगड़ गये। सबके अनुनय–विनय के बावजूद हांडा तैयार नहीं हुए। रात को खेल होने वाला था। अंत में स्वयं जहाँगीर खंभाता को ऐन मौके पर इंद्र बनना पड़ा और उन्होंने बखूबी भूमिका निभाई।

इसी समय के आसपास एक दिन मेरी फेंटन कार्यवश इनकी कंपनी में आई थी। धीरे-धीरे कावसजी खटाऊ का और उसका परिचय घनिष्ठ होता गया और वह भी इस कंपनी का एक अंग बन गई।

फिर खंभाता नये नाटक के बारे में सोचने लगे। शेक्सपीयर के 'पेरीक्लिस' नाट्य के आधार पर एक नाटक तैयार करने लगे। उसका नाम रखा 'खोदादाद'। इसी बीच कंपनी में थोड़ा-सा परिवर्तन हुआ। केदारनाथ कालीचरण वकील साहब कंपनी से अलग हो गये। सारे शेयर्स लाला लालसिंह ने खरीद लिए और स्वयं कंपनी के स्वामी बने। खंभाता को दो आना रुपया लाभांश एवं दैनिक आय पर पाँच प्रतिशत देना तय हुआ।

अब खंभाता की इच्छा हुई कि कंपनी को लेकर यात्रा पर जायें। प्रथम कंपनी मेरठ गई। वहाँ 'मोल' पर एक 'स्टेशन थियेटर' नामक नाटकशाला थी। उसी को खंभाता ने किराये पर लिया। नजदीक 'कोटनीस होटल' नामक बंगला था। मंडली के सदस्यों के ठहरने के लिये उसे लिया। यहाँ 'अलीबाबा और चालीस चोर' खेला। फिर पहली बार 'खोदादाद' यहाँ खेला। वह इतना सफल रहा कि हर शनिवार इसी नाटक का मंचन होने लगा। चार-पांच महीने यहाँ रह कर कंपनी लाहौर गई। वहाँ 'हीरा मंडी' में मंडुआ बाँधा गया। शनिवार, १६ जनवरी १८७८ को 'खोदादाद' खेला गया। लेकिन उस दिन की घटना बड़ी दिलचस्प रही। दिन के बारह बजे ही सब टिकट बिक गये। लेकिन जिन्हें टिकट मिले नहीं वे लौटने को तैयार नहीं थे। नाटक प्रारंभ हुआ ही था, कि मंडुवे का एक हिस्सा टूट गया। परदा गिरा दिया गया। नाटक बंद कर देने की घोषणा के बावजूद

लोग जाने को तैयार नहीं थे। नाटक खेलना ही पड़ा। सुवह चार बजे नाटक समाप्त हुआ। उसके बाद 'अलाउद्दीन' चीनी पोशाक में खेला गया। यहाँ पाँच महीने कंपनी रही। वहाँ से अमृतसर गयी। वहाँ आमदनी बिलकुल नहीं हुई। कलाकारों के साथ एक वर्ष का अनुबंध था। कलाकार तनख्वाह बढ़ाने का कह रहे थे। लालसिंह को बुलाकर कंपनी बंद करवा दी। बहुत से कलाकार बंबई चले गये। खंभाता, खटाऊ, मेरी फेंटन, नसरवान जी सरकारी आदि कलाकार दिल्ली आ गये। खंभाता बीमार हो गये तो उन्हें बंबई भेजा गया।

एंप्रेस नाटक मंडली—[१]

'एंप्रेस विक्टोरिया नाटक मंडली' के बंद होने पर जहाँगीर पेस्टनजी खंभाता दिल्ली आये। लाला लालसिंग से खंभाता ने कहा कि तुम नाटक कंपनी स्थापित करो मैं दूसरे अभिनेताओं को ले आऊँगा। इसके लिये लालसिंग तैयार नहीं हुए। इतने में जहाँगीर खंभाता बीमार पड़े। नसरवानजी सरकारी तथा अन्य एकाध अभिनेता के साथ कानपुर होते हुए बीमार अवस्था में बंबई पहुँचे। तीन-चार महीने बीमार ही रहे। बुखार में नाटक के बारे में या नाटक कंपनी शुरू करने के बारे में बड़बड़ाते थे। अच्छे हो जाने पर एक दिन शाम को अपने मित्र वीका जी मेहरजी के बंगले में बैठे थे। वहाँ और एक उनका मित्र था। बातचीत के संदर्भ में दूसरे मित्र ने खंभाता से कहा कि तुम एक नाटक कंपनी निकालो, मैं रुपये दूँगा। खंभाता ने पहले इस बात को हँसी-मज़ाक समझा। लेकिन दोस्त ने कहा कि तुम कल से ही इस काम में लग जाओ। उस समय सात बजे थे। वह दोस्त को अपनी गाड़ी में बैठा कर चौपाटी पर अपने बंगले ले गया। बिना लिखा-पढ़ी के उसने ढाई हजार रुपए खंभाता के हाथ में थमा दिये।

खंभाता ने दूसरे ही दिन धोबीतलाब के पास एक स्कूल में स्कूल छूटने के बाद रिहर्सल के लिये एक कमरा किराये से ले लिया। फिर वे अभिनेताओं को एकत्रित करने लगे, उनमें खरशेदजी एंजीनियर, सोहराब जी फराम जी ओगरा प्रमुख थे। रायल थियेटर के बिकने पर एक बेकरी वाले ने उसे खरीदकर बेकरी के रूप में परिवर्तित कर लिया था। परदे तथा रंगमंच संबंधी सामान उसके किस काम के। उस 'स्टेज प्रापर्टी' को

---

१. दी पारसी एंप्रेस नाटक मंडली की समस्त सामग्री जहाँगीर पेस्टन जी खंभाता लिखित 'मारो नाटकी अनुभव' पर आधारित है।

बेकरी वाले ने बिक्री के लिये निकाला तो जहाँगीर खंभाता ने इसे खरीद लिया।

इस मंडली का पहला नाटक था 'खोदादाद'। खूब पैसे खर्च करके नाटक के अनुकूल सीन और पोशाकों की भी तैयारी की गई थी। अभिनय के लिये नाट्यशाला की आवश्यकता थी। विक्टोरिया थियेटर पाने के लिए खंभाता कोशिश करने लगे। विक्टोरिया नाटक मंडली वाले उस थियेटर में बुधवार और शनिवार को अपने नाटक खेलते थे। उन दिनों रविवार को नाटक करने की प्रथा नहीं थी। खंभाता विक्टोरिया के मुख्य हिस्सेदार दादाभाई ठूँठी से मिले और सोमवार एवं शुक्रवार को थियेटर देने की बात की। ठूँठी के साथ विक्टोरिया नाटक मंडली में बालीवाला, फराम जी अपु, होसाभाई मगोल और धनजीभाई घड़ियाली और ४ हिस्सेदार थे। पाँचों ने मिल कर बातचीत की। बालीवाला को छोड़कर शेष सभी खंभाता को थियेटर देने का विरोध कर रहे थे। इसका कारण यही था कि जब विक्टोरिया नाटक मंडली दिल्ली में थी तब वहीं से खंभाता ने उनसे अलग होकर एंप्रेस विक्टोरिया थियेट्रिकल कंपनी बनाई थी। लेकिन बहुत ही अनुनय–विनय करने पर खंभाता को विक्टोरिया थियेटर मिला।

पहला नाटक 'खोदादाद' एक शुक्रवार को खेला गया। प्रेक्षकों की संख्या अधिक नहीं थी, फिर भी उन्हें नाटक पसंद आया। उस नाटक की भूरी-भूरी प्रशंसा हुई। दादाभाई ठूँठी जो उस प्रदर्शन में उपस्थित थे, उन्होंने भी अपने अन्य भागीदारों से वेशभूषा की सराहना की। जहाँगीर खंभाता ने परदे और ड्राप सीन भी सुन्दर बनाये थे। उसी बीच एक अंग्रेजी नाटक मंडली को भी विक्टोरिया नाटक मंडली वालों ने अपना थियेटर दिया था और उनके परदे भी उपयोग में लाने की अनुमति दी थी। नाटक के दिन सुबह अंग्रेज मैनेजर थियेटर में आये और विक्टोरिया नाटक मंडली वालों के परदे देखे। फिर उन्होंने खभाता के परदे देखे जो वहीं थे। उन्हें खंभाता के परदे पसंद आये। अंग्रेज मैनेजर ने खंभाता के ही परदे एवं ड्राप-सीन का उपयोग किया।

'खोदादाद' के बाद खंभाता ने 'अलीबाबा' नाटक प्रस्तुत किया। अन्य दिन होने के कारण इस नाटक के लिए भी पर्याप्त प्रेक्षक प्राप्त नहीं हुए। हालाँकि 'अलीबाबा' के मंचन में काफी मेहनत की थी। चालीस चोरों के लिए चालीस आदमियों को बुला लिया था। एक बार अचानक शनिवार को नाटक खेलने का मौका मिला। उस दिन 'हाउसफुल' था।

(डा० धनजी भाई पटेल के अनुसार जहाँगीर खंभाता अपनी कंपनी की स्थापना होने पर बोरीबंदर स्टेशन के सामने स्थित टीवोली थियेटर में अपने नाटक करने लग गये थे।[1])

बंबई में विशेष आमदनी न होने के कारण जहाँगीर खंभाता ने कंपनी को बाहर यात्रा पर ले जाने का तय किया। इसके लिए उन्होंने प्रथम स्थान इंदौर चुना।

कंपनी ले जाने के पूर्व जहाँगीर खंभाता और तेमुलजी एदलजी अंटिया इंदौर गये। मंडवे के लिए 'माँ साहब का छत्र' के पास जगह पसंद की। अंटिया मंडवा बाँधने के लिये रुक गये और खंभाता बंबई लौट आये। मंडवे के तैयार होते ही अन्य रंगकर्मियों को लेकर इंदौर गये। उन कलाकारों में अस्पंदियार जी जमशेद जी जोशी, नवरोजी कावसजी आरसावाला, नशरवान जी सरकारी डोसाभाई हाथीराम भी थे। मंडवा तैयार होते ही एक दिन अचानक खूब बरसात हुई। मँडवा भीग कर खराब हो गया उसको ठीक-ठाक करने में कुछ समय व्यतीत हुआ। पहला नाटक खेलने की तिथि तय हुई। उसे सुन शापुर जी नामक एक व्यापारी प्रथम तीन रातों का 'कांट्रेक्ट' लेने आया। उसे तीनों रातों के लिये ठेका देकर नाटक खेलना प्रारंभ किया। पहला नाटक था 'इंदर सभा' तीनों दिन प्रयोग में सफलता मिली। खंभाता ने इंदौर के महाराजा से प्रार्थना की कि वे नाटक देखने पधारें। वे इस शर्त पर राजी हुए कि राज-महल में नाटक खेले जाँये। खंभाता को नाटक करने के लिये एक जगह दिखाई गई। वह कमरा पंद्रह फुट चौड़ा, चालीस-पचास फुट ऊँचा था। राजमहल के परदे आदि दिखाये गये। खंभाता को पसंद न पड़ने पर भी एक पारसी गृहस्थ के कहने पर वे इसी स्थिति में राजमहल में नाटक प्रदर्शन के लिये तैयार हुए। अब दूसरी मुसीबत आई। उनसे कहा गया कि नगे पैर ही रंगमंच पर आना चाहिए। खंभाता ने सभी रंगकर्मियों को आदेश दिया कि नंगे पैर ही नाटक करें। पहले दिन नाटक के अन्त में एक फार्स होने वाला था। उसमें बनिया का एक पात्र था। इसकी भूमिका में उतरने वाले थे खरशेद जी एदलजी केरावाला। उसे जूता लेकर ही रंगमंच पर काफी काम करना था। उसने अपनी ढगली (कोट) के अंदर जूते खोंस लिये। अभिनय के समय अंदर से जूते निकाले और अपनी ढगली से पोंछकर महाराज के सामने ही जूते पहन लिये। केरावाली की चालाकी देखकर महाराजा एवं सभी दरबारी हँसने

१. डा० धनजी भाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख पृ० १०१ :

लगे। दूसरे दिन खंभाता ने महाराजा से मिलकर जूते पहनने की अनुमति ली। फिर सभी रंगकर्मी जूते पहन कर अभिनय करने लगे। नाटकों की सफलता के उपलब्ध में प्रसन्न हो कर महाराज ने खंभाता को पुरस्कार भी दिया।

इंदौर में एक दिन खंभाता को एदलजी द्वारा समाचार मिला कि दूसरी नाटक कंपनी वाले आज ही दोपहर को महू आये हैं। उसी रात खंभाता महू पहुँचे। उस समय महू में तीन थियेटर थे :—

(१) डरेगुन थियेटर।
(२) बेटरी थियेटर।
(३) रेजिमेंटल थियेटर।

खंभाता और एदलजी सुबह चार बजे उठकर पता लगाते-लगाते डरेगुन थियेटर के अधिकारी के बंगले पर गये। वे अधिकारी कैप्टन थे। कैप्टन ने कहा कि थियेटर किराये पर देने लायक स्थिति में नहीं है। जब तक कैप्टेन साहब परेड से लौटे तब तक ये दोनों भी थियेटर प्रत्यक्ष देखकर लौटे। अन्त में यह तय हुआ कि छः रातों के लिये थियेटर बिना किराये पर दिया जायेगा। बदले में नाटक कंपनी वालों को सिर्फ उसकी आवश्यक मरम्मत कर लेनी चाहिए। ये शर्तें तय हो गईं। सर्व प्रथम अंग्रेज मिलीटरी-अधिकारी और सैनिकों के सामने वे नाट्य-प्रदर्शन करना चाहते थे। इसके लिए खंभाता अरेबियन नाइट्स या और किसी अंग्रेजी नाटक पर आधारित कथावस्तु लेना चाहते थे। उसे पहले अंग्रेजी में छपवाकर बँटवाने का इरादा था।

नाटकों की अवधि भी इतनी कम कर दी कि रात के साढ़े ग्यारह बजे तक समाप्त हो जाय। टिकट बिक्री के लिए मिलटरी सार्जटों का सहयोग मिला। छहों रात सफलता पूर्वक नाटकों का मंचन हुआ। अनुबंध के अनसार छः दिनों की अवधि समाप्त होने के कारण खंभाता को और किसी जगह की तलाश करनी पड़ी।

महू में एक पारसी स्कूल था। उसके हॉल में अभिनय करने का इरादा था। स्कूल कमेटी के अध्यक्ष खानबहादुर एदलजी घास वाला कट्टर धार्मिक व्यक्ति थे। उन्हें नाटक से घृणा थी। हॉल प्राप्त करने की आशा नहीं थी। लेकिन बहुत प्रयत्न करने के बाद खंभाता अनुमति पाने में सफल हो गये। लकड़ी की मेजें मँगाकर मंच तैयार किया गया। टिकट की दरें थीं—३), २), १), आठ आने और चार आने (आज के हिसाब से पचास

पैसे और पचीस पैसे) हर रोज औसत तीन सौ रुपये की आमदनी होती थी। खान बहादुर साहब दस पंद्रह लोगों के साथ नाटक देखने आते थे पर टिकट खरीद कर देखते थे। उन्होंने 'कांप्लीमेंट्री पास' लौटा दिये थे। उन्होंने खंभाता को कुछ पुरस्कार भी दिये।

खंभाता ने महू से एम्प्रेस नाटक मंडली को रतलाम ले जाने का सोचा। तदर्थ एडवांस एजेंट टेमुलजी आँटीया और स्टेज कार्पेटर (रंगमंच का बढ़ई) "सोलुभाखरा" को लेकर जहाँगीर खंभाता रतलाम पहुँचे। रतलाम के राजा रणजीत सिंह कम उम्र के थे। इसलिए पौलिटिकल एजेंट शामतअली राजा की ओर से राज्य करते थे। रतलाम के एक स्कूल के हॉल में नाटक करने का इरादा लेकर अनुमति पाने के लिये खंभाता मुंशी शामतअली की सेवा में उपस्थित हुए। वे भी नाटक के विरोधी थे। सुदैव से महू के खान बहादुर एदलजी के मित्र थे। खंभाता ने महू का विज्ञापन दिखाया जिसमें खान साहब का भी उल्लेख था। अन्त में शामत अली ने सिर्फ पंद्रह दिनों के लिये स्कूल का हॉल दिया। रंगकर्मियों एवं अन्य कर्मचारियों के ठहरने के लिये तम्बू ताना गया। रंगमंच बनाने के लिये और कोई साधन न मिलने के कारण बाँसों के द्वारा एक बढ़िया मंच तैयार किया गया। खंभाता ने नाटक प्रारम्भ करने के पहले मुंशी शामतअली को निमंत्रित किया। उन्होंने यह कहा कि महाराजा आयेंगे तो मैं आऊँगा और उनसे पूछकर कहलवा दूँगा।

खंभाता स्वयं महाराजा से मिलने गये। उन्होंने खंभाता को कुर्सी पर बिठाकर, मानो उनका सम्मान किया जब कि वहाँ कई लोग नीचे गलीचे पर बैठे थे। खंभाता के निमंत्रण को महाराजा ने स्वीकार किया। उनकी स्वीकृति पर नाटक का प्रथम दिन निश्चित किया। यथा समय महाराजा दरबारियों के साथ पधारे और आदेश दिया कि गिनो कितने दरबारी प्रेक्षक हैं। वहाँ उनके पचहत्तर प्रेक्षक थे। दूसरे दिन खंभाता को पचहत्तर रुपये दिये गये। तीन नाटक खेलने के उपरान्त एक दिन महाराजा ने बुलाकर पूछा कि क्या मैं महल में नाटक खेल सकता हूँ? वे तैयार हो गये। लेकिन मुंशी शामतअली ने राजा के खर्चे से महल में मँडवा बाँधने नहीं दिया। स्वयं खर्च से मँडवा बाँध कर खंभाता ने तीन नाटक खेले। महारानी जी ने सभी नाटक खेलने का आदेश दिया। लेकिन शामतअली ने फिर अडंगा लगाया। लेकिन जब यह स्पष्ट हुआ कि रानी जी इसका खर्च देंगी तो वे शांत हो गए। महारानी जी ने 'शाकुन्तल' नाटक खेलने का आदेश दिया।

एक सप्ताह के भीतर नया नाटक तैयार करके खेला गया। इसमें राजा की ओर से कीमती पोशाकें भी मिली थीं। महारानी ने भी खुश होकर काफी उपहार दिये। कुल मिला कर एंप्रेस नाटक कम्पनी की रतलाम यात्रा लाभप्रद रही।

रतलाम से कंपनी इलाहाबाद गई। वहाँ इंग्लिश क्वार्टर में एक बड़ा हॉल रोजाना चालीस रुपये के हिसाब से किराये से लिया। पहला नाटक खेला गया। शहर से दूर होने के कारण बहुत ही कम प्रेक्षक आये। यहाँ घाटा उठाना पड़ा। यदि शहर में मँडवा बाँध कर नाटक खेलते तो शहर के प्रेक्षक अधिक संख्या में आ सकते थे। एक दिन खेल के समय एक सज्जन गलती से आगे की सीट पर बैठे थे। गेटकीपर ने उन्हें उठा कर सही स्थान पर बिठाया। खंभाता ने इसे देखा तो वे तुरन्त आये और उस सज्जन को पहली सीट पर बिठाया। खंभाता की इस सज्जनता का फल उन्हें आगे की यात्रा में मिला। इलाहाबाद में एक पारसी गृहस्थ ने खंभाता को सुझाया कि वे अपनी कंपनी मिरजापुर ले जायें। खंभाता जब अकेले मिरजापुर जा रहे थे तब उसी कंपार्टमेंट में वही सज्जन बैठे थे जिन्हें उन्होंने पहली पंक्ति में बिठाया था। उन दोनों का परिचय हुआ। मिरजापुर के वे सज्जन थे बाबू बेनीप्रसाद।

बाबू बेनीप्रसाद ने खंभाता को सभी प्रकार का सहयोग दिया—(अपना गोदाम, रंगमंच बनाने के लिये एक सी लकड़ी की पेटियाँ इत्यादि) इसके लिये किराया भी कुछ नहीं लिया। 'कांप्लीमेंट्री' पास देने पर उन्हें भी इनकार कर दिया और जब नाटक देखने आते तो टिकट खरीद कर देखने जाते थे। यहाँ भी खंभाता के नाटक सफल रहे, अच्छी आमदनी हुई, इलाहाबाद के घाटे की पूर्ति यहाँ हुई।

खंभाता ने मिरजापुर से बनारस जाने का तय किया था। पहले बनारस जाकर गोदौलिया में जगह तय करके आये। लेकिन बनारस पहुँचने के लिये बीच में चुनारगढ़ रुक गये। क्योंकि चुनारगढ़ के रईस गंगेश्वर प्रसाद ने खंभाता से प्रार्थना की थी। उन्होंने चुनारगढ़ में कंपनी को पूर्णतया सहयोग दिया। थोड़े ही दिन चुनारगढ़ में नाटक करके कंपनी बनारस गई। वहाँ रहने के लिये एक ब्राह्मण का घर लिया था। घर के मालिक और रंगकर्मियों के बीच मद्यपान को लेकर झगड़ा हुआ। मुकदमा चला। लेकिन समझौता कराने से बात खत्म हुई। यहाँ नाटक खेले गये तो आमदनी अच्छी हुई।

बनारस से कंपनी को पटना ले जाने का विचार था। इतने में डुमराव के महाराजा ने खंभाता को निमंत्रण दिया। वहाँ नाटक मंडली दो सप्ताह रही। आठ नाटक खेलने का अनुबंध था। राजा इन नाटकों के अभिनय से बड़े प्रसन्न थे। उनका विचित्र स्वभाव था। नाटक प्रदर्शन के समय किसी का अभिनय अच्छा लगा तो तुरन्त उस अभिनेता को बुलाकर पुरस्कार देते थे। कभी-कभी मनपसंद कोई भी गीत गाने के लिये भी कहते थे। उनसे बिदा लेकर कंपनी दानापुर गई।

दानापुर में गेरीसन थियेटर में सिर्फ बीस दिन मंडली ने नाटक खेले। वह सैनिक था। इसलिए अधिकाँश प्रेक्षक युरोपीयन सैनिक ही थे। इन लोगों ने हिंदुस्तानी नाटकों को बहुत पसंद किया।

दानापुर से नाटक मंडली पटना गई। वहाँ कुछ रंगकर्मियों ने एक महीने का नोटिस दिया, अन्यथा वेतन-वृद्धि की माँग प्रस्तुत की। उसी दिन बंबई से खंभाता के एक मित्र कुंवर जी बुच्च आये थे। उन्होंने सलाह दी कि त्याग-पत्र स्वीकार करो। वे दूसरे ही दिन अन्य कलाकारों को लाने बंबई के लिये रवाना हो गये। उसके बाद खंभाता गया गये। डा० धनजी भाई पटेल का कथन है कि अन्त में खंभाता ने अपनी कंपनी अपने शिष्य मंचेदशा पोचखानावाला को पुरस्कार के रूप में दी जो काफी अर्से तक उसे ठीक तरह से चलाते रहे।[1]

तन्तुपुरस्थ नाटक मंडली, धारवाड़—

धारवाड़ (कर्नाटक) में सन् १८८० ई० में तंतुपुरस्थ नाटक मंडली की स्थापना हुई। इसमें कन्नड़ एवं मराठी भाषी अभिनेता थे। उत्तर कर्नाटक की यह पहली कंपनी थी जिसने अपने प्रदेश के बाहर भी भ्रमण किया और नाटक खेले। इस मंडली के अधिकांश अभिनेताओं ने अन्य प्रदेशों की भाषाएँ सीखीं। सन् १८८३ ई० से १८८५ ई० तक यह मंडली कर्नाटक के बाहर घूमती हुई हिंदी, मराठी और तेलुगु में भी नाटक खेलती रही।[2] अब इस अनुसंधान की आवश्यकता है कि इस मंडली के हिंदी के नाटक कौन-से थे और उस हिंदी एवं अभिनय का स्वरूप क्या था?

श्री बांदा कनक लिंगेश्वर ने दिल्ली के संगीत नाटक अकादमी की ओर से मार्च १९५६ में आयोजित नाट्य-गोष्ठी में जो निबंध पढ़ा उसमें निम्नांकित जानकारी है—

१. डा० धनजी भाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख पृ० ३१३।
२. डा० एच० के० रंगनाथ : दि कर्नाटक थियेटर पृ० ८९।

In 1880 & 1881 a Maharashtrian Theatre from Dharwar for the first time visited Andhra and erected their own pandal and staged Hindi dramas at Rajahmundry. The troupe was directed by a Hindi poet and actor Vaman Bhatt Joshi. They played twice a week of the thirty odd plays. They staged 'Puttra Kameshthi' which narrated the story of Rama's Birth. It was most popular.

इस उद्धरण के आधार पर श्री ना० बनहट्टी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि यह मंडली 'अलतेकर नाटक मंडली थी, हालाँकि अंत में यह भी कहा है कि—अतः इस उल्लेख से लगता है कि अलतेकर नाटक मंडली मराठी प्रदेश के बाहर भ्रमण करती थी और वह सन् १८८०-८१ ई० में आंध्र में गई थी। जब तक अन्य प्रमाणों से इसका खंडन नहीं होता है तब तक इसे गृहीत करके चलने में कोई हर्ज नहीं।[1]

उपर्युक्त उद्धरण में वामन भट्ट जोशी का उल्लेख है। शंकर बापूजी मुजुमदार के अनुसार वामन भट्ट जोशी धारवाड़ हिंदू कंपनी के मैनेजर थे। वामन भट्ट जोशी ने अण्णासाहेब किर्लोस्कर को सन् १८८२ ई० में एक पत्र लिखा था। पत्र में एक वाक्य है—We perform all our dramas in Brija Language because the people of this presidency don't know Marathi Language, we don't know Telugu.[2]

अण्णासाहेब किर्लोस्कर को उपर्युक्त धारवाड़ हिंदू कंपनी के और एक सज्जन पांडुरंग फडके के लिखे पत्र का अंश है—"बाद के नाटक मैंने खुद सब को हिंदुस्थानी सिखाकर तैयार किए।........क्योंकि तेलगंण आदि प्रदेशों में यह भाषा समझी जाती है।[3]

लेकिन सन् १८८० ई० धारवाड़ में कन्नड व मराठी भाषियों की तंतु-पुरस्थ मंडली थी। अतः उपर्युक्त निबंध के उल्लेख का इशारा धारवाड की तंतुपुरस्थ मंडली की ओर है न कि अलतेकर नाटक मंडली की ओर।

डा० एच० के० रंगनाथ ने भी प्रमाणसहित नीचे लिखे निष्कर्ष निकाले है—

Dr. C. Narayan Rao, writing about the influence of Karnatak on the telugu stage, recalled the visit of an 'enthusiastic dramatic

---

१. श्री० ना० बनहट्टी : मराठी रंगभूमीचा इतिहास पृ० २४५ से २४६।
२. शंकर बापूजी मुजुमदार : अण्णासाहेब किर्लोस्कर यांचे चरित्र पृ० १७३।
३. वही पृ० १७१

troupe of Dharwar' to Andhra Desha.[1] His observation that the troupe consisted of both Karnatak and Marathi Artists suggests that the talented troupe of Dharwar was none other than the Tantupurastha Natak Mandali.[2]

सन् १८८५ ई० यह मंडली दौरे पर से धारवाड़ लौटी। लंबी यात्रा से ऊबे हुए बहुत से लोग नये रूप से स्थापित रेल विभाग के कार्यालय में कर्मचारी बन गये। परिणामत: मंडली टूटती गई।

इंडियन इम्पिरियल थिएट्रिकल कम्पनी—

Indian Imperial Theatrical Company.

इस कंपनी ने अब्दुल अज़ीज 'ज़हराओ बह्रस्त्म' दिसंबर १८८१ में मैनपुरी, इटावा, आगरा और धौलपुर में खेला। यही नाटक १८८३-८४ में फरुखाबाद, कानपुर, फतेहपुर, बाँदा, शिकोहाबाद में खेला गया।[3] डा० रणधीर उपाध्याय के अनुसार यह कंपनी चितौरा में खोली गई थी।[4]

किर्लोस्कर नाटक मंडली—

हिंदी के प्रख्यात नाटककार गोविंद वल्लभ पंत ने प्रत्यक्षदर्शी के रूप में उल्लेख किया है कि बचपन में उन्होंने बनारस (अब वाराणसी) में किर्लोस्कर नाटक मंडली के नाटक देखे थे। "तब बनारस के सेंट्रल हिंदू कालेज में पढ़ता था, सन् १९१७-१८ ई० की बात होगी, महाराष्ट्र की किर्लोस्कर नाटक कंपनी वहाँ आई। मैंने इन लोगों से मेलजोल बढ़ाया। कंपनी के साथ मराठी के वयोवृद्ध लेखक 'किरात' भी थे।"[5]

किर्लोस्कर नाटक मंडली भ्रमण करते-करते हैदराबाद गई थी। वहाँ इस मंडली ने 'ताजेवफा' नामक नाटक खेला।[6] मास्टर दीनानाथ मंगेशकर

१. Dr. C, Narayan Rao : Kannda stage Centenary Vol. P. P. 109-114,

२. Dr. H. Rangnath : The Karnatak Theatre P. 89.

३. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थिएटर, दूसरा भाग पृ० १४५।

४. डा० रणधीर उपाध्याय : हिंदी और गुजराती नाट्य-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन पृ० ३०७।

५. गोविन्द वल्लभ पन्त : रंगमंच का मोह (लेख) नई धारा वर्ष ३ अंक १-२ अप्रैल-मई १९५२।

६. लता मंगेशकर : मा० दीनानाथ स्मृति दर्शन पृ० २७।

(प्रख्यात पार्श्वगायिका लता मंगेशकर के पिता जी) ने इस नाटक में कॉमिक के प्रवेश में काम किया था। इस मंडली ने यहाँ मुंशी फ़रोग कृत 'काँटों में फूल' अर्थात् 'भक्त प्रहलाद' नामक हिन्दी नाटक[1] खेला। इस नाटक के कुछ रंगकर्मी निम्न प्रकार थे :—

गणू मोहिते	: भक्त प्रहलाद
कोल्हटकर	: हिरण्यकश्यपु
कोल्हापुरे	: कयाधू
मास्टर दीनानाथ	: उपनायिका

विहार थियेट्रिकल ट्रूप—

इसकी स्थापना दिसंबर १८८४ ई० में हुई। यह कंपनी विहार की पहली व्यावसायिक मंडली थी। इस ट्रूप द्वारा 'इंद्र सभा' का मंचन होना था। 'विहार वंधु' में इस ट्रूप की जानकारी यों दी है :—

"विहार थियेट्रिकल ट्रूप नाम की एक कंपनी यहाँ तैयार हुई है। इस कंपनी ने ३० दिसंबर से अभिनय करना शुरू किया है। कल बुधवार (३० दिसंबर १८८४ ई०) को इंद्रसभा का अभिनय हुआ था।

चीजें इस कंपनी के पास कुल नयी हैं और स्टेज भी वहुत उम्दा तरह तैयार किया गया है, परदे भी नये हैं।"[1]

मादन थियेटर्स लिमिटेड, कलकत्ता—

जमशेद जी एफ. मादन इस संस्था के स्वामी थे। वम्बई की वहुत नाट्य कंपनियाँ जो दुर्वल होती गईं, मादन द्वारा खरीद ली गईं। उनमें प्रमुख थीं, पारसी, अल्फ्रेड, एलफिंस्टन, पारसी इंपिरियल आदि। मादन ने इन कंपनियों का भी अस्तित्व वनाये रखा। वास्तव में ये सम्मिलित कंपनियाँ मादन थियेटर्स लिमिटेड के तत्त्वावधान में अपने अलग-अलग अस्तित्व को वनाये रखते हुए नाटकों का प्रदर्शन करती थीं। इसीलिए इन कंपनियों के नाम निम्न रूप में रखे गये थे—

मादन थियेटर्स लिमिटेड की पारसी अल्फ्रेड थियेट्रिकल कंपनी आफ बॉवे।

---

१. लता मंगेशकर : मा० दीनानाथ स्मृति दर्शन पृ० २७।

२. १ जनवरी १८८५ बिहार बन्धु पृ० २।
(भारतेंदु-युग का नाट्य साहित्य और रंगमंच ले० डा० वासुदेव नंदन प्रसाद पृ० २३८-२३९ से सामग्री संकलित)।

मादन थियेटर्स लिमिटेड की पारसी एलफिंस्टन ड्रामेटिक कंपनी आफ कलकत्ता।

एक जमाने की मशहूर कंपनियाँ घुटन पैदा होने पर जब कलकत्ते पहुँच गईं तो उनके नाटककार नारायण प्रसाद 'बेताब', आगा हश्र 'कशमीरी', तुलसीदास 'शैदा', हरिकृष्ण 'जौहर' आदि मादन थियेटर्स के लिए नाटक लिखने लगे। सय्यद काजिम हुसेन रज़नी भी मादन थियेटर के नाटककार थे।[1]

१९३० में पहली बार कलकत्ते में मादन थियेटर्स ने 'नेक खातून' का मंचन किया।[2]

राधेश्याम कथावाचक भी १९३१ में मादन थियेटर्स में आ गये। राधेश्याम कृत 'शकुन्तला' १९३२ में खेला गया। इसमें निसार, कज्जन, शरीफा आदि ने भाग लिया था।[3] सन् १९३३ ई० में राधेश्याम कृत 'महर्षि वाल्मीकि' का मंचन हुआ। इसमें अब्दुल रहमान काबुली, दादाभाई सरकारी ने काम किया था।[4] इसमें स्त्रियाँ ही स्त्री-भूमिका करती थीं। इस कंपनी में मिस कज्जन, शरीफा, पेशेंस कूपर के अतिरिक्त कुछ गोरी मेमें भी थीं।[5]

जुबली थियेटर कंपनी—[6]

कुँवर नाजर ने गेइटी थियेटर के बंद होने के पश्चात् सन् १८८५ में जुबली थियेटर कंपनी की स्थापना की। इस कंपनी को लेकर कुँवर जी मारवाड़ के रजवाड़ों में यात्रा करते थे। इसी यात्रा में इनकी मृत्यु हो गई। तब कंपनी भी बंद हो गई।

न्यू अल्फ्रेड कंपनी—

NEW ALFRED COMPANY

जब पारसी कंपनियाँ नाट्य व्यवसाय से धन कमाने लगीं तब कुछ हिन्दुओं और मुसलमानों ने भी इस दिशा में प्रयत्न किये। मुहम्मद अली

१. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर दूसरा भाग पृ० ३३४।
२. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर दूसरा भाग पृ० ३३४।
३. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ३२।
४. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ३२।
५. 'अज्ञात' : पारसी रंगमंच-नागरी पत्रिका मार्च-अप्रैल १९६९ पृ० १०८।
डा० धनजीभाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख भाग २ पृ० १९।

'नाखुदा' ने एक स्वतंत्र नाटक कंपनी खोली। उसका नाम रखा 'न्यू अल्फ्रेड कंपनी' इस कंपनी में सोहरावजी मैनेजिंग डाइरेक्टर का काम करते थे।[1] 'न्यू अल्फ्रेड' की स्थापना के बारे में राधेश्याम कथावाचक ने लिखा है कि बंबई में पहले 'अल्फ्रेड' नाम की एक ही कंपनी थी—फिर साथीदारों के कारण दो कंपनी बन गई। एक का नाम है—'पारसी अल्फ्रेड' और दूसरी का 'न्यू अल्फ्रेड'। 'पारसी अल्फ्रेड' को 'कावस जी खटाऊ' चला रहे हैं—और 'न्यू अल्फ्रेड' के मालिक हैं 'माणिक जी जीवन जी मास्टर।'[2] अल्फ्रेड थियेट्रिकल कंपनी' के इतिहास में देख चुके हैं कि इस कंपनी के तीनों साझीदारों—कावसजी पालनजी खटाऊ, माणिकजी जीवनजी मास्टर और मोहम्मद अली में फूट पड़ गई। फलतः १८९० ई० में माणिकजी जीवनजी मास्टर और मोहम्मद अली 'अल्फ्रेड थियेट्रिकल कंपनी' से अलग हो गये और उन्होंने 'न्यू अल्फ्रेड' नामक कंपनी खोली। सन् १८८२-१८८३ में लगभग नानाभाई राणीना की कंपनी दो कंपनियों में बँट गई, एक के मालिक कावस जी खटाऊ थे और दूसरी 'न्यू अल्फ्रेड' के मालिक थे माणिक जी मास्टर और महमद अली बोरा।[3] 'अल्फ्रेड थियेट्रिकल कंपनी' के निर्देशक सोराब जी ओगरा को अपनी 'न्यू अल्फ्रेड कंपनी' का निर्देशक बना दिया। इसमें भोगीलाल असिस्टेंट डाइरेक्टर थे। वास्तव में शुरूआत में यह कंपनी 'न्यू अल्फ्रेड' के नाम से नहीं जानी जाती थी। इसका नाम था महमद अली की कम्पनी।[4]

'न्यू अल्फ्रेड' बंबई के बाहर जाकर अपने नाटकों का प्रदर्शन करती थी। कंपनी के नाटक उस समय कितने लोकप्रिय थे इसका अनुमान कंपनी के बरेली वास के बारे में राधेश्याम कथावाचक के नीचे कथन से लगाया जा सकता है—"बंबई की 'न्यू अल्फ्रेड' यहाँ बहुत आती थी। शायद हर दूसरे या तीसरे साल आ जाती थी। कंपनी बंबई से जब चलती थी तो पहला स्टेशन 'बरेली' ही होता था। बरेली दीवानी थी उस कंपनी पर। सुना है भिश्ती मशकें बेचकर भी उस कंपनी के नाटक देखने जाते थे। 'अलादीन', 'अलीबाबा' और 'चंद्रावली' नाटक तब खूब चलते थे—इन्हीं के गीत गली-गली लोग गाते फिरते थे। बिजली तब नहीं थी, गैस के हंडे

---

१. डा० वेदपाल खन्ना : हिंदी नाटक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन पृ० ६० ।
२. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० २७ ।
३. सौ०डा०विद्यावती ल०नम्र : हिंदी रंगमंच और पं०नारायणप्रसाद 'बेताब' पृ०८० ।
४. डा० धनजी भाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख पृ० २१८ ।

भी नहीं थे, मशालें जला करती थीं, फिर भी चार आने से लेकर तीन रुपये तक के दर्जे ठसाठस भरे रहते थे।"[1]

अलीबाबा के कलाकार :—

इब्राहिम पिंजारा	: अलीबाबा
खुरशेद जी चिनाई	: चोरों का सरदार
सोहराबजी ओगरा	: कासम

बरेली में यह कंपनी 'राजा चित्रकूट के महल' में किराये से रहती थी।[2] मुन्शी मेहंदी हसन 'अहसन' ने कंपनी के लिए १८९६ में 'दिलफरोश' और 'भूल भूलैयाँ' नाटक लिखे।

सन् १९०२-१९०३ के आसपास 'न्यू अल्फ्रेड' बरेली गई और वहाँ मुन्शी 'अहसन' कृत 'भूलभूलैयाँ' का खेल हुआ। इसके भी गाने खूब चले। इस कंपनी का 'खूबसूरत बला' (सन् १९०६) भी बहुत लोकप्रिय हुआ। इसके नाटककार थे आगा हश्र 'कश्मीरी'। इसमें खैरसल्ला का पार्ट सोराब जी ओगरा करते थे। उन दिनों देश की नाटक कंपनियाँ ही नहीं, सब क्लबें भी 'खूबसूरत बला' खेलने लगीं।[3] 'खूबसूरत बला' के कलाकार थे—जगन्नाथ नायक, भगवानदास नायक, सोहराब जी कात्रक, लल्लूशंकर, दोराब जी मेवा वाला।

सन् १९११ ई० में कंपनी बंबई के रायल थियेटर में नाटक कर रही थी। अचानक परदा खींचने वाले सोते हुए लड़के का हाथ, लैंप में लग गया। काँच के फूट जाने से आग लग गई। इससे कपनी को कुछ नुकसान उठाना पड़ा और कंपनी को बंद रखना पड़ा। फिर 'अछूता दामन' से नाट्याभिनय प्रारंभ हुआ। कंपनी उत्तर भारत की यात्रा पर गई।[4] डा० सोमनाथ गुप्त के अनुसार 'न्यू अल्फ्रेड' में सन् १९१०-११ में आग लग गई और सन् १९१४ में इसका पुनरुज्जीवन हुआ।[5]

---

१. राधेश्याम कथावचक : मेरा नाटक-काल पृ० ३।

२. वही—पृ० ८।

३. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० २३।

४. डा० सौ० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायण प्रसाद 'बेताब' पृ० ८०।

५. डा० सोमनाथ गुप्त : पारसी थियेटर : उद्भव, विकास और नाट्य में योगदान (अप्रकाशित) पृ० २००।

सन् १९१३ ई० के नवंबर महीने में फिर 'न्यू अल्फ्रेड' कंपनी बरेली गई। कंपनी आगा हश्र लिखित 'अछूता दामन' नाटक लेकर गई थी। अन्य कम्पनियों के जैसे 'न्यू अल्फ्रेड' भी धार्मिक नाटक खेलना चाहती थी। पर उसे कोई हिंदी नाटककार नहीं मिला था। बरेली आने पर इस कम्पनी का ध्यान राधेश्याम कथावाचक की ओर गया। 'न्यू अलबर्ट' की 'रामायण' के कारण राधेश्याम कथावाचक ख्याति प्राप्त कर रहे थे। इसलिये भोगीलाल के प्रयत्न से सोराब जी और राधेश्याम कथावाचक की मुलाकात हुई। सोराब जी ने कथावाचक जी के नये नाटक 'वीर अभिमन्यु' के संवाद सुने और अपनी कम्पनी के लिये उस नाटक को पसंद किया। यह तय हुआ कि राधेश्याम जी अपना नाटक बुलन्दशहर आकर जहाँ यह कम्पनी जाने वाली थी, सोराब जी को देंगे।[1]

बरेली से कम्पनी बुलन्दशहर गई। वहाँ नुमाइश चल रही थी। कम्पनी ने वहाँ कई नाटक खेले। राधेश्याम कथावाचक वायदे के अनुसार वहाँ गये। उस कम्पनी में कोई 'हिंदी कापी-लेखक' नहीं था। इसलिए इनके सीनों को भोगीलाल भाई ने 'गुजराती' अक्षरों में लिखा।[2] 'वीर अभिमन्यु' ३००) में खरीदा गया। यह भी तय हुआ कि कम्पनी में कथावाचक जब भी जाएँ एक टिकट सेकेंड क्लास का और एक थर्ड क्लास का कम्पनी देगी।[3]

उस समय 'न्यू अल्फ्रेड' में दो मुन्शी (नाटककार) थे। एक तो आगा हश्र 'काश्मीरी' साहब थे जिनका मासिक वेतन ५० रुपये था और दूसरे 'अहसन' साहब जिनकी तनख्वाह सौ रुपये थी। आगा साहब इससे भी ज्यादा वेतन चाहते थे। न मिलने पर वे 'नौकरी' छोड़कर चले गये।[4]

भोजन के लिये कम्पनी में एक बावर्ची खाना मुसलमानों और पारसियों के लिये था और एक रसोड़ा हिंदुओं का (नायक जाति के लिये) था—जहाँ बंबई के औदीच्य ब्राह्मण रसोई बनाते थे।[5]

सन् १९१५ ई० में 'न्यू अलबर्ट' से अब्दल रहमान काबुली और निसार दो एक्टर 'न्यू अल्फ्रेड' में आये। तबला मास्टर उस्ताद गुलाम हुसैन भी इसी में आ गया था।[6]

---

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० ४०, ४७, ४२।
२. वही पृ० ४२।
३. वही पृ० ४४।
४. वही पृ० ४४।
५. वही पृ० ४४-४५।
६. वही पृ० ५१।

इस कंपनी में बड़ा हारमोनियम मास्टर निहालचंद था। भोगीलाल नाच मास्टर का काम करते थे। गौरीशंकर मिश्र कंपनी के मैनेजर थे। हरिश्चंद्र नाम का पंजाबी 'चीफ पेंटर' था।

काफी तैयारी के बाद ४ फरवरी १९७६ को दिल्ली में संगम थियेटर में पहली बार 'वीर अभिमन्यु' खेला गया। इस नाटक के कलाकार निम्नांकित रूप में थे:—

अम्मूलाल	:	अभिमन्यु
भोगीलाल	:	कृष्ण
ऐलीज़र	:	अर्जुन
अब्दुल रहमान काबुली	:	भीम
जगन्नाथ	:	सुभद्रा
निसार	:	उत्तरा
रियाज़	:	युधिष्ठिर
मगनलाल	:	द्रोणाचार्य
ऊमर भाई	:	जयद्रथ
सोराबजी 'ठूंठी'	:	खटपटसिंह
गंगाप्रसाद भाई	:	शंकर

'वीर अभिमन्यु' के प्रदर्शन से इस कंपनी ने हज़ारों रुपया कमाया। जब कभी भी यह नाटक होता धूम मच जाती और रंगमंचीय अभिनय देखने के लिए जनता उमड़ पड़ती।[१] 'वीर अभिमन्यु की ख्याति इतनी बढ़ गई कि पारसी स्टेज पर लिखाने वाले नाटकों में—केवल इसी एक नाटक को कोर्स में जाने का 'मर्तब' प्राप्त हुआ।[२]

सन् १९७८ ई० में 'न्यू अल्फ्रेड' के स्वामित्व में परिवर्तन हुआ। मानकजी मास्टर, माणिकशाह बलसारा और मेहर्बानजी कापड़िया इस कंपनी के साझीदार बन गए। बलसारा बिजली का काम देखते थे और कापड़िया रोटी घर के इंचार्ज थे। सन् १९२० ई० में यह कंपनी सूरत, अहमदाबाद और मुरादाबाद गई।[३]

---

१. डा० सोमनाथ गुप्त : हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास पृ० १४४ :

२. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल पृ० ६९।

३. डा० सोमनाथ गुप्त : पारसी थियेटर उद्भव विकास और नाट्य में योगदान पृ० २००।

(डा० वि० ल० नम्र के अनुसार १९१८ में माणिकजी मास्टर कंपनी से हट गये।[1])

सन् १९१९ ई० में मुंशी 'अहसन' ने 'चलता पुर्जा' लिखा जो बड़ा लोकप्रिय हुआ।

इसके कलाकार थे—

मास्टर भोगीलाल

सोराबजी ओगरा

इब्राहिम पिंजारा

जालेजर राइटर

अब्दुल रहमान 'काबुली'[2]

सन् १९२१ ई० 'न्यू अल्फ्रेड' ने अहमदाबाद में मास्टर थियेटर में राधेश्याम कथावाचक लिखित 'प्रह्लाद' खेला।

प्रह्लाद के रंगकर्मी इस प्रकार थे—

पुरुषोत्तम मारवाडी : प्रह्लाद

फूलचंद मारवाडी : प्रमोद, श्यामलता

शाकिर भाई : हिरण्यकशिपु

इसमें बाग की सीनरी वासुदेव दिवाकर ने बनाई थी।[3]

अहमदाबाद से कंपनी कानपुर पहुँची। इस समय भोगीलाल डाइरेक्टर का काम करते थे। सोराबजी बीमारी के कारण बंबई में रहने लग गये थे।

'सन् १९२१ ई० में कंपनी का मंडवा आगरे के लाल किले के सामने था। वहाँ कंपनी ने एक खेल की आमदनी 'वारफंड' में दे दी जिसका तत्कालीन मुख्य राजनीतिक दल ने तीव्र विरोध किया और दान दी हुई राशि वापस लेने का आग्रह भी किया। मालिकों ने दल को एक की जगह दो खेलों की आमदनी देने का प्रस्ताव रखा जो नामंजूर हुआ। कंपनी को भरसक सताया गया और 'देख लेने' की धमकी दी गई। तंग होकर कंपनी सूरत पहुँची। यहाँ सार्वजनिक दवाखाने के लिए एक खेल दिया। वह यहाँ आड़े दिनों में 'आबे इब्लीस' नाटक खेलती थी। दीवाली आ गई। धनतेरस

१. डा० सौ० विद्यावती ल० नम्र : पारसी रंगमंच और नारायण प्रसाद 'बेताब' पृ० ८०।

२. वही पृ० ८१।

३. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल पृ० ९४।

को दिन, 'दिल फरोश' नाटक खत्म हुआ। एक घंटा भी न हुआ कि कंपनी में आग लगा दी गई। थियेटर पर १००० गैलन पानी की टंकी थी जो हमेशा भरी रहती थी, उसे भी एकदम खाली कर दिया गया था। आग इतने जोर की लगी थी कि थियेटर के बीम जलकर स्क्रू हो गए थे। सारा सामान खाक हो गया। निराश मालिक हाथ मलते बंबई आये। पुनः तैयारी की। अपने प्राँप्टर की स्मरण शक्ति की सहायता से सारे नाटक लिखवाकर तैयार किए। इस प्रकार कंपनी का पुनर्जन्म हुआ।[1]

राधेश्याम कथावाचक के अनुसार सन् १९१४ में जब यह कंपनी सूरत में थी तब उसके मंडवे में आग लग गई थी।[2] सन् १९२२ ई० के आखिर में अपना 'प्रह्लाद' दिल्लीवालों को दिखाने के लिए कंपनी दिल्ली चली गई। सोराबजी' के बिना तो कंपनी सूनी ही थी, दिल्ली में बिना 'सोराब' की कंपनी तो एक हवा उखड़ने की बात थी। इस कारण, कंपनी के मालिक ने बीमारी की कमजोरी रहते हुए भी—सोराबजी को दिल्ली बुला लिया था। पार्ट यद्यपि वे नहीं करते थे पर दिल्ली में यह हवा जरूर बँधी रही कि सोराबजी भी कम्पनी में हैं।[3]

इन्हीं दिनों सोराबजी ने राधेश्याम कथावाचक को दिल्ली बुलाया। 'परिवर्तन' की बात चलाई। उनकी राय थी कि 'परिवर्तन' की 'रिहर्सल' शुरू हो जाए। भोगीलाल रिहर्सल चलाएँ, पूरी तैयारी में एक वर्ष तो लगेगा ही, तब तक ताकत आ जाएगी और रमजानी का पार्ट 'सोराबजी' ही करेंगे। कथावाचकजी ने भोगीलाल को 'परिवर्तन' सुनाया। उन्हें कुछ ज्यादा नहीं जँचा। न जँचने का कारण स्पष्ट था—उनके लायक उसमें कोई पार्ट कहीं न था। 'लक्ष्मी' बन सकते थे—पर 'स्त्री' का पार्ट करना १-२ वर्ष से छोड़ चुके थे। 'श्यामलाल' के लिए उनका ठिगना कद फिट नहीं था। फिर वह उनकी नेचर का पार्ट भी नहीं था।[4]

भोगीलाल चाहते थे कि कथानक खुद देंगे और राधेश्यामजी 'सीन' तैयार करेंगे जिसके लिए राधेश्यामजी तैयार नहीं हुए। इस पर सोराबजी ने कहा—"उर्दू के मुंशी तो अब कंपनी से चले गए। हिंदी का कोई नाटककार कंपनी में वैतनिक रूप से रखाओ ताकि भोगीलाल उसीसे अपने

१. डा० सौ० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायणप्रसाद 'बेताब' पृ० ८१।
२. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल— पृ० ४५-४६
३. वही पृ० १०३।
४. राधेश्याम कथावाचक मेरा नाटक-काल पृ० १०३।

'कथानक' पर नाटक लिखवाया करें।[1] राधेश्यामजी ने आखिर पं० गोपी-वल्लभ शालिग्राम उपाध्यायजी को 'न्यू अल्फ्रेड' के लिए नाटककार के रूप में भेज दिया।

न्यू अल्फ्रेड के मालिक मिस्टर माणिकजी मास्टर पर 'शेयर्स लेने-वेचने का रंग चढ़ा। इसमें वे घाटे में आये। इतने घाटे में कि अहमदावाद के 'मास्टर थियेटर' की जो जमीन उन्होंने कभी 'धन के जोश' में खूब तेज 'लीज' पर ले रखी थी, उसका 'सालाना' भी न चुका सके। 'जमीन' के मालिक ने इस शर्त पर वह 'लीज' दी थी कि अमुक समय तक किराया न चुका तो 'मास्टर थियेटर' जमीन के मालिक की संपत्ति हो जायेगी, ऐसा ही हुआ।[2]

मिस्टर माणिकजी जीवनजी मास्टर में आखिर इतनी कमजोरी आई कि 'न्यू अल्फ्रेड' भी अब उन्हें 'बोझ' मालूम हुई। सन् १९२४ में उसकी मिलकियत उन्होंने छोड़ दी। तीन व्यक्तियों को 'मालिक' वना दिया—१–मि० फ्रामरोज करेंजिया। २–मैनेजर मेहर्बानजी कापड़िया। ३–मि० माणिकशा बलसारा।[3] फ्रामरोज करें जिया शुरू से ही कम्पनी का हिसाव किताव देखते थे और रेल्वे विभागों का काम देखते थे।

कम्पनी की मिलकियत वदलते ही सोरावजी ने भी कम्पनी को सदा के लिए छोड़ दिया। भोगीलाल स्थायी डाइरेक्टर हो गये।[4]

सन् १९२४ ई० में कंपनी आगरा गई। वहाँ विश्वंभर नाथ कौशिक का 'अहिल्योद्धार' खेलने की तैयारी प्रारंभ हुई। नाटक देखकर पास करने के लिए राधेश्याम कथावाचक के पास आगरा से पत्र आया। सोरावजी सेठ ने भी पत्र लिखा था। राधेश्यामजी आगरा आये और कौशिकजी भी वहीं आये हुए थे। लेकिन कोशिश के वावजूद भी नाटक पास नहीं हो सका और राधेश्यामजी बरेली लौट आये। उस वर्ष उपाध्यायजी ने भी कंपनी की सर्विस छोड़ दी और बरेली चले आये।

आगरा से कंपनी लाहौर गई। तव तक नये मालिकों ने भोगीलाल को भी कंपनी से हटा दिया था। उसके हटने का कारण उसी कंपनी के टेलर-मास्टर मोहम्मद अली की जवानी इस प्रकार है—"भोगीलाल में खुद्दारी बढ़ गई थी, वे सोरावजी की ही भाँति 'कम्पनी' को अपने एकाधि-

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल पृ० १०४।
२. वही : १०७-१०८।
३. वही : पृ० १०८।
४. वही : पृ० ११३।

कार में चलाने लगे थे। सोराबजी के काल में तो कंपनी का एक ही मालिक था जो अलग बँगले में रहता था, सिर्फ रात को थोड़ी देर के लिए अपनी मोटर में 'रुपये की संदूकची' लेने आता था—बाकी सब बाहर भीतर की जिम्मेदारी सोराबजी पर ही छोड़ रक्खी थी। अब तो तीन मालिक हैं—जो आठों प्रहर कंपनी के साथ रहते हैं। यह स्वाभाविक है कि वे दखल न दें, यह कैसे हो सकता था ? आखिर बात इतनी बढ़ी कि भोगीलाल बर्खास्त हो गये।[1] भोगीलाल के बाद कंपनी ने बंबई के 'देनियल दादा' को डाइरेक्टर बनाया।

नवंबर १९२४ ई० में कंपनी लाहौर से पेशावर पहुँची। राधेश्याम भी 'प्रहलाद' छापने की अनुमति माँगने के हेतु पेशावर पहुँच गये। 'प्रहलाद' की 'कापीराइट' कम्पनी के पास थी। नये मालिक चाहते थे कि राधेश्याम जी का पक्का संबंध कम्पनी से बना रहे। इस सिलसिले में निम्नलिखित शर्तें तय हुई :—

(१) राधेश्याम जी के नाटकों को खेलने का हक रहेगा कम्पनी को और छापने प्रकाशित करने का रहेगा नाटककार को। अंतिम नाटक तब छापें जब उसके बाद और नया नाटक निकल जाए।

(२) वे कम्पनी के साथ बँधकर नहीं रहेंगे। स्वतंत्र रूप से प्रेस चलायेंगे, कथाएँ कहेंगे और कम्पनी के लिए नाटक लिखेंगे लेकिन अन्य किसी कम्पनी के लिए नाटक नहीं लिखेंगे।[2]

वेतन सम्बन्धी कम्पनी का नीचे का प्रस्ताव राधेश्याम जी ने यथावत् स्वीकार कर लिया।

"रेलभाड़ा जब-जब आप आयेंगे सेकिंड और थर्ड क्लास का बदस्तूर दिया जायेगा। भोजन के लिये रोज ३) दिये जायेंगे। रहने के लिए—कम्पनी में अलग स्वतन्त्र मकान (या उसका किराया) दिया जायेगा। वेतन प्रतिमास ३००) दिया जायेगा—जो चैक द्वारा 'बरेली पहुँचता रहेगा।'[3]

१५ नवंबर १९१४ ई० को इस रूप में राधेश्याम कथावाचक और 'न्यू अल्फ्रेड' का संबंध स्थिर हुआ। 'परिवर्तन' की तैयारी शुरू हुई।

---

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० ११४-११५।

२. वही—पृ० ११६-११७।

३. वही—पृ० ११७।

कम्पनी के पेंटर श्री वासुदेव और दर्जी मोहम्मद अली को सीनरी और ड्रेस की कल्पना देकर कथावाचक जी बरेली लौट आये।

पेशावर से कम्पनी जनवरी १९२५ ई० में दिल्ली पहुँची। 'परिवर्तन' का रिहर्सल देखने बरेली से राधेश्याम जी भी दिल्ली पहुँचे। उस समय कम्पनी में निहालचन्द हारमोनियम मास्टर थे और गुलामहुसैन तबला मास्टर। डाइरेक्टर डैनियल ने रिहर्सल का सारा काम राधेश्याम जी को सौंपा। राधेश्याम जी की सहायता कर रहे थे नर्मदाशंकर त्रिभुवन नायक। अपने लिखे हुए सीनों की कापी करने, पार्टों को लिखकर बाँटने प्रेस में इश्तहार आदि छपाने, बोर्ड लिखवाने के काम के लिये राधेश्यामजी ने प्रवासीलाल वर्मा की नियुक्ति करा ली।

'परिवर्तन' की नई भूमिका इस प्रकार थी—

शाकिर भाई	:	श्यामलाल (नायक)
नर्मदाशंकर	:	लक्ष्मी
रामकृष्ण चौबे	:	शालंचंद
फीरोज़शा पीठा वाला	:	रमज़ानी

काफी तैयारी के बाद मार्च सन् १९२५ ई० के दूसरे सप्ताह में 'परिवर्तन' का अभिमंचन हुआ। खेल इतना सफल रहा कि लगातार नौ दिन तक यही नाटक खेला गया। इस प्रकार वही नाटक नित्य खेलने की प्रणाली 'परिवर्तन' से प्रारंभ हुई।[1] इस मेहनत का फल यह हुआ कि अप्रैल सन् १९२५ से राधेश्याम जी का वेतन ३००) की जगह ५००) हुआ और भोजन भत्ता ३) दैनिक की जगह ५) दैनिक हुआ।[2] राधेश्याम जी की अनुपस्थिति में उर्दू नाटकों में इब्राहिम भाई और हिंदी नाटकों में नर्मदाशंकर निर्देशक का काम देखते थे।[3] राधेश्यामजी ने नन्दकिशोर, भगवत किशोर 'व्याकुल', गिरिजाशंकर गंगाप्रसाद गवैया जैसे अभिनेता और गायकों की भर्ती कराई।[4]

इसके बाद कंपनी 'परिवर्तन' खेलने बंबई गई। अबकी बार डाइरेक्टर डैनियल दादा बंबई ही रह गये। फिर वे कम्पनी के साथ नहीं गये।

---

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल पृ० १२२-१२३।

२. वही—पृ० १२४।

३. वही—पृ० १२६।

४. वही—पृ० १२७।

राधेश्याम जी ने फिर 'न्यू अल्फ्रेड' के लिये 'मशरिकी हूर' नामक उर्दू नाटक लिखा। इसके कलाकार[1] इस प्रकार थे :—

फिदा हुसैन	:	रोशन आरा
नायक	:	शांति
नन्दकिशोर	:	दिलेरजंग
नायक	:	सुल्तान
फीरोजशा पीठावाला	:	सलामत वेग

'मशरिकी हूर' देहली में सन् १९२६ ई० में खेला गया।[2]

'परिवर्तन' के वाद राधेश्याम जी 'श्रीकृष्णावतार' नामक नया नाटक लिखने लगे। सहायक के रूप में उन्होंने अपने अनुज मदनमोहन लाल की नियुक्ति करवा ली। फिर यह नाटक सन् १९२६ ई० के दशहरे (विजया दशमी) को पहली वार अमृतसर में खेला गया। कई महीने अमृतसर रह कर कंपनी जव लाहौर गई तो लाहौर की जनता ने अमृतसर की जनता से भी ज्यादा इसे अपनाया।[3]

आलोचकों ने सदा ही पारसी रंगमंच के वारे में नाक-भौं सिकौड़ी थी लेकिन इसी मंच पर अभिनीत राधेश्याम के नाटक 'श्रीकृष्णावतार' के वारे में जनता की सम्मति कुछ और ही थी। इसके कई उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

श्री रघुपतिराय (राकेश जी) की ही वात लीजिए, "उनका (राकेश जी का) अधिकतर जीवन इंगलैण्ड में वीता है। हिंदू धर्म की वातें वे जानते ही न थे। इंगलैण्ड से जव लाहौर आये तो 'श्रीकृष्णावतार' देखने गये। दूसरे दिन सपत्नीक देखने गये। तीसरे दिन और रिश्तेदारों को साथ लेकर देखने गये। यहाँ तक कि १७ वार उन्होंने यह नाटक देखा। इसी दर्म्यान में उनके यहाँ 'श्रीकृष्ण' का चित्र भी आ गया, 'गीता' भी आ गई, आरती पूजन भी होने लगा।"[4]

'राकेश जी' की भाँति ही दूसरे फिल्म निर्माता—श्री जयगोपाल (मोहले जी) को तो 'श्रीकृष्णावतार' के कई दृश्य ही कण्ठस्थ थे। महा-महोपाध्याय श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ने जव यह नाटक देखा तो राय

---

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० १२८।
२. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थिएटर, तीसरा भाग पृ० ३१।
३. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० १३५।
४. वही—पृ० १३५–१३६।

दी—"कि यह चलता फिरता हुआ 'सनातन धर्म मंडल' है। उसी भावना से प्रेरित श्री महामहोपाध्याय जी ने उसके छपने पर विस्तृत भूमिका लिखी है। हिंदी के प्रसिद्ध राष्ट्र कवि और नाटककार श्री माधव शुक्ल जिन्होंने 'मशरिकी हूर' की भूमिका लिखी है इस नाटक को देखकर इतने प्रभावित हुए कि दूसरे दिन 'हठ' करके देखने गये।

काशी के दैनिक 'आज' के सम्पादक बाबूराव पराड़कर इस नाटक को देखकर इतने प्रभावित हुए कि 'आज' में डेढ़ कालम का एक प्रशंसा का लेख अपनी लेखनी से लिख कर प्रकाशित किया। कृष्णकांत मालवीय ने तो सदा ही इसको सराहा।

खुद 'न्यू अल्फ्रेड' में—हिंदू ऐक्टरों पर इस नाटक का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने कंपनी में भी रिहाइश की जगह एक छोटे से सिंहासन पर 'श्रीकृष्ण चित्र' रख लिया। रोज सुबह आठ बजे सब हिंदू ऐक्टर आरती करके चंदन लगाके, 'रिहर्सल' में जाते थे।[1]

आषाढ़ सन् १९२७ ई० में 'न्यू अल्फ्रेड' कंपनी लखनऊ पहुँची। जब 'न्यू अल्फ्रेड' की स्पेशल ट्रेन लखनऊ जाते वक्त हरदोई स्टेशन पर रुकी तो अचानक राधेश्यामजी की मुलाकात मेहर्बान जी से हुई और उन्हीं के साथ कथावाचक जी को लखनऊ जाना पड़ा। लखनऊ में नाटक खेलते समय कथावाचक जी ने देखा कि हिंदी के नाटकों की गलतियाँ रात को खेलते समय 'मिस्टेक बुक' में ठीक नहीं लिखी जाती हैं तो उस कार्य के लिये उन्होंने पाँडेय रामतेज शास्त्री की नियुक्ति करवाई।[2]

लखनऊ से कंपनी वाराणसी गई, वहाँ राधेश्याम जी का नया नाटक 'रुक्मिणी मंगल' विजया दशमी सन् १९२७ ई० को पहली बार खेला गया। यह नाटक देखकर पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' जी ने कटु आलोचना निकाली। (उग्र जी के अनुसार परिस्थितिवश ऐसा किया गया था)। लेकिन परिपूर्णा नंद, पराड़कर जी ने 'आज' में इस नाटक की अच्छी प्रशंसा लिखी।[3]

वाराणसी से कंपनी कानपुर गई। कानपुर से दिल्ली पहुँची। दिल्ली में राधेश्याम जी का नया नाटक 'श्रवणकुमार' मई १९२८ ई० में मंचस्थ हुआ। इस बार न्यू अल्फ्रेड ने दिल्ली में अपना ही स्टेज 'टीन' डलवाकर बनवाया था।[4] इसके प्रारंभिक उद्घाटन को आर्य जगत् के विख्यात नेता

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० १३६–१३७।

२. वही—पृ० १४०।

३. वही—पृ० १४२।

४. वही—पृ० १५६।

श्री इंद्र विद्यावाचस्पति जी पधारे थे। दिल्ली से कंपनी पेशावर चली गई। पेशावर में 'श्रवणकुमार' खूब चला। मेहरबान जी के आदेशानुसार अब राधेश्याम जी 'अंबरीष' नामक नया नाटक लिखने लगे। पात्र-संरचना इस प्रकार थी—

चौबे रामकृष्ण	:	अंबरीष (नायक)
नर्मदाशंकर	:	पद्मा (नायिका)
नंदकिशोर	:	मणिकांत
फिदा हुसैन	:	उमा (मणिकांत की पत्नी)
मुन्शी रियाज	:	नाभाग
पुरुषोत्तम	:	सुकेशी (नाभाग की दूसरी पत्नी)
शाकिर भाई	:	दुर्वासा
शांति	:	रुद्रदत्त (दुर्वासा के चेले)
गंगाप्रसाद गवैया	:	गरुड़
गंगाप्रसाद शर्मा	:	सुदर्शन
फिरोजशाह	:	घंटाकरण
हीरा	:	लीला (घंटाकरण की पत्नी)

पेशावर से कंपनी दिल्ली आई। तब तक 'अंबरीष' की तैयारियाँ पूरी हो रही थीं। राधेश्याम जी ने नाटक का नाम बदल कर 'ईश्वर भक्ति' कर दिया। 'टीन' का नाट्यगृह तैयार हुआ। उन दिनों पं० मोतीलाल नेहरू भी दिल्ली में ही थे। उन्हीं के शुभ हाथों द्वारा उद्घाटन होना तय हुआ। इसकी विज्ञप्ति भी हुई। परिणाम यह हुआ कि मेरठ, बुलंदशहर, खुर्जा, गाजियाबाद, पानीपत और रिवाड़ी की जनता ही ने पहली रात सब टिकटें खरीद लीं। देहली वालों के लिए 'टिकट-घर' पहली रात को बंद ही रहा। पं० मोतीलाल नेहरू जी के साथ सरोजिनी नायडू भी पधारी थीं। नाटक बहुत ही सफल रहा। यह १९२९ ई० की घटना है।

दिल्ली से कम्पनी लाहौर गई। जब राधेश्याम जी ने कम्पनी से निवृत्त होने की बात कही तो राधेश्याम जी को कम्पनी के लिये एक नाटककार ढूँढ़ कर देना पड़ा। नये लेखक तो मिले नहीं। उन्होंने पुराने लेखक 'अहसन साहब' की ही नियुक्ति करवाई। लेकिन कार्य आगे नहीं बढ़ा तो कम्पनी ने 'अहसन साहब' को विदा कर दिया। लाहौर से कम्पनी अमृतसर गई। यहाँ सन् १९२९ ई० में 'द्रौपदी स्वयंवर' पहली बार खेला गया। अमृतसर में नाटक खेल कर कम्पनी रामपुर पहुँची। स्वास्थ्य बिगड़ते जाने के कारण २१-२-१९३० को राधेश्याम जी ने कम्पनी से विदाई ली।

राधेश्यामजी के बाद कंपनी ने नया नाटक 'हिंदू विधवा' का मंचन किया वह सफल नहीं रहा। देहली सनातनधर्मी जनता ने इस नाटक पर कुछ एतराज किये थे। फिर कुछ परिवर्तन कर नाटक का नाम 'सुधरा जमाना' रखा। इसी नाम से नौचंदी में यह नाटक खेला गया। नौचंदी से कंपनी हरिद्वार गई। कंपनी के बहुत से लोग हट गये थे-वासुदेव (पेंटर), मोहम्मद अली (दर्जी), निहालचंद (हारमोनियम मास्टर), गुलाम हुसेन (तबला मास्टर), नंदकिशोर, फिरोजशाह आदि कम्पनी छोड़कर चले गए थे। परिणामत. कम्पनी कमजोर हो गई। कम्पनीने हरिद्वार में राधेश्यामजी को बुला लिया। वहाँ 'गंगावतरण' का मचन हुआ। इसके बाद चौबे रामकृष्ण, फिदाहुसैन और नर्मदाशंकर भी कंपनी से अलग हो गए। पेशेवर मुसलमान ऐक्टरों ने आकर लैला मजनूँ, शीरी फरहाद खेल खेलकर कुछ दिन कंपनी चलाई। अब यह निम्नकोटि की कम्पनी बन गई। आखिर कम्पनी 'मकरूज' हुई। गिरवी पड़ी और अंत में १९३२ ई० में बंद हुई।[1] डा० वि० ल० नम्र के अनुसार सन् १९३६ ई० कम्पनी बंद हो गई, पुनः सन् १९३७ ई० में आरंभ हुई और फिर सन् १९३८ ई० में सदा के लिए बंद हो गई।[2]

'कंपनी की शेष जानकारी—

(१) राधेश्याम कथावाचक ने उल्लेख किया है कि उनके कार्यकाल में 'न्यू अल्फ्रेड' इतने ही शहरों में घूमती रही है—बंबई, इंदौर, जयपुर, देहली, मथुरा, आगरा, कानपुर, लखनऊ, बनारस, लुधियाना, जालंधर, अमृतसर, लाहौर और पेशावर। और अलीगढ़, मेरठ. मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, मुरादाबाद की नुमाइशों।[3]

(२) कम्पनी द्वारा खेले गये नाटक : बीमारे बुलबुल, ताजे नेकी, सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र, अलादीन, अलीबाबा, चंद्रावली, दिलफरोश (अहसन) भूलभुलैयाँ ('अहसन'), खूबसूरत बला (१९०७), अछूता दामन (आगा 'हश्र' कृत)।

(३) कम्पनी के नाटककार : मुंशी सैयद मेहदी हसन 'अहसन' लखनवी, आगा मोहम्मद 'हश्र काश्मीरी : पं० राधेश्याम कथावाचक, गोपीवल्लभ शालिग्राम उपाध्याय।

---

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० २१२-२१३।

२. डा० सौ० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायणप्रसाद 'बेताब' पृ० ८१।

३. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० १८०।

(४) कंपनी के कलाकार : सोहराबजी, अब्बास अली, अमृतलाल केशव आदि।

(५) स्त्री भूमिका करने वाले रंगकर्मी : मास्टर निसार, भोगीलाल, फिदा हुसेन (प्रेमशंकर 'नरसी' आदि।

(६) 'न्यू अल्फ्रेड' के मंच की पार्श्व-व्यवस्था का आंतरपक्ष:

राधेश्याम कथावचक ने इस व्यवस्था का निम्नांकित वर्णन किया है—'ड्राप सीन' के पास 'स्टेज मैनेजर' रहता था—वह एक 'चक्करी' घुमाया करता था—जो लकड़ी की-पहिएनुमा होती थी—और जिसकी आवाज ऐसी निकलती थी—मानो कोई चीज् 'फट' रही है। 'सीन ट्राँसफर' के समय यही 'चक्करी' घुमाई जाती थी। 'स्टेज मैनेजर' ही ड्राप सीन उठाने गिराने की 'घंटी' भी बजाया करता था—'डोरवाली हल्की सी घंटी' का संबंध रंगमंच के ऊपर वाले—बाँसों के मचान से भी रहता था—जहाँ पर्दा खींचने और गिराने वाले' एक दो आदमी हाजिर रहते थे—'स्टेज मैनेजर' की 'घंटी' पर ही वे पर्दे उठाने-गिराने का 'काम' करते थे। उन हाजिर रहने वाले कर्मचारियों की नौकरी भी बड़ी जिम्मेदारी की थी। बिजली का एक ऐसा स्वीच भी 'स्टेज मैनेजर' के पास रहता था—जिसका बटन दबाते ही—'हारमोनियम मास्टर' के आगे एक हल्की सी बत्ती जल जाती थी—कि 'गाने की तर्ज' शुरू करो। या इस गाने की 'वन्समोर' दी जाती है—फिर 'गाना' होने दो। 'स्टेज मैनेजर' ही प्रत्येक 'नट' की 'पोशाक'–'बाल'–'पेंटिंग' आदि देखा करता था,—अपनी वेशभूषा 'स्टेज मैनेजर' को दिखाकर ही–'नट' स्टेज पर जाता था। 'मिस्टेक' नोट करने वाला 'कर्मचारी' भी स्टेज मैनेजर के पास बैठता था, जो स्वयं भी—तथा स्टेज मैनेजर की आज्ञा से भी–'मिस्टेक-बुक' में गलतियाँ लिखा करता था।[१]

(७) 'न्यू अल्फ्रेड' की कुछ विशेषताएँ—

इस कंपनी में 'प्राम्ट' (Prompt) नहीं दिए जाते थे, नाटक की किताब भी 'स्टेज पर नहीं रहती थी, ऐक्टर को ड्रामा खूब याद करने के बाद, खूब घोटकर, अपनी जिम्मेदारी पर-पार्ट करने के लिए स्टेज पर खड़ा होना पड़ता था।[२]

न्यू अल्फ्रेड में कायदा था कि प्रत्येक नए नाटक की पूरी सीनरी और पूरी ड्रेसें (जते तक) नवीन बनें।

---

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल पृ० १५७।

२. वही : पृ० ४३-४४।

इस कम्पनी में वेश्याएँ नहीं रहती थीं तथा धार्मिक पार्ट ब्राह्मण बालक ही किया करते थे।[1] (सन् १९३२ के वाद कम्पनी में 'औरतें' भी नौकर रक्खी गयीं।)[2]

कम्पनी अपने नाटकों के 'गाने' छपवाकर बेचा करती थी।[3]

(८) कम्पनी के कर्मचारी :

समस्त रूप में नाटक की पूरी तैयारी की जिम्मेदारी डाइरेक्टर पर रहती थी। इसे संपन्न करने के लिए वह अलग-अलग लोगों की सहायता लेता था। असिस्टेंट डाइरेक्टर का काम सीनरी, ड्रेस और नाच संबंधी तैयारियों का निरीक्षण था। इस पद की कम्पनी में 'शान' रहती है। स्टेज का सभी स्टाफ इसके हाथ में रहता है। इससे ऊपर डाइरेक्टर का पद होता है फिर उनसे भी ऊपर मालिक।[4]

(९) स्टेज मैनेजर : यही ड्राप सीन उठाने गिराने की घंटी भी वजाया करता था। स्टेज मैनेजर ही प्रत्येक 'नट' की 'पोशाक'–'बाल'—'पेंटिंग' आदि देखा करता था,—अपनी वेशभूषा स्टेज मैनेजर को दिखाकर ही 'नट' स्टेज पर जाता था।[5]

(१०) मिस्टेक, नोट करने वाला : स्टेज मैनेजर के कथनानुसार, और अपने निरीक्षण के आधार पर, 'मिस्टेक-वुक' में गलतियाँ दर्ज करना ही इसका काम होता था।[6]

कम्पनी के कर्मचारियों को तव सेकिंड क्लास में ले जाया जाता था–स्पेशल ट्रेन से कम्पनी एक शहर से दूसरे शहर जाया करती थी।[7]

(११) 'न्यू अल्फ्रेड' कम्पनी के नाटकों का उपस्थापन :

राधेश्याम कथावाचक के समय में 'न्यू अल्फ्रेड' के नाटकों का उपस्थापन किस प्रकार होता था इसका वढ़िया वर्णन प्रसिद्ध साहित्यिक गोपालराम गहमरी ने निम्न प्रकार किया है—

कुंभ की यात्रा नाटक कंपनियाँ—

इस मेले के अवसर पर हरिद्वार में दो नाटक मंडलियों का आगमन हुआ था। एक वंबई की न्यू अल्फ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी और दूसरी पारसी

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० २०४।
२. वही : पृ० २१२।
३. वही : पृ० १२।
४. वही : पृ० १५८-१५९।
५. वही पृ० १५७।
६. वही : पृ० १५८।
७. वही : पृ० ४४।

अलेक्झेंडर कम्पनी। न्यू अल्फ्रेड तो स्टेशन के सामने अपना तमाशा दिखलाती थी और पारसी अलेक्झेंडर कम्पनी कनखल रोड पर ।

न्यू अल्फ्रेड कम्पनी ने इस पुण्यस्नान के अवसर पर परिवर्तन, प्रह्लाद, चलता पूर्जा और कृष्णावतार का अभिनय किया। हम भी एक दिन उस नाटक मंडली में पहुँचे। थोड़ी ही देर में कृष्णावतार का अभिनय आरंभ हुआ। यह नाटक सुप्रसिद्ध कविरत्न श्रीयुत पंडित राधेश्याम कथावाचक का लिखा हुआ था। सूत्रधार के मंगल पाठ और नटी के उपोद्‌घात पर नाटक आरंभ हो गया। अत्याचारी क्षत्रिय कुल-कलंक कंस का अत्याचार देवकी के 'कोल्ड ब्लड' बालकों को तलवार से मौत के घाट उतार देना और अंतिम आठवीं कन्या को स्टेज पर पटक कर खून करना नाटक मंडली ने ऐसी खूबी से दिखाया कि दर्शकों का कलेजा कंस की निर्दयता पर काँप गया।

बीच-बीच में महर्षि नारद देव का पधारना और घबड़ाई हुई प्रजा को प्रबोध देना, कंस के जुल्म से जर्जरित प्रजा में भी संतोष छिड़कता था। आप बार-बार यह कह रहे थे कि जो अत्याचार होता है, होने दो। इधर यह प्रबोधन और उधर कंस का महा अनर्थ, प्रजा का महाकष्ट सीमा से बाहर हो गया था। जो उचित बात कहता उसी पर आफत का पहाड़ गिराकर कंस उसे नेस्त-नाबूद कर देता था। बाप उग्रसेन को भी इसी कारण कंस ने कैद करके अपने अत्याचार की पराकाष्ठा दिखला दी। हम तो समझते थे कि राज्य के लिए अर्थ-लोलुप नरेशों का निंद्‌यकर्म मुसलमानी ही बादशाहत में भरा पड़ा है।

हमने कृष्णावतार सब देख डाला और कंस वध तक देखकर अपने नेत्र सफल किये। लेकिन बंबई में हमने गुजराती, मरहठी के बहुत नाटक देखे। कलकत्ते में मिनर्वा क्लासिक थियेटरों में बंगभाषा के नाटक देखे। इसी कलकत्ते में हिंदी के नाटक भी देखे जहाँ हिंदी के बड़े-बड़े तर्रार लेखक रहते हैं वहाँ भी हिंदी के नाटक हमने देखें हैं लेकिन उनके पात्रों का उच्चारण और चरित्र-चित्रण देखकर यही कहना पड़ता था कि अच्छे-अच्छे नाटक लिखे रहने पर भी हिंदी का प्रसार नाटकों के स्टेज पर होने के अभी बहुत दिन बाकी हैं। बयालीस बरस पहले की बात है जब काशी के भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र ने बलिया में 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक स्वयं हरिश्चंद्र बन कर खेला था जिसमें हिंदी के सुलेखक 'दुःखिनी बाला' के लेखक बाबू राधाकृष्ण दास सरीखे हिंदी लेखक, रविदत्त शुक्ल जैसे कवियों ने पार्ट लिया था। उस समय पर्दा और सीनों का सुन्दर जमाव नहीं था लेकिन जो कुछ स्टेज उस समय बना था, बजाज के कपड़े तान कर जो काम भारतेन्दु जी ने कर दिया था

उसकी महिमा यूरोपियन लेडियों तक ने गाई थी। उस समय के कलक्टर साहब की मेम ने आँसुओं से भरा रूमाल निचोड़ कर जब साहब की मारफत भारतेंदु जी से आग्रह किया था कि रानी शैव्या का श्मशान में विलाप अब धीरज छुड़ा रहा है सीन बदला जावे। इस पर सत्य हरिश्चंद्र बने भारतेंदु ने स्वयं ओवर एक्ट किया था और दर्शक मंडली में करुणा के मारे त्राहि-त्राहि मच गई थी।

पात्रों का शुद्ध उच्चारण हमने उसी समय हिंदी के नाटक स्टेज पर सुना था कि आज हरिद्वार में सुना। इस नाटक मंडली ने पात्रों का सजाव, संगीत का ठाठ, पोशाक की सुन्दरता, पर्दे की सुन्दरता सब में कमाल कर दिखाया। यह ठाट-बाट और सीन का सजाव तो हमने बहुत देखा था लेकिन हिंदी के शुद्ध उच्चारण का ठाठ काशी में भारतेंदु नाटक मंडली में पाया था उससे भी कई बातों में चढ़ बढ़ कर हमने इस न्यू अल्फ्रेड नाटक मंडली में पाया।

श्री कृष्ण का बाल-रूप छाछ मक्खन चुराते समय और विकट रूप कंस वध के अवसर पर परम दर्शनीय था। बालकपन में श्री कृष्ण का गौर वर्ण कालिंदी में नाग नाथन के समय जब श्याम हुआ तब उस श्यामता को कंस वध तक नाटक मंडली ने जिस सुन्दरता से निबाहा उसकी बड़ाई करते हुए भी राधेश्याम जी की करनी याद आई। अहा कवि का कृष्ण-चरित्र जिस निपुणता से इस राधेश्याम ने निबाहा है उसको देख कर कारीगर के हाथ चूम लेने का मन करता है। नाटक समाप्ति पर हमसे यह पूछे बिना नहीं रहा गया कि यह कृष्णावतार हरिद्वार की तपोभूमि में ही क्यों होता है? काशी तीर्थ भूमि में यह अवतार दर्शन क्यों नहीं होता?

कम्पनी से उत्तर मिला अवश्य होगा। लेकिन कविरत्न राधेश्यामजी ने कहा—काशी में कृष्णावतार के संग ही द्वारका के कृष्ण भी पधारेंगे। हमने कह दिया, योगमाया का रूप योगमाया सा होना चाहिए। नाटक के होने पर बाहर निकलने पर देखा तो जिस स्टेशन के मैनगेट पर घोड़ों पर चढ़े पुलिसमैन, भीड़ पर हंटर तानकर लोगों को दिन के समय हटाते थे वहाँ अब खासी बिजली के लंप ही दीप्यमान हैं। घड़ी देखते हैं तो चार बज गये हैं। लंबे पाँव ऋषि कुल पहुँच कर अपने टेंट में खो गये।[1]

मिर्ज़ा नज़ीर बेग की थियेट्रिकल कंपनी—

मिर्ज़ा नज़ीर बेग १८८० के आस-पास आगरा में थे। ये नाटककार

---

१. गोपालराम गहमरी निवासी : दैनिक आज गुरुवार २८ ... १९२७ पृ० ६।

भी थे। 'रामलीला अथवा नाटक मार्के लंका (१८९०)', 'नाटक राजा सखी' कृष्ण औतार अथवा 'नाटक चमन नौवहार', 'सत्य हरिश्चंद्र' अथवा 'तमाशा गर्दिशे तकदीर (१८९०-९१)', 'नई चंद्रावती लासानी अथवा गुलशन पाक दामनी (१८९६)', 'माहीगीर', 'बुलबुल', 'इंदर सभा','रुक्मिनी मंगल' इनके नाटक माने जाते हैं। मिर्ज़ा साहब ने एक थियेट्रिकल कम्पनी की स्थापना की और अपने नाटक मंचित किये। आगरा के अतिरिक्त लाहौर, रावलपिंडी, कलकत्ता, दिल्ली, लखनऊ, अजमेर, झालावाड़ आदि नगरों में भी इस कंपनी ने अपने नाटक प्रस्तुत किये।

इस कंपनी में मिर्ज़ा नज़ीर वेग के भांजे वजीर खाँ और वजीर खाँ के पुत्र मियाँ वद्दन साहव भी थे। वजीर खाँ कुशल अभिनेता थे। मिर्ज़ा नजीर वेग की मृत्यु सन् १९२० ई० में हुई और उसके वाद वजीर खाँ ही इस कंपनी के उत्तराधिकारी वने और सन् १९३५ ई० तक इसे चलाया। मियाँ वद्दन कंपनी में मिस्त्री के रूप में कार्य करते थे।

आगरा के फुलट्टी वाजार में पुराने वनारस वैंक के हाते में, जो हाफिज जी का कटरा कहलाता है, कंपनी का स्थायी रंगमंच था। मिर्ज़ा नजीर वेग नियमित रूप से नाटक खेलते थे। रोजाना लगभग दो-ढाई हजार दर्शक उनके नाटक देखते थे। इस कंपनी के लोकप्रिय नाटक थे 'सत्य हरिश्चद्र' तथा 'रुक्मिनी मंगल'। सत्य हरिश्चंद्र में राजा हरिश्चंद्र का अभिनय मिर्ज़ा नजीर वेग करते थे। तारामती की भूमिका पंजेशाही के निवासी हैदर हुसैन और रोहित का ताजगंज निवासी उमराव खाँ करते थे। धीरे-धीरे कंपनी कमजोर होती गई और अंत में वंद करनी पड़ गई।[1]

सांगलीकर संगीत हिंदी नाटक मंडली—[2]

वलवंत भास्कर मराठे ने अपनी कंपनी 'नूतन साँगलीकर नाटक मंडली' का नाम वदल कर 'सांगलीकर संगीत हिंदी नाटक मंडली' रखा। इस मंडली के दौरे अधिकतर महाराष्ट्र के वाहर ही होते थे। इसलिए हिंदी में नाटक खेले जाने लगे। अभिनीत नाटकों की सूची निम्न प्रकार है। पर आज ये नाटक अनुपलब्ध हैं:—

१. सुभद्रा परिणय।
२. वाणासुर चरित्र।
३. विक्रम चरित्र।
४. रुक्मांगद चरित्र।
५. गोपीचंद आख्यान।
६. प्रमिला स्वयंवर।

---

१. शरद् नागर : नटरंग वर्ष ३ अङ्क ९ पृ० ७७-७८ के आधार पर।
२. श्री ना० वनहट्टी : मराठी रंगभूमीचा इतिहास पृ० १८९-१९०।

७. शारंगधर । २०. शशिरेखा परिणय ।
८. प्रह्लाद । २१. शिवाजी ।
९. पार्वती परिणय । २२. प्रेम बंधन ।
१०. श्रियाल चरित्र । २३. पारिजातक ।
११. श्रीनिवास कल्याण । २४. रामजन्म ।
१२. शाकुन्तल । २५. द्रौपदी वस्त्र हरण ।
१३. चंद्रकांत । २६. गालव चरित्र ।
१४. ध्रुव चरित्र । २७. उषा परिणय ।
१५. ध्रुव चरित्र (२ रे) । २८. जयंत जयपाल ।
१६. हरिश्चंद्र । २९. इला ।
१७. राम पट्टाभिषेक । ३०. भीमदेव ।
१८. पारिजातक । ३१. वसंतमाधव ।
१९. अल्लाउद्दीन । ३२. कीचकवध ।

जमादार की नाटक कंपनी—

दिल्ली में बड़ी कोतवाली के पास रामा थियेटर में जमादार की नाटक कंपनी के नाटक हुआ करते थे। कैसरे हिंद प्रेम में इनके विज्ञापन छपते थे जहाँ नारायण प्रसाद ('वेताव') कर्मचारी थे। इसी कारण नारायण प्रसाद का इस कंपनी में आना-जाना था। वावू धनपतराय 'वेकस' इस कंपनी के नाटककार थे। कंपनी के वड़े कर्मचारी चार थे—इब्राहीम करीम, अब्दुर्रहीम साहिव, रहीम वख्श साहव, हारून नइयब।[1] इसमें अब्दुर्रहीम साहिव मैनेजर थे। यह कंपनी दिल्ली से लुधियाना चली गई।[2] वहाँ 'रूप-सुन्दरी' नाटक तैयार किया।[3] नाटक कंपनी के मालिक जमादार ने नारायण प्रसाद को लुधियाना वुला लिया और ३०) मासिक पर उन्हें नाटक कम्पनी में नियुक्त कर लिया।[4] फिर कम्पनी लाहौर गई। यहाँ 'कत्ले नजीर' खेला गया। लेकिन इसकी दिलचस्प घटना 'वेताव' जी की सुपुत्री के शब्दों में यों है :—"नाटक की नायिका नजीर दिल्ली में जिस रईस के मकान में कत्ल हुई थी, वे दिल्ली और लाहौर दोनों स्थानों के रईस थे।

---

१. नारायण प्रसाद 'वेताव' : वेताव चरित्र पृ० ४५।
२. वही : पृ० ५०।
३. वही : पृ० ६१।
४. वही : पृ० ६४।

दोनों जगह कोठियाँ, दोनों जगह व्यापार और इज्जत तथा दोनों ही जगह 'कत्ले नजीर' की ख्याति।

संयोगवश कम्पनी लाहौर जा पहुँची। 'कत्ले नजीर' का विज्ञापन छपने की देर थी कि शहर में धूम मच गयी। 'नजीर' अपने सौंदर्य के लिए बड़ी प्रसिद्ध थी। ऐसे रईस के सहवास में उसका कत्ल—गली-गली में यही चर्चा थी।

जहाँ चार मित्र होते हैं, वहाँ सौ शत्रु भी पैदा हो जाते हैं। वेताव जी की उन्नति भी ईर्ष्यालु सज्जनों से न देखी गयी और नाटक के नायक ने रईस से चुगली जा खायी कि 'इस नाटक में आपकी माताजी का बड़ा अपमान किया गया है।' बड़े आदमियों के आँखें नहीं, कान होते हैं। इसलिए उन्होंने बात सच मान ली और पहुँचे पुलिस कमिश्नर के पास।

नाटक के टिकट इतने बिक चुके थे कि कम्पनी के जीवन में इतने कभी न बिके होंगे। नाटक देखने के लिए जनता इतनी बेताव और उत्सुक थी कि यदि नाट्य-गृह में जगह होती तो और भी कई गुना टिकट बिक जाते। तैयारी भी खूब हुई थी। वेश्या का खेल था, शहर की वेश्याओं ने भी मुफ्त की सहायता देने में बड़ी उदारता दिखाई थी। मूल्यवान पिशवाजें, जेवर, कालीन, तकिये, पानदान, इत्रदान आदि सब मांगे हुए आ गये थे। वेताव जी का पहला नाटक और टिकटों की बिक्री, जनता का जोश, सभी ने उन्हें इतना प्रसन्न कर दिया था कि देहलवी अंगरखे के बंद टूटे जाते थे। कदाचित् किसी बाप को अपने बेटे की शादी में भी इतना आनन्दानुभव न हुआ होगा जितना इस खेल की सफलता के ढंगों से वेतावजी को हो रहा था।

वज्रपात—

चारों ओर धूमधाम मची हुई थी। नाटक आरंभ होने में लगभग दो घण्टे बाकी थे कि पुलिस अफसर सौ-सवा सौ जवानों के साथ 'खेल बन्द करो' का हुक्म लेकर आ पहुँचे। इस वज्रपात या तुषारपात ने नाट्यगृह की शकल ही बदल दी। नौबत खाने का नक्कारा लाश के आगे का बाजा हो गया। बधाइयों की ध्वनि शोक में बदल गई। नाटककार वेताव ने जब यह सुना तो वहीं दिमाग चकरा गया, आँखों में अँधेरा सा छा गया और तुरन्त जमीन पर इस तरह गिर पड़े जिस तरह अंधे के हाथ से छूटकर लाठी गिर पड़ती है।

रात का समय, अदालती कार्यवाही भी संभव नहीं थी। विवश होकर नाटक बंद करना पड़ा। टिकटों के दाम वापस दिये और सब हाथ मलते

हुए रह गये। जमादर साहब की व्याकुलता बेताबजी की बेतावी से भी अधिक थी। यदि उनका वस होता तो भगवान् भास्कर को पाताल से घसीट लाते, मगर……… दिन निकला और दिन निकलने के पूर्व जमादार साहब घर से निकले। मुकदमा चला। लेखक को बुलाया गया। खेल के लिखान की जाँच हुई। रईस की ओर से ५००-५०० रु० दैनिक फीस लेने वाले वकील और बैरिस्टर पैरवी कर रहे थे तथा कंपनी की ओर से फ्री वकील अपनी दिलचस्पी से फ्री सामना कर रहे थे। अन्ततोगत्वा नौ पेशियों के वाद नाटक खेलने की आज्ञा हो गई। इस मुकदमेवाजी ने नाटक में चार चाँद लगा दिये। सारे शहर में शोर मच गया। पहले से भी अधिक प्रेक्षक टूट पड़े। हम यहाँ यह निस्संकोच लिख सकते हैं कि हिन्दी रंगमंचीय नाटकों के एक भी लेखक को ऐसा वज्रपात अपने किसी भी नाटक को अभिनीत होते समय नहीं सहना पड़ा है जैसा कि वेताब जी को अपने इस प्रथम नाटक के रंगमंच पर आने के दो घण्टे पूर्व सहना पड़ा।

आलोच्य-काल (सन् १९०१) में सामान्यत: यदि तीन दिन तक लगातार नाटक खेला जाय तो वह वहुत प्रसिद्ध और सुन्दर, माना जाता था। 'कत्ले नज़ीर' तो ११ दिनों तक लगातार होता रहा। इसलिए अपने काल के नाटकों की ख्याति का इसने 'रेकॉर्ड ब्रेक' कर दिया।[1] प्रारंभ में पुलिस से मनाई का हुक्म आया। (अदालत में जीतने के कारण इस नाटक का नाम हो गया। फिर लगातार ग्यारहं दिन खेल हुए।) यह कंपनी लाहौर भी गई थी। लाहौर से कराँची पहुँची। वहाँ 'हुस्ने-फरंग' का आरंगण हुआ। इसके वाद 'कृष्ण जन्म' का मंचन हुआ जो सफ़ल नहीं रहा। फिर 'मयूरध्वज' का प्रयोग हुआ। यह कंपनी कराँची से इलाहावाद आई। कंपनी की विकट आर्थिक परिस्थिति के कारण वहुतों ने कंपनी छोड़ दी।

नाट्यकला प्रवर्तक संगीत मंडली—

सन् १८९६ ई० में कल्याण में नाट्यकला प्रवर्तक संगीत मंडली' की स्थापना हुई। इस मंडली द्वारा प्रथम मंचित नाटक था 'उषा' जिसे ग्वालियर के महाराजा माधवराव शिंदे के बंधु भैया साहब ने लिखा था। इस नाटक का मंचन बनारस में हुआ था। जब यह मंडली यशवंतराव मिराशी और भाटे के स्वामित्व में आयी तो मुंशी फरोग कृत 'काशी में कावा' का

---

१. सौ० डा० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायण प्रसाद 'बेताब' पृ० १४४-१४५।

मंचन वड़ौदा में किया। परंतु सफलता नहीं मिली। फिर अव्वास की कृति 'श्रीमती मंजरी' का नाम वदलकर 'मज़हवी परवाना' इंदौर में खेला गया। लेकिन इसमें भी सफलता नहीं मिली। सन् १९२३ ई० में बंबई में इस मंडली ने अव्बास अली का 'पंजाब मेल' का अभिनय किया। पहली वार तो यह नाटक असफल रहा। लेकिन चौथे पाँचवे खेल के लिए मुसलमान और बोहरा लोगों की भीड़ प्रेक्षक के रूप में वढ़ने लगी। श्री देसाई के अनुसार दत्तोपंत साने की, चन्नप्पा की भूमिका वहुत लोकप्रिय हुई और इसी कारण 'पंजाब मेल' के कई प्रयोग हुए।[१] १९३४ तक यह मंडली हिंदी के नाटकों का मंचन करती थी। १९४४ में मंडली बंद पड़ गई।

आगरे की कंपनी—

आगरे की भी एक कंपनी सन् १८९९ ई० के आसपास अस्तित्व में थी। उस कंपनी में मुंशी नाज़ीर का नाटक 'शकुंतला' खेला जाता था। यह कंपनी एक बार वरेली भी गई थी।[२]

वरेली की जुबली कम्पनी—

संभवतः सन् १९०० ई० के आसपास बरेली में औलादअली ने एक कंपनी वनाकर खड़ी कर दी। उस कंपनी का 'गुलरूजरीना' खूब ही चला। उसके एक्टर छाती तोड़ गाने गाते थे। गानों ही की प्रधानता थी उस कंपनी में। इसलिए 'वन्स मोर' खूब होती थी—एक-एक गाना चार-चार, पाँच-पाँच दफे चलता था। खेल सुबह के चार वजे के लगभग खत्म होता था। टिकट की दर चार आने की भी थी।[३]

दि बांबे वालंटियर्स थियेट्रिकल कंपनी लिमिटेड[४]

The Bombay Volunteer's Theatrical Company.

वंबई में विठ्ठलदास नामक एक हिंदू-युवक को नाटक देखने का जवर्दस्त शौक था। उसने अपने पास की पूंजी नाटक देखने और खाने-पीने में उड़ा दी। अपना शौक पूरा करने के लिए उसने एक योजना वनाई। अपने सभी मित्रों और चिरपरिचितों से कुल पच्चीस हजार रुपये एकत्रित किये।

---

१. वसंत शांताराम देसाई : मखमली चा पड़दा पृ० ७६-७८।
२ राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० १२।
३. राधेश्याम कथावाचक मेरा नाटक-काल पृ० १२।
४. डा० धनजी भाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख भाग २ पृ० २३७-२३८।

उसी रकम से 'दि बाँबे वालंटियर्स थियेट्रिकल कंपनी लिमिटेड' की स्थापना की।

यह कंपनी रौनक बनारसी के नाटक खेला करती थी। विक्टोरिया कंपनी के नसरवानजी मेरवानजी खानसाहब ने ३००) लेकर इस कंपनी को 'हीरा' नामक उर्दू नाटक लिखकर दिया था। इस नाटक में एदलजी बेरामजी चीचगर (एदलजी सेलानी) ने भाग लिया था। इस नाटक के अंत में 'भगलो हजाम' नामक फार्स खेला जाता था। सेलानी ही इस फार्स में हजाम बनता था। इस फार्स में का गाना उस समय काफी लोकप्रिय हुआ था। उस दिन से एदू सेलानी 'भगला हजाम' के नाम से पहचाना जाने लगा। इस कंपनी के नाटकों की रिहर्सल पिंजरापोल गली में एक छोटे से कमरे में हुआ करती थी। सेठ विठ्ठलदास इस कंपनी को ठीक तरह से नहीं चला सके। जिन्होंने पैसा दिया था, वे पैसे माँगने लगे। ऊपर से विठ्ठलदास कहने लगे कि काफी कर्ज हुआ है। वे अचानक बनारस (वाराणसी) यात्रा पर चले गये जिसका परिणाम यह हुआ कि कंपनी बंद हो गई।

तृतीय अध्याय

बीसवीं शताब्दी की व्यावसायिक मंडलियाँ

तृतीय अध्याय

बीसवीं शताब्दी की व्यावसायिक मंडलियाँ

दी पारसी रिपन थियेट्रिकल कम्पनी—

The Parsi Ripon Theatrical Company.

मेहरजी नशरवान जी सरवेयर इस कंपनी के मालिक थे। मेहरजी सरवेयर अपनी कंपनी में प्रायः अपने ही नाटक खेला करते थे। कामिक पार्ट स्वयं ही किया करते थे। यह कंपनी लखनऊ गई थी। उसने 'खून का खून (हेमलेट) खेला।'[1] सन् १९०१ ई० में यह कंपनी कलकत्ता गई थी। सरवेयर के व्यवस्थापकत्व में वहाँ कलियुग, होनहार नाटक खेले गये। सन् १९०४ ई० में इस कंपनी ने मंसूर पाशा. सेगाई, बगदाद आदि खेल ९१, हरिसन रोड स्थित कर्भन थियेटर में प्रस्तुत किये।[2]

कुल मिलाकर भारत के ५०-५२ शहरों का भ्रमण इस कंपनी ने किया। मेहर जी अपनी कंपनी लेकर बर्मा भी गये थे।[3] जहाँगीर खंभाता के अनुसार सीलोन और सिंगापुर भी पहुँचे थे।[4]

रामहाल (राममहाल) नाटक मंडली कानपुर—[5]

कानपुर के नाट्यानुरागी ईश्वरीनारायण वाजपेयी ने कस्तूरबा गाँधी रोड (पहले विरहाना रोड) पर १९०० के लगभग राममहाल थियेटर की स्थापना की। निजाम और मुहम्मद हुसेन रामपुरी इस नाटक मंडली के

---

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल पृ० २१-२२।

२. डा० हेमेंद्रनाथ दास गुप्ता : दि इंडियन स्टेज, भाग चार पृ० २२९।

३. डा० धनजीभाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख पृ० ३११।

४. जहाँगीर पेस्तन जी खंभाता : मारो नाटकी अनुभव पृ० १९१.

५. डा० लब्बूलाल सुलतानिया 'अज्ञात' : पारसी रंगमंच-नागरी पत्रिका मार्च-अप्रैल १९६८ पृ० १११।
(रामेश्वर प्रसाद शुक्ल और कन्हैयालाल दुबे के साक्षात्कार पर सामग्री आधारित है) तथा नटरंग : वर्ष ३ अंक ९ पृ० ७०।

निर्देशक थे। रामेश्वर प्रसाद शुक्ल हारमोनियम मास्टर थे। कन्हैयालाल दुवे स्टेज मास्टर का काम करते थे।

इस मंडली द्वारा खेले गये नाटक :—

सत्य हरिश्चद्र ('तालिव') 'अहसन' के चंद्रावली, वकावली मुहब्बत का फूल, 'वेताव' के जहरी साँप, महाभारत, 'हश्र' के भक्त सूरदास, सैदे हविश, असीरे हिर्स (शेक्सपिअर के 'किंग जान' पर आधारित), सफेद खून (शेक्सपिअर के 'किंग लियर' का अनुवाद), ख्वाबे हस्ती तथा वनदेवी, वीर अभिमन्यु (राधेश्याम कथावाचक) गुलरू जरीना (औलाद अली), वतन (नैयर), लैला मजनूँ (मुंशी 'दिल'), शीरीं फरहाद, इंदर सभा आदि।

मंडली सन् १९१५ ई० के वाद सीतापुर, फर्रुखावाद, कन्नौज, कासगंज, जौनपुर, जवलपुर आदि नगरों में भ्रमण कर नाटक खेलती थी। इसी शताब्दी के दूसरे दशक में मंडली समाप्त हो गयी।

कारोनेशन नाटक कंपनी—

यह कंपनी 'महवूब' की कारोनेशन नाटक कंपनी कहलाती थी। सन् १९०३ के आसपास यह कंपनी इलाहावाद गई थी। महवूब स्वयं नाचता वहुत अच्छा था। उनका एक नाटक था विनायक प्रसाद 'तालिब' कृत 'कनक तारा'। महवूब के नाटक भी 'जुवली' कंपनी की भाँति ही होते थे, पर पोशाक और सीनरी 'जुवली' कंपनी से कहीं अच्छी थी।[1]

डा० पवनकुमार मिश्र ने 'दि कोरोनेशन थियेट्रिकल कंपनी' के अंतर्गत निम्नांकित विवरण दिया है :—

यह कंपनी पंजाव में स्थापित हुई तथा इस कंपनी में प्रसिद्ध अभिनेता मुन्शी अंजुम हयात और मास्टर पेशावरी थे। सन् १९०८ ई० में डवगरी गेट पेशावर में इस कंपनी ने कई नाटक खेले। इस कंपनी का प्रसिद्ध नाटक था 'ताहदे इरजानी'।[2]

दि पारसी थियेट्रिकल कम्पनी आफ वंवे—[3]

इस कंपनी के निम्नांकित चार हिस्सेदार थे :—

---

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल पृ० १८।
२. डा० पवनकुमार मिश्र : पारसी रंगमंच उसके नाटक और नाटककारों का आलोचनात्मक अध्ययन पृ० १८७।
३. पं० नारायण प्रसाद 'वेताव' : वेताव चरित्र पृ० ७३-७५।

१. सेठ फराम जी अप्पू[१]।
२. सेठ रतन जी अप्पू।
३. दादाभाई मिस्त्री।
४. सेठ वजाँ।

इस कम्पनी के निर्देशक थे केशवलाल मानचंद नायक। नारायण-प्रसाद 'बेताब' इस कम्पनी में पचास रुपये पर नाटककार के रूप में नियुक्त हुए थे। इनके पूर्व एक बड़े मुन्शी भी इस कम्पनी में मौजूद थे। 'बेताब' जी ने इस कम्पनी के लिए 'कसौटी' लिखा। यह नाटक सन् १९०२ ई० में लाहौर के ब्रेडला हाल में पहली बार खेला गया। वहीं एक छोटी कम्पनी भी नाटक खेल रही थी। इस बड़ी कम्पनी की सफलता देख, ईर्ष्या से इसमें आग लगा दी। दि पारसी थियेट्रिकल कम्पनी के समस्त सामान जल गये। 'कसौटी' के बाद 'बेताब' जी का 'मीठा जहर' का मंचन हुआ। इस कम्पनी में फिर अमृतलाल नायक आये। फिर मिस गौहर भी इसी कम्पनी की 'अभिनेत्री' बनी। सन् १९०६ ई० में 'बेताब' जी का तीसरा नाटक 'जहरी साँप' खेला गया। चौथा नाटक लिखने तक अमृत नायक का देहांत हो गया। इसलिए 'बेताब' जी ने चौथे नाटक का नाम ही 'अमृत' रखा। इसके बाद 'बेताब' जी ने कम्पनी को छोड़ दिया।

दी पारसी नाटक मंडली—[२]

विक्टोरिया नाटक मंडली बंबई के बाहर चली गई थी। इसलिये विक्टोरिया थियेटर खाली था। कुछ शौकीन युवकों के मन में इच्छा हुई कि नाटक खेलें। इसलिए दिनशा दादाभाई अप्पू, नवल मजगाम वाला, सोराब वजाँ और फरामजी अप्पू ने मिलकर इस मंडली की सन् १९०३ में स्थापना की। एक मत से इन्होंने तय किया कि मंच पर स्त्रियों को लाना चाहिए। इसलिए लतीफा बेगम को तनख्वाह देकर नियुक्त किया। इनको लेकर 'इंद्रसभा' का मंचन विक्टोरिया थियेटर में हुआ। एक बार जब 'बेगम'

---

१. पारसी नाटक मंडली के संस्थापकों में भी सेठ फरामजी अप्पू और सेठ वजाँ का नाम है सम्भव है कि दि पारसी थियेट्रिकल कंपनी की समाप्ति पर पारसी नाटक मंडली की स्थापना हुई होगी। दोनों नाट्य-संस्थाओं में केवल दो नाम वे ही हैं। यह मानने के लिए कि दोनों एक हो सकती हैं, कोई प्रमाण नहीं है।

२. डा० धनजी भाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख पृ० १५८-१६१ पर आधारित।

मंच से अंदर जा रही थी तब कोई पारसी सज्जन उसे अपने 'ग्रेट कोट' में छिपाकर पीछे के द्वार से निकल गया। मंडली ने फिर अमीरजान और मोतीजान नामक पंजाबी स्त्रियों को नियुक्त कर लिया। इन्हें लेकर नाटक खेला जाने लगा। इनमें से अमीरजान से किसी मुसलमान ने निकाह कर लिया। उसके जाने के बाद मोतीजान ने भी नाटक मंडली छोड़ दी।

इस नाटक मंडली में निम्नांकित अभिनेता काम करते थे—

नवरोजी दो मजगामवाला
कावसजी मिस्त्री
धनजीभाई फोटोग्राफर
माणेकजी मिस्त्री
पेसु पोखराज
पेसु नूरानी
खशा जेक
दादाभाई मेहता
दीनशा दादाभाई अपु
बापू ठरठरी
मोर्वद शहरियारजी
कँवरजी बुचिया

इनके अतिरिक्त एक पारसी मैकेनिक मिस्त्री, एक पेंटर वगैरह लोग इसमें थे। यह मंडली कभी-कभी बाहर भी जाती थी। इस मंडली के अभिनीत नाटक इस प्रकार थे—लैला मजनू, बेनजीर-बदरे मुनीर, पद्मावत, शकुंतला, जहाँगीरशाह गौहर, छैल बटाऊ, मोहिनी रानी : इन नाटकों के गाने 'आराम' के लिखे हुए थे।

अंत में फरामजी दादाभाई अपू की मृत्यु बंबई में हुई। जब मंडली मद्रास गई थी तब वहाँ दिनशा दादाभाई अपू का स्वर्गवास हुआ।[1] मंडली कमजोर पड़ गई। सब सामान वगैरह बेचने की बात चली। अन्त में कलकत्ता के जे० एफ० मादन की कंपनी ने दी पारसी नाटक मंडली का सारा सामान खरीद लिया और इस प्रकार यह मंडली समाप्त हो गई।[2]

---

१. डा० धनजीभाई पटेल : पारसी नाटक तख्तानी तवारीख पृ० ३९५ :
२. वही : पृ० ३९५।

शेक्सपीयर थियेट्रिकल कंपनी—

आगा मोहम्मद हश्र 'कश्मीरी' ने न्यू अल्फ्रेड (New Alfred) कंपनी छोड़कर अपनी ही शेक्सपीयर थियेट्रिकल कंपनी खोली। यह कंपनी अधिक समय तक नहीं चल सकी। सियालकोट में यह कंपनी टट गई।[1] अन्यत्र उल्लेख मिलता है कि आगा हश्र की कंपनी का नाम 'ग्रेट शेक्सपीयर कंपनी' था परंतु अव कई मास से 'ग्रेट अल्फ्रेड' रखा गया है।[2]

डा० ए० ए० नामी के अनुसार आगा हश्र साहव ने राजा गोविंदराव हैदरावादी के साथ मिलकर १९०९ ई० में एक नाटक कंपनी वनाई। आगा साहव ने इस नई कंपनी के लिए एक नाटक लिखा—'जुर्म-ए-वफ़ा'। यह नाटक 'सिल्वर किंग' के नाम से अभिनीत हुआ।[3] इसके वाद हश्र 'मशरकी सितारा' नामक नाटक लिखकर अपनी कंपनी के साथ लखनऊ गये। लखनऊ से पटना होते हुए वे कलकत्ता पहुँचे। कलकत्ते में कहीं थियेटर खाली न रहनेके कारण उन्होंने सुरतिवगान में मँडवा वनाकर उसमें 'मशरकी सितारा' को 'यहूदी लड़की' के नाम से खेला।[4]

न्यू अलवर्ट—

पंजाव की एक नाटक कंपनी १९१० के आसपास अस्तित्व में थी। इस कंपनी के मालिक थे—वावू नानकचंद खत्री। हरिद्वार से यह कंपनी वरेली गई। वरेली में 'राजा चित्रकूट के महल' में ठहरी। हरिद्वार में नानकचंद ने अपना 'रामायण नाटक' जयपुर-महाराज सवाई माधोसिंहजी को दिखाया था—उन्होंने नाटक में कुछ त्रुटियाँ वताईं। कंपनी जव हरिद्वार से वरेली चलने लगी तो महाराज साहव के प्राइवेट सेक्रेटरी 'अविनाश वावू' ने आपका नाम वतलाया और सलाह दी कि आपसे हम अपना रामायण नाटक' का संशोधन करायें।[5]

कंपनी के डाइरेक्टर—नाम के लिए तो 'रहीमवख्श' (कामिक पार्ट करने वाले) थे—पर वास्तव में डाइरेक्शन रहता था 'अब्दुल रहमान कावुली' (ट्रेजिक पार्ट करने वाले) का। इधर-उधर के (चोरी के) नाटक

१. डा० सोमनाथ गुप्त : हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास पृ० १४४।
२. हिंदी रंगमंच माधुरी वर्ष ८ अंक ६।
३. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर दूसरा भाग पृ० २४५।
४. वही : पृ० २४७।
५. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० २७।

यहाँ भी खेले जाते थे। पर अच्छे एक्टर होने के कारण खेल जमते खूब थे। रहमतअली और निसार जैसे गायक एक्टरों की धूम मची हुई थी।[१]

हर्मोनियम मास्टर थे–'मियाँ नवाब', 'तबला मास्टर'–गुलाम हुसैन। सब उसे 'उस्ताद' कहा करते थे। वह हर एक गाने को—जब एक्टर गाकर स्टेज के भीतर जाने लगता था—अपने तबले के बोलों और टुकड़ों से ऐसा उभारता था कि कभी-कभी तो उसीके कारण 'वन्समोर' हो जाया करती थी।[२] रामायण नाटक में मास्टर निसार ने सीता का अभिनय किया। मास्टर प्रभु ने राम का। अम्बाला में नानकचंद बीमार हो गये। इसलिए कंपनी में शिथिलता आ गयी। सन् १९१४ में नानकचंद की मृत्यु हो गई।

शेक्सपीयर नाटक मंडली—

शेक्सपीयर नाटक मंडली वल्लभ केशव की थी। इस मंडली ने बुधवार, २ अगस्त १९११ ई० को बंबई में आशिक हुसैन लिखित 'दुखिया दुलहन' को 'जहाँआरा' के नाम से प्रस्तुत किया।[३]

सूरविजय नाटक समाज—

'सूरविजय नाटक समाज' की स्थापना सूरत (गुजरात) में सन् १९१४ ई० में हुई। इसके संस्थापक थे लवजीभाई मायाशंकर त्रिवेदी और दुर्लभराम जटाशंकर रावल। इस मंडली की स्थापना में पंद्रह हजार रुपये की पूँजी लगाई गई थी। दोनों ही गुजराती थे। लवजीभाई बंबई में वाँकानेर नृसिंह गौतम नाटक समाज के गुजराती 'बिल्वमंगल' में सूरदास का अभिनय करके प्रसिद्ध हुए थे। इसीलिए उन्होंने अपनी कंपनी का नाम 'सूरविजय नाटक समाज' रखा था। सर्वप्रथम सूरविजय नाटक समाज ने गुजराती के दो नाटक खेले। पहला था चंदूलाल मेहता कृत 'शुक्र जयंती' उर्फ 'इंद्रगर्वखंडन' और दूसरा था नाथूराम सुंदरजी शुक्ल का लिखा 'बिल्वमंगल' उर्फ 'सूरदास'। मालिकों ने नाथूराम शुक्ल से ही गुजराती नाटक का हिंदी अनुवाद तैयार कराया और उसका नाम 'सूरदास' रखा। सूरविजय इंदौर होते हुए दिल्ली पहुँचा।[४] इस मंडली की सीनरी बड़ी शानदार थी। दोनों मालिक और मैनेजर (हिम्मतराम) तथा डाइरेक्टर (भगवानजी) सब

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० २८।

२. वही : पृ० २९।

३. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर दूसरा भाग पृ० २९५।

४. अज्ञात : पारसी रंगमंच : न[illegible]ी पत्रिका मार्च-अप्रैल १९६८ पृ० १०९।

बड़े मिलनसार थे।[1] 'सूरदास' के कारण 'सूरविजय नाटक समाज' बहुत ही लोकप्रिय हो गया था। इसकी लोकप्रियता का उदाहरण राधेश्याम कथावाचक ने निम्नांकित घटना से दिया है। "सूरविजय कंपनी 'संगम थियेटर' ही में अपने खेल खेलती थी। उसी के सामने—दूसरी सड़क पर बनारसी कृष्णा में जहाँ अब मोती टाकीज है—'न्यू अल्फ्रेड' आ गई। उसने चाहा अपने खेलों से 'सूरविजय' को गिरा दे पर 'सूरदास' के कारण 'सूरविजय' भी चलती ही रही।"[2]

राधेश्याम कथावाचक ने 'उषा-अनिरुद्ध' लिखा ही था कि सूरविजय कंपनी बरेली आई। सूरविजय ने 'उषा-अनिरुद्ध' तैयार किया और बरेली में ही खेला। सूरविजय ने राधेश्याम कथावाचक लिखित 'श्रवणकुमार' का मंचन सन् १९१७ ई० में और 'बालकृष्ण' सन् १९१८ ई० में किया। दोनों का प्रयोग दिल्ली में ही हुआ था। पंजाब के मुंशी किशनचंद 'जेबा' इस मंडली के नाटककार थे। 'सीतावनवास', 'गंगावतरण', 'महात्मा विदुर' नाटक इन्हीं के लिखे थे।

सूरविजय का संबंध काशी के नाटककार हरशंकर उपाध्याय से भी था। सूरविजय ने इनके नाटक 'काशी विश्वनाथ', का भी मंचन किया था।[3] हरशंकर उपाध्याय इस मंडली में अभिनय भी करते थे। इन्होंने 'काशी विश्वनाथ' नाटक में राजा दिवोदास के उपदेशक ब्राह्मण वेशधारी विष्णु की भूमिका निभाई थी।[4] इस कंपनी के 'महाभारत' में उपाध्याय जी भीम बने थे। इनका अभिनय प्रभावशाली होता था।[5]

उन दिनों सूरविजय ने नाटक क्षेत्र में क्या स्थान पाया था इसका चित्र निम्नांकित उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है :—

'गंगावतरण' में भगीरथ के अभिनय से प्रभावित हो कर जयपुर के महाराजा ने दो सौ रुपये मासिक आजीवन पेंशन बाँध दी। लोकमान्य तिलक ने 'सूरदास' को देखकर मंडली के आश्रयदाताओं में अपना नाम लिखा लिया। लल्लजी के अभिनय पर प्रसन्न होकर पं० मदनमोहन मालवीय ने 'नाट्यकला भूषण' की उपाधि प्रदान की। गया में कांग्रेस के तैतीसवें

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० ८२।
२. वही : पृ० ८२-८३।
३. व्योमकेश शर्मा : हिंदी रंगमंच और काशी : 'आज' का विशेषांक दिनांक १७-२-१९५७, पृ० १७।
४ रुद्र काशिकेय : नागरी पत्रिका वर्ष १ अंक ६-७, मार्च-अप्रैल-१९६८, पृ० ९३
५. वही पृ० ९३।

अधिवेशन के समय 'सूरविजय' के नाटक देखकर दिल्ली के हकीम अजमल खाँ और पं० मोतीलाल नेहरू ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की ।[1]

सूरविजय के 'गंगावतरण', 'महात्मा विदुर', 'सम्राट अशोक' आदि नाटक राष्ट्रीय भावना से अनुप्राणित होने के कारण दिल्ली और पंजाब में ब्रिटिश सरकार द्वारा बंद कर दिये गये थे ।[2]

सन् १९२८-१९२९ में अस्वस्थ हो जाने के कारण लवजीभाई ने सूरविजय को अपने कलाकारों के हाथ में सौंप दिया और स्वयं निवृत जीवन विताने लगे ।

दुर्लभराम रावल की मृत्यु से सूरविजय नाटक समाप्त हो गया :

बलवन्त संगीत मंडली[3] —

बलवन्त संगीत मंडली ने भी 'ताजेवफ़ा' खेला । 'ताजेवफा' खेलने के बाद इस मंडली ने आनद प्रसाद कपूर का लिखा 'भक्त ध्रुव' और मुंशी फरोज़ कृत 'काँटों में फूल' नाटक भी खेले । इन दोनों नाटकों में नायिका का अभिनय मास्टर दीनानाथ मंगेशकर करते थे । बलवन्त संगीत मंडली ने साहस का और एक कदम आगे रखा । क० पा० खाडिलकर कृत मराठी के लोकप्रिय नाटक 'मानापमान' का हिन्दी अनुवाद रंगमंच पर लाने का प्रयास किया । किसी महाराष्ट्रीय लेखक से 'मानापमान' का हिन्दी अनुवाद तैयार करवाया । पूना में खाडिलकर जी की उपस्थिति में नाटक की तैयारी आरंभ की । सितम्बर १९१८ में बंबई में पहली बार यह नाटक खेला गया । अभिनेताओं के कुछ नाम इस प्रकार थे —

डा० जोशी—धैर्यधर

चिं० ग० कोल्हटकर—लक्ष्मीधर

दि न्यू पारसी थियेट्रिकल कंपनी—

The new Parsee Theatrical Company.

सन् १९१६ ई० में जब यह कंपनी नागपुर में थी, फराक देहलवी का 'सुनहरी सितारा' नाटक 'काँटों में फूल' के नाम से खेला गया । यह कंपनी नागपुर से कलकत्ता गई । कलकत्ते से इन्दौर गई । इन्दौर में १९१६ में 'सुनहरी सितारा' प्रदर्शित हुआ ।[4]

१. डा० डी० जी० व्यास (अज्ञात द्वारा उद्धृत)
२. अज्ञात : पारसी रगमंच : नागरी पत्रिका मार्च–अप्रैल १९६८ पृ० ११० ।
३. लता मंगेशकर : मा० दीनानाथ स्मृति दर्शन पृ० ३०-३२ ।
४. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ९० ।

नूतन संगीत मंडली[1]—

नूतन संगीत मंडली रामभाऊ स्वामी गंधर्व की मराठी कंपनी थी। फरूक साहब ने १९१६ में इस मंडली के लिए 'पार्सा देवी उर्फ महानंदा' लिखा था। नागपुर में इस नाटक का मंचन हुआ था।

पारसी इंपीरियल नाटक मंडली—

सन् १९१५ ई० से सन् १९२० ई० के बीच जोसेफ डेविड के उपस्थापकत्व में इस कंपनी ने एशियाई सितारा, बागे ईरान, खाकी पुतला, कौमी दिलेर, विराट पर्व आदि उर्दू हिन्दी के नाटक खेले।[2] इस मंडली को भी कलकत्ते के मादन थियेटर्स लिमिटेड ने खरीद लिया।[3] और तदुपरांत शम्स लखनवी का 'तलवार का धनी' नाटक खेला गया।[4]

(यह सामग्री श्री अज्ञात के लेख 'पारसी रंगमंच : नागरी पत्रिका मार्च-अप्रैल १९६८ पृ० १०७ से उद्धृत है)।

दुर्गा प्रसाद गुप्त इस कंपनी के नाटककार थे। इनके 'वीर हम्मीर' के अभिनय के समय फौज तक बुलानी पड़ गयी थी।[5]

१९२१ ई० में इस मडली के लिए महीउद्दीन 'नाजा' ने 'शेरे काबुल' नामक नाटक लिखा और मंडली ने पहली बार इसे बम्बई में खेला।[6]

शिवराज मंडली—

इन्दौर की 'शिवराज मंडली' महाराष्ट्रीय नाटक मंडली थी। वहाँ के रहने वाले अधिकांश हिन्दी भाषी होने के कारण इस मंडली के गोविंदराव टेंबे ने सन् १९२० के आस-पास गुजराती के प्रसिद्ध नाटककार मणिशंकर त्रिवेदी कृत हिंदी नाटक 'सिद्धि संसार' की तैयारी की। इस नाटक के ६०-७० प्रयोग हुए। रंगकर्मी निम्न रूप में थे :—

मोहन पालेकर : मनोरमा

---

१. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ९० ।

२. रमणिक श्रीपतराय देसाई : गुजराती नाटक कंपनीओनी सूचि गु० ना० स० म० स्मा० ग्रन्थ बम्बई १९५२ पृ० १२० ।

३. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० १७० ।

४. रमणिक श्रीपतराय देसाई : गुजराती नाटक कंपनीओनी सूचि गु० ना० श० म० स्ना० ग्रन्थ बम्बई १९५२ पृ० १२१ ।

५. व्योमकेश शर्मा : हिन्दी रंगमंच और काशी : 'आज' विशेषांक १७-२-५७ पृ० १७ ।

६. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर दूसरा भाग पृ० ३२६ ।

नारायणराव देसाई	:	शंखनाद
भाऊराव जाधव (बाद में गोविंदराव टेंवे)	:	गोरखनाथ
ऐहमत खाँ	:	मत्स्येंद्र नाथ

इस नाटक की सफलता को देखकर शिवराज मंडली ने और दो हिन्दी के नाटक 'देश दीपक' और 'गो रक्षण' खेले। पर इनमें उतनी सफलता नहीं मिली।[1]

'व्याकुल भारत, नाटक कंपनी—

मेरठ के विश्वंभर सहाय 'व्याकुल' ने[2] सन् १९२१ ई० में मेरठ में ही 'व्याकुल भारत' नाटक कम्पनी की स्थापना की। इस कंपनी की स्थापना की कारण—मीमांसा करते हुए विश्वंभर सहाय 'प्रेमी' ने लिखा है कि व्याकुल जी ने १९१८ में 'गौतम बुद्ध' नामक नाटक की रचना की। इस नाटक का धारावाही प्रकाशन 'ललिता' मासिक पत्रिका में हुआ। हिंदी जगत में इनके इस नाटक ने बड़ी ख्याति प्राप्त की। दो वर्ष बीतने पर कुछ व्यक्तियों ने व्याकुल जी पर जोर दिया कि वे अपने 'गौतमबुद्ध' नाटक को रंगमंच पर लाएँ। अतः सन् १९२१ ई० में उन्होंने 'व्याकुल नाटक कंपनी' का निर्माण किया।[4]

इस कंपनी के उद्देश्य के बारे में प्रख्यात नाटककार गोविंद वल्लभ पंत ने अपना अभिमत दिया है कि व्याकुल कंपनी, अभिनेता और दर्शक दोनों के सुधार के लिए आरम्भ हुई थी और कई अंशों में उसे सफलता भी मिली। बुद्धदेव, तेगेसितम आदि खेल उसके साक्षी हैं। नाटक लिखने

---

१. वसंत शान्ताराम देसाई : मखमलीचा पड़दा पृ० २५-२६।

२. डा० वेदपाल खन्ना ने 'विश्वंभर' की जगह 'विश्वंमर नाथ' लिखा है। (हिंदी नाटक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन पृ० ९२)।

३. डा० अज्ञात ने १९२१ की जगह अलग तिथि दी है—"मेरठ के देवनागरी हाई स्कूल के ड्राइंग मास्टर लाला विश्वंभर सहाय 'व्याकुल' ने कुछ रईसों के सहयोग से व्याकुल भारत नाटक मंडली की स्थापना सन् १९१६-१७ में की।

—पारसी रंगमंच : नागरी पत्रिका, मार्च-अप्रैल १९६८, पृ० ११०।

४. विश्वंभर सहाय प्रेमी : हिंदी रंगमंच को व्याकुल जी की देन। (पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रन्थ : सं० देवदत्त शास्त्री, पृ० ३५६)।

के लिए कंपनी का आदर्श था—भावों की स्पष्टता, भाषा सरलता और साधारण जनता के लिए लिखना।[1]

'बुद्धदेव' के प्रथम प्रयोग के बाद, देहली में श्री हकीम अजमल खाँ से प्रारंभिक उद्घाटन कराके बनारसी कृष्णा थियेटर (आज कल के 'मोती टाकीज') में 'भगवान बुद्ध' खेला और खूब पास हुआ।[2]

इस नाटक के प्रदर्शन के बारे में विश्वंभर सहाय 'प्रेमी' ने कुछ और तथ्य प्रस्तुत किया है जो निम्नांकित है :—

"नाटक की तैयारी के लिए उन्हें महाराष्ट्र के कलाकारों का भी सहयोग लेना पड़ा। गौतमबुद्ध का अभिनय महाराष्ट्रीय चुन्नीलाल को दिया गया। कई मुस्लिम युवक भी इस नाटक में अभिनय के लिये छाँटे गये। बंबई के श्रीराम और मेरठ के मोहनराय नामक कलाकारों ने नाटक के पर्दे की रचना की।

सबसे पहले 'व्याकुल नाटक कम्पनी' ने भारत की राजधानी दिल्ली में लालकिले के समीप 'बुद्ध' नाटक का प्रदर्शन किया। देशभक्त और हकीम अजमल खाँ ने नाटक का उद्घाटन किया था।

उस समय भगवान बुद्ध के वैराग्य, उनके समाधिस्थ होने तथा निर्वाणपद प्राप्त करने जैसे दृश्यों को देखकर जनता आत्मविभोर हो जाती थी। उस समय नाटक में स्थान मिलना कठिन हो जाता था। मेरठ के धनी-मानी व्यक्ति दिल्ली जाकर नाटक को देखते थे और व्याकुल जी के रंगमंच की प्रशंसा करते थे।[3]

मुरादाबाद की नुमाइश में 'व्याकुल भारत' ने अपना 'बुद्ध' खेला।[4] बंबई में भी 'गौतम बुद्ध' का प्रदर्शन हुआ। इस मंडली ने देहली में पहली-बार मायल देहलवी का नाटक 'तेग ए सितम' का मंचन किया।[5] जनेश्वर प्रसाद 'मायल' का लिखा 'सम्राट चन्द्रगुप्त' भी इस कंपनी द्वारा खेला गया। इस कम्पनी में 'प्रेमयोगी और 'मातृ भक्ति' नामक दो नाटक लिखने

---

१. गोविंद वल्लभ पंत : मैं नाटक कैसे लिखता हूँ : बिहार थियेटर पटना सं० जगदीश चंद्र माथुर, अगस्त १९५८, पृ० ५९।
२. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल पृ० ७६।
३. विश्वंभर सहाय 'प्रेमी' : हिंदी रंगमंच को व्याकुल जी की देन (पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रन्थ : सं० देवदत्त शास्त्री, पृ० ३५६।
४. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० ७८।
५. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ९७।

में गविंद वल्लभ पंत ने सहयोग दिया था जिनमें 'प्रेमयोगी' अच्छा वना।[1]

इस कम्पनी में शेयर होल्डर्स की ओर से एक सज्जन 'श्री प्यारेलाल' मैनेजर थे, स्टेज के डाइरेक्टर थे 'अली अनहर साहब'।[2] गोविंद वल्लभ पंत ने कंपनी के नाटककार के रूप में काम किया। डा० वीरेंद्रनाथ दास, कुँवर कृष्ण कौल एम० ए०, केशवदास टंडन आदि का घनिष्ठ संबध इस कंपनी से था।

कंपनी बहुत दिन तक सुचारू रूप से नहीं चल सकी। व्याकुलजी ने कंपनी से अलग होने का वयान इस रूप में दिया है—"शेयर होल्डर्स के भी झगड़े उठे, कम्पनी में 'प्रमुखता' भी सभी चाहते थे। यह भी चक्कर आखिर चला, प्रबंध करते-करते मैं बीमार पड़ा और कम्पनी छोड़कर चला आया।"[3] व्याकुल भारत कम्पनी आखिर लिक्विडेशन में गई।

यों व्याकुल भारत कम्पनी भी पारसी रंगमंच का सा ही अनुकरण करता था। फिर भी इनके नाटकों में उस मंच का भद्दापन नहीं था। विशेषकर भाषा की दृष्टि से इसमें हिंदी को स्थान मिला।

रामविजय नाटक कंपनी—

मेरठ में इस कंपनी की स्थापना हुई थी। गोविंदवल्लभ पंत इस कंपनी में अभिनेता थे। पटियाला में इस कंपनी ने 'सीता-वनवास' का मंचन किया। इसके प्रदर्शन की प्रथम रात्रि में गोविंद वल्लभ पंत राम की भूमिका में उतरे थे।[4]

नाट्यकला प्रवर्तक मंडली—

नाट्यकला प्रवर्तक[5] के मालिक थे भाटेराव। सन् १९२२ ई० में अब्बास अली इस मंडली में नौकर हो गये। सन् १९२४ ई० तक अब्बास अली ने इस मंडली के लिए आठ नाटक लिखे जिनका प्रदर्शन निम्नांकित स्थानों में हुआ—

---

१. गोविंद वल्लभ पंत : मैं नाटक कैसे लिखता हूँ (बिहार थियेटर, पटना पृ० ५९।
२. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० ७८।
३. वही : पृ० ८०।
४. गोविंद वल्लभ पंत : रंगमंच का मोह (लेख) नई धारा वर्ष ३ अंक १-३ अप्रैल-मई १९५२।
५. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थिएटर दूसरा भाग पृ० २९८।

नाटक	स्थान
१. सेवक धर्म	बनारस
२. एक ही पैसा	पूना
३. सोने की चिड़िया	हैदराबाद
४. पोस्ट मास्टर	वर्धा
५ मुमताज	बिलासपुर
६. इंद्रध्वज	बनारस
७. शादी की पहली रात	हैदराबाद
८. पूरनमल (दो भागों में)	नागपुर

अलेक्जेंड्रा नाटक मंडली[1]—

बलवन्त गार्गी के अनुसार इस मंडली के मूल संस्थापक थे—मुहम्मद सेठ और हबीब सेठ।[2] जोसेफ डेविड के हाथ में आने पर मंडली ने मुंशी नैयर कृत 'वतन' का अभिनय सन् १९२२ ई० में किया। यह नाटक राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत होने के कारण बहुत लोकप्रिय हुआ। इसके गीत भी बड़े मर्मस्पर्शी थे जो युवकों को विदेशी सरकार के प्रति रोष से भर देते थे। फलस्वरूप उसे सरकार का कोपभाजन बनना पड़ा।

यह कंपनी जब पटना में 'वतन' का प्रयोग कर रही थी तब इसी नाटक को देखकर 'जिया' को अपना नाटक 'नल व दमयंती' को लिखने की प्रेरणा मिली।[3]

डा० ए० ए० नामी ने लिखा है कि अलेक्जेंडर थियेट्रिकल कंपनी आफ बाँबे ने पेशावर में महम्मद अजीज महम्मद खाँ 'दिल' का लिखा 'ताजमहल' खेला।[4] इस कम्पनी ने लाहोर में १ जनवरी १९३० को 'दिल' का ही लिखा 'शहदा-ए-वतन' पहली बार प्रदर्शित किया।[5] इस कंपनी ने सन् १९२४ ई० में मेरठ की नुमाईश में 'दिल' कृत 'कत्ले नजीरन' का मंचन किया।

---

१. सामग्री का आधार : अज्ञात: पारसी रंगमंच मासिक पत्रिका मार्च-अप्रैल १९३८ पृ० १०७।
२. बलवन्त गार्गी : थियेटर इन इंडिया (थियेटर आर्ट्स बुक्स) पृ० १६१।
३. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ५६।
४. वही : पृ० २२।
५. वही : पृ० २३।

इस कंपनी ने सरदार अनवर खाँ B. A. का नाटक 'मुक़सद ईमान' को दिल्ली में कई बार खेला।[1]

यशवंत कम्पनी—

राजाश्रय के फलस्वरूप इन्दौर में यशवंत कम्पनी अस्तित्व में आई। इसके दो ऐतिहासिक नाटक थे—(१) 'चलती दुनिया' (२) 'अहिल्योद्धार'। सन् १९२३ में पूना में 'चलती दुनिया' का मंचन हुआ था। शंकरराव सर-नाईक ने इस नाटक को सफल बनाने में काफी मेहनत उठाई थी।[2]

रंगबोधेच्छु नाट्य समाज—

सन् १९२४ ई० में मापसा (गोवा) में रघुवीर सावकार ने 'रंगबोधेच्छु नाट्य समाज' की स्थापना की। इस नाट्य समाज ने मध्यप्रदेश और निजाम की रियासत का दौरा करते हुए मराठी नाटकों के साथ उर्दू-हिन्दी नाटक भी खेले। 'सुफेद डाकू' 'मीरा के प्रभु' और 'सुनहरी मछली' आदि इस नाट्य समाज के हिन्दी नाटक थे। इस नाट्य समाज के सभी अभिनेता महा-राष्ट्रीय ही थे।[3]

पारसी मिनर्वा थियेट्रिकल कंपनी—

महम्मद अजीज अहम्मद खाँ 'दिल' ने 'लैला मजनू' नाटक १९२५ में लिखा था। पारसी मिनर्वा थियेट्रिकल कम्पनी ने इस नाटक को २० फरवरी १९२६ ई० को सहारनपुर की नुमाईश में पहली बार मंचित किया। मास्टर कमर ने इस नाटक का निर्देशन किया था। इसके रंगकर्मी थे खादिम हुसेन, बंदूकखाँ, अलीबक्ष, बशीर, चनी, आइशा आदि।[4]

खटाऊ एंड कंपनी—

पारसी रंगमंच के प्रख्यात अभिनेता कावसजी खटाऊ के पुत्र जहाँगीर खटाऊ ने 'खटाऊ एंड कंपनी' की स्थापना की। यह कंपनी सूरत भी गई थी।[5] वहाँ 'असीरे हिर्स' का मंचन हुआ था। इसमें पेशेवर नर्तकियों ने भाग लिया था।[6] शरीफा बाई ने एक मर्दाना पार्ट किया था। न्यू अल्फ्रेड

१. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० २२०।
२. वसंत शांताराम देसाई : मखमलीचा पड़दा पृ० ७४।
३. ज० स० सुखटणकर—रूपड़ी पृ० १६०-१६१।
४. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० २०।
५. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० १००।
६. वही : पृ० १०१।

का अभिनेता अम्मूलाल अब इस कंपनी में आ गया था। वह डाइरेक्टर था।[1] दीनशा पेंटर भी इसी कंपनी में था।[2] दीनशा के अनुसार कंपनी खूब तरक्की पर थी,[3] लेकिन सोहराबजी ओगरा का कथन था कि "उस कंपनी के 'एकौंट' में आजकल रुपये नहीं हैं।"[4] उसके बाद जल्दी ही यह कंपनी टूट गई।[5] इसी कंपनी ने सन् १९४२ ई० में दि खटाऊ अल्फ्रेड थियेट्रिकल कंपनी के नाम से अलग कंपनी की स्थापना की।[6]

दि खटाऊ अल्फ्रेड थियेट्रिकल कंपनी—

जहाँगीर कावसजी खटाऊ ने सन् १९४२ ई० में इस कंपनी की स्थापना की। इस कम्पनी ने आगा 'हश्र' के 'आँख का नशा' और 'दिल की प्यास' नाटक खेले। सन् १९४५ ई० में यह कम्पनी एफ० आए० ईरानी के स्वामित्व में गई।[7]

इस कम्पनी के लिए सन् १९४३ ई० में जिया अज़ीम 'आबादी' ने 'पहली ठोकर' नामक नाटक लिखा। पहली बार बंबई में इस नाटक का मंचन हुआ। इसमें रंगकर्मी निम्न प्रकार थे :—[8]

कज्जनबाई	:	सुंदरी
सरस्वतीबाई	:	कमला
गुलाम साबिर	:	आनंद कुमार
अजीम	:	लक्ष्मीचंद
सरफराज	:	शिवकुमार
चना दलाल	:	रहमान

महीउद्दीन 'अज़म' ने इस कंपनी के लिए 'हुमायूँ' लिखा। यह नाटक पहली बार बंबई में मंचित हुआ। इसमें रानी प्रेमलता, निगौना, सरस्वती

---

१. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक-काल पृ० १०२।
२. वही : पृ० १०१। ३. वही : पृ० १००।
४ वही : पृ० १०१। ५ वही : पृ० १०२।
६. डा० लक्ष्मीलाल सुल्तानिया : बंगला, मराठी और गुजराती रंगमंच के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन पृ० ४६८ (अप्रकाशित प्रबन्ध)
७. वही : पृ० ४६८।
८. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ७१।

वाई, गुलाम साविर, चना दलाल, सरफराज हुसेन और सैयद हुसेन ने काम किया।[१]

सन् १९४३ ई० में 'निशाना' पहली वार वंवई में खेला गया। इसमें पात्र-रचना निम्न रूप में थी।[२]—

कज्जनवाई	:	रूपा
सरस्वती	:	शोभा
गुलाम साविर	:	रूपकुमार
अज़ीम	:	मालोवल
सरफरा हुसेन	:	जयपाल

मुस्तफा और मौलिचंद ने कॉमिक में काम किया।

कोरंथियन नाटक मंडली (कलकत्ता)—

'एलफिस्टन की सुंदरी अभिनेत्री शरीफा पर मुग्ध होकर महाराजा चरखारी ने मादन थियेटर्स से मंडली को तीन लाख रुपये में खरीद लिया और उसका नाम रखा—'कोरंथियन नाटक मंडली'।[३] आगा हश्र,[४] हरिकृष्ण जौहर, तुलसीदत्त शैदा इस मंडली के नाटककार थे। कोरंथियन में अनेक स्त्रियाँ थीं, गोरी मेमें तक सम्मिलित थीं। उर्दू नाटकों में अधिकतर कलकत्ते के मुसलमान और हिंदी नाटकों में मारवाड़ी युवक अभिनय करते थे।[५] मुं० नस्र का 'प्रेमी वालक' ('वीर वालक' का दूसरा भाग) इस मंडली द्वारा खेला गया।[६]

'सती के आँसू' नामक नाटक महिउद्दीन 'अज़म' ने कोरंथियन थियेट्रिकल कंपनी आफ कलकत्ता के लिए लिखा। यह नाटक कलकत्ते में पहली वार खेला गया। इसमें पेशतर कोपर, सुल्ताना वेगम, अब्दुल्ला कावली, महम्मद हुसेन वगैरह ने काम किया।[७]

डा० नामी ने उल्लेख किया है[८] कि दि रायल कोरंथियन थियेट्रिकल

१. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ८४।
२. वही : पृ० ८४।
३. डा० 'अज्ञात' : पारसी रंगमंच : नागरी पत्रिका मार्च-अप्रैल १९६८ पृ० १०६
४. प्रेमचन्द : हिंदी रंगमंच, माधुरी वर्ष ८ अंक ६।
५. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० २१५।
६. डा० 'अज्ञात : पारसी रंगमंच : नागरी पत्रिका मार्च-अप्रैल १९६८ पृ० १०६।
७. डा ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ८३।
८. वही : पृ० ८३।

कंपनी ने सन् १९३८ ई० में 'किसान की बेटी' का मंचन पहली बार कलकत्ते में किया। इसमें प्रेमलता, हैदर बाँदी, मुबारक, गुलाम साबिर, सोहराबजी केरावाला ने काम किया। मास्टर ब्रिजलाल वर्मा इसके संगीत निर्देशक थे।

(एक जगह कोरंथियन थियेट्रिकल कंपनी आफ कलकत्ता कहा गया है और आगे अन्यत्र दि रायल कोरंथियन ...... लिखा है, इससे संदेह होता है कि ये दोनों अलग कंपनियाँ तो नहीं हैं ? अभिनेताओं की नामावली से यही सिद्ध होता है कि कम्पनी वही है।)

कोरंथियन ने पहली बार 'अज़म' का 'अनोखी सुहागन' को मंचस्थ किया। इसमें रानी प्रेमलता, हैदर बाँदी, गुलाम साबिर, सूरजराम और महम्मद हुसेन ने काम किया।[1]

इस कम्पनी ने अर्स लखनवी का लिखा 'नवी समाज' का भी मंचन किया था।[2]

मूनलाइट थियेटर्स—

मूनलाइट थियेटर्स की स्थापना सन् १९३९ ई० में ३० ताराचंद दत्त स्ट्रीट पर हुई। प्रारंभिक दस वर्षों में इसमें नृत्य कव्वाली के साथ फिल्मों का प्रदर्शन होता था। सन् १९४९ में गोवर्द्धन मेहरोत्रा ने व्यावसायिक आधार पर इसे सुव्यवस्थित रूप में चालू किया। उन्होंने प्रेमशंकर को निर्देशक के रूप में रखा। सीतादेवी अभिनेत्री की भी नियुक्ति कर ली। इसमें प्रत्येक सप्ताह १३ प्रदर्शन (Show) किये जाते थे—मंगलवार, बुधवार, वृहस्पतिवार, शुक्रवार और शनिवार को प्रत्येक दिन दो-दो और रविवार को मैटिनी सहित तीन प्रदर्शन। सोमवार अवकाश का दिन रहता था। हिंदी (खड़ी बोली) के नाटक प्रायः बुधवार, वृहस्पतिवार, शनिवार और रविवार को तथा राजस्थानी के खेल मंगलवार और शुक्रवार को होते थे। हिंदी के नये खेल का बुधवार को और राजस्थानी के नये खेल का उद्घाटन मंगलवार को हुआ करता था। यह शनिवार को नया खेल प्रारंभ करने की प्राचीन परिपाटी में एक नया मोड़ था, जिसे लाने का श्रेय मूनलाइट थियेटर्स को है।

सन् १९४९ ई० और १९५० ई० में खेले गये नाटक निम्न प्रकार हैं—

वी० सी० माथुर कृत 'पूरन भगत,' 'नलदमयंती', 'शकुंतला' और 'चंद्रगुप्त', चतुरसेन शास्त्री कृत 'हिंदू कोडबिल'। इसमें प्रेमशंकर ने नायक

---

१. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ८४।
२. वही : पृ० २४९।

महेश की भूमिका निभाई थी। रणधीर सिंह साहित्यालंकार कृत 'देश के लिए' (१९५०), 'भगवान परशुराम' (१९५१), 'वीर कुँवरसिंह' (१९५२), 'रानी सारंधा' (१९५३), और 'पिया मिलन' (१९५४), राधेश्याम कथावाचक कृत 'कृष्णसीता' (१९५३), कुमार सलेम पुरी कृत 'भोला भगत' (१९५५), और 'लाड़ला कन्हैया' (१९६०), इन सभी नाटकों में सीतादेवी नायिक की भूमिका करती थी।

सन् १९४९ ई० से लेकर सन् १९६० ई० तक मूनलाइट थियेटर्स ने ढाई सौ नाटक खेले। रणधीर साहित्यालंकार कृत 'नई मंजिल' (१९४९), 'समाज की जंजीर' (१९५०), 'विजयी राजसिंह' (१९५४), 'कला की पुजारिन' (१९५४) और 'वीरमती' (१९५७), रामचंद्र 'आँसू' कृत 'पद्मिनी', 'हाड़ी रानी', 'ताराबाई', 'आल्हा ऊदल' आदि महत्त्व के प्रदर्शन थे।

इसमें कला-सज्जा का काम कन्हैयालाल परिहार करते थे। मास्टर सुभान संगीत निर्देशक थे, मास्टर ओमप्रकाश नृत्य निर्देशक थे। मूनलाइट थियेटर्स के शेष रंगकर्मी निम्न प्रकार थे—

प्रेमशंकर 'नरसी', त्रिलोचन झा, मास्टर नैनूराम, कमल मिश्र, मास्टर मनोहर लाल, भँवरलाल वर्मा, एफ० चार्ली, जूनियर जॉनी, एम० ए० प्रेम, मास्टर दुर्गा प्रसाद, मास्टर इनायत, मास्टर कुरेशी, विमलकुमार, राधेकिशन, सीतादेवी, लता बोस, नीलम देवी, सुशीला देवी, रानी उर्वशी, अकीलो बेगम, मिस हंसा, शांता देवी, चंदा रानी, कमला गुप्ता, बेबी जुबेदा, मिस मलका, मिस दीपू।[1]

२२ मार्च १९६८ को मास्टर फिदा हुसैन मूनलाइट थियेटर छोड़कर मुरादाबाद चले गये। यद्यपि मास्टर नरसी के चले जाने के बाद त्रिलोचन झाने कार्य भार सम्हाला, किंतु वे काम चला नहीं पाये।[2] मूनलावट थियेटर्स हमेशा के लिए बंद हो गया। यह वह थियेटर था जिसने पारसी रंगमंच की परंपरा को १९६८ तक बना रखा था।

आर्टस् सेंटर हाल (पँवार थियेटर)—

कलकत्ता में सन् १९३४ ई० के पूर्व से ही व्यावसायिक मंडली के रूप में यह संस्था काम कर रही है। इसके संचालक हैं श्री कन्हैयालाल पंवार।

१. डा० झब्बूलाल सुल्तानियाँ : बंगला, मराठी और गुजराती रंगमंच के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन पृ० ४७३-४७७ के आधार पर।

२. डा० विश्वनाथ शर्मा : हिंदी रंगमंच उद्भव और विकास पृ० २१५। (दोनों प्रबंध अप्रकाशित हैं)।

इसीलिए इस संस्था को 'पँवार थियेटर' भी कहते हैं। कलकत्ता के बिडन स्ट्रीट के मिनर्वा थियेटर में इनके नाटक मंचित होते हैं।

इनके प्रमुख कलाकार हैं राजकुमारी, नसीमबानू, शरद्‌कुमार, दुर्गा प्रसाद शर्मा, कमल मिश्र, कम्मू, बानू, सुभद्रा देवी, ज्योतिकुमार, दुर्गा देवी आदि।

सन् १९३४ ई० में 'पृथ्वीराज' मंचस्थ हुआ। 'सीता वनवास' 'कृष्ण सुदामा', 'देवता' (पं० इंद्र कृत) इनके द्वारा अभिनीत खेल हैं। १५), १०), ७), ५), ३), १) टिकट लगा कर यह संस्था अपने नाटकों का प्रदर्शन करती है। रंगकर्मियों को यह संस्था अच्छा वेतन देती है। कमल मिश्र को ४५०), दुर्गाप्रसाद को ३००), शरद् को ३००), नसीम को ११००) प्रतिमास दिये जाते थे। हर रोज एक नाटक प्रस्तुत होता था। एक-एक नाटक आठ-आठ महीनों तक चलता था।

कन्हैयालाल पंवार ही इन नाटकों के निर्देशक हुआ करते थे।[1]

इंडियन आर्टिस्ट्स असोसिएशन—

मादन थियेटर्स लिमिटेड, कलकत्ता की अभिनेत्री कुमारी जहाँयारा कज्जन उस कंपनी से अलग हो गई और उसने अपनी ही एक नाटक मंडली सन् १९३६ ई० के आस-पास स्थापित की। उसी का नाम है इंडियन आर्टि-स्ट्स असोसिएशन।[2]

इस कंपनी में खेले गये 'नल व दमयंती' के बारे में डा० नामी लिखते हैं[3] :—एक बार जब कि पटना में हबीब सेठ की पारसी अलेक्जेंड्रा थियेट्रिकल कंपनी नैयर का ड्रामा 'वतन' दिखला रही थी, उसे देख 'जिया' को ड्रामा लिखने का शौक हुआ। और बहुत मेहनत से एक ड्रामा लिखा और उसे लेकर कलकत्ता गये जहाँ कज्जन बाई ने The Indian Artists Association के नाम से कंपनी बनाई थी और मंजूर हसन 'नज़र' के ड्रामा 'आखिरी उम्मीद' की रिहर्सल जारी थी। वह कज्जन बाई से मिला और अपना पहला नाटक 'नल व दमयंती' दिखलाया। कजन बाई ने उसे बहुत पसंद किया और आरजू लखनवी का 'चिरागे तौहीद' दिखलाने के बाद इस

---

१. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ पृ० ६१-६२।

२. डा० झब्बूलाल सुलतानिया : बंगाली, मराठी और गुजराती रंगमंच के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन (अप्रकाशित प्रबंध) पृ० ४७०।

३. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर : तीसरा भाग पृ० ६९-७०।

ड्रामे की तैयारी शुरू कर दी। इसमें आगा पीरजान, गुलाम हुसैन, फिदा हुसैन और हसीनबाई वगैरह ने काम किया। आगा पीरजान ने इसे डाइरेक्ट किया और ग्लोब थियेटर में कामयाबी के साथ दिखलाया गया। इस समय जोराब जी केरावाला कज्जन की कंपनी में शामिल हुए और नज़र साहब कंपनी से चले गये।

इसके बाद कज्जन की कंपनी के लिये जिया साहब ने 'बेवतन की ईद' सन् १९३६ ई० में लिखा जो लाहौर के क्रौन सिनेमा में दिखलाया गया। इसमें गुलाम हैदर के भाई चनी और जब्बार वगैरा ने काम किया और इसे सोराब जी केरावाला ने डाइरेक्ट किया। जिया के तीसरे ड्रामे 'प्रेम शक्ति' में सोराब जी केरावाला और आगा पीरजान के सब एक्टरों ने काम किया।

इस कंपनी ने 'हीर-राँझा', 'शिरी-फरहाद', आगा हश्र लिखित 'सूरदास' आदि नाटक खेले। 'शिरी-फरहाद' हैदराबाद (सिंध) में और 'सूरदास' कराँची में सन् १९३६ ई० में खेले गए। इन नाटकों में फिदा हुसैन, प्रेमशंकर 'नरसी' ने नायक की भूमिका अदा की थी। कुमारी कज्जन ने हीर, दमयंती, शीरी और चिंतामणि का सफल अभिनय किया। 'सूरदास' नाटक को सिंध के तत्कालीन गवर्नर भी देखने आये थे।[1]

जिया साहब ने सन् १९३८ ई० में 'हुमायूँ' लिखा जिसे कंपनी ने पहली बार लाहौर में मंचित किया। इसमें युसुफ आफंदी, जब्बार, फिदा हुसैन और कज्जनबाई ने काम किया। इस नाटक को फिदा हुसैन ने डाइरेक्ट किया था।[2]

दी पारसी कौरोनेशन थियेट्रिकल कंपनी, कलकत्ता–[3]

इस कंपनी की स्थापना सन् १९३७ ई० में कलकत्ता में हुई। इस कंपनी के रंगकर्मियों का विवरण इस प्रकार है—

पेसी करानी	:	संचालक (Managing Propriter)
माणिकलाल	:	निर्देशक

१. डा० छब्बूलाल सुलतानिया : बंगला, मराठी और रंगमंच के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन ,१९००-१९६० (अप्रकाशित प्रबंध) पृ० ४७०।

२. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ७०।

३. डा० सौ० विद्यावती ल० नम्र : हिंदी रंगमंच और पं० नारायण प्रसाद 'बेताब' पृ० ८४ के आधार पर।

उस्ताद झंडे खाँ : संगीतज्ञ
दिनशा ईरानी : पेंटर।

पं० नारायण प्रसाद 'बेताब' से 'हमारी भूल' नामक नाटक लिखवाकर कलकत्ते में प्रथमबार कंपनी ने खेला। यह कंपनी का प्रथम अभिनीत नाटक था। यह कंपनी लगभग एक वर्ष चलकर बंद हो गई।

शाहजहाँ थियेट्रिकल कंपनी—

सन् १६३८ ई० में मादन थियेटर्स के कुशल अभिनेता माणिकलाल मारवाड़ी ने शाहजहाँ थियेट्रिकल कंपनी की स्थापना ५, धर्मतल्ला स्ट्रीट पर की।[1] इस कंपनी ने 'बेताब' का 'हमारी भूल', 'महाराणा प्रताप', 'दुर्गा-दास' 'हर हिटलर', बी० सी० मधुर कृत 'बहुत सोये' और अमर बलिदान, 'नरसी मेहता', 'हीर-राँझा', 'ससिपुन्नो' आदि कई नाटक खेले। अधिकांश नाटकों में प्रेमशंकर ने नायक की भूमिका निभाई थी।[2]

'महाराणा प्रताप' का उपलब्ध विवरण निम्न प्रकार है—

बटोहीचंद मदहर ने 'राणा प्रताप' लिखा। सन् १६३६ में यह नाटक मंचित हुआ। इसमें भाग लेने वाले कलाकार इस प्रकार थे—

सीताराम : राणाप्रताप
अब्दुल रहीम : मानसिंह
रज़ी उद्दीन : अकबर
अनवरी बाई : राणा प्रताप की पत्नी
सरस्वती देवी : ,, ,, की बेटी
बेबी सोना : ,, ,, की छोटी बेटी

कामिक में बाबू माणिकलाल, गामा जिनूनी और शकुन्तला ने भाग लिया था।

यह कंपनी अपना 'अमर बलिदान' लेकर कानपुर गई और उसने माल रोड के प्लाजा थियेटर (अब सुन्दर टाकीज) में २८-२६ दिसंबर १६४१ को उक्त नाटक खेला। नायक और नायिका की भूमिकाएँ क्रमशः प्रेमशंकर तथा एक रंग एवं फिल्म अभिनेत्री ने की। निर्देशक स्वयं माणिक लाल थे। इस नाटक की टिकट दरें सात आने से लेकर साढ़े चार रुपये तक थीं और महिलाओं के लिए पृथक प्रबंध था, जिनके लिए टिकट-दर

१. डा० झब्बूलाल सुलतानिया : बंगाली मराठी और गुजराती रंगमंच के संदर्भ में हिंदी रंगमंच का अध्ययन पृ० ४७०-४७१।

२. वही · पृ० ४७०-४७१।

बारह आने थी। 'अमर बलिदान' के कलकत्ते में इस समय तक १०८ प्रयोग हो चुके थे।[1]

सन् १६४४ ई० में यह कंपनी दिल्ली में अपने खेल खेल रही थी। इस कंपनी में डाइरेक्टर थे चौबे रामकृष्ण जो राधेश्याम कथावाचक के शिष्य थे।[2] इसने राधेश्याम कथावाचक से 'सती पार्वती' के अभिनय करने की अनुमति माँगी। सन् १९४४ ई० में दिल्ली में यह खेला गया। इस नाटक की प्रमुख भूमिकाएँ इस प्रकार थीं—

चौबे रामकृष्ण	:	शिव
माणिकलाल	:	नारद
सुल्ताना	:	सती पार्वती

'जिया' का नाटक 'प्रेम शक्ति' को 'प्रेम युद्ध' के नाम से इस कंपनी ने खेला।[3]

बाद में कराँची पहुँच कर यह कंपनी बंद हो गई।[4]

बाटलीवाला थियेटर—

इस थियेटर के संचालक थे बाटलीवाला। इस कंपनी का 'सत्य हरिश्चंद्र' बहुत प्रसिद्ध था। इसमें मिस बिजली ने तारामती का अभिनय किया था। इस कंपनी के कलाकार थे—मिस बिजली, मिस गुलाब, मिस मुन्नी, मास्टर पेशावरी, मास्टर ताँतसरा और स्वयं बाटलीवाला।[5]

रायल थियेट्रिकल कम्पनी आफ बांबे—[6]

यह पंजाब की नाटक मंडली थी जिसकी स्वामिनी थी—रहमूजान। इस कंपनी के 'महाभारत' नाटक में रहमू जान स्वयं 'दुर्योधन' की पुरुष भूमिका किया करती थी। पारसी रंगमंच पर स्त्री द्वारा पुरुष भूमिका का यह अपने ढंग का अकेला दृष्टाँत है।[7]

---

१. डा० लक्ष्मीलाल सुलतानिया : बंगाली, मराठी और गुजराती रंगमंच के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन पृ० ४७०-४७१।

२. राधेश्याम कथावाचक : मेरा नाटक काल पृ० २७१।

३. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ३२।

४. वही : पृ० ७०।

५. अमृतलाल नागर : पारसी रंगमंच (पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रन्थ सं० देवदत्त शास्त्री) पृ० २९३।

६. डा० 'अज्ञात' : पारसी रंगमंच : नागरी पत्रिका मार्च-अप्रैल १९६८ पृ० १०८।

७. ललितकुमार सिंह 'नटवर' कलकत्ता से एक भेंट (दिसंबर १९६५) के आधार पर।

वाँकानेर-आर्यहित-वर्धक संगीत नाटक कम्पनी–

सौराष्ट्र की इस कंपनी ने राजा गोपीचंद, रणजीत सिंह, रामायण, पोरस-सिकंदर, सूरश्याम, कलियुग की सती, आदि कई नाटक हिंदी में खेले। यह मंडली नागपुर, इंदौर, कराँची, भोपाल, रतलाम वगैरह शहरों की यात्राएं करती थी।[1]

नरसी थियेट्रिकल कम्पनी, कानपुर—[2]

सन् १९४२ ई० के प्रारंभ में फिदा हुसैन ने कानपुर में उपर्युक्त कंपनी की स्थापना की। रंगमंच के क्षेत्र में फिदा हुसैन प्रेमशंकर 'नरसी' के रूप में प्रख्यात थे। संभवत: अपने ही उपनाम के कारण, इस कंपनी का नाम नरसी थियेट्रिकल कपनी रखा गया होगा। इस कंपनी ने कन्हैयलाल 'कातिल' का 'भक्त नरसी मेहता' मुन्शी 'अर्श' कृत 'मुझे देखो' (२७ से २९ मार्च १९४२), लैला मजनू, पं० वृद्धिचंद्र अग्रवाल 'मधुर' लिखित 'बहुत सोए' (१९४२ में) आदि नाटक खेले। ये नाटक माल रोड पर स्थित मिनर्वा टाकीज (अब राक्सी टाकीज) में रात को साढ़े नौ बजे से खेले जाते थे। अगस्त १९४२ के राजनीतिक आंदोलन के कारण लगभग आठ महीने चलकर यह कंपनी बंद हो गई।

इस थियेटर में मास्टर नैनूराम और मास्टर चंपालाल सह निर्देशक थे। नवाबुद्दीन ट्रांसफर सीनों के मास्टर थे।

पृथ्वी थियेटर्स—

पृथ्वी थियेटर्स की स्थापना भारत के प्रख्यात तथा लोकप्रिय अभिनेता पृथ्वीराज कपूर ने १५ जनवरी १९४४ को साढ़े चार लाख की पूँजी लगाकर की। इस थियेटर्स की स्थापना के संबंध में जोहरा सहगल ने उल्लेख किया है कि अपने खुद के थियेटर होने की इच्छा रखने के बावजूद भी पृथ्वीराज कपूर ने अपनी नाटक कंपनी बनाने की दृष्टि से कोई सुनिश्चित योजना नहीं बनाई थी। संयोग की बात है कि १९४३ ई० के अंत में पंडित नारायण प्रसाद 'बेताब' पृथ्वीराज कपूर से मिले और उनसे प्रार्थना

---

१. डा० रणधीर उपाध्याय : हिंदी और गुजराती नाट्य-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन पृ० ३०८।

२. डा० झब्बूलाल सुलतानिया 'अज्ञात' : पारसी रंगमंच-नागरी पत्रिका मार्च-अप्रैल १९६८ पृ० १११।
(प्रेम शंकर 'नरसी' के साक्षात्कार पर आधारित सामग्री)।

की कि किसी संस्था के सहायतार्थ होने वाले 'शकुन्तला' नाट्य-प्रयोग में वे भाग लें तथा उसका निर्देशन भी करें। इस संदर्भ में कई अभिनेता एकत्रित हुए थे और पूर्वाभ्यास (रिहर्सल) प्रारंभ हुआ। इसी प्रयत्न के फलस्वरूप १५ जनवरी १९४४ ई० को पृथ्वी थियेटर्स अस्तित्व में आया।[1]

पृथ्वी थियेटर्स में कुछ कलाकारों से अनुबंध लिखवा लिये जाते थे और कुछ से केवल मौखिक रूप में ही। कंपनी में कोई खास निश्चित नियमावली नहीं थी। साल भर कुछ नियम चलते और साल भर बाद परिस्थिति या पृथ्वीराज की इच्छा के अनुसार उनमें परिवर्तन होता रहता था। बाद में अभिनेता, अभिनेत्रियाँ, तांत्रिक, व्यवस्थापकीय वर्ग, दर्जी इत्यादि विभिन्न लोगों के प्रतिनिधि सालाना चुने जाने लगे। इतना होते हुए भी पृथ्वीराज कपूर के स्वभाव के कारण कंपनी में हमेशा पारिवारिक वातावरण रहा करता था खासकर जब कंपनी दौरे पर रहा करती थी तब इस पारिवारिक जीवन का अनुभव अधिक होता था। अलग से दी गई बोगी में सभी रंगकर्मी तृतीय श्रेणी में ही यात्रा करते थे। सामान के परिवहन के लिये दो-एक वैगनों का प्रबंध रहा करता था। यों सेवा के लिए कंपनी में नौकर थे। फिर भी महिलाएँ बच्चों की देखभाल के लिए खुद की आया ले जा सकती थीं। पृथ्वी थियेटर्स में दो व्यवस्थापक रहा करते थे जिनमें से एक अग्रिम व्यवस्था करने, पहले ही रवाना हो जाते थे। या तो जिस स्थान में अभिनय-प्रदर्शन होता था वहीं रहने का प्रबंध किया जाता था। नहीं तो किराये से मकान लिया जाता था। सभी रंगकर्मी जमीन पर ही अपने बिस्तर लगाते थे। सभी को एक ही प्रकार का भोजन मिलता था। अंतर केवल इतना ही रहता था कि शाकाहारियों को माँस की जगह तरकारियाँ और दही मिला करता था। पृथ्वी थियेटर्स ने देश भर की यात्रा की है।[2]

नाट्य-गृह के अभाव में—

नाट्य-गृह के अभाव में पृथ्वीराज अपने नाटकों का अभिनय रविवार को सवेरे ऑपेरा हाउस में करते थे। इस प्रकार इन्होंने दिन में नाटक खेलने की एक नई परंपरा प्रारंभ की। जब कभी मौका मिलता था पृथ्वी-

१. जोहरा सहगल : Theatre in India (Special issue of 'World Theatre' Published by the International Theatre institute with the assistance of UNESCO) पृ० ३९।
२. जोहरा सहगल : Theatre in India (Special issue of 'World Theatre' Published by the International Theatre institute with the assistance of UNESCO) पृ० ४०-४५ के आधार पर।

राज कपूर अपना थियेटर लेकर वंवई के वाहर भी जाते थे। इस रूप में उन्होंने भारत भर का दौरा किया। अपने अस्तित्व काल में कुल मिलाकर ५९८२ दिनों में १३० स्थानों में समस्त नाटकों के २६६२ प्रयोग उन्होंने किये हैं।[1] पृथ्वी थियेटर्स में ९० लोग कार्य करते थे और थियेटर्स का माहवारी खर्च लगभग वीस हजार था। इस खर्च को जुटाने के लिए पृथ्वीराज को अक्सर फिल्म में भी काम करना पड़ता था। लेकिन धीरे-धीरे थियेटर्स का कर्ज वढ़ता गया। ३१ मई १९६० ई० को पृथ्वी थियेटर्स बन्द हो गया।

कुमार शील ने पृथ्वी थियेटर्स के योगदान को निम्नांकित शब्दों में अभिव्यक्त किया है—"मेरे अपने विचार से यथार्थवाद का जन्म भारत में पृथ्वी थियेटर्स से ही माना जा सकता है। अभिनेताओं को पर्याप्त स्वतंत्रता भी इन्हीं के मंच पर दीख पड़ी। पृथ्वी थियेटर्स की स्थापना कर श्री पृथ्वीराज कपूर ने दो महत्त्वपूर्ण कार्य किये—प्रथम तो हिंदी रंगमंच की स्थापना के साथ प्रेक्षा आंदोलन का प्रारंभ और दूसरे यथार्थवादी मंच का तकनीकी विकास। विद्युत का योरोपीय प्रयोग भी चित्रपट की सुविधा के कारण इन्हें प्राप्त था। दीवार, पठान, गद्दार, पैसा आदि सभी नाटकों में मंच-सज्जायें यथार्थवादी प्रभाव है। इनके देशव्यापी भ्रमण से भारत में अनेक नगरों में प्रेक्षागृहों की प्रवृत्ति प्रारंभ हुई।[2]

पृथ्वी थियटर्स की विशेषताएँ—

(१) इनके नाटक सुबह भी हुआ करते थे।

(२) इनके नाटकों में दृश्य-विधान स्वाभाविक रहते थे।

(३) पृथ्वी थियेटर्स ने अपने नाटकों द्वारा देश की अन्यान्य संस्थाओं को दस लाख का चंदा एकत्रित करके दिया है।

पृथ्वी थियेटर्स ने अपना पहला नाटक 'शकुन्तला' का मंचन ९-३-४५ को रायल आपेरा हाउस वंवई में किया। हिंदी के प्रसिद्ध नाटककार नारायण प्रसाद 'वेताव' ने इस नाटक का रूपांतर किया था। इसकी प्रमुख भूमिका इस प्रकार थी :—

पृथ्वीराज कपूर : दुष्यंत
उजरा मुमताज : शकुन्तला
शशीकपूर : भरत

१. 'Star & Style' a Film fortnightly page 43 (9th June 1972)

२ कुमार शील : बीसवीं शताब्दी की प्रमुख प्रेक्षा प्रवृत्तियाँ (सं० देवदत्त शास्त्री—पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रन्थ, पृ० १८२।

'शकुन्तला' का मंचन उतना सफल नहीं रहा। फिर भी इसके कुल २१२ प्रयोग हुए।

'शकुन्तला' के बाद पृथ्वीराज ने 'दीवार' का प्रथम प्रदर्शन ६-८-४५ को रायल आपेरा हाउस में ही किया। इसकी 'वस्तु' का सम्बन्ध समसामयिक स्थिति से रहने के कारण यह नाटक जल्दी ही लोकप्रिय हुआ। ८ जून १९४९ तक इस नाटक के ४५० प्रयोग हो गये थे।[1] इस नाटक का कुल प्रदर्शन ७१२ बार हुआ।

'दीवार' से भी बढ़कर सशक्त नाटक बना उनका अगला नाटक 'पठान'। १३-४-४७ को पहली बार इसका मंचन मिनर्वा थियेटर नागपुर में हुआ। 'पठान' को नीचे लिखे कलाकारों ने प्रस्तुत किया—

पृथ्वीराज कपूर	: शेरखान
जोहर सैगल या इन्दूमति	: खैर उन्नीसा (खान की पत्नी)
पवीन्द्र कपूर	: बहादुर खान (खान का पुत्र)
कुलदीप	: बहादुर की पत्नी
विश्व मेहरा	: दीवान ताराचंद
उज़रा मुमताज	: काकी (दीवान ताराचंद की पत्नी)
पद्माकर	: वजीरचंद (दीवान का पुत्र) बालक
श्रीराम	: वजीरचन्द (युवक)
रानी आजाद	: जीलगी (वजीर की पत्नी)
सतीदेवी	: गुलाबजान (नौकरानी)
पुष्पा	: गुलजान (गुलाबजान की पुत्री)
मंसाराम	: पीरखान
सुदेश या सुभाष या प्रयाग या रोमियो	: ताजखान
इस्माइल	: मुल्लासाहब
सुन्दर या हरि कपूर	: पैंदा खान
विशी	: चिरागदीन
सुन्दर या हरि कपूर या सुदेश	: जवाहर सिंह
शशिकपूर	: गामू
सुरेश	: जुम्माखान

१. Prof. Jai Dayal : I go south with Prithvi Raj & his Prithvi theatres. P. 9.

कन्हैयालाल या हरिनारायण : गूँगा
सुदेश या सुभाष : आल्हा दित्ता
प्रयाग या नरिंदर जेटली : रहमान
फजल मोहम्मद, दीन मोहम्मद
प्रभाकर : गढ़ी के गायक
रोमियो, भगवती, अजीज,
हरिनारायण : ग्रामीण पुरुष
एरमेलीन, दिलशाद : ग्रामीण महिलाएँ

पठान के नेपथ्य के रंगकर्मी—

निर्देशक : पृथ्वीराज कपूर
सहायक : माणिक कपूर और योग मित्र
नाटककार : लालचन्द बिस्मिल
संगीत निर्देशक : राम गांगुली
सहायक : दीन मोह० और फजल मोह०
नृत्य निर्देशिका : जोहरा सेगल
प्रकाश : विल्ला जोशी तथा रामदास
सहायक : बसन्त
वेशभूषा : वी० एस० अठवले
सहायक : कापरे और कर्णे
रूपसज्जा : जी० एल० देशमुख
सहायक : सांमत और नाथ
दृश्य विधान : जहाँगीर मिस्त्री
सहायक : नारायण और विठोवा
ध्वनि एवं मंच प्रवंध : धनजी शाह
सहायक : रामकृष्ण
चित्रकला : विमलकांत और बसन्त
सामग्री अधीक्षक : शंकर भोंसले
व्यवस्था : नंदकिशोर कपूर प्राणना खन्ना
सहायक : दीनानाथ, एस० लखन पाल,
डी० वी० खन्ना, नरिंदर जेटली
लेखा पाल : टी० ए० वाल सुब्रमनियन
कला निर्देशन : राजकपूर

'पठान' कुल ५५८ बार प्रदर्शित हुआ।

'पठान' के पश्चात पृथ्वी थियेटर्स ने १५-७-४७ को 'गद्दार' को रायल आपेरा हाउस में प्रस्तुत किया। 'गद्दार' में मंच के रंगकर्मी निम्न प्रकार थे—

पृथ्वीराज कपूर	: अशरफ़
उजरा मुमताज	: बेगम
जोहरा सैगल	: बड़ी बी (नौकरानी)
श्रीराम	: मौलाना
सुभाष (रवींद्र कपूर)	: सलीम
विश्व मेहरा	: शराफत अली
मंसाराम या इस्माइल	: सुल्तान (नौकर)
सुन्दर या सुदेश या नरिंदर	: पुलिस इस्पेक्टर
पुष्पा	: बिच्छामन

'गद्दार' के रंगकर्मी—

निर्देशक	: पृथ्वीराज कपूर
सहायक	: माणिक कपूर और योगमित्र
नाटककार	: इन्दरराज आनन्द
संगीत निर्देशक	: राम गांगुली
सहायक	: दीन मोह० और फजल मोह०
दृश्य विधान	: जहाँगीर मिस्त्री
सहायक	: नारायण और विठोवा
वेशभूषा	: वी० एस० अठवले
सहायक	: काफरे और कर्णे
रूप सज्जा	: सी० ए० देशमुख
सहायक	: सामंत और नाथ
ध्वनि और मंच प्रबंध	: धनजी शाह
सहायक	: रामकृष्ण
ध्वनि	: सुरेश
चित्रकला	: विमलकांत और बसंत
प्रकाश	: बिल्ला जोशी और रामदास
सहायक	: वसंत

सामग्री अधीक्षक	:	शंकर भौंसले
प्रबंध	:	नंदकिशोर कपूर
	:	प्राणनाथ खन्ना
सहायक	:	दीनानाथ, एस० लखनपाल
	:	धर्मवीर खन्ना, नरिंदर जेटली
लेखापाल	:	टी० ए० बाल सुब्रमनियन
कला-निर्देशन	:	उजरा मुमताज

पृथ्वी थियेटर्स के पाँचवाँ नाटक 'आहुति' का प्रथम प्रयोग ३० सितम्बर १९४० को रायल आपेरा हाऊस बंबई में हुआ। इसके कुल ३३९ प्रदर्शन हुए।

'आहुति' के बाद 'कलाकार' का मंचन हुआ। पहली बार ७ सितंबर १९५१ को यह खेला गया। इसके कुल प्रयोग १५७ हुए हैं। 'कलाकार' के रंगकर्मियों का विवरण निम्न प्रकार है—

श्रीराम	:	पुजारी
एम० इस्माइल	:	विद्गूना
सुंदर	:	सरजू
कुमुद	:	गौराँ
विश्व मेहरा	:	चौधरी
सतीदेवी	:	लखमी
मंसाराम	:	लाखी
विशी	:	बंसी
पुष्पा, कुलदीप, इंदुमनि, रानी आजाद, दिलशाद	}	ग्रामीण बालाएँ
शशिकपूर, अजीज, सुरेश, प्रयाग, सुदेश, कन्हैयालाल, सुभाष, हरिकृशन रेमियो, हरिनारायण, भगवती	}	ग्रामीण बालक
जौहरा सैगल और सुरेश	:	मुखौटा नृत्य
सुरेश	:	नाथू
एर्मिलिन	:	मोहिनी
कलाकार	:	पृथ्वीराज कपूर
सुदेश	:	रमेश

'कलाकार' के नेपथ्य— रंगकर्मी

नाटक-प्रथम और द्वितीय अंक	:	रामानंद सागर
तीसरा अंक	:	पृथ्वीराज कपूर
निर्देशन	:	पृथ्वीराज कपूर, योगमित्र
सहायक	:	माणिक कपूर
संगीत निर्देशक	:	राम गांगुली
सहायक	:	दीन मोहम्मद, फज़ल मोहम्मद
नृत्य	:	जौहरा सैगल
सज्जा	:	जहाँगीर मिस्त्री
सहायक	:	नारायण और बिठोवा
चित्रकला	:	विमलकांत और वसन्त
चित्र	:	व्यास कपूर
ध्वनि और मंच प्रबंध	:	घनजीशाह
सहायक	:	रामकृष्ण
प्रकाश	:	बिल्ला जोशी और रामदास
सामग्री अधीक्षक	:	शंकर भोंसले
वेशभूषा	:	वी० ए० अठवले
सहायक	:	कापरे और कर्णे
रूपसज्जा	:	जी० एल० देशमुख
सहायक	:	सामंत और नाथ
प्रबंध	:	नंदकिशोर कपूर, प्राणनाथ खन्ना
सहायक	:	दीनानाथ, एस० लखनपाल,
	:	डी० बी० खन्ना, नरिंदर जेटली
लेखापाल	:	टी० ए० बाल सुब्रमनियन
कला निर्देशन	:	उजरा मुमताज

अगला नाटक 'पैसा' प्रथम बार अहमदाबाद में ४ सितंबर १९५३ को खेला गया। इसके कुल प्रदर्शन ३०२ हुए हैं। 'पैसा' खेल में निम्नलिखित कलाकर मंच पर उतरे थे—

सुदेश या विशी या सुभाष या सुंदर	:	मोहन
पुष्पा	:	इंदिरा
उजरा मुमताज	:	सुशीला
पृथ्वीराज कपूर	:	शांतिलाल

कुलदीप : राधा
सुदेश या बिशी या सुभाष या सुंदर : विहारी
जौहरा सैगल : मालती
सतीदेवी : पुष्पा
एर्मिलिन : गंगा
विश्वा मेहरा : कालिदास
इंदुमति : कांता
नरेन्द्र जेटली : शीतल
पद्माकर या अजित : चरनसिंह
मंसाराम : गोकुल
सुरेश : छोकरा
सुभाष : कृशन
विशी कपूर या प्रयाग या सुन्दर : डाक्टर
कन्हैयालाल या हरिनारायण : दर्बान

मंच के पीछे के रंगकर्मी:—

निर्देशक : पृथ्वीराज कपूर
सहायक : माणिक कपूर
नाटककार : लालचंद बिस्मिल और पृथ्वीराज कपूर
सँगीत निर्देशक : राम गांगुली
सहायक : दीनमोहम्मद और फजल मोहम्मद
प्रकाश : बिल्ला जोगी और रामदास
सहायक : वसन्त
वेशभूषा : वी० एस० अठवले
सहायक : कापरे और कर्णे
रूपसज्जा : जी० एल० देशमुख
सहायक : सामंत और नाथ
दृश्य-विधान : जहाँगीर मिस्त्री
सहायक : नारायण और विठोवा
ध्वनि और मंच प्रबंध : धनजी शाह
सहायक : रामकृष्ण
रेडियो उद्घोषक : सुरेश या प्रयाग
गायक : प्रयाग

चित्रकला	:	विमलकांत और वसन्त
सामग्री अधीक्षक	:	शंकर भोंसले
प्रबंध	:	प्राणनाथ खन्ना, नंदकिशोर कपूर
सहायक	:	दीनानाथ, एस० लखनपाल,
	:	डी० बी० खन्ना, नरिंदर जेटली
लेखपाल	:	टी० ए० बाल सुब्रमनियन
कला निर्देशक	:	उजरा मुमताज

पृथ्वी थियेटर्स का अंतिम नाटक 'किसान' था । इसका प्रथम प्रयोग २६ अक्तूबर १९५६ को रायल आपेरा हाउस बंबई में हुआ। इसके कुल १२० प्रदर्शन हुए। इस नाटक में प्रेक्षकों के सामने आने वाले कलाकार इस प्रकार थे—

पृथ्वीराज कपूर	:	धीरज
नरेंद्र जेटली	:	कुंदन
उजरा मुमताज	:	सुखिया
पुष्पा	:	रधिया
श्रीराम	:	केदार
रवींद्र कपूर	:	पूरन
सुन्दर	:	सुन्दरसिंह
विश्व मेहरा	:	जोधा
प्रयाग राज	:	श्रीधर
जौहरा सैगल	:	गजमुखी
दिलशाद	:	नंदी
रानी आजाद	:	चमेली
शौकत कैफ़ी	:	वसन्ती
सुदेश	:	कासिम
भगवतीप्रसाद साह	:	बद्रीनाथ
गुलाम दस्तगीर	:	चुनमुन
पद्माकर	:	रूपन
मंसाराम	:	भड्डरी
सतीदेवी	:	श्यामा की चाची
कुमुदिनी	:	गेंदा
कुलदीप	:	बहू

सुभाष : लाला पंडित
सुरेश : सुमेर काछी
कन्हैयालाल : डुग्गीवाला
अजीज : पोस्टमैन
हरिनारायणसिंह : बैल चोर
विशी कपूर : अंगदसिंह
एम० इस्माईल : सूबेदार
शशिकपूर : गयादीन
हरि कपूर : साहू
इंदुमती, एमिलीन, रजिया, लीला : लड़कियाँ
फजल, दीनमुहम्मद, प्रभाकर, सदानंद, लखनपाल : लड़के

'किसान' में नेपथ्य के रंगकर्मी:—

निर्माता तथा निर्देशक : पृथ्वीराज कपूर
सहायक : माणिक कपूर तथा योग मित्र
नाटककार : कवि शील
संगीत : राम गांगुली
सहायक : दीन मुहम्मद, फजल मुहम्मद
नृत्य : जौहरा सैगल
दृश्य विधान : जहाँगीर मिस्त्री
सहायक : नारायण तथा बिठोबा
चित्रकारी : विमलकांत
सहायक : वसन्त
ध्वनि तथा मंच प्रबंधक : धनजीशाह
सहायक { ध्वनि : रामकृष्ण
{ मंच : शशि कपूर
प्रकाश : बिल्लू जोशी, रामदास
सहायक : वसन्त तथा शशि कपूर
वेशभूषा : वी० एस० अठवले
सहायक : पी० टी० कापरे तथा एच० सी० कर्णे
रूपसज्जा : जी० एल० देशमुख
सहायक : सावंत तथा नरेन्द्रनाथ
सामग्री वितरक : शंकर भोंसले
मंच प्रबंध : नंदकिशोर कपूर, प्राणनाथ खन्ना

सहायक	:	दीनानाथ, एस० लखनपाल, नरेंद्र जैटली
	:	डी० वी० खन्ना
लेखपाल	:	टी० एल० बाल सुब्रमनियन
कला	:	उजरा मुमताज

मोहन नाटक मंडली[1]—

सन् १९४५ ई० में फिदा हुसेन (प्रेमशंकर 'नरसी') नें इंद्रगढ़ के महाराज के सहयोग से श्री मोहन नाटक मंडली की स्थापना दिल्ली में की। इस मंडली ने एक ही नाटक 'भरत मिलाप' खेला। इसमें 'आइना' चित्र की अभिनेत्री हुस्नबानो ने सीता का और प्रेमशंकर ने भरत का अभिनय किया। 'नरसी' की महाराज से अनबन हो गई, अतः वे तीन महीने के बाद ही मंडली से पृथक होकर कलकत्ते चले गये।

मिनर्वा थियेटर—

मिनर्वा थियेटर[2] की स्थापना १८ नवंबर १९४५ को कलकत्ते में हुई। इसने कुमार सलेमपुरी कृत 'सती बेहुला' का मंचन किया। थियेटर का यह पहला नाटक था। इस नाटक का उद्घाटन ईश्वरदास जालान ने किया था। इस नाटक के निर्देशक थे कमल मिश्र। सीतादेवी ने सती बेहुला की भूमिका का निर्वाह किया था।

इसके बाद १७ दिसंबर को 'माँग का सिंदूर' खेला गया। इसमें मिस हंसा ने नृत्य निर्देशन किया था। इस प्रयोग के रंगकर्मी थे—कमल मिश्र, सीतादेवी, मिस नीलम, मिस जुबेदा, मिस शांता, मास्टर एफ० चार्ली, मोहन मोदी, मास्टर मनोहरलाल, विमल कुमार, मा० हीरालाल, मा० बद्रीप्रसाद, मिस कनकलता, मिस हंसा आदि।

हिंदुस्थान थियेटर्स कलकत्ता—[3]

९ जनवरी १९४६ को मिनर्वा थियेटर में फिदा हुसेन (प्रेमशंकर 'नरसी') के प्रयास और योगदान से 'हिंदुस्थान थियेटर्स' की स्थापना हुई।

---

1. डा० झब्बूलाल सुलतानिया : बंगाली, मराठी और गुजराती रंगमंच के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन पृ० ४७१।
2. सामग्री का आधार :
   डा० झब्बूलाल सुलतानिया : बंगाली, मराठी और गुजराती रंगमंच के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन (अप्रकाशित प्रबंध) पृ० ४७८।
3. वही : पृ० ४७१-४७२।

इस थियेटर्स के प्रमुख नाटक थे : कन्हैयालाल 'कातिल' कृत 'भक्त नरसी मेहता'(त्रिअंकी), 'रुक्मिणी हरण', और 'श्रीकृष्ण-सुदामा'। 'नरसी मेहता' में प्रथम चार दिन तक प्रथम चार कतारों के टिकट सौ रुपये के रखे गये थे। बाद में इस थियेटर में सामान्य टिकट की दरें १५), १०), ७), ५) और ३) रहा करती थीं। इन्हीं दिनों इन्हें प्रसिद्ध अभिनेत्री सीतादेवी और गौरदास बसाक का सहयोग प्राप्त हुआ। सांप्रदायिक दंगे प्रारंभ हो जाने के कारण हिंदुस्थान थियेटर्स १५ अगस्त १९४६ को बंद हो गया। प्रेमशंकर इसके बाद करांची गये। लेकिन वहाँ जम न सके। फिर कलकत्ता लौटकर उन्होंने हिंदुस्थान थियेटर्स को पुनर्जीवित किया और १५ अगस्त १९४७ को रणधीर सिंह साहित्यालंकार कृत 'झाँसी की रानी' और सन् १९४८ में उन्हीं का लिखा 'सरदार भगत सिंह' नाटक मंचस्थ किया। 'सरदार भगत-सिह में प्रेमशंकर ने भगतसिंह, मा० मंजर ने चंद्रशेखर आज़ाद, सुशील-कुमार ने सुखदेव, पन्नालाल ने राजगुरु, सीतादेवी ने श्यामा और दया-कुमारी ने जयंती की भूमिकाएँ निभाई।

इसके अनंतर मिनर्वा थियेटर में एस० जी० चौधरी कृत 'तुलसीदास' और नारायण प्रसाद 'बेताब' कृत 'कृष्ण-सुदामा' नाटक १९४८ में ही मंचस्थ किये गये। प्रेमशंकर क्रमशः तुलसीदास और सुदामा बने थे। सीतादेवी ने रत्नावली का अभिनय किया था।

मिनर्वा लिमिटेड—

'अभिनय'[1] के अनुसार सितंबर १९४६ में 'हिंदुस्थान थियेटर्स' ही 'मिनर्वा लिमिटेड' के नाम से कलकत्ता में प्रकट हुआ। इसका पहला नाटक था 'जमाने की भूल'। दूसरा नाटक था—कृष्ण सुदामा। तीसरा अभिमंचित नाटक था 'मधुर' कृत 'मीराबाई'। 'मीराबाई' के कलाकार निम्न प्रकार थे :—

सीतादेवी	:	मीरा
पी० कुमार	:	राणा
के० मिश्र	:	चन्द्रसिंह
रेखा चटर्जी	:	उदा
नर्मदाशंकर	:	राजगुरु
सुशीलाबाई	:	राजमाता

१. 'अभिनय' दिसंबर'४६ वर्ष ९ अंक ४ पृ० ८१।

इस नाटक का अभिनय छः घण्टे तक चला। पर नाटक सफल नहीं रहा।[1] 'मीराबाई' के बाद 'महाभारत' खेला गया। 'महाभारत' के अभिनेताओं का विवरण यों है—

के० मिश्र	:	भीम
सीतादेवी	:	द्रौपदी
बरजोरजी	:	धृतराष्ट्र
पी० कुमार	:	युधिष्ठिर
खेमराज	:	दुर्योधन
कन्हैयालाल	:	कृष्ण
सुशील राय	:	अर्जुन
बुलाकीदास	:	भीष्म पितामह
गंगाप्रसाद	:	शकुनि
शिवप्रसाद	:	द्रोणाचार्य
हीरालाल	:	बिदुर

इनके अतिरिक्त नर्मदाशंकर, पन्नालाल, मुकुल ज्योति, कनकलता, इन्दचंद, एस० भौमिक, राधेश्याम आदि कलाकारों ने भाग लिया था। निर्देशक थे—(१) मा० नैनूराम (२) पी० कुमार 'अभिनय' के अनुसार नाटक असफल रहा, अभिनय साधारण था और दृश्यावली सुन्दर थी।[2] 'महाभारत' के उपरान्त रणधीर साहित्यालंकार कृत 'झाँसी की रानी' और 'सरदार भगतसिंह' नाटक खेले गये। 'सरदार भगतसिंह' के रंगकर्मी—

निर्देशक	:	मास्टर नैनूराम
संगीत	:	सुबोध भौमिक
अभिनेता	:	मास्टर प्रेमशंकर, विपिन गुप्ता, मंजर राजशेखर, सुशीलकुमार, गंगाप्रसाद, सीतादेवी, कनकलता, दयाकुमारी।[3]

कारोनेशन थियेट्रिकल कंपनी आफ जोधपुर—

मुन्शी ज़मरद 'देहलवी' ने इस कंपनी के लिए 'जय हिंद' नामक

१. 'अभिनय' जनवरी'४७ पृ० ७८।
२. 'अभिनय' जून-जुलाई ४७।
३. 'अभिनय' फरवरी १९४८, पृ० ७१-७२।

नाटक लिखा और कंपनी ने इस नाटक को १९४७ ई० में लखनऊ में मंचित किया।[1]

लक्ष्मी थियेट्रिकल कंपनी आफ कलकत्ता—[2]

Laxmi Theatrical Company of Calcutta.

इस कंपनी के मालिक छैला मास्टर के आदेश से मदहर ने गुजराती नाटक 'अपरीनक्याँ' का अनुवाद 'हाथी के दाँत' से किया। सन् १९५२ ई० में उसका मंचन हुआ। इसमें पात्र-योजना निम्न प्रकार थी—

गणपत लाल : प्रकाश
रजीउद्दीन : गौरीशंकर
पी० एम० प्रेम : अमरनाथ
शेखर : रतनलाल
सरस्वती बाई : प्रभा
अकिलाबाई : नीलू

सन् १९५२ ई० में ही मदहर का दूसरा नाटक 'सती-सावित्री' खेला गया। इसके कलाकार थे—

सरस्वती देवी : सावित्री
एन० एम० प्रेम : सत्यवान
गणपत लाल : नारद

इस कंपनी के लिए सन् १९५२ ई० में रजीउद्दीन बनारसी 'रजी' ने 'जय चित्तौड़' लिखा और कंपनी ने पहली बार इसे कलकत्ते में खेला। इसमें भूमिका निर्वाह करने वाले कलाकार[3] निम्न प्रकार थे—

गणपत लाल : मंगलराज
रजीउद्दीन : भेकाजी
त्रिलोचन : जयराज
एन० एम० प्रेम : रणधीर
शंकर : हुमायूँ
नैनूराम : धर्मराज
सरस्वती बाई : विमलदेवी
अकिला बाई : जिया
नजीर बाई : राजमती

१. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर तीसरा भाग पृ० ४४।
२. वही : पृ० १०३।
३. वही : पृ० ३३।

चतुर्थ अध्याय

उत्तर-प्रदेश का रंगमंच—प्रथम विभाग

(वाराणसी (काशी) का रंगमंच)

चतुर्थ अध्याय

उत्तर-प्रदेश का रंगमंच

वाराणसी (काशी) में अभिनीत प्रथम नाटक—

भारतेंदु हरिश्चंद्र 'नाटक' नामक निबंध में लिखा है—"हिंदी भाषा में जो सबसे पहला नाटक खेला गया वह 'जानकी मंगल' था। स्वर्गवासी मित्रवर ऐश्वर्य नारायण सिंह के प्रयत्न से चैत्र शुक्ल ११ संवत् १९२५ वि० में बनारस थियेटर में बड़ी धूमधाम से यह नाटक खेला गया था। रामायण से कथा निकाल कर यह नाटक पंडित शीतला प्रसाद त्रिपाठी ने बनाया था।"[1] इस उद्धरण के अनुसार काशी में पहला नाटक ३ अप्रैल १८६८ ई० को खेला गया। बनारस थियेटर वहीं था जहाँ आज बुलानाला मुहल्ले में 'गणेश टाकीज' है। प्रथम अभिनय का प्रबंध काशी के जगतगंज मुहल्ला के प्रसिद्ध रईस ऐश्वर्य नारायण सिंह ने जिन्हें लोग 'लरबर बबुआ' कहते थे, किया था। काशी के महाराज भी रामनगर से नाटक देखने आये थे।[2] सर्वदानंद के अनुसार कबीर चौरा स्थित राधास्वामी बाग में अस्थायी मंच बनाकर यह नाटक अभिनीत किया गया था।[3] 'जानकी मंगल' की भूमिका के अनुसार 'बनारस के थियेटर रौयल' में यह नाटक अभिमंचित हुआ था। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह नाटक न 'बनारस थियेटर में खेला गया था न 'राधा स्वामी बाग' में। तो फिर यह 'थियेटर रौयल' अर्थात् रायल थियेटर था कहाँ ? 'इंडियन मेल' में प्रकाशित विवरण[4] में कहा गया है कि इस नाटक का अभिनय 'एसेम्बली रूम्स' में हुआ था। काशी के युवक रंगकर्मी श्री कुंवर अग्रवाल ने एसेम्बली रूम्स की खोज की है।[5] इस एसे-

---

१. भारतेंदु हरिश्चन्द्र : 'नाटक' निबंध (भारतेंदु ग्रन्थावली पहला खण्ड स० ब्रजरत्नदास) पृ० ७५५।

२. धीरेंद्रनाथ सिंह : नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ७३ सं० २०२५ पृ० ५८-५९।

३. सर्वदानंद : नागरी पत्रिका वर्ष १ अंक ६-७, १९६८ पृ० ६।

४. धीरेंद्र नाथ सिंह : नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ७३ सं० २०२५ पृ० ६१-६२।

५. कुंवर जी अग्रवाल : बनारस थियेटर की खोज (नटरंग अंक १४, अप्रैल-जून'७०) पृ० ४३-४४।

म्बली रूम्स या 'रौयल थियेटर' को नाचघर भी कहते थे। वाराणसी छावनी वोर्ड के पुराने कागज-पत्रों से यह ज्ञात होता है कि 'एसेम्वली रूम्स एण्ड थियेटर' भी यही है। यह स्थान संभवतः नाटक खेलने तथा पारसी थियेटरों के नाट्यारंगन का मुख्य केंद्र था। .... यह नाचघर ही 'रौयल थियेटर' है।[1]

जानकी मंगल में भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने अभिनय किया था जिसका विवरण अव उपलब्ध हो गया है—

भारतेंदु हरिश्चन्द्र सफल अभिनेता भी थे। वाबू रामदीन सिंह ने पहली बार यह वात हिंदी जगत् को वतलाई कि 'जानकी मंगल' नाटक में भारतेंदु वाबू हरिश्चन्द्र ने लक्ष्मण की भूमिका की थी। उन्होंने 'चरिताष्टक' में एक टिप्पणी दी थी—'वनारस गोवरधन सराय निवासी पंडितवर शीतला प्रसाद त्रिपाठी वनारस कालेज के अध्यापक और जानकी-मंगल के कर्त्ता और उनके सहोदर भाई पंडितवर छोटूराम त्रिपाठी पटना कालेज के हेड पंडित कहते थे कि जानकी मंगल जब महाराज ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह वहादुर की आज्ञानुसार बना और खेलने का प्रवंध हुआ तो एक लड़का जो लक्ष्मण वना था वह वीमार पड़ गया और यह हाल सभा जुटने पर मालूम हुआ। अव तो रग में भंग का समय हुआ और यह ठहरा कि दूसरे दिन नाटक होगा। उसी समय में वाबू हरिश्चन्द्र जी आये और पूछा कि आज नाटक क्यों न होगा ? महाराज वहादुर ने स्वयं पछतावे के साथ कहा कि जो लक्ष्मण के पार्ट लेने वाले थे वह वीमार पड़ गए। इस पर वावू साहव ने कहा कि मैं लक्ष्मण बनूँगा, पोथी मुझे दीजिए। पाठ देखूँ, इस पर महाराज ने कहा इस समय याद होना कठिन है। वावू साहव ने कहा कि गुस्ताखी माफ हो मैं एक पाठ क्या समग्र जानकी मंगल स्मरण कर लूँगा। एक वार देखना चाहिए। महाराज ने पुस्तक दी और वावू साहब ने घंटाभर के भीतर में महाराज के हाथ में पुस्तक देकर ज्यों का त्यों अक्षर-अक्षर जानकी मंगल सुना दिया। तव महाराज प्रसन्न हुए और वावू हरिश्चन्द्र लक्ष्मण वने और नाटक खेला गया।'[2] इसका अर्थ यह हुआ कि ३ अप्रैल १८६८ को भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लक्ष्मण का अभिनय किया।

---

१. धीरेंद्र नाथ सिंह : पाक्षिक 'राष्ट्रभाषा संदेश', प्रयाग १६ मई १९७१ पृ० ४।

२. चरिताष्टक : प्रथम भाग, अनु० पं० प्रताप नारायण मिश्र, प्रथम सस्करण १८६४ ई० पृ० २१ के फुटनोट में बाबू रामदीन सिंह द्वारा दी गई टिप्पणी (नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ७३ सं० २०२५ पृ० ५८ से उद्धृत)

कवितावर्द्धिनी सभा, काशी—

भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने सन् १८७० ई० में अपने ही निवास स्थान पर रामकटोरा वाग में इसकी स्थापना की थी। १८८० ई० में कविता-वर्द्धिनी के तत्त्वावधान में एक 'कवि समाज' का आयोजन हुआ था। वावू काशीनाथ खत्री कृत 'वाल विधवा संताप' की प्रस्तावना में उल्लेख किया गया है कि उपर्युक्त अवसर पर यह नाटक खेला गया था। नाटक के सूत्र-धार का कथन है कि हमारी अभिलाषा है कि इस समय जातों की सभा के सामने जो आज श्रीमान् श्री वावू हरिश्चंद्र जी भारतेंदु के रमणीक वगीचे में एकत्र हैं श्रीयुत वावू काशीनाथ जी कृत 'वाल विधवा' नाटक का तमाशा दिखावें।[1]

नेशनल थियेटर—

काशी के कुछ नाट्य-प्रेमियों के प्रयास से सन् १८८४ ई० में काशी में 'नेशनल थियेटर' की स्थापना हुई। इस संस्था का कार्यालय दशाश्वमेध घाट पर था। इसी संस्था ने सबसे पहले भारतेंदु हरिश्चंद्र कृत 'अन्धेर नगरी' का मंचन किया।[2]

जैन-नाटक मंडली—

प्रह्लाददास जैन तथा मथुरादास जैन ने काशी में सन् १९०३ में (आश्विन शुक्ल द्वितीया संवत् १९६० वि०) जैन-नाटक-मंडली की स्थापना की। कुंवर नंदलालजी नागर इस संस्था के सभापति हुए और मुरारीदास जैन प्रधानमंत्री। कुंजीलाल जैन इस मंडली के प्रमुख अभिनेता थे।

इस संस्था द्वारा सोमासती, हरिश्चंद्र, जहरी साँप, नूरजहाँ, हसीन कातिल, खूबसूरत वला, धर्मोजय, चंद्रगुप्त, आदर्श महिला, भक्त विदुर, खूने नाटक, खजानेदीन और धर्मविजय नाटक खेले गये। सन् १९४० ई० में अन्तिम वार इस मंडली ने 'दुर्गादास नाटक' खेला।[3]

डा० कुंवर चंद्रप्रकाशसिंह के अनुसार 'जैन नाटक मंडली' की स्थापना अग्रवाल वॉयज-ड्रामेटिक क्लव के विघटन के वाद हुई—"इस क्लव के असफल होने पर इसके जैन अग्रवाल सदस्यों ने 'जैन नाटक मंडली' की

---

१. काशीनाथ खत्री : वाल विधवा संताप (सन् १८८१) पृ० २९।
२. यह परिचय धीरेंद्रनाथ सिंह के 'हिंदी का प्रथम अभिनीत नाटक' (नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ७३ सं० २०२५ पृ० ९०-११ के आधार पर दिया गया है।
३. वही : पृ० ९०-११।

स्थापना की जिसमें उपर्युक्त क्लब के कुछ को छोड़कर प्रायः सब सदस्य सम्मिलित थे। इन लोगों ने कुछ जैन-धर्म संबंधी नाटकों के अभिनय किये। कुछ समय बाद इस मंडली की प्रवृत्ति बदल गई और इसने पारसी कंपनियों के 'सिलवर किंग' और 'काली नागिन' आदि नाटक खेलने प्रारंभ कर दिये।[1]

अग्रवाल-बॉयज-ड्रामैटिक क्लब—

इस नाट्य-संस्था की स्थापना सन् १९०४ ई० में हुई थी। बाबू ब्रजचंद्रजी, झूठे शोरेवाले, बाबू गोपालदास, श्रीचंद्र गुप्त, राय जगन्नाथदास आदि इस संस्था के संस्थापक थे। इस क्लब ने सबसे पहले राय जगन्नाथ-दास के घर पर एक छोटे कमरे में एक छोटा पर्दा लगाकर भारतेंदु कृत 'अन्धेर नगरी' और 'नील देवी' नाटक खेले।[2]

सेंट्रल हिंदू कालेज, ड्रामैटिक क्लब—

सेंट्रल हिंदू कालेज में 'ड्रामैटिक क्लब' की स्थापना हुई। इसके प्रधान कार्यकर्ता रामगोपाल मिश्र थे। सन् १९०७ ई० में रामगोपाल मिश्र ने राधा-कृष्णदास का 'महाराणा प्रताप' खेलने का आयोजन किया।[3]

श्री नागरी नाट्यकला संगीत प्रवर्तक मंडली—

इस मंडली की स्थापना के बारे में अलग-अलग मत हैं। रामगोपाल मिश्र ने 'ड्रामैटिक क्लब' के अवधान में कालेज में राधाकृष्णदास के 'महा-राणा प्रताप' के अभिनय का आयोजन किया। इसके लिए उन्होंने बाबू ब्रजचद से प्रार्थना की कि वे 'जैन नाटक मंडली' से परदे आदि दिलवा दें। बाबू ब्रजचंद ने 'जैन नाटक मंडली' के कर्णधार श्रीचंद से उन्हें आवश्यक सामग्री दे देने का अनुरोध किया। श्रीचन्द ने ब्रजचंदजी के सामने वचन दे दिया, पर समय पर अपने वचन का पालन नहीं किया। इस व्यवहार से क्षुब्ध होकर बाबू ब्रजचंद ने सन् १९०७ ई० के उत्तरार्द्ध अथवा सन् १९०८ के पूर्वार्द्ध में 'नागरी नाट्यकला संगीत प्रवर्तक मंडली' नामक नाट्य-संस्था की स्थापना की।

---

१. डा० कुंवर चंद्रप्रकाशसिंह, हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३६०।

२. यह परिचय धीरेंद्रनाथ सिंह के 'हिंदी का प्रथम अभिनीत नाटक' (नागरी-प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ७३ सं० २०२५, पृ० १०-११) के आधार पर दिया गया है।

३. डा० कुंवर चंद्रप्रकाशसिंह—हिंदी नाट्य-साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३६०।

इस मंडली के संस्थापकों में व्रजचंदजी के अतिरिक्त भारतेंदुजी के भ्रातुष्पुत्र कृष्णचंद्र एवं शाह वंश के वाबू कृष्णदास प्रमुख थे। प्रारंभ में काशी के कई प्रमुख नागरिकों में से प्रत्येक ने इसके वस्त्र, सीन-सीनरी, पर्दे आदि वनवाने के लिए दो-दो सौ रुपयों की सहायता की। इसके प्रथम सभापति श्रीकृष्णचंद्रजी थे।[1]

"सन् १९०८ ई० में स्थानीय हिंदू स्कूल में राधाकृष्णदास का 'राणाप्रताप' खेला गया। उस नाटक को देखने के लिए काशी के प्रसिद्ध नगर-सेठ वीसूजी के पौत्र कृष्णदास शाह भी गये हुए थे। वावू कृष्णदास उस नाटक से इतने अधिक प्रभावित हुए कि दूसरे दिन हरिदास माणिक और धर्मदत्त शास्त्री को वुलाकर 'राणा प्रताप' के अभिनय के संवंध में उनसे परामर्श किया। उनका विचार था कि उसका अभिनय कहीं शहर में किया जाय। अर्थाभाव के कारण उन्होंने इसके अभिनय में असमर्थता व्यक्त की। फिर इस संवंध में काशी के श्रीमंतों की एक सभा वुलाई गई और एक नाट्यमंडली की स्थापना की गई। इसका नाम रखा गया 'नागरी नाट्य-कला प्रवर्तक मंडली।"[2]

"श्री हरिदास माणिक, श्री वृजचंद शाह और कृष्णदास शाह ने सेंट्रल हिंदू कालेज, वाराणसी में अभिनीत 'महाराणा प्रताप' नाटक से प्रभावित हो, भारतेंदु के नाटकों को मंच पर अवतरित करने की सद् इच्छा से, हिंदी भाषा और साहित्य की अभिवृद्धि के लिए 'नागरी नाट्य-कला प्रवर्तन मंडली' की सन् १९०९ ई० में उस समय के समाज-सेवी नवयुवकों के साथ स्थापना की।"[3]

उपर्युक्त तीनों मतों के लिए प्रमाणित मूलस्त्रोत का उल्लेख नहीं किया गया है। फिर भी तीनों मतों के आधार पर नीचे के निष्कर्ष निकलते हैं।

(१) सेंट्रल हिंदू स्कूल (कालेज) में अभिनीत 'महाराणा प्रताप' (राधा कृष्णदास कृत) के फलस्वरूप 'श्री नागरी नाट्यकला संगीत प्रवर्तक मंडली' की स्थापना हुई।

---

१. डा० कुंवर चंद्रप्रकाशसिंह, हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३६०-३६१।

२. डा० वच्चनसिंह—हिंदी नाटक (द्वितीय संशोधित संस्करण १९६७) पृ० २३९-२४०।

३. डा० भानु मेहता—श्री नागरी नाटक मंडली (हिंदी रंगमंच शती समारोह—विवरणिका) पृ० १।

(२) दोनों मतों में संस्थापकों में कृष्णदास का उल्लेख है।

(३) इस संस्था की स्थापना में काशी के कुछ प्रमुख नागरिकों का हाथ रहा।

नागरी नाट्यकला प्रवर्तक मंडली की स्थापना-तिथि के वारे में भी विभिन्न मत पाये जाते हैं।

(१) उपर्युक्त प्रथम उद्धरण में डा० कुंवर चंद्रप्रकाशसिंह ने सन् १९०७ ई० के उत्तरार्द्ध अथवा १९०८ ई० के पूर्वार्द्ध में स्थापना-तिथि मानी है।

(२) दूसरे उद्धरण में डा० वच्चनसिंह ने सन् १९०८ ई० का उल्लेख किया है।

(३) डा० भानु मेहता ने सन् १९०९ की तिथि दी है।

(४) धीरेंद्रनाथ सिह ने १९०६ ई० को माना है—"अग्रवाल वॉयज-ड्रामेटिक-क्लव के जन्म के दो वर्ष पश्चात् सन् १९०६ ई० में इस नाट्य-सस्था का जन्म हुआ।[१]

(५) डा० सोमनाथ गुप्त के अनुसार "दूसरी मंडली काशी की 'नागरी नाट्य-कला प्रवर्तन मंडली थी। सन् १९०९ ई० में इसकी स्थापना हुई थी।"[२]

धीरेंद्रनाथ सिंह को छोड़कर किसी ने भी अपने मत की स्थापना के सन्दर्भ में प्रामाणिक मूल-स्रोत नहीं दिया है। डा० कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह, डा० वच्चनसिंह और डा०सोमलाथ गुप्त की दी हुई तिथियाँ काफी पास-पास है। अन्य प्रमाणों के अभाव में यही निष्कर्ष निकालना उचित होगा कि सन् १९०८ ई० के आसपास नागरी नाट्य-कला प्रवर्तक मंडली की स्थापना हुई।

जिस प्रकार इस मंडली की स्थापना स्थिति और तिथि के वारे में मतभेद हैं उसी प्रकार नामकरण में भी एकता नही है।

(१) डा० कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह के अनुसार 'नागरी नाट्य-कला संगीत प्रवर्तक मंडली' के नाम से उल्लेख है।

(२) डा० वच्चनसिंह के अनुसार 'नागरी नाट्य-कला प्रवर्तक मंडली' नाम रखा गया।

(३) डा० सोमनाथ गुप्त और डा० भानु मेहता ने 'नागरी नाट्य-कला प्रवर्तन मंडली' लिखा है।

---

१. धीरेंद्रनाथ सिंह : नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ७३ सं० २०२५ पृ० ११।

२. डा० सोमनाथ गुप्त : हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास पृ० १६७।

(४) धीरेंद्रनाथ सिंह ने 'श्री नागरी-नाट्यकला संगीत प्रवर्तक मण्डली' के रूप में उल्लेख किया है।

(५) अमृतलाल नागर ने भी 'श्री नागरी नाट्य-कला संगीत प्रवर्तक मंडली' कहा है।[1]

केवल डा० सोमनाथ गुप्त और डा० भानु मेहता ने 'प्रवर्तक' की की जगह 'प्रवर्तन' शब्द का प्रयोग किया है। अमृतलाल नागर और धीरेंद्र-नाथसिंह ने नागरी शब्द के पूर्व 'श्री' जोड़ा है। डा० बच्चनसिंह और डा० सोमनाथ गुप्त ने 'संगीत' शब्द का समावेश नहीं किया है। अतः सही नाम क्या था, इसकी जानकारी नहीं है। दूसरा, उसी नाम को लेकर आपस में फूट पड़ी। मण्डली ने भारतेंदु हरिश्चंद्र कृत 'सत्य हरिश्चंद्र' खेलना तय किया। इसी अवसर पर नाम का झगड़ा प्रारंभ हुआ—"जब इस नाटक के अभिनय की तिथि निकट आ गई, तो कृष्णचंद्र जी ने मंडली में यह प्रस्ताव रखा कि इसका नाम बदलकर 'भारतेंदु नाटक मण्डली' कर दिया जाय। मंडली की बैठक में सब ने इस प्रस्ताव का स्वागत किया और सब लोगों ने निमन्त्रण-पत्र भी इसी नाम से छपवाने तथा बाँटने का निश्चय किया। किंतु निमन्त्रण-पत्रों के इस नाम से बँट जाने के बाद बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गई। कुछ सदस्यों ने यह कहना आरंभ किया कि बाबू कृष्णचंद्र अपने ताऊ की ख्याति चाहते हैं, इसलिए उन्होंने प्रबंधकारिणी में इस नाम का विरोध किया। इस विरोध से परिस्थिति ऐसी विषम हो गई कि नाटक का अभिनीत होना ही संदिग्ध हो गया। कृष्णचंद्र जी 'भारतेंदु नाटक मंडली' के नाम से ही नाटक अभिनीत करने को कृतसंकल्प थे और विरोधी अपना हठ नहीं छोड़ रहे थे। इस बात को लेकर आपस में बड़ी कटुता उत्पन्न हो गई। अंत में कुछ लोगों के उद्योग से यह निश्चय हुआ कि यह नाटक 'भारतेंदु नाटक मंडली' के नाम से ही अभिनीत हो, और उसके बाद इस मतभेद को दूर करने के लिए उचित उपाय कर लिया जाय।[2] अंत में 'भारतेंदु नाटक मंडली' और 'नागरी नाटक मंडली' के नाम से दो अलग-अलग संस्थाएँ काम करने लगीं।

उपर्युक्त घटना से यह स्पष्ट होता है कि श्री नागरी नाट्य-कला संगीत प्रवर्तक मंडली के प्रथम नाटक के अभिनय में ही अड़चन उत्पन्न

१. अमृतलाल नागर : पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रंथ पृ० २९९।

२. डा० कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह : हिंदी नाट्यसाहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३६१।

हुई। सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े। डा० 'अज्ञात' ने लिखा है—"अमृत केशव ने नागरी नाट्यकला प्रवर्तक मंडली को भारतेंदु, राधाकृष्ण दास आदि के नाटकों का प्रयोग करने में अपने कुशल निर्देशन का लाभ दिया था।"[1] डा० 'अज्ञात' के कथन से लगता है कि नागरी नाट्य-कला संगीत प्रवर्तक मंडली ने कई नाटक खेले। लेकिन उन्होंने उन नाटकों का विवरण नहीं दिया है। किंतु उपर्युक्त घटना से तो यही विदित होता है कि मुश्किल से एक ही नाटक 'सत्य हरिश्चंद्र' खेला गया और मंडली विभक्त हो गई।

नागरी नाट्य-कला संगीत प्रवर्तक मंडली के प्रथम नाटक के अभिनय के बारे में कुछ विवरण उपलब्ध है। नाटक में भाग लेने वाले कलाकार इस प्रकार थे—

गोविंद शास्त्री दुगवेकर	:	हरिश्चंद्र
हरिदास माणिक	:	शैव्या
जगमोहनदास शाह	:	नारद
धर्मदत्त गुर्ज्जर	:	विश्वामित्र
वृन्दावन दास गुजराती	:	इंद्र
बाल कृष्णदास (बल्ली बाबू)	:	धर्म
हरिभाऊ	:	सत्य

इस नाटक के सीन-सीनरी आदि प्रसिद्ध शिल्पी श्री टी० के० मित्रा ने प्रस्तुत किये थे। इस नाटक के अंत में भगवान के प्रकट होने के समय ट्रांसफर-सीन के प्रयोग द्वारा श्मशान का दृश्य स्वर्ग में परिवर्तित किया गया था।[2]

भारतेन्दु नाटक मंडली—

'श्री नागरी नाट्य-कला संगीत प्रवर्तक मंडली' से 'भारतेंदु नाटक मंडली' के जन्म का इतिहास ऊपर आ चुका है। 'भारतेंदु नाटक मंडली' का अलग अस्तित्व होने पर मुख्य दायित्व कृष्णचंद्र और व्रजचंद्र ने उठा लिया। अलग होने के बाद इस मंडली का पहला अभिनीत नाटक था बाबू राधाकृष्ण दास लिखित 'महाराणा प्रताप'। नाटक के रिहर्सल दो वरसों तक होते रहे। महाराणा प्रताप सिंह का पार्ट पंडित गोविंद शास्त्री दुगवेकर ने किया था और वीरसिंह का पार्ट डाक्टर वीरेंद्रनाथ दास उर्फ बीरे

१. डा० 'अज्ञात' : पारसी रंगमंच : नागरी पत्रिका मार्च-अप्रैल १९६८ पृ० १०५।
२. डा० कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह : हिंदी नाटक-साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३६२।

बाबू ने। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि हिंदी रंगमंच के प्रारंभिक अभिनेताओं में गुजराती, महाराष्ट्रीय और बंगाली युवक भी सहर्ष, सोत्साह भाग लिया करते थे।"[1] धीरेंद्र नाथ सिंह का उल्लेख है कि इन्हीं दिनों दोनों भाइयों ने (कृष्णचंद्र और ब्रजचंद्र) इस अभिनय का समस्त व्यय वहन किया था।[2] 'महाराणा प्रताप' के बाद इस मंडली ने 'सौभद्र-हरण' (संगीत सौभद्र) खेला जिसे गोविंद शास्त्री दुगवेकर ने मराठी से हिंदी में अनूदित किया था।[3] संभवत: ठठेरी बाजार की शेर वाली कोठी में यह नाटक खेला गया था।[4] इस नाटक के कलाकार थे—

गोविंद शास्त्री दुगवेकर	:	अर्जुन
अनंतराज गोडबोले	:	श्रीकृष्ण
विद्यानाथ शुक्ल	:	बलराम
गोविंदचंद्र	:	सुभद्रा
भास्कर बोवा	:	सूत्रधार

"यह नाटक भी पूरे एक वर्ष की तैयारी के बाद दिखलाया गया था। ये दोनों ही नाटक काशी की जनता ने खूब पसंद किये। पुराने लोग आज भी उनकी सराहना करते हैं।"[5] वाइसराय चेम्सफोर्ड के साथ तत्कालीन भारत सचिव माँटेग्यू जब काशी आये थे, उन्होंने हिंदी नाटक देखने की इच्छा व्यक्त की। आतिथेय राजा मोतीचंद्र ने अपने मोती झील वाले भवन में भारतेंदु नाटक मंडली को नाट्य-प्रदर्शन हेतु आमंत्रित किया था। इस मंडली ने यही नाटक सौभद्राहरण खेला था। अंग्रेज दर्शकों की सुविधा के लिए इस नाटक का अंग्रेजी अनुवाद किया गया था। नाटक सफल रहा और माँटेग्यू ने उसकी बड़ी प्रशंसा की।[6]

"इन दोनों भाइयों ने भारतेंदु रचित 'विद्यासुन्दर' तथा 'उत्तर रामचरित' (हिंदी अनुवाद) के अभिनय की योजना भी बनाई थी। उसका

१. अमृतलाल नागर : 'हिंदी का शौकिया रंगमंच' (पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रन्थ) पृ० ३०० ।
२. धीरेंद्र नाथ सिंह : नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ७३, संवत् २०२५ पृ० १४ ।
३. डा० कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह : हिंदी नाटक-साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३६२ ।
४. रुद्र काशिकेय : नागरी पत्रिका वर्ष १, अंक ६-७, पृ० ९१ ।
५. अमृतलाल नागर : 'हिन्दी का शौकिया रंगमंच' (पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रन्थ) पृ० ३०० ।
६. रुद्र काशिकेय : नागरी पत्रिका वर्ष १, अंक ६-७, पृ० ९१ ।

अभ्यास भी पूरी तैयारी के साथ प्रारंभ हो गया था। किंतु किन्हीं अनिवार्य कारणों से यह योजना कार्यान्वित नहीं हो पाई।"[1] लेकिन वालकृष्ण दास (वल्ली वावू) ने स्पष्ट लिखा है कि श्री व्रजचंद्र जी की मृत्यु के कारण अभिनय न हो सका।[2]

वावू व्रजचंद्र के स्वर्गवास का असर कृष्णचन्द पर हुआ और वे भी मंडली की ओर से उदासीन हो गये। फिर सन् १६१८ ई० के सितंवर में कृष्णचन्द्र जी इस दुनिया से विदा हो गये। फलतः भारतेंदु नाटक मंडली निष्क्रिय हो गई। "मंडली के इस निद्रा काल में स्थानीय 'जार्ज प्रेस' के स्वामी वावू मनोहर दास जी तथा उक्त डाक्टर वीरेंद्र नाथ दास ने इसे 'आदर्श भारतेंदु नाटक मंडली' के नाम से चलाने का उद्योग किया। 'महाराणा प्रताप' तथा (पं० माधव शुक्ल कृत) 'महाभारत' नाटकों के अभिनय भी हुए। किंतु धनाभाव के कारण पुनः कार्य स्थगित करना पड़ा। ३-४ वर्ष तक किसी ने मंडली की सुध न ली।"[3]

उसके वाद राय वहादुर वटुकप्रसाद खत्री और 'भारत धर्म महामंडल के स्वामी ज्ञानानंद जी के प्रयत्न से भारतेंदु नाटक मंडली को पुनरुज्जीवित करने का प्रयास हुआ। परिणाम स्वरूप महामंडल के संरक्षण में सन् १६१८ ई० में गोविंद शास्त्री दुगवेकर लिखित 'हर हर महादेव' नाटक भारतेंदु के रामकटोरा वाले वाग में खेला गया। उसके वाद मंडली ने पं० माधव शुक्ल लिखित 'महाभारत' खेला। खीरीगढ़ की रानी ने भी आर्थिक सहायता प्रदान की। कुछ सदस्यों को महामंडल का प्रभुत्व अखरने लगा और वे भारतेंदु नाटक मंडल को 'भारत धर्म महामंडल' से विलकुल अलग रखना चाहते थे। विशेषकर केशवराम टंडन की कोशिश से सन् १६२० ई० में 'भारतेंदु नाटक मंडली' महामंडल से स्वतंत्र हो गई। अव नये कलाकार सदस्य इस मंडली में आये। कुंवर कृष्ण कौल, वेनी प्रसाद गुप्त, महेंद्रलाल मेढ़, भगवती प्रसाद मिश्र, पुरुषोत्तम पंड्या, राजाराम मेहरोत्रा, हरिनाथ व्यास, द्वारकादास आदि उनमें से उल्लेखनीय हैं।

---

१. डा० कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह : हिंदी नाटक साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३६२।

२. वाल कृष्ण दास : भारतेन्दु नाटक मंडली—पाक्षिक 'जागरण' वर्ष १, खंड १ १६३२ (यह लेख श्री नाट्यम् के अंक ९ में उद्धृत हैं) पृ० ६४।

३. वही।

नये कलाकारों को लेकर द्विजेंद्रलाल राय लिखित 'दुर्गादास' नाटक खेला गया। पात्र-रचना इस प्रकार थी—

कुँवर कृष्ण कौल एम० ए०	:	दुर्गादास
बाबू वेणीप्रसाद गुप्त बी० ए०, एल० टी०	:	समरदास
महेंद्र लाल मेढ़	:	औरंगजेब
पुरुषोत्तम पंड्या	:	कासिम
भगवती प्रसाद मिश्र बी० ए०	:	राणा
राजाराम मेहरोत्रा	:	गुलनार

भारतेंदु नाटक मंडली द्वारा अभिनीत 'वीर अभिमन्यु' (राधेश्याम कथा वाचक) की भी काफी सराहना हुई। भूमिका निम्नलिखित रूप में निभाई गई थी—

केशवराम	:	अभिमन्यु
बाबू वेणीप्रसाद गुप्त	:	युधिष्ठिर
डा० वीरेंद्र नाथ दास	:	राजबहादुर
जगन्नाथदास गुप्त	:	दुर्योधन
पुरुषोत्तमदास पंड्या	:	जयद्रथ
हरिनाथ व्यास	:	सुभद्रा
बाबू द्वारकादास उर्फ राजाबाबू	:	उत्तरा

द्विजेंद्र लाल राय के 'मेवाड़ पतन' में पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने 'मानसी' का अभिनय किया था। प्रेक्षकों ने 'मानसी' के अभिनय को काफी सराहा।[1] पात्र विवरण निम्न प्रकार था—

पं० भगवती प्रसाद मिश्र	:	गोविंद सिंह
महेंद्र लाल मेढ़	:	सगरसिंह
पं० हरिनाथ व्यास	:	सत्यवती
बाबू राजाराम मेहरोत्रा	:	शाहजादा
पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'	:	मानसी

नागरी प्रचारिणी सभा की अर्धशती के अवसर पर जयशंकर 'प्रसाद' का 'चंद्रगुप्त' खेला गया। काशी में हिंदी साहित्य सम्मेलन के समय 'स्कंद-गुप्त' का मंचन हुआ। 'द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथोत्सव' के समय शुभ अवसर पर 'ध्रुवस्वामिनी' खेला गया। 'ध्रुव स्वामिनी' नाटक का प्रकाशन तब

१. अमृतलाल नागर : हिन्दी का शौकिया रंगमंच (पृथ्वीराज कपूर अभिनन्दन ग्रन्थ) पृ० ३०१।

तक नहीं हुआ था। हस्तलिखित प्रति के आधार पर ही नाटक को मंचस्थ किया था। प्रसाद जी के नाटकों के अभिनय के प्रमुख सूत्रधार बाबू बाल कृष्ण दास थे।[1]

सन् १९५० ई० में भारतेंदु जन्मशती के अवसर पर 'भारतेंदु नाट्य-रूपक' (लेखक—बाबू ब्रजरत्न दास और डा० भानुशंकर मेहता) खेला गया। सोमवार, १८ सितम्बर १९५० को अभिनीत श्री भानुकृत 'भारतेंदु' का विवरण—

भारतेंदु जन्मशती के पुनीत अवसर पर भारतेन्दु नाट्य-रूपक में भाग लेने वालों के नाम इस प्रकार थे—

कथा और संवाद लेखक : ब्रजरत्न दास, पं० साँवल जी नागर, 'भानु'
संगीत निर्देशक : दिनेश मजुमदार
प्रकाश निर्देशक : श्रीविलास गुप्त, काशीनाथ गुप्त
ध्वनि-आलेखन और
रंगमंच-निर्देशन : भानु
वेशभूषा : केशवप्रसाद महेंद्र
स्वरूप रचना : हरिहरलाल मेढ़, केदार, कांजी-लाल, मथुरानाथ दवे, बाल-कृष्ण नागर
रंगमंच निर्माता : बेनी प्रसाद (मोती वाले)
संगीतकार : दिनेश, सिडनी, पीटर्स, नप्पू, बच्चा, वफाती, रमेंद्र चैनर्जी, सुरेश, रामबाबू, कु० शोभा मेढ़
उद्घोषक : अशोकजी, भानु, जसवंत मेहता, सुश्री कमलिनी मेहता
दर्शकभवन प्रबंधक : सुधीर कुमार वसु, गौरीशंकर मिश्र, दाऊजी
निर्देशक : बल्ली बाबू

पात्र-परिचय

भारतेन्दु जीवनी—
गिरीशचन्द्र चौधरी : बाल भारतेन्दु

---

१. डा० कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह : हिंदी नाटक साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३६४।

चन्द्रदेव दीक्षित	:	युवा भारतेंदु
जगदीश दास साह	:	महाराज ईश्वरी नारायण सिंह (काशी नरेश)
नारायणचन्द्र चौधरी	:	महाराणा सज्जन सिंह (मेवाड़ के राणा)
कृष्ण कुमार	:	गोपालचन्द्र
वटेकृष्ण पोरवाल	:	गंगू
वीरेश्वर बैनर्जी	:	भारतेन्दु का मशालची
बच्चूजी	:	भारतेन्दु का मसखरा
पं० साँवलजी नागर	:	सरदार कवि
बद्रीलाल गोस्वामी	:	परमाशंकर व्यास
रामटहल	:	दीनदयाल गिरि
केदारनाथ जेतली	:	सेनापति
पं० साँवलजी नागर	:	महामहोपाध्याय श्री ताराचरण तर्करत्न
गोवरधन	:	सुधाकर द्विवेदी
प० भोलानाथ पाँडे	:	दत्त कवि
हरिनाथ तिवारी	:	कविराजा श्यामल दान जी
ज्ञानशंकर	:	सरदार बारहठ कृष्ण सिंह जी
कुँवर जी	:	सहायक पात्र
श्याम कृष्ण	:	सहायक पात्र
श्रीप्रसाद	:	सहायक पात्र
सोमनाथ	:	सहायक पात्र

भारतेंदु के नाटकों से—

१. वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति :

सेंट्रल हिंदू कालेज के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत

२. सत्य हरिश्चंद्र :
३. भारत दुर्दशा १,२ :

मंगलाप्रसाद भगत, रामेंद्र बैनर्जी, प्रमोदरंजन मेढ़, जवाहरलाल मुंशी, मणीशंकर नागर, सतीशचंद्र गुप्त, रामजी, कुंभनदास, रामबाबू गुप्त, बख्शी, दीनबंधु, अजयचंद्र मजुमदार

४. अन्धेर नगरी : काशी अग्रवाल समाज के बालकों द्वारा—जगतनारायण, रामजी, गोपाललाल, प्रेमनाथ, प्रेमकिशोर, मथुरादास, शिवप्रसाद, धर्मचंद्र, नारायणदास,

५. प्रेमयोगिनी १, २ : लक्ष्मीचंद्र चौधरी, बच्चूजी, वीरेश्वर बैनर्जी, बेनीप्रसाद गुप्त, लक्ष्मीलाल मेढ़, केदारनाथ जेतली, बद्रीलाल गोस्वामी, श्रीविलास, भोलानाथ पांडे, गोवरधन, पंड्याजी, श्यामकृष्ण,

६. नीलदेवी : भानु, श्रीविलास,

प्रायः यही नाटक इस मंडली का अन्तिम नाटक सिद्ध हुआ।

भारतेंदु नाटक मंडली के द्वारा प्रस्तुत नाटकों की तालिका इस प्रकार है—

महाराणा प्रताप	:	राधाकृष्णदास
सुभद्राहरण	:	गोविंदशास्त्री दुगवेकर
हरहर महादेव	:	गोविंदशास्त्री दुगवेकर
महाभारत	:	माधव शुक्ल

पात्र योजना—

केशवराम टंडन	:	दुर्योधन
वीरे बाबू	:	भीम
बालकृष्णदास	:	युधिष्ठिर
श्री विष्णुबुवा कालविंट	:	शकुनी
पं० हरिनाथ व्यास	:	द्रौपदी
जगदीश नारायण	:	कृष्ण
प्रमोदशंकर व्यास	:	संजय
हरिश्चंद्र वैद्य	:	अर्जुन
बाबू गोवर्धनदास	:	कुंती

पं० वामनराव : धृतराष्ट्र और सूत्रधार
बा० लक्ष्मीचंद्र अग्रवाल : विकर्ण
बा० सोमनाथ भट्ट : दुःशासन
पं० मुन्नीलाल मालवीय : विदुर
बाबू राधारमण शाह : पुरोचन
पं० नारायणराव : नटी
वाबू यमुनाप्रसाद अग्रवाल : नकुल
पं० शंभुनाथ जेतली : सहदेव
वीरेश्वर वैनर्जी : भँगेड़ी ब्राह्मण
परशुराम नैपाली : ब्राह्मणी
पुरुषोत्तम पंड्या : कर्ण

दुर्गादास : द्विजेंद्रलाल राय
वीर अभिमन्यु : राधेश्याम कथावाचक
मेवाड़पतन : द्विजेंद्रलाल राय
भीष्म : विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'

पात्र योजना—

केशवराम टंडन : भीष्म
पुरुषोत्तम पंड्या : धीवर

शाहजहाँ : द्विजेंद्रलाल राय

पात्र योजना—

द्वारकानाथ वोहरा : दारा
जगदीशनारायण लत्र : सिपर
पं० कृष्णदत्त : जहाँनारा
केशवराम टंडन : शाहजहाँ

प्रह्लाद : राधेश्याम कथावाचक

पात्र योजना—

केशवराम टंडन : हिरण्यकशिपु
जगदीश नारायण : प्रह्लाद
पं० रामचंद्र दीक्षित केलकर : प्रमोद
पं० जनार्दन जोशी : वक्रमूर्ति
माधवलाल औदीच्य : श्यामलता
वीरे बावू : लोभीलाल

परिवर्तन : राधेश्याम कथावाचक

पात्र योजना—

वीरे बाबू : रमजानी

बालकृष्णदास : बिहारी बाबू

माधवलाल औदीच्य : चंदा

गुरु द्रोण : ज्वालाराम नागर

दस्युदमन : ,, ,,

चंद्रगुप्त : द्विजेंद्रलाल राय

चंद्रगुप्त : जयशंकर प्रसाद

पात्र योजना—

द्वारकानाथ वोहरा : ऐंटीगोनस

लक्ष्मीचंद्र : चंद्रगुप्त

बालकृष्णदास : सेल्यूकस

स्कंदगुप्त : जयशंकर प्रसाद

ध्रुवस्वामिनी : ,, ,,

भारतेंदु नाट्य रूपक : ब्रजरत्नदास और डा० भानु मेहता ।[1]

डा० भानु मेहता ने भारतेंदु नाटक मंडली के कुछ कलाकारों के नाम इस प्रकार दिये हैं—

भगवतीप्रसाद मिश्र, महेन्द्रलाल मेढ़, बच्चूजी, ज्वालाराम नागर, बल्ली बाबू, वीरे बाबू, कौल, केशवराम टंडन, द्वारकाप्रसाद व्होरा, बेनीप्रसाद मोतीवाले, वीरेश्वर बैनर्जी, बेनीप्रसाद अग्रवाल, चौधरी लक्ष्मीचंद्र ।[3]

'भारतेंदु' नाट्य रूपक के अभिनय पर कुछ सम्मतियाँ[1] ।

(१) काशी का दैनिक 'आज'

सफल नाट्य रूपक

गत रविवार को नागरी प्रचारिणी सभा में शती समारोह के अंतर्गत नाटक अभिनीत न हो सका था, उसकी कमी कल हरिश्चंद्र कालेज में

१. धीरेंद्रनाथ सिंह : नागरी प्रचारिणी पत्रिका व० ७३ सं० २०२५ (इस सूची में 'भारतेंदु नाटक मंडली' ले० बालकृष्णदास के आधार पर मैंने पात्र योजना जोड़ी है ।

२. डा० भानु मेहता : श्री नागरी नाटक मण्डली : हीरक जयंती समारोह विवरणिका (१९६८) पृ० १ ।

३. डा० भानु मेहता : भारतेंदु पृ० १०४-१०५ ।

भारतेंदु नाटक मंडली ने पूरी कर दी। मंडली ने भारतेंदु नाट्यरूपक का सफल अभिनय किया। उक्त नाट्यरूपक रंगमंच पर एक सर्वथा नवीन प्रयोग था जिसमें अभिनय के साथ ही सिनेमा के पृष्ठ संगीत और रेडियो की टीका पद्धति का भी सुंदर सम्मिश्रण था। रूपक की सबसे बड़ी विशेषता थी कि भारतेंदु हरिश्चंद्र की जीवन कथा और साहित्य दोनों का सामंजस्य नाटक में किया गया था और दर्शकों के सम्मुख न केवल भारतेंदु का वल्कि तत्कालीन समाज का पूरा-पूरा चित्र खिंच गया। नाटक-लेखक श्री भानु, निर्देशक श्री वल्ली वावू और संगीत निर्देशक दिनेश मजुमदार वधाई के पात्र हैं। पात्रों में श्री चंद्रदेव दीक्षित भारतेंदु की, भानु पागल की, श्री लक्ष्मीचंद्र चौधरी सूरीसिंह की तथा श्रीवीरेश्वर वनर्जी भारतेंदु के मशालची की भूमिका में पूर्ण सफल रहे। इधर वर्षो से इतना सुंदर, सफल अभिनय देखने को नही मिला। दर्शकों में महाराज विभूतिनारायण सिंह, पं० श्री नारायण चतुर्वेदी तथा नगर के प्रमुख साहित्यिक और नागरिक थे।

(२) काशी का दैनिक 'संसार'

जिस प्रकार भारतेंदु वावू हरिश्चंद्र वर्तमान हिंदी के निर्माता थे उसी प्रकार आपकी पुण्यशती के अवसर पर भारतेंदु नाटक मडली द्वारा अभिनीत भारतेंदु नाट्यरूपक भी अपने ढंग का निराला था। इस प्रकार से आयोजित नाटक आज तक किसी रंगमंच पर प्रस्तुत न हुआ होगा। मधुर स्वर में वरावर पृष्ठ सगीत हो रहा था। नाट्यरूपक का परिचय श्रीअशोक जी, श्री यशवंत मेहता जौर सुश्री कमलिनी मेहता बारी-वारी से वहुत रोचक रूप में दे रही थीं। सभी पात्रों का अभिनय इतना सुदर था कि कि सफल अभिनेताओं में किसका नाम लिखा जाय, समझ में नहीं आता। वाल भारतेंदु श्री गिरीशचंद्र, युवा भारतेंदु श्री चंद्रदेव दीक्षित, भारतेंदु के मशालची श्री वीरेश्वर वनर्जी, भारतेंदु के मसखरे वच्चूजी, अन्धेर नगरी में अग्रवाल समाज के वालकों, प्रेमयोगिनी में झूरीसिंह का अभिनय करने वाले श्री लक्ष्मीचंद्र चौधरी तथा नीलदेवी में पागल का अभिनय करने वाले श्री भानु का अभिनय अद्वितीय था। इस नाट्य रूपक के निर्माता तथा पात्र सभी वधाई के योग्य हैं। नाटक सोमवार की रात्रि में हरिश्चंद्र कालेज के अहाते में हुआ। श्रीमान् काशीनरेश भी पूरे समय तक उपस्थित रहे।

(३) काशी का दैनिक 'सन्मार्ग'

साहित्यिकों द्वारा सफल प्रयोग

कल सायं ८ बजे स्थानीय हरिश्चंद्र कालेज में भारतेंदु नाटक मंडली

द्वारा भारतेंदु नाट्यरूपक का सफल प्रदर्शन रहा। स्वर्गीय भारतेंदु से संबद्ध विविध घटनाओं का प्रदर्शन अत्यन्त सफल था। काशी नरेश महाराज विभूतिनारायण सिंह भी पधारे थे। काशी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों, कलाकारों एवं साहित्यिकों ने अभिनय में सक्रिय भाग लिया था। कुल १६ दृश्य उपस्थित किये गये थे। महायात्रा का दृश्य अत्यन्त कारुणिक था। पृष्ठ-संगीत मनोहारी और प्रबंध प्रशंसनीय था।

नागरी नाटक मंडली—

श्री नागरी नाट्य-कला संगीत प्रवर्तक मंडली के विघटन ने ही नागरी नाटक मंडली को जन्म दिया है। फिर भी नागरी नाटक मंडली की जन्म-तिथि के बारे में निश्चित तिथि अनुपलब्ध है। डा० शिवपूजन सहाय के अनुसार "इस मंडली का जन्म सन् १६०६ ई० में हुआ था।"[1] लेकिन सन् १६५६ ई० में इस मंडली ने स्वर्णजयंती समारोह सम्पन्न किया। इससे स्पष्ट होता है कि मण्डली की स्थापना सन् १६०८ ई० में हुई थी।

इस मण्डली के संस्थापकों के बारे में गलतफहमी दिखाई देती है—"इसके संस्थापकों में तीन सज्जन मुख्य हैं—भारतेंदु हरिश्चंद्र के घराने के स्वर्गीय बाबू ब्रजचन्दजी, बनारस के प्रसिद्ध शाह घराने के श्रीयुत कृष्णदास जी और काशी के प्रसिद्ध हिंदी प्रेमी तथा कुशल अभिनेता श्रीयुत हरिदास माणिक।"[2] वास्तव में प्रथम दो सज्जनों का संबंध भारतेंदु नाटक मण्डली से है, जिसे इसके पूर्व देख चुके है।

इस संस्था का नागरी नामकरण पंडित सुधाकर द्विवेदी ने किया था और उद्देश्य वाक्य रखा था 'नाट्यं बोधकरं न्यायं। इस मंडली ने जो सर्व-प्रथम नाटक अभिनीत किया था, वह भारतेदु हरिश्चंद्र का 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक था जिसका अभिनय सन् १६०६ की २७ जुलाई को हुआ था।[3] शिव-पूजन बाबू ने भी इस तिथि का अर्थात् २७ जुलाई, मंगलवार १६०६ का उल्लेख किया है।[4] डा० कुँवर चन्द्रप्रकाशसिंह लिखते हैं—"इस मंडली ने पहले पहल २७ जुलाई, १६०६ को भारतेंदुजी के एक नाटक का अभिनय

१. शिवपूजन सहाय : शिवपूजन सहाय रचनावली, तीसरा खंड : राष्ट्रभाषा परिषद्, नवीन संस्करण, १६५७ पृ० ३६७।
२. शिवपूजन सहाय : शिवपूजन रचनावली, तीसरा खंड पृ० ३९७।
३. डा० भानु मेहता : श्री नागरी नाटक मण्डली (हिंदी रंगमंच शती समारोह-विवरणिका) पृ० २।
४. शिवपूजन सहाय : शिवपूजन रचनावली, तीसरा खंड पृ० ३६७।

किया था जिसमें हरिदास माणिक (शैव्या) और धर्मदत्त गुर्जर (राजा हरिश्चन्द्र) का अभिनय अत्यन्त प्रशंसनीय हुआ था। उसी वर्ष २७ नवंबर को इस मंडली ने राधाकृष्णदासजी के 'महाराणा प्रताप' नाटक का अभिनय किया था।"[१] पात्र-योजना इस प्रकार थी—

धर्मदत्त गुर्जर	:	राणा प्रताप
हरिदास माणिक	:	वीरसिंह
गोपालजी नागर	:	रानी

दर्शक मंडली में काशी-नरेश' गिद्धौर-नरेश, मझौली-नरेश, राजा मुन्शी माधोलाल जी, राजा मोतीचंद और राजा साहब वस्ती उपस्थित थे। ७ वीं जून १९१२ को काशी-नरेश के राज्याधिकार प्राप्त करने पर हरिदास माणिक 'कृत' युधिष्ठिर अथवा पांडव-प्रताप' का अभिनय हुआ। लेखक ने ढोलक शास्त्री का अभिनय किया था। काशी नरेश ने प्रसन्न होकर पात्रों के सम्मानार्थ २००) प्रदान किये थे। काशी विश्व विद्यालय के लिए आये हुए प्रतिनिधि-मंडल के आने पर 'महाराणा प्रताप' फिर से अभिनीत हुआ।[२] इस समय धर्मदत्त शास्त्री ने महाराणा का और दुगवेकर ने अकबर का अभिनय किया था।[३] सन् १९१२ ई० में बाबू आनंद प्रसाद कपूर कृत 'किंग लियर' का अनुवाद 'कलियुग' नाम से खेला गया। अगले वर्ष इसी लेखक का दूसरा अनुवाद 'संसार स्वप्न' (ख्वाब हस्ती) दक्षिण अफ्रीका के उत्पीड़ित भारतीयों के सहायतार्थ खेला गया।

सन् १९१६ ई० में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के शिलान्यास समारोह के अवसर पर माधव शुक्ल लिखित 'महाभारत' नाटक खेला गया।[४] डा० भानु मेहता के अनुसार श्री नारायण 'वेताव' कृत 'महाभारत' अभिनीत हुआ था।[५] "इस अवसर पर श्री धर्मदत्त शास्त्री ने हिंदी रंगमंच की स्थापना के लिए प्रतिवेदन किया और उपस्थित नरेशों और दर्शकों ने

---

१. डा० कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह—हिंदी नाट्य-साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३६४।
२. डा० सोमनाथ गुप्त : हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास पृ० १६७।
३. रुद्र काशिकेय : नागरी पत्रिका वर्ष १ अंक ६-७, १९६८ पृ० ९१।
४. धीरेंद्रनाथ सिंह : नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ७३ सं० २०२५ पृ० १८।
५. डा० भानु मेहता : नागरी नाटक मंडली (हीरक जयंती समारोह, विवरणिका) पृ० २।

४७,६०० रुपये देने का वचन दिया।"[1] इस नाटक की पात्र-योजना निम्न प्रकार थी—

शिवप्रसाद एम० ए०	:	युधिष्ठिर
बनारसीदास खन्ना	:	दुर्योधन
गोवर्धनदास खत्री	:	अर्जुन
शंकरजी महाराज	:	भीष्म
आनंदप्रसाद कपूर	:	विकर्ण
रघुनाथ सिंह	:	भीम
देवीदास खन्ना	:	शकुनी
मंगला प्रसाद	:	अभिमन्यु
जगमोहन दास शाह	:	कृष्ण
पं० काशीनाथ बच्चू	:	उत्तरा
दुर्गाप्रसाद खत्री	:	द्रोपदी
लालसिंह भंडारी	:	शिव

इस नाटक के निर्देशक आनंद प्रसाद कपूर थे। इस नाटक में रंगीन कार्बाइट प्रकाश का उपयोग किया गया था।[2]

सन् १९१७ ई० में गोसाँई रामपुरी के जन्मोत्सव के अवसर पर आनंद प्रसाद कपूर लिखित 'भक्त सूरदास' खेला गया। इसी वर्ष अवर डे फंड के लिए 'महाभारत' और 'कलियुग' नामक दो नाटक खेले गये। सन् १९१९ ई० में महाराज काशी-नरेश की वर्ष गाँठ के अवसर पर 'महाभारत' और 'भक्त सूरदास' नाटक खेले गये।

सन् १९२२ ई० के प्रारंभ में राधेश्याम कथावाचक लिखित 'वीर बालक अभिमन्यु' नामक नाटक मंडली द्वारा अभिनीत हुआ। इसके अभिनय के संबंध में अखबारों में अच्छी आलोचना प्रकाशित हुई थी। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

"......तीन दिन खासी भीड़ रही और अभिनय बहुत लंबा होने पर भी दर्शक अंत तक उत्सुक दृष्टि से देखते रहे। अभिमन्यु का पार्ट मंगली प्रसाद और जयद्रथ का बनारसीदास ने बहुत अच्छा किया। सबसे अधिक

१. डा० भानु मेहता : नागरी नाटक मंडली (हीरक जयंती समारोह विवरणिका) पृ० ३।

२. वही : पृ० ३।

सफलता बाबू आनंद प्रसाद कपूर को अर्जुन का पार्ट करने में हुई। उनकी अभिनय कुशलता देखकर दर्शक मंडली मुग्ध हो गई।"[1]

"मंडली दिन प्रतिदिन उन्नति कर रही है। प्रत्येक पात्र ने अपना पार्ट उत्तमता से दिखलाया। कितने ही पात्रों को दर्शकों और रईसों की ओर से स्वर्ण रौप्य पदक दिये गये। बाबू आनंद प्रसाद जी ने अर्जुन का पार्ट बहुत ही उत्तमता से दिखलाया। एक विशेषता और थी कि जितने पात्र स्टेज पर आये सब स्वदेशी वस्त्र में थे। किसी के शरीर पर विदेशी वस्त्र नहीं दिखलाई पड़ा।"[2]

"अभिनय बड़ा ही सुन्दर हुआ। ऐक्टरों ने बड़ी ही योग्यता से अपना-अपना पार्ट किया। बाबू आनंद प्रसाद कपूर ने अपने 'अर्जुन' के पार्ट से दर्शकों को मोहकर चित्रवत् करा दिया। फूलदार किनारियों से युक्त रंगबिरंगे खद्दर के ड्रेस मखमल पर जरी के काम के ड्रेसों से बढ़कर मालूम होते थे।"[3]

इसी वर्ष 'कलियुग' खेला। सन् १९२३ ई० में 'भीष्म पितामह', और 'वीर बालक अभिमन्यु' नाटक खेले गये।

संयुक्त प्रांत के बाढ़-पीड़ितों के सहायतार्थ ९ जनवरी १९२५ ई० को आनंद प्रसाद कपूर कृत 'अत्याचार' खेला गया। उक्त अवसर पर ४२० रुपये दिये गये। मंडली के दृश्यपटों की मरम्मत के लिए धनसंग्रहार्थ अप्रैल में यही नाटक खेला गया। इस वर्ष के अंत में जमुनादास मेहरा लिखित 'पाप परिणाम' का अभिनय हुआ। सन् १९२६ ई० के प्रारम्भ में यही नाटक खेल कर ब्रिटिश अंपायर लेप्रेसी रिलीफ फंड के लिए ४०० रुपये दिये गये। सन् १९२९ ई० में भी यह नाटक प्रस्तुत हुआ। काशी में ६ मार्च से १८ मार्च १९२९ ई० तक नाट्य-समारोह मनाया गया। इस समारोह में सात रात 'विश्वाराध्य थियेटर' हॉल में नीचे लिखे गये नाटक खेले गये—

१. जीवन आशा (द्विजेंद्र लाल राय के नाटक 'परपारे' का शिवरामदास गुप्त कृत अनुवाद)।

२. भक्त प्रह्लाद।

---

१. दैनिक 'आज' २-२-१९२२ (डा० सोमनाथ गुप्त : हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास पृ० १६८ से उद्धृत)।

२. 'भारत जीवन' ६-२-१९२२ : वही।

३. हिंद केसरी : ८-२-१९२२ (माधुरी वर्ष ७ खं० १ सं० १ ई० १९२८ पृ० ३९६ से उद्धृत)।

३. दमन।
४. संसार।
५. परीक्षित (ले० श्री आनंद प्रसाद कपूर)।

सन् १९३० ई० में अखिल एशियाई शिक्षा महासम्मेलन के अवसर पर दंगा पीड़ितों की सहायतार्थ 'दूज का चाँद', 'गरीब की दुनिया' नामक नाटक खेले गये। इस समय ६३०) की सहायता की गई। सन् १९३३ ई० में मंडली ने 'प्रेम-रहस्य' और 'पहली भूल' नाम के दो नाटकों का अभिनय किया। सन् १९३४ ई० में फिर से 'प्रेम-रहस्य' खेला गया। इसी वर्ष 'संपादक की दुम' भी अभिनीत हुआ। छः वर्ष मौन रह कर मंडली ने सन् १९४१ ई० में बनारस हिंदू विश्व विद्यालय की रजत जयंती के समय 'देश का दुर्दिन' नामक नाटक खेला। फिर सन् १९४४ ई० में आदर्श सेवा विद्यालय के सहायतार्थ 'आशा' का अभिनय हुआ। सन् १९४५ ई० में 'राणा अमरसिंह' खेलकर लगभग पाँच वर्षों तक मंडली ने विश्राम लिया। सन् १९५० ई० में 'नागपुत्र शालिवाहन' और १९५२ ई० में 'कृष्णार्जुन युद्ध' का अभिनय हुआ। सरस्वती खत्री विद्यालय की मदद करने के हेतु सन् सन् १९५३ ई० में 'मगरमच्छ' खेला गया। इसी वर्ष नागरी प्रचारिणी सभा की हीरक जयंती के अवसर पर 'चूड़ावत', 'मृत्यु के उपरांत' तथा 'चाणक्य और शकटार' अभिनीत हुए। सन् १९५४ ई० में संगीत नाटक अकादमी ने मंडली को मान्यता प्रदान की।

डा० भानु मेहता के अनुसार "श्री नागरी नाटक मंडली का दूसरा अध्याय सन् १९५० ई० में प्रारंभ होता है जब उसमें नई चेतना की लहर जागी, नये रक्त ने प्रवेश किया। नई व्यवस्था के अंतर्गत आधुनिक शैली का अभिनय, अल्पकालीन नाटक (पहले नाटक रात भर चलते थे), समय का महत्व (अर्थात् ठीक समय से कार्य क्रम प्रारंभ करना), आधुनिक मंच सज्जा, पार्श्व संगीत ध्वनि और प्रकाश के नये प्रयोग, गीत-संगीत-नृत्य की की अनिवार्यता की समाप्ति, महिलाओं द्वारा स्त्री पात्रों का अभिनय का समावेश हुआ। सबसे बड़ी गति थी नाटक में परंपरागत नाटकों को छोड़ कर प्रायोगिक नाटकों और साहसपूर्ण नव प्रयोगों की सफलता-असफलता पर विशेष बल न देकर उपयोग करना।"[1]

सन् १९५६ ई० से लेकर १९६८ ई० तक खेले गये नाटकों की सूची अन्यत्र दी गई है।

---

१. डा० भानु मेहता : हीरक जयंती समारोह विवरणिका पृ० ५-६।

इस मंडली के प्रमुख कलाकारों के नाम इस प्रकार हैं—बाबू केशव राम टण्डन, पं० राधा कुमार व्यास, पं० धर्मदत्त शास्त्री, गोवर्धन दास खत्री, बनारसीदास खन्ना, हरिदास माणिक, आनंद प्रसाद कपूर, दुर्गाप्रसाद खत्री, मंगलीप्रसाद अवस्थी, बाबू शिवप्रसाद, श्री कृष्ण शुक्ल, काशीनाथ खत्री, रामकृष्ण खन्ना, लक्ष्मी नारायण सेठ, भैरव प्रसाद शर्मा, गोपाल जी नागर, ठाकुरदास वकील, पं० विश्वेश्वर नाथ, रलैयाराम जी, बालमुकुन्द जी, देवीदास खन्ना, शंकर महाराज, रघुनाथ सिंह, लालसिंह, विश्वनाथ प्रसाद खत्री, मोतीलाल खुराना, जगमोहन दास साह, नीलमाधव घोष, केवल बाबू, सरजू प्रसाद, बिंदा प्रसाद खन्ना, द्वारका प्रसाद, पडित भवदेव उपाध्याय, नंदूलाल जी, घूमीमल जी, जनार्दन सिंह, मुन्नी जी मिश्र, मनमोहन लाल कपूर, दाऊजी तिवारी, धीरेंद्रनाथ सरकार, पंचानन बैनर्जी, बच्चेलाल जी, सफेदा प्रसाद दूबे, गंगाराम नेपाली, डा० जगन्नाथ शर्मा, बद्रीनाथ मेहरा, रूपचंद, पंडित लक्ष्मीनारायण शास्त्री, नंदलाल खन्ना, मथुरा साव, संकठा प्रसाद चतुर्वेदी, जालपा प्रसाद वर्मा, बद्रीदास माणिक, डा० कर्तारसिंह, राधेश्याम कपूर, लालसिंह भंडारी, गणेश प्रसाद तिवारी, बलदेव राज, काशीनाथ पिगन, मथुरा प्रसाद मेहरोत्रा, राधाकृष्ण मिश्र, वासुदेव मिश्र, नंदकिशोर बहल, गंगाशंकर दीक्षित, रामसिंह आजाद, भैरोप्रसाद शर्मा, नंदलाल मेहरोत्रा, रघुवीर प्रसाद मेहरोत्रा, मदनलाल मेहरोत्रा, श्रीचंद्र माणिक, गिरिधरदास अग्रवाल, अमरनाथ खन्ना, जगन्नाथ प्रसाद त्रिपाठी, कैलाशनाथ मिश्र आदि।

नागरी नाटक मंडली के मैनेजर (Ice Vender) थे सरयूप्रसाद।[१]

नागरी नाटक मंडली द्वारा अभिनीत नाटक

क्र० सं०	वर्ष	सन्	नाटक	विशेष बात
१	१	१९०९	सत्य हरिश्चंद्र (भारतेंदु)	प्रथम कार्यक्रम
२	१	१९०९	महाराणा प्रताप (राधाकृष्णदास	×
३	२	१९१०	×	×
४	३	१९११	महाराज युधिष्ठिर (हरिदास माणिक	महाराज काशी नरेश को स्वाधीनता प्राप्त होने के उत्सव पर

१. डा० भानु मेहता : हीरक जयंती समारोह, विवरणिका पृ० ५ के अनुसार।

क्र० सं०	वर्ष	सन्	नाटक	विशेष बात
५	४	१९१२	महाराणा प्रताप	काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए चंदा एकत्र करने करने के उद्दे-श्य से। कुल २५४।।।)।। जमा किया गया।
६	४	१९१२	कलियुग(किंगलियर) का अनुवाद (बा० आनंदप्रसादकपूर द्वारा	
७	५	१९१३	संसार-स्वप्न ,, ,, ,, ('ख्वाबे हस्ती का अनुवाद	दक्षिणी अफ्रीका के उत्पी-ड़ित भारतीयों की सहा-यतार्थ
८	६	१९१४	×	×
९	७	१९१५	×	×
१०	८	१९१६	महाभारत (पं० नारा-यणप्रसाद 'बेताब')	काशी हिंदू विश्वविद्या-लय के स्थापना दिवस के अवसर पर
११	९	१९१७	भक्त सूरदास (आनंद-प्रसाद कपूर) (बिल्व मंगल)	गौसांई रामपुरी के जन्मो-त्सव के अवसर पर
१२	९	१९१७	महाभारात	अवर डे फंड के लिए प्रथम महायुद्ध में मेसापोटामिया में आहत सैनिकों के लिए ७००) भेजे गये।
१३	९	१९१७	कलियुग	अवर डे फंड के लिए
१४	१०	१९१८	×	×
१५	११	१९१९	महाभारत	महाराज काशी नरेश की वर्षगाँठ के अवसर पर
१६	११	१९१९	भक्त सूरदास	(महाराज काशी नरेश की वर्षगाँठ के अवसर पर)
१७	१२	१९२०	×	×
१८	१३	१९२१	×	×

क्र० सं०	वर्ष	सन्	नाटक	विशेष बात
१९	१४	१९२२	वीर बालक अभिमन्यु (राधेश्याम कथावाचक)	खद्दर के वस्त्रों का उपयोग छठाँ वार्षिकोत्सव
२०	१४	१९२२	कलियुग	श्री ललित बिहारी सेनराव के आमंत्रण पर मिंट हाउस में
२१	१५	१९२३	भीष्म पितामह (द्विजेंद्रलाल राय)	सातवाँ वार्षिकोत्सव
२२	१५	१९२३ (मई)	वीर बालक अभिमन्यु	
२३	१५	१९२३ (अक्तूबर)	,, ,, ,,	सिकरौल दुर्गापूजा वार-बारी समिति के उत्सव पर
२४	१६		×	×
२५	१७	१९२५ (जनवरी)	अत्याचार (आनंद-प्रसाद कपूर	संयुक्तप्रांत के बाढ़ पीड़ितों के सहायतार्थ ४२० रु० कोष में दिये गये।
२६	१७	१९२५ (अप्रैल)	अत्याचार	मंडली के दृश्यपटों की मर-म्मत के लिये धन संग्रहार्थ
२७	१७	१९२५	पाप परिणाम (जमुनादास मेहरा)	दसवाँ वार्षिकोत्सव
२८	१८	१९२६	पाप परिणाम (जमुनादास मेहरा)	ब्रिटिश एंपायर लेप्रेसी रिलीफ फड के लिए ४००) दिये।
२९	१९	१९२७	सम्राट अशोक (श्री कन्हैयाल तसौव्वर)	ग्यारहवाँ वार्षिकोत्सव
३०	२०	१९२८	,, ,,	बारहवाँ वार्षिकोत्सव
३१	२१	१९२९	जीवन आशा (द्विजेंद्रलाल रायके नाटक परपारे का शिवराम दास गुप्त कृत अनुवाद)	मार्च १९२९ में सप्तदिव-सीय नाट्य-समारोह

क्र० सं०	वर्ष	सन्	नाटक	विशेष बात
३२	२१	१९२९	भक्त प्रह्लाद	दिन में खेला गया
३३	२१	१९२९	दामन	काशीका पहला नाट्य-समारोह
३४	२१	१९२९	संसार	,, ,, ,, ,,
३५	२१	१९२९	परीक्षित (श्रीआनंद-प्रसाद कपूर)	तेरहवाँ वार्षिकोत्सव
३६	२२	१९३०	दूज का चाँद	१४ वाँ वार्षिकोत्सव तथा
३७	२३	१९३१	,, ,,	अखिल एशियाई शिक्षा महासम्मेलन के अवसर पर दंगा-पीड़ितों की सहायतार्थ ६३०) दिये।
३८	२३	१९३१	गरीब की दुनिया	,, ,, ,,
३९	२४	१९३२	×	×
४०	२५	१९३३	प्रेम रहस्य	पंद्रहवाँ वार्षिकोत्सव
४१	२५	१९३३	पहली भूख	सोलहवाँ वार्षिकोत्सव
४२	२६	१९३४	प्रेम रहस्य	बिहार भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ १५५)रु०दिये।
४३	२६	१९३४	संपादक की दुम	दक्षिणी भारतीय हिंदी प्रेमी दल के स्वागत में
४४	२७	१९३५	×	×
४५	२८	१९३६	×	×
४६	२९	१९३७	×	×
४७	३०	१९३८	×	×
४८	३१	१९३९	×	×
४९	३२	१९४०	×	×
५०	३३	१९४१	देश का दुर्दिन	बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की रजतजयन्ती के अवसर पर
५१	३४	१९४२	×	×

क्र० सं०	वर्ष	सन्	नाटक	विशेष बात
५२	३५	१९४३	×	×
५३	३६	१९४४	आगा	आदर्श सेवा विद्यालय की सहायतार्थ
५४	३७	१९४५	राणा अमरसिंह	दुर्गाजी सम्मिलनी के निमंत्रण पर
५५	३८	१९४६	×	×
५६	३९	१९४७	×	×
५७	४०	१९४८	×	×
५८	४१	१९४९	×	×
५९	४२	१९५०	नागपुत्र शालिवाहन	
६०	४३	१९५१	×	×
६१	४४	१९५२	कृष्णार्जुन युद्ध	
६२	४५	१९५३	मगर-मच्छ	सरस्वती खत्री विद्यालय की सहायतार्थ
६३	४५	१९५३	चूड़ावत	नागरी प्रचारिणी सभा की हीरक जयन्ती के अवसर पर
६४	४५	१९५३	मृत्यु के उपरान्त	
६५	४५	१९५३	चाणक्य और शकटार	
६६	४६	१९५४	×	×
६७	४७	१९५५	जलती चिताएँ	
६८	४८	१९५६	×	×
६९	४९	१९५७	सही रास्ता (राजकुमार)	समय दो घंटे, वर्तमान पुलिस, नेता आदि पर करारा व्यंग्य, रक्तदान की महिमा, प्रतीक शैली का मंच
७०	४९	१९५७	१८५७ की झाँकी (राजकुमार)	दो घंटे का चलचित्र शैली में प्रथम स्वातंत्र्य-युद्ध की झलकें

क्र० सं०	वर्ष	सन्	नाटक	विशेष बात
७१	४६	१९५७	अपराधी कौन (राज-कुमार)	दो घंटे–चलचित्र शैली में एक प्रयोग-सामाजिक विषमता का चित्रण
७२	४९	१९५७	झाड़ फूँक (डा० भानु)	एक घंटा–गाँवों में फैले अंध विश्वास पर एक रूपक
७३	४९	१९५७	लाटरी (स्व० प्रेमचंद की कहानी)	तीन घंटे–नाट्य रूपांतर
७४	५०	१९५८	गुंडा (जयशंकर प्रसाद की कहानी का अभिनव भरत पं० सीताराम चतु-र्वेदी कृत नाट्य-रूपांतर)	डेढ़ घंटे का ऐतिहासिक नाटक । प्रथम सफल प्रदर्शन ।
७५	५०	१९५८	रात के राही (शिवाजी अरोड़ा)	रिहर्सल शैली में एकाँकी नाटक–समय पैंतालीस मिनट ।
७६	५०	१९५८	अंधेरी रात का उजला तारा	अपराध संबंधी नाटक–समय एक घंटा ।
७७	५०	१९५८	वतन के लिए (डा० शंभू-नाथ सिंह)	देश भक्ति पूर्ण–समय आधा घंटा ।
७८	५०	१९५८	लोहे की राखी (वसंत-कुमार सेठ)	सामाजिक नाटक समय-तीन घंटे ।

स्वर्ण जयंती समारोह मंडली द्वारा अभिनीत :

क्र० सं०	वर्ष	सन्	नाटक	विशेष बात
७९	५०	१९५८	गोपी विरह (राजकुमार)	संगीत नाट्य
८०			वे सपनों के देश से लौट आये हैं (भानु)	बच्चों का नाटक
८१			तूफानी रात (शिवाजी अरोड़ा)	एकांकी नाटक

क्र० सं०	वर्ष	सन्	नाटक	विशेष बात
८२			चाड़िया नु स्वप्न (नीनू मजूमदार)	गुजराती भाषा में खेले
८३			विविध मनोरंजन	इक्कीस लघु-नाट्य
			(१) संगीत सभा	(मूक नाटक)
			(२) आकाशदीप (प्रसाद)	(रेडियो नाटक)
			(३) १२ नंबर कमरा	(चुटकुला)
			(४) मसूरी वाली (बेढब)	(एकांकी)
			(५) अल्लम गल्लम (प्रो. कन्हैयालाल)	(कथोपकथन शैली)
			(६) अंधेर नगरी (भारतेंदु)	(दूरदर्शक शैली)
			(७) झगड़े से तू बचता चल	(एक मिनिट का लघुत्तम नाटक)
			(८) जादू वाला ढोल वाला (श्री सत्य)	(नकल)
			(९) डमी उवाच (मुद्राराक्षस)	(पुतली नाट्य)
			(१०) काला जादू (गोविंद वल्लभ पंत)	(वैज्ञानिक)
			(११) किमाम	(व्यंग्य चुटकुला)
			(१२) धोखा (प्रेमकुमार दुबे)	(लघु हास्य नाटिका)
			(१३) आओ हमारे होटल में (राधा कृष्ण)	(राजनीतिक व्यंग्य)
			(१४) बहरे बाबा (अन्नपूर्णानंद)	(चरित्र नाट्य)
			(१५) आज नाटक नहीं होगा (पंचशील बंधु)	(रिहर्सल नाटक)
			(१६) महाराज मैं हूँ (शिवाजी अरोड़ा)	(एकांकी)

क्र० सं०	वर्ष	सन्	नाटक	विशेष बात
			(१७) घनुस जग्ग (प्रेमकुमार दुबे)	(हास्य नाटक)
			(१८) टेलीफोन	(कार्टून नाटक)
			(१९) पत्थर के देवता	(छाया नाटक)
			(२०) कन्फ्यूजन	(अलिखित नाटक)
			(२१) समापन	(अनाटक)
८४	५१	१९५९	गुंडा	गणतंत्र दिवस पर
८५	५१	१९५९	उल्का (डा० नीहाररंजन गुप्त के बंगला नाटक का अनुवाद श्री विश्वनाथ मुखर्जी द्वारा)	दो मंजिल का सेट, अभिनय और साज-सज्जा के नये कीर्तिमान
८६	५१	१९५९	तिकड़म क्लिनिक (भानु)	व्यंग नाटक
८७	५१	१९५९	कफन	प्रेमचंद की कहानी का नाट्य रूपांतर
८८	५१	१९५९	सही रास्ता	पश्चिम बंगाल के बाढ़ पीड़ितों के सहायतार्थ १३००) दिए।
८९	५१	१९५९	कागज की नाव ('स्टाप प्रेस' का अनुवाद)	नई शैली का नाटक
९०	५२	१९६०	विकलांग सभा (राजकुमार)	नूतन विषय
९१	५२	१९६०	अभिनेता (वेढब बनारसी)	हास्य नाटिका
९२	५२	१९६०	पत्थर का इंसान (विजयकुमार राय)	
९३	५२	१९६०	बचाओ (शिवाजी अरोड़ा)	हरिजन उद्धार संबंधी नाटक
९४	५२	१९६० २६-१-६० और २८-१-६०	ज्वार भाटा (राजकुमार)	सामाजिक

क्र० सं०	वर्ष	सन्	नाटक	विशेष बात
९५	५२	१९६०	अक्लमंदी (मोहम्मद इब्राहिम खाँ) (कानपुर)	हास्य - व्यंग्य प्रधान नाटक
९६	५२	१९६०	शेणी विजानंद (गुजराती में श्री उछरंग राय के० ओझा के काव्य का डा० भानु द्वारा अनुवाद और मंचीकरण)	अभूतपूर्व काव्य का प्रयोग, लोक कथा-काव्य, शास्त्रीय संगीत और लोक नृत्य की रसधार
९७	५३	१९६१	तारा का देश (हिंदी में) (रवींद्रनाथ ठाकुर)	रवींद्र शतवार्षिकी के अवसर पर बालकों द्वारा अभिनीत
९८	५३	१९६१	सबूत का गवाह (अगाथा क्रिस्टी के 'विटनेस फॉरद प्रॉसीक्यूशन का डा० भानु द्वारा अनुवाद)	आधुनिक फ्रेम, समूहीकरण आदि से युक्त आधुनिक रहस्य नाटक अदालत दृश्य का अभूतपूर्व प्रदर्शन, रहस्य रोमांच और अद्भुत संवाद विधान
९९	५४	१९६२ (१२ जनवरी)	चाडिया नुं स्वप्न (नीनू मजूमदार)	अद्भुत नैनरंजक गुजराती बैले प्रधानमन्त्री नेहरू और वर्मा के प्रधानमंत्री ऊनू के समक्ष प्रस्तुत मंडली की सफलता की एक और उपलब्धि।
१००	५४	१९६२	शेणी विजानंद	राष्ट्रीय सुरक्षा-कोष के लिए प्रस्तुत, ४१००) दिया गया।
१०१	५५	१९६३	सबूत का गवाह	
१०२	५५	१९६३	गृह प्रवेश (बंगला से अनुदित)	सामाजिक हास्य-व्यंग्य नाटक

अभिमंचन हुआ। रामेश्वर थियेटर बुलानाला मुहल्ले में था। पात्र-नियोजन निम्न लिखितानुसार था—

चंद्रगुप्त	: मंगलीप्रसाद अवस्थी	—नागरी नाटक मंडली
चाणक्य	: केशवराम टंडन	—भारतेंदु नाटक मंडली
नंद	: बनारसीदास खन्ना	—नागरी ,, ,,
राक्षस	: सीताराम चतुर्वेदी	—हिंदी-नाट्य-समिति(काशी हिंदू विश्वविद्यालय)
सिंहरण	: लक्ष्मीकांत झा	—(गवर्नर भारतीय रिजर्व वैंक) रत्नाकर–रसिक मंडल
दांड्यायन	: बल्ली बाबू	
पर्वतेश्वर	: चंद्रदेव दीक्षित	—हरिहर समिति
सिकन्दर	: गणेशदत्त आचार्य	—हिंदी-नाट्य-समिति
सिल्यूकस	: चंद्रशेखर द्विवेदी	—आयुर्वेदिक कालेज का० हि० वि० विद्यालय
आंभीक	: शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र'—रत्नाकर–रसिक–मंडल	
अलका	: बदरीलाल गोस्वामी	—भारतेंदु नाटक मंडली
सुवासिनी	: जनार्दन मिश्र	
कल्याणी	: गणेशराम नागर	
मालविका	: गिरजाप्रसाद	
शकटार	: सर्वदानंद वर्मा	

इस नाटक में वेशभूषा की रूपरेखा डाक्टर रमाशंकर त्रिपाठी ने तैयार की थी। कलकत्ते से किराए पर पोशाक मँगाई गई थी और पात्रों को सजाने वाले भी कलकत्ते से बुलाये गये थे।

स्वयं-जयशंकर प्रसादजी ने ही अभिनय की दृष्टि से संक्षिप्त नाट्य-प्रति तैयार की थी। प्रयोग के समय वे स्वयं प्रेक्षक के रूप में उपस्थित थे। कृष्णदेवप्रसाद गौड़ 'बेढब बनारसी' ने उद्घोषक का कार्य सम्हाला था।

इस नाटक के साथ एक प्रहसन भी खेला गया। इसमें वीरेंद्रनाथदास 'वीरे बाबू', वीरेश्वर बनर्जी, कांतानाथ पांडेय 'चोंच' और एस० वी० दातार ने भाग लिया था।

दैनिक 'आज' के सहसंपादक पं० दिनेशदत्त झा ने प्रत्यक्षदर्शी होने के नाते 'मिहिर' नाम से इस नाटक के अभिनय के बारे में अपनी राय 'आज' के २२-१२-१९३३ के अंक में अभिव्यक्त की है—"कुछ अभिनेताओं

का अभिनय पहले दिन और कुछ का दूसरे दिन अच्छा हुआ। पहले दिन की अपेक्षा दूसरे दिन का नाटक अच्छा हुआ। दोनों दिन कई भूलें भी हुई। प्राम्पटिंग पहले दिन दूसरे दिन से भी ज्यादा जोर से होती थी।

"पात्रों का साजसिंगार बड़ा सुंदर और उपयुक्त था।.......यथासंभव प्राचीनता की रक्षा की गई थी। पोशाक इतनी तादाद में थी कि २० मुख्य और प्रायः ४० गौण पात्रों के होने पर भी सब दृश्यों में सब पात्रों की पोशाकें नई दिखाई देती थी।

"चंद्रगुप्त का अभिनय किया था श्री मंगलीप्रसाद अवस्थी ने जिनका संबंध नागरी नाटक मंडली से है। आपके अभिनय में उपयुक्त गांभीर्य का अभाव बड़ा अखरता था। आप कुशल नट हैं, इसमें सन्देह नही, पर चंद्रगुप्त का पार्ट आपके कौशल और स्वभाव के अनुकूल नहीं था, इसलिए आपको विशेष सफलता नहीं मिली।

"स्त्री पात्रों में अलका की भूमिका में गोस्वामी वदरीलाल का अभिनय सर्वश्रेष्ठ था। मगध मंत्री वृद्ध शकटार का पार्ट श्री सर्वदानंद वर्मा ने इतना अच्छा किया था कि लोग मुग्ध हो गए। दोनों दिन आपको पदक मिले। राक्षस की भूमिका में श्री सीताराम चतुर्वेदी ने 'निकल मत बाहर दुर्बल आह!' इस गीत को गाने में वड़ी कुशलता दिखाई। इस गान में आपने नवों रसों के भाव क्रमशः व्यक्त किये।"[1]

'अनारकली' का अभिनय—

पं० सीताराम चतुर्वेदी लिखित 'अनारकली' सन् १९३४ ई० के दिसंबर मास में काशी के वसंत महिला विद्यालय (Vasant College for Women) की छात्राओं द्वारा सफलतापूर्वक अभिनीत हुई थी।[2]

साहित्य सम्मेलन के अवसर पर नाटक—

इस सम्मेलन के अवसर पर आश्विन ३० तथा कार्तिक १ अर्थात् १६ और १७ अक्तूबर को श्री जयशंकर प्रसाद रचित 'स्कंदगुप्त' नाटक का अभिनय हुआ। इसमें काशी की सभी प्रमुख नाटक मंडलियों ने सहयोग दिया। मुख्यतः श्री भारतेंदु-नाटक मंडली तथा नागरी नाटक मंडली और साहित्य-कला परिषद् काशी के नाम उल्लेखनीय हैं।[3]

---

१. रत्नाकर-रसिक-मंडल संबंधी सामग्री नागरी प्रचारिणी पत्रिका के व० ७३ सं० २०२५ के आधार पर तैयार की गई है।—ले०

२. पं० सीताराम चतुर्वेदी : अनारकली पुस्तक से उद्धृत।

३. अ० भा० हिंदी साहित्य सम्मेलन २८ वां अधिवेशन काशी का कार्य विवरण १९३८ ई० पृ० १६८।

शिवराम-नाट्य-परिषद्—

पं० माधवराव संड, पं० बेनीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली' और रसराज नागर के प्रयत्नों से इस परिषद् की स्थापना हुई। (अन्य विवरण अनुपलब्ध है।)

इस परिषद् ने १४ दिसम्बर १९४४ को पं० बेनीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली और पं० रसराज नागर-लिखित 'हमारा देश' नाटक खेला।

पात्र योजना इस प्रकार थी—

शिवाजी : पं० जगन्नाथप्रसाद पाठक
समर्थ रामदास : उदयराम सड
विदूषक : कृष्णचंद्र जोशी

'श्रीमाली' ने इस नाटक का निर्देशन किया था।[1]

विक्रम परिषद्—

सन् १९३९ ई० के अनंत चतुर्दशी के दिन काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राध्यापक पं० सीताराम चतुर्वेदी ने उसी महाविद्यालय के पं० करुणापति त्रिपाठी, पं० शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र', पं० मुकुंददेव शर्मा जैसे छात्रों की सहायता से 'विक्रम परिषद्' की स्थापना की। इस परिषद् ने 'बाक्स रंगमंच' की स्थापना की जिसका आधा व्यय समिति ने और आधा व्यय पं० करुणापति त्रिपाठी ने अपनी छात्रवृत्ति से दिया था।

परिषद् ने स्थापना के दिन पं० सीताराम चतुर्वेदी द्वारा लिखित 'मंगल प्रभात' नाटक खेला।

सन् १९४४ ई० में कार्तिक में देवोत्थान एकादशी के दिन पं० शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र' का 'पूर्व कालिदास' नाटक चित्रा टाकीज (चौक) के रंगमंच पर अभिमंचित हुआ। इस नाटक में भाग लेने वाले कलाकार थे—पं० सीताराम चतुर्वेदी, पं० करुणापति त्रिपाठी. पं० काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर, पं० शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र', कृष्णदेवप्रसाद गौड़. कु० कमलिनी मेहता, कु० विमला वैद्या, कु० पुष्पा मलकानी, कु० इंदु मलकानी।

इस परिषद् ने निम्नलिखित नाटक खेले—विक्रमादित्य. अजंता, उत्तर कालिदास, दंतमुद्रा, शबरी और वाल्मीकि। 'पूर्व कालिदास' का अभिमंचन बंबई में भी इस परिषद की ओर से हुआ था। 'शबरी' (आ० सीताराम चतुर्वेदी कृत सं० २००२ वि० की के अनन्त चतुर्दशी को काशी की अभिनव

१. नागरी प्रचारिणी पत्रिका व० ७३ सं० २०२५ के आधार पर संकलित—ले०

रंगशाला में दो दिन खेला गया। प्रथम प्रयोग का भूमिका-विवरण निम्न प्रकार है[1]—

पं० सीताराम चतुर्वेदी	:	राम
पं० करुणापति त्रिपाठी (प्रथम दिन)	:	लक्ष्मण
पं० वाचस्पति उपाध्याय (द्वितीय दिन)	:	लक्ष्मण
कृष्णदेवप्रसाद गौड़ 'वेढव वनारसी'	:	मतंग
चतुर्भुजनाथ तिवारी	:	वौधायन
सत्यनारायण मिश्र	:	मुद्गल
पं० इंद्रशंकर मिश्र	:	गोमंगो
पं० शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र'	:	कोला
पं० विश्वेश्वरनाथ जेतली	:	अरसी
पं० काशीनाथ उपाध्याय, 'वेधड़क' वनारसी	:	भल्लू
कु० कमलिनी मेहता	:	शवरी
कु० उमाकुमारी मौडवेल	:	मालो
श्रीमती सुशीला शरण सिंह	:	स्वधा
कु० दीप्ती अधिकारी	:	वन्या

अभिनय कला मन्दिर—

कुँवर जी अग्रवाल ने सन् १९५० ई० को अभिनय कला मंदिर की स्थापना की। इस कला मंदिर की मुख्य विशेषता यह रही कि इसने एकांकियों को ही प्रस्तुत किया। 'लक्ष्मी का स्वागत', 'वीमार', 'वतन के लिए', 'पृथ्वीराज की आँखें', 'सड़क पर दो कलाकर', 'अभिनेता', 'दो वहरे प्रोफेसर', 'पानी आया', 'औरंगजेव की आखिरी रात' एकांकी इस संस्था द्वारा अभिमंचित हुए। सन् १९५८ ई० में नागरी नाटक मंडली की स्वर्ण-जयंती के अवसर पर धर्मवीर भारती कृत 'नीली झील' एकांकी खेला गया।

नटराज—

केशवराम टंडन, कृष्ण देव प्रसाद गौड़ और सर्वदानंद वर्मा के प्रयत्न से सन् १९५४ ई० में 'नटराज' की स्थापना हुई। 'नटराज' ने जगदीशचंद्र माथुर का नाटक 'कोणार्क' फिलिमस्थान टाकीज में खेला। इसके वाद डा० रामकुमार वर्मा का 'कौमुदी महोत्सव' खेला गया।

---

१. आ० सीतराम चतुर्वेदी : 'शवरी' से उद्धृत।

ललित-संगीत-नाट्य-संस्थान—

ललित-संगीत नाट्य-संस्थान की स्थापना सन् १९५५ ई० में हुई। डा० 'अज्ञात' के अनुसार यह संस्था जैन नाटक मंडली का ही पुनर्गठित रूप है।[1] इस संस्थान ने प्रेमचंद के 'शतरंज के खिलाड़ी' और पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' के 'उसकी माँ' का नाट्य-रूपांतर प्रस्तुत किया। ध्रुव स्वामिनी (जयशंकर प्रसाद), चश्मे की दूकान, सोने का वरदान नाटक खेले गये।

शारदा-कला-परिषद्—

पं० हरिशंकर चतुर्वेदी, उमाशंकर 'बनारसी, कन्हैयालाल मिश्र और वीरेंद्र नाथ सिंह के प्रयत्नों से फरवरी १९५६ ई० को 'शारदा-कला-परिषद्' की स्थापना हुई। इसके पदाधिकारी इस प्रकार थे—

पारस नाथ सिंह	:	अध्यक्ष
कन्हैयालाल मिश्र	:	प्रधानमंत्री

नागरी-नाटक मंडली की स्वर्ण-जयंती समारोह के समय पर शारदा कला-परिषद् ने २४ नववंर १९५८ को पं० राम बालक शास्त्री कृत 'महामना' को अभिमंचित किया। इस संस्था द्वारा अभिनीत नाटक इस प्रकार हैं—

महामना	:	ले० पं० रामबालक शास्त्री २४-११-१९५८
विश्वास	:	ले० पं० सीताराम चतुर्वेदी २२-११-१९५९
गुनहगार	:	ले० पं० गोविंद सिंह १७-४-१९६०
नये हाथ	:	ले० विनोद रस्तोगी २५-९-१९६०
नया समाज	:	ले० उदयशंकर भट्ट अप्रैल १९६१
रेत की दीवार	:	ले० राजेंद्र कुमार शर्मा १७-२-१९६२
हम भी इंसान हैं	:	ले० आचार्य आत्रेय १२-२-१९६२
अपनी धरती	:	ले० रेवतीशरण शर्मा २५-१-१९६५ (यह नाटक काशी में पाँच बार, लखनऊ में एक बार और इलाहाबाद में दो बार परिषद् के कलाकारों द्वारा खेला गया।)
खून की आवाज	:	ले० रामकुमार 'भ्रमर' १४ और १५ जनवरी १९६७ काशी में, २६ जनवरी १९६७ लखनऊ में
ढाई आखर प्रेम का	:	ले० वसंत कानेटकर १९६८

१. डा० 'अज्ञात' : रंगभारती सितंबर'७३ प्रवेशांक पृ० १०।

नाटकों का सफल निर्देशन 'त्रिकंटक' द्वारा हुआ।

'ढाई आखर प्रेम का' का मंचन नागरी नाटक मंडली के रंगमंच पर पर १४-१२-१९६८ और १५-१२-१९६८ को हुआ। इस नाटक के रंगकर्मी निम्न रूप में थे—

संयोजक	:	इन्द्रलाल खनेजा
निर्देशक	:	रमेशकृष्ण नागर
रंगमंच-व्यवस्था	:	वेनीप्रसाद पर्दावाला
संगीत	:	मणीशंकर नागर

पात्र-परिचय

रमेश कृष्ण नागर	:	प्रो० मार्तंड वर्मा
वीरेंद्र सिंह	:	वच्चू
राम नागर	:	पंडित जी
गौरीशंकर सिंह	:	बाजा
श्रीमती राधारानी सिंह	:	श्रीमती वर्मा (प्रियम्वदा)
कु० माधुरी सिंह	:	ववली
कु० कल्पना भट्टाचार्या	:	सुशीला

३०-११-१९६९ ई० को नागरी नाटक मंडली के मंच पर पु० ल० देश पांडे कृत 'तुझे आहे तुजपाशी' का हिंदी रूपांतर 'कस्तूरी मृग' प्रस्तुत हुआ। रंगकर्मी निम्न प्रकार थे—

निर्देशक	:	'त्रिकंटक' गणेश प्रसाद सिंह
संगीत	:	मणीशंकर नागर
मंच-सज्जा	:	वेनीप्रसाद पर्दा वाला
पार्श्व-संकेत	:	वावूराव पाठक नरेंद्र आचार्य

पात्र-परिचय—

उमाशंकर वनारसी	:	काकाजी
मथुरा प्रसाद अग्रवाल	:	आचार्य जी
गणेश प्रसाद सिंह	:	श्याम वावू
रामप्रसाद मौर्य	:	डा० संतोष
नारायण	:	मुनीमजी
रणजीत कुमार	:	जगन्नाथ

अनूप कुमार	:	मंगल
कुमारी कल्पना	:	गीता
कुमारी पुष्पा	:	उषा

शारदा कला परिषद्[१] ने अपने पंद्रहवें वार्षिकोत्सव पर हरिश्चंद्र महा विद्यालय के रंगमंच पर दिनांक ३० एवं ३१ दिसम्बर १९७० को अशोक पराड़कर लिखित "वह दुल्हन बनेगी ?" का मंचन किया। निम्न कलाकारों ने प्रयोग को सफल बनाया—

निर्देशक	:	गणेश प्रसाद सिंह
सहायक	:	रामप्रसाद मौर्य
संगीत	:	जगन्नाथ आचार्य कृष्ण धाणेकर
विद्युत ध्वनि	:	संतोष इलेक्ट्रोनिक्स
मंच सज्जा	:	वेनी प्रसाद नरेंद्र आचार्य
पार्श्व संकेत	:	रामप्रसाद मौर्य अनूपकुमार पाठक
गीत	:	दरिया साहब
पार्श्वगायक	:	देवीप्रसाद मौर्य
विद्युत प्रकाश	:	डा० जय किशन लाल निगम

पात्र-परिचय—

उमाशंकर 'बनारसी'	:	बाबा
मथुरा प्रसाद अग्रवाल	:	पापा
रणजीत कुमार अकेला	:	अरुण
नरेंद्र आचार्य	:	रतन
कुमारी कल्पना	:	सुधा
कुमारी पुष्पा	:	मधु

इसी नाटक को फिर से नागरी नाटक मंडली के रंगमंच पर १० फरवरी १९७२ को डा० भगवानदास बाल अस्पताल के सहायतार्थ प्रस्तुत किया गया।

---

१. शारदा कला परिषद् की जानकारी श्री उमाशंकर सिंह 'बनारसी' के सौजन्य से प्राप्त।

इस बार अरुण की भूमिका में गणेशप्रसाद सिंह उतरे थे। आशा सिंह सुधा बनी थी तो पूर्वी सिनहा 'मधु'। रतन की भूमिका पवनकुमार ने निभाई थी। इसबार अन्य रंगकर्मी निम्न रूप में थे—

संगीत	:	भगवानदास मिश्र
पार्श्व गायक	:	डा० सेन
गायिका	:	पूर्वी सिनहा पिंटू राय चौधरी
पार्श्व-संकेत	:	अविनाश क्षीरसागर कमलनाथ त्रिपाठी
मंच व्यवस्था	:	कृष्ण प्रसाद श्रीवास्तव

श्री नाट्यम्—

काशी के कुछ कलाकारों की एक टोली थी जो घूम-घूमकर नाटक देखती थी और नाट्यप्रदर्शन भी करती थी। इस टोली के प्रमुख थे प्रभात-कुमार घोष। सन् १९५७ ई० में 'कुँवर सिंह' के प्रतिमा-स्थापन समारोह के अवसर पर आजमगढ़ में एक नाटक प्रस्तुत करने के लिए यह टोली आमंत्रित की गई। इस टोली ने चतुर्भुज शर्मा कृत 'कुंवरसिंह' नाटक को वड़ी सफलता के साथ खेला। लोगों ने जब इनकी संस्था का नाम पूछा तो श्री प्रभातकुमार के मुख मे निकल पड़ा 'श्री नाट्यम्'। इस प्रकार इस टोली का नामकरण आजमगढ़ में हुआ।

'श्री नाट्यम्' की विधिवत् स्थापना १४ अप्रैल १९५७ को काशी के गयाघाट मुहल्ले में त्रिलोचन प्रसाद भार्गव के निवास-स्थान पर हुई। श्री दिलीपनारायण सिंह के सभापतित्व में यह वैठक हुई थी। चंद्र वहादुर सिंह, प्रभातकुमार घोष, मंगला प्रसाद भगत, राधाविनोद गोस्वामी, गोविंद प्रसाद केजरीवाल, अवध विहारी लाल, कैलाश नाथ पांडेय, कमलापति वाजपेयी आदि संस्थापकों में उपस्थित थे। डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, डा० राजवली पाँडेय और कृष्णदेव प्रसाद गौड़ का संरक्षण भी 'श्री नाट्यम्' को प्राप्त था।

'श्री नाट्यम्' द्वारा अभिनीत नाटकों की सूची इस प्रकार है—

श्री नाट्यम् द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों की संक्षिप्त तालिका

अनु-क्र.	नाटक का नाम	अभिनय की तिथियाँ	मंचीकरण की संख्या	लेखक या अनुवादक का नाम	विशिष्ट अतिथि	विशेष विवरण
१	कुँवर सिंह	१४-११-५७	१	श्री चतुर्भुज शर्मा	श्रीकृपाशंकर श्रीवास्तव जिलाधीश आजमगढ़	मौलिक एतिहासिक नाटक
२	पलासी	२२-१-५८	१	सर्वश्री प्रभातकुमार घोष तथा अवध-विहारी लाल	डा० भगवतीशरण सिंह संचालक, सूचना-विभाग उत्तर प्रदेश	मौलिक एतिहासिक नाटक
३	मुझे मेरा मुनुआ लौटा दो	१-८-५८ ३-१०-५८	२	श्री अवध बिहारी-लाल	डा० कौशलपति तिवारी ,, ,,	सामाजिक एकांकी
४	बहादुर शाह का फैसला	१-८-५८	१	श्री अवध बिहारी-लाल	,, ,,	ऐतिहासिक एकांकी
५	ये भी इंसान हैं	१९-७-५८ २०-९-५८ २९-१०-५८ २६-११-५८ १६-१-६२	५	श्री दयागिरि	(उत्तर प्रदेश राज्य नाट्य प्रतियोगिता में मंचस्थ एवं पुरस्कृत)	श्री सत्य बंदोपाध्याय के 'एराओ मानुष' से अनूदित
६	परिचय	१३-९-५८	१	श्री दयागिरि	श्री ए० एन० झा उप-कुलपति संस्कृत विश्व-विद्यालय, वाराणसी	सामाजिक नाटक

अनु. क्र.	नाटक का नाम	अभिनय की तिथियाँ	मंचीकरण की संख्या	लेखक या अनुवादक का नाम	विशिष्ट अतिथि	विशेष विवरण
७	जय सोमनाथ	२८-२-५९ २९-२-५९ २५-११-५९	३	श्री अवध बिहारी-लाल	श्री हुकुमसिंह, मंत्री उ० प्र०, डा० कौशल पति तिवारी	श्री के० एम० मुन्शी के गुजराती उपन्यास 'गुजराथ नो नाथ' से रूपांतरित ऐतिहासिक नाटक
८	औरंगजेब की आखिरी रात	४-७-५९	१	डा० रामकुमार वर्मा	डा० कौशल पति तिवारी	एकांकी नाटक
९	दो बहरे प्रोफेसर	४-७-५९	१	श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़	डा० कौशल पति तिवारी	एकांकी नाटक
१०	अपराधी	१३-९-५९	१	सर्वश्री प्रभातकुमार घोष एवं अवधबिहारी लाल	श्री एवं श्रीमती रोहित मेहता-सेक्रेटरी, थियोसोफिकल सोसाइटी, वाराणसी	श्री छबि बैनर्जी के बंगला नाटक 'चोर' पर आधारित
११	बड़े घर की बेटी	१०-१०-५९	१	श्री अवधबिहारी लाल	श्री ताराशंकर बंदोपाध्याय	स्व० मुन्शी प्रेमचंद की कहानी से रूपांतरित
१२	मानभंग	१-५-६०	१	—	—	—
१३	गोदान	३०-५-६० ३१-५-६०			डा० स० म० दिमिशित्स, रूसी दूतावास, दिल्ली	

अनु-क्र.	नाटक का नाम	अभिनय की तिथियाँ	मंचीकरण की संख्या	लेखक या अनुवादक का नाम	विशिष्ट अतिथि	विशेष विवरण
		५-११-६० ६-११-६० ८-११-६०		श्री के० वी० चंद्रा	श्री त्रिभुवन नारायण सिंह तत्कालीन सदस्य योजना आयोग	स्व० मुन्शी प्रेमचन्द के प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' का नाट्य-रूपांतर।
		२३-१-६२ २४-११-६२ १२-१२-६४			श्रीशीतलाप्रसाद गुप्त उपनगर प्रमुख वाराणसी	
		२-१-६५ २६-२-६६	२ १		श्रीमती इंदिरा गांधी	'अनामिका' कलकत्ता द्वारा आयोजित हिंदी नाट्य-महोत्सव में मंचस्थ हुआ।
१४	नींव के पत्थर	२९-९-६१	१	सर्वश्री प्रभातकुमार घोष एवं अवधविहारी लाल	डा० वी० वी० केसकर, तत्कालीन केंद्रीय सूचना एवं प्रसार मंत्री	मौलिक सामाजिक नाटक
१५	बिंदू का बेटा	२८-५-६१	१	श्री दयागिरि	श्री कमलापति त्रिपाठी तत्कालीन मंत्री सूचना विभाग, उ० प्र०	स्व० श्री शरद् बाबू के बंगला नाटक से अनूदित

अनु-क्र.	नाटक का नाम	अभिनय की तिथियाँ	मची-करण की संख्या	लेखक या अनुवादक का नाम	विशिष्ट अतिथि	विशेष विवरण
१६	विसर्जन	३०-५-६१ २९-१२-६१	२	श्री दयागिरि	श्री जे० बी० टडन, आयुक्त वाराणसी राज दपति थाइलैण्ड	स्व० श्री रवींद्र नाथ ठाकुर के बंगला नाटक से अनूदित
१७	अलग-अलग रास्ते	२-१०-६१	१	श्री उपेंद्र नाथ अश्क	श्री कुंजबिहारी गुप्त-तत्कालीन नगर प्रमुख, वाराणसी	मौलिक सामाजिक नाटक
१८	आकाश दीप	१४-१-६२	१	श्री अवधबिहारी लाल	श्री कुजबिहारी गुप्त तत्कालीन नगरप्रमुख, वाराणसी	स्व० जयशंकर प्रसाद की कहानी से रूपांतरित
१९	जमाना	२७-५-६२ से ६-६-६२ तथा ९-११-६२ से २०-११-६२	२१	श्री रमेश मेहता	—	मौलिक सामाजिक नाटक
२०	दरवाजे खोल दो	२४-३-६३	१	श्री कृष्णचंदर	डा०भगवतशरण उपाध्याय	मौलिक सामाजिक नाटक
२१	फाँसी	२४-३-६३	१	कुमारी कुसुम गिरि	डा० भानुशंकर मेहता	बंगला से रूपांतरित
२२	रक्तदान	१०-१०-६३ से २१-२-६३ तथा	१२	सर्वश्री रामउजागर शर्मा तथा प्रभातकुमार घोष	श्री ब्रजपाल दास, नगर प्रमुख, वाराणसी	राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत मौलिक सामाजिक नाटक

अन-क्र.	नाटक का नाम	अभिनय की तिथियाँ	मंचीकरण की संख्या	लेखक या अनुवादक का नाम	विशिष्ट अतिथि	विशेष विवरण
		३०-१०-६३	१			
		१०-१२-६३ से		—	श्री त्रिभुवननारायणसिंह	—
		१८-१२-६३	८		तत्कालीन सदस्य योजना	
		८-१-६४	१		आयोग	
२३	शाहजहाँ	२२--१२-६३	२	श्री रूपनारायण पांडेय	डा० हरगोविंदसिंह-	स्व० डी० एल० राय के
		२३-१२-६३			गृहमंत्री उ० प्र०	बंगला नाटकसे अनूदित
२४	पाँच साल बाद	१०-५-६४	२	सर्वश्री रामउजागर शर्मा		टू चेंज एक्रकेड शैडो
		११-५-६४		तथा प्रभातकुमार घोष		पर आधारित
२५	नारायणी का राम	१२-१२-६४	४	सुश्री कुसुम गिरि	डा० जगन्नाथ शर्मा,	स्व.शरतबाबू के बंगला
		१३-१२-६४		साहित्य रत्न	अध्यक्ष-हिंदी विभाग	'रामेर सुमति' का
		२५-१२-६४			काशी हिंदू	हिंदी नाट्यरूपांतर
		२६-१२-६४			विश्वविद्यालय	
२६	संगम	५-६-६५	२	कणादि ऋषि भटनागर	श्री रोहित मेहता	राष्ट्रीय भावनायुक्त
		६-६-६५				सामाजिक नाटक
२७	हमारा फर्ज	१८-१२-६५	२	सर्वश्री रामउजागर शर्मा	श्रीरघुनाथसिंह M.P.	राष्ट्रीय सामाजिक
		१९-१२-६५		एवं प्रभातकुमार घोष		नाटक
२८	आराम हराम है	५-६-६६	१	प्रकाश साथी	—	हास्य प्रधान नाटक
२९	प्रतिकार	२८-२-६८	२	सर्वश्रीरामउजागरशर्मा	उपकुलपति काशी	शचींद्रसेन गुप्ता के

अनु-क्र.	नाटक का नाम	अभिनय की तिथियाँ	मंचीकरण की संख्या	लेखक या अनुवादक का नाम	विशिष्ट अतिथि	विशेष विवरण
		२६-२-६७		एवं अवधबिहारी लाल	विश्व विद्यालय	पताकन इतिहास नाटक पर आधारित
३०	अँधेरी रोशनी	५-१०-६८ ११-१०-६८	१ १	श्री शिवमूरत सिंह	(कलाभवन, कलकत्ता द्वारा आयोजित नाट्य प्रतियोगिता में पुरस्कृत)	मौलिक सामाजिक नाटक
३१	कलाएँ जाग उठीं	२७-२-६९	१	श्री शिवाजी अरोड़ा	(कलाकार, कलकत्ता द्वारा मंचस्थ)	—
३२	अभिनेता	२८-२-६९	१	स्व०श्रीकृष्णदेवप्रसाद गौड़	(,, ,, ,,)	सामाजिक नाटक
३३	भूचाल	२८-२-६९	१	श्री आर० जी० आनंद	(अदाकार, ,, ,,)	,, हास्यात्मक नाटक
३४	रजनी गंधा	१-३-६९	१	डा० प्रतिभा अग्रवाल	(,, ,, ,, ,,) (प्रगति वाराणसी द्वारा मंचस्थ)	मूल लेखक श्री धनंजय बैरागी (तरुणराय)
३५	अपनी धरती	३-३-६९	१	श्री रेवतीशरण शर्मा	श्री राजाराम शास्त्री उपकुलपति काशी विद्यापीठ	—
३६	निर्मला	२७-१२-६९ २८-१२-६९	२	श्री शिवमूरत सिंह		स्व० मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास 'निर्मला' से रूपांतरित
३७	बाकी इतिहास	४-३-७०	२	—	(प्रगति' वाराणसी द्वारा	

अनु-क्र.	नाटक का नाम	अभिनय की तिथियाँ	मंचीकरण की संख्या	लेखक या अनुवादक का नाम	विशिष्ट अतिथि	विशेष विवरण
		५-३-७०		—	मंचस्थ)	
३८	लवकुश	६-३-७०	१	—	(ललित कला संगम, शिवपुर द्वारा प्रस्तुत)	
३९	अनोखी सूझ	६-३-७०	१	—	(श्री नाट्य के बाल-कलाकारों द्वारा मंचस्थ)	
४०	लंबे हाथ	७-३-७०	१	—	भोजपुरी नाट्यमंच, इलाहाबाद द्वारा मंचस्थ)	
४१	एवम् इंद्रजीत	८-३-७०	१	—	(अनामिका, कलकत्ता द्वारा मंचस्थ)	बादल सरकार के बंगला नाटक का अनुवाद
४२	अकेला शहर	१०-११-७० १५-११-७० १२-२-७१	४	डा० शंभुनाथ सिंह	कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह M. A. D. Lit (मगध विश्वविद्यालय बोध गया)	काशी विद्यापीठ में मंचस्थ
		२२-२-७१		—	—	
४३	प्रेम योगिनी	३-४-७१	१	भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र	पं० सीताराम चतुर्वेदी	डी.एल. डब्ल्यू में मंचस्थ हिंदी रंगमंच दिवस पर दो दृश्य प्रस्तुत
४४	नय की पीढ़ी	७-११-७१	१	श्री शिवमूरत सिंह	” ‘ ”	भोजपुरी

[श्री नाट्यम् के नवम विशेपांक में के १४ वें वार्पिक विवरण से उद्धृत पृ० ९७–९९]

श्री नाट्यम् के कलाकार ('श्री नाट्यम्' वर्ष ४, अंक ४ [१९६५] (पृ० ६६) के अनुसार)

पुरुष कलाकार

१. श्री दयागिरी	२. श्री प्रभातकुमार
३. ,, राम उजागर शर्मा	४. ,, कमलापति
५. ,, प्रकाश मालवीय	६. ,, अनिल कुमार मुखर्जी
७. ,, मंगला प्रसाद भगत	८. ,, रामचंद्र विश्वकर्मा
९. ,, श्यामचरण द्विवेदी	१०. ,, शमशेर बहादुर सिंह
११. ,, जयंतकुमार मिश्र	१२. ,, श्री प्रकाश अग्निहोत्री
१३. ,, जगदीश प्रसाद्र द्विवेदी	१४. ,, रामलखन द्विवेदी
१५. ,, बनारसीदास	१६. ,, प्रेम चतुर्वेदी
१७. ,, शिवेंद्र कुमार	१८. ,, रामनाथ दाँडेकर
१९. ,, सुदर्शन कुमार	२०. ,, वीरेंद्र कुमार
२१. ,, कैलाश नाथ	२२. ,, गोपाल सिंह
२३. ,, अशोक बाबूराव पराड़कर	२४. ,, अजीतकुमार सेन
२५. ,, जगदीश उपाध्याय	२६. ,, हरिश्चंद्र सिन्हा
२७. ,, एस० बी० सिंह	२८. ,, सूर्यभाल उपाध्याय
२९. ,, एम० पी० मेहरा	३०. ,, पूर्णेंदु भट्टाचार्य
३१. ,, बसंतलाल यादव	३२. ,, कृष्ण कुमार सिंह

महिला कलाकार

१. सुश्री लता मिश्रा	२. श्रीमती शकुंतला दाँडेकर
३. ,, रूपरानी	४. सुश्री मधुरिमा
५. ,, लक्ष्मीदेवी पांडेय	६. ,, पिंटूरानी राय चौधरी
७. ,, कनक खन्ना	८. कुमारी मीरा दवे
९. ,, रजतसिंह	१०. सुश्री माधुरी देवी
११. कुमारी नीता चतुर्वेदी	१२. कुमारी वीना चतुर्वेदी
१३. ,, शांती पाठक	१४. श्रीमती बी० के० लक्ष्मी
१५. ,, आर० पी० राय	१६. कुमारी गीता चटर्जी

बाल कलाकार

१. कुमारी कुमुद	२. कुमारी क्षमा पाठक
३. ,, कनक	४. ,, अरुधन्ती दुबे

५. श्री राजकुमार पाठक ६. श्री ललितकुमार शर्मा
७. ,, विजयकुमार शर्मा ८. ,, नारायणचंद्र भट्टाचार्य

२७-१२-१९६९ को मंचित 'निर्मला' का विवरण[१] :—

मूल रचना	:	प्रेमचंद का उपन्यास 'निर्मला'
हिंदी नाट्य-रूपांतरकार	:	शिवमूरत सिंह
निर्देशक	:	प्रभात कुमार घोष
पार्श्व-संगीत	:	भगवानदास मिश्र
		मन्नूलाल शर्मा
		महेश्वरपति त्रिपाठी
रंगमंच व्यवस्था	:	शिवमूरत सिंह
मंच सज्जा	:	रामप्रसाद
विद्युत कौशल	:	निर्मल मिश्र
पार्श्व संकेत	:	अशोक पराड़कर
		जयंतकुमार मिश्र
रूप सज्जा	:	अनिल कांतीलाल
संगीत ध्वनि नियंत्रण	:	कैलाशनाथ
		मणीशंकर नागर

पात्र—योजना

राम उजागर शर्मा	:	मु० तोताराम
अनिलकुमार मुखर्जी	:	उदयभानु लाल
वीरेंद्र सिंह	:	डा० सिनहा
रामचद्र विश्वकर्मा	:	मोटेराम शास्त्री
अशोक पराड़कर	:	नयनसुख
जयंतकुमार मिश्र	:	अलीयार खाँ
महेश्वरपति त्रिपाठी	:	साधु
अरविंद कुमार चतुर्वेदी	:	मंशाराम
किशोरकुमार मिश्र	:	जियाराम
कृष्णमोहन पाठक	:	सियाराम
वनारसीदास	:	पड़ौसी
ताराशंकर मित्र	:	पड़ौसी
ज्वालाप्रसाद	:	नौकर मूलचन्द

१. श्री नाट्यम् पत्रिका वर्ष ७० पृ० ५२ :

कु० कुमुद	:	निर्मला
सुश्री लता मिश्र	:	रुक्मिणी
सुश्री रमा दूबे	:	कल्याणी
कु० रीना	:	सुधा
कु० नीलम	:	कृष्णा
सुश्री मधु	:	मुंशी

६-३-१९७० को 'लवकुश' का मंचन हुआ था जिसका विवरण[१] निम्न प्रकार है—

लेखक		श्री अमृत
निर्देशक	:	महेश्वरपति त्रिपाठी
संगीत	:	विजयशंकर तिवारी
पार्श्वगीत	:	,, ,,
		कु० रीता मिश्र
मंच-सज्जा	:	रामू प्रसाद
विद्युत कौशल	:	निर्मल मिश्र
पार्श्व-संकेत	:	अनिलकुमार शाह
व्यवस्थापक	:	ज्वाला प्रसाद केशरी

पात्र—योजना

महेश्वरपति त्रिपाठी	:	राम
ज्वालाप्रसाद केशरी	:	लक्ष्मण
जयन्तकुमार मिश्र	:	दुर्मुख
गिरीशकुमार	:	वाल्मीकि
सर्वभूषण शाह	:	लव
पुरुषोत्तम कुमार जालान	:	कुश
राजेशकुमार शाह	:	योग नारायण
मुन्नूलाल केशरी	:	सत्यमित्र
मोहनलाल गुप्त	:	विक्रम
विमलकुमार जालान	:	शंभूल
युगलकिशोर सर्राफ	:	विभीषण
राजनाथ सिंह	:	आनंद

१. श्री नाट्यम् पत्रिका वर्ष १९७० पृ० ५७।

सदानंद मिश्र : हनुमान
सुश्री मधु : सीता

जिस दिन 'लवकुश' का मंचन हुआ उसी दिन 'अनोखी सूझ' का मंचन श्री नाट्यम् के बाल कलाकारों द्वारा हुआ। इसमें संकलन एवं निर्देशन राम उजागर शर्मा का था। पात्राभिनय[1] निम्न रूप में था—

दिनेशचंद सिंह : विनोद
राणा तारकेश्वर सिंह : रमेश
आदित्य नारायण मिश्र : हैडमास्टर
शिवशंकर : श्यामलाल वर्मा
बजरंगमोहन गुप्त : गुरु घंटाल
शिवव्रत प्रसाद : छोटे
धीरेंद्र कुमार : पप्पू
मोतीचंद : राधे
मु० सुल्तान : मुन्नू
मु० नईम : नत्थू

प्रगति—

'प्रगति' की स्थापना श्री विजयकुमार अग्रवाल ने सर्वश्री एस० राजदीप एवं वीरेंद्र चंद माहेश्वरी के सहयोग से १३ जनवरी १९६८ को वाराणसी में की। प्रगति द्वारा मंचस्थ नाटकों की सूची निम्न रूप में है[2] :—

क्र० सं०	नाटक	नाटककार	अभिनीत दिनांक
१	शहीदों की बस्ती	प्रेम कश्यप 'सोज'	२,३ नवंबर १९६८
२	दीप जलता ही रहा	विजयकुमार अग्रवाल	१,२ फरवरी १९६९
३	अपनी धरती	रेवतीशरन शर्मा	
४	बाबू	आग्नेय	२ अक्टूबर १९६९
५	बाकी इतिहास		५ मार्च १९७०

'बाकी इतिहास' के प्रस्तुतीकरण का विवरण निम्न रूप में है—

मूल लेखक : बादल सरकार
हिंदी रूपांतर : श्रीमती प्रतिभा अग्रवाल

१. श्री नाट्यम् पत्रिका वर्ष १९७० पृ० ५५।
२. वही : पृ० ५३।

निर्देशक	:	एस० राजदीप
कला एवं प्रकाश निर्देशन	:	विजयकुमार अग्रवाल

पात्र-योजना

अवतार कृष्ण बुदकी	:	शरद
एस० राजदीप	:	सीतानाथ
एम० एच० खान	:	वासू
विजयकुमार अग्रवाल	:	विजय
के० के० मेहरा	:	निखिल
धर्मेंद्रचंद्र माहेश्वरी	:	विधुवाबू
नवीनचंद्र पांडेय	:	बूढ़ा
वी० के० वर्मन	:	आगंतुक
सुश्री प्रतिभा बजाज	:	वासंती
,, रीटा दास	:	कनक

पंचम अध्याय

उत्तर-प्रदेश का रंगमंच—द्वितीय विभाग

(प्रयाग का रंगमंच)

पंचम अध्याय

प्रयाग का रंगमंच

प्रयाग के रंगमंच की चर्चा प्रारंभ करते हुए धीरेंद्रनाथ सिंह ने कहा है[1] कि यह कहना उचित नहीं प्रतीत होता कि 'हिंदी की जितनी नाटक मंडलियों का पता चला है, उनमें प्रयाग की 'हिंदी नाट्य समिति' ही सबसे पुरानी मिली। क्योंकि 'प्रयाग हिंदी नाट्य समिति' के लगभग २८ वर्ष पूर्व प्रयाग में 'आर्य नाट्य सभा' की स्थापना सन् १८७०-७१ ई० में हो चुकी थी जिसने हिंदी के अनेक प्रमुख नाटकों को प्रयाग में अभिमंचित किया था।

रेखांकित वाक्य वास्तव में शिवपूजन सहाय का है जिससे धीरेंद्रनाथ सिंह ने असहमति प्रकट की है। शिवपूजन सहाय के मूल लेख में वाक्य के आरंभ में निम्नांकित शब्द है—'अभी तक मुझे'।[2] शिवपूजन सहायजी का मन्तव्य स्पष्ट है कि लेख लिखते समय तक जितनी नाटक मंडलियों का पता चला है, उनमें 'हिंदी नाट्य समिति' सबसे पुरानी है। चूँकि उन्हें आर्य नाट्य सभा का पता नहीं चला था, इसलिए उसका उल्लेख नहीं है। अतः शिवपूजन सहाय जी के वाक्य शो काटने में कोई तथ्य नहीं है।

आर्य-नाट्य-सभा—

इस नाट्य मंडली की स्थापना तिथि तथा संस्थापकों के संबंध में जानकारी नहीं प्राप्त होती है, पर इस संस्था द्वारा अभिनीत नाटकों का उल्लेख यत्र-तत्र मिला है जिसके आधार पर इसके स्थापना-काल के संबंध में यह ज्ञात होता है कि सन् १८७०-७१ ई० के आस-पास इसकी स्थापना हो चुकी थी। भारतेन्दु युग के प्रमुख नाटककार पं० देवकीनंदन त्रिपाठी के 'भारती हरण' नाटक की भूमिका में लिखा है—'इस समय में विज्ञान दुखी भारतवासियों को ऐसे नाटक दिखलाने की आवश्यकता है कि जिससे इनको अपनी भलाई बुराई का भी ज्ञान हो और जो-जो दुख इनको इस समय प्राप्त है उनके दूर करने को मन चित्त उमड़े। इसी विचार से यहाँ प्रयाग-

---

१. नागरी प्रचारिणी पत्रिका : व० ७३ संवत २०२५ अं० १-४ पृ० ३१

२. प्रयाग की हिंदी-नाट्य-समिति, माधुरी (व० ८, खं० [illegible] संख्या ५ सन १९३० ई०) पृ० ८५३।

राज में 'आर्य-नाट्य-सभा' नाम से एक मंडली बनी थी, उसने अनेक नाटकों का अभिनय किया, उसी मंडली की प्रेरणा से यहाँ प्रयाग में 'नाट्य-पत्र' नामक साहित्यिक पत्र छपने लगा '

संभवत. 'आर्य-नाट्य-सभा' की ओर से लाला श्रीनिवासदास कृत 'रणधीर प्रेम-मोहिनी' का पहली बार प्रयाग में अभिनय किया गया था। लालाजी ने 'रणधीर प्रेम मोहिनी' के द्वितीय सस्करण, सन् १८८० ई० की भूमिका में लिखा था "आर्य नाट्य सभा ने इस नाटक का अभिनय करके मेरा विचार सफल किया। इसलिए मैं आर्य नाट्य सभा को भी अनेक धन्यवाद देता हूँ। आर्य नाट्य सभा का यह अभिनय प्रयाग में छठी दिसंबर (६ दिसंबर १८७१ ई० को हुआ था।"

इस नाटक के अभिनय का विवरण प्रस्तुत करते हुए लाला शालिग्राम वैश्य ने लिखा है—प्रयाग के लोगों ने श्रीमान् लाला श्रीनिवास दास दिल्ली-वासी जो तप्ता सवरण, सयोगिता स्वयंवर, प्रह्लाद नाटक के रचयिता हैं, उन्हीं का रचित 'रणधीर प्रेम मोहिनी' नाटक बड़े आनंद के साथ किया ...... जिस समय रिपुदमन मारा गया और उसके शोक में रणधीर ने भी अपने प्राण दिये, उस समय का प्रेम-मोहिनी का विलाप सुनकर सैकड़ों मनुष्य नेत्रों से अश्रुधारा बहाते थे, और जब प्रेम-मोहिनी ने हाय रणधीर कहकर अपना शरीर छोड़ा, उस समय सब मनुष्य अचानक हाहाकार कर उठे, सब का हृदय विदीर्ण होने लगा।

इस नाट्य सभा ने २६ अगस्त १८७६ ई० को प्रयाग के रेलवे थियेटर के रंगमंच पर पं० शीतल प्रसाद त्रिपाठी कृत 'जानकी मंगल' नाटक तथा 'जयनारसिंह' का अभिनय प्रस्तुत किया था जिसका विवरण 'समय विनोद' नामक पत्र में प्रकाशित हुआ था। 'समय विनोद' ने लिखा था—२६ अगस्त को प्रयाग 'आर्य नाट्य सभा' के मेंबरों ने 'रेलवे थियेटर' में 'जानकी मंगल' नाटक और 'जय नारसिंह' की लीला का अभिनय किया था—अब की बार का अभिनय बहुत ही उत्तम हुआ। नाटक रसिकों की भीड़ भी ५०० मनुष्यों से अधिक हुई थी।.......उसमें जानकी के रूप की सजावट और उसकी सखियों का गान, परशुराम का क्रोध और मालियों का गीत, ये तो अत्यंत उत्कृष्ट हुए।[1]

इन नाटकों के अतिरिक्त पं० देवकीनंदन त्रिपाठी का 'कलियुगी जनेऊ', लाला शालिग्राम वैश्य का 'कामकंदला' नाटक आदि का इस रंगमच

१. समय विनोद पत्रिका : नैनीताल १८ सितम्बर, १८७६ ई०।

से अभिनय किया जा चुका था। नाट्याभिनय के प्राप्त विवरणों से ऐसा ज्ञात होता है कि इस नाट्य मंडली के पास अपना रंगमंच तो नहीं था, पर उसके अभिनय, अन्य रंगमंचों पर अभिनीत किये जाते थे, इनमें 'रेलवे थियेटर' का रंगमंच काफी महत्त्व का था।

रेलवे थियेटर—

यह थियेटर 'आर्य नाट्य सभा' के समकालीन सक्रिय था। इस नाट्य-रंगमंच के संबंध में पूरी जानकारी का अभाव है। पर, ऐसा प्रतीत होता है कि यह रेलवे का सांस्कृतिक रंगमंच था जिस रंगमंच से अन्य सांस्कृतिक कार्यों के अतिरिक्त सामयिक अवसरों पर नाटकों का अभिमंचन भी होता था। इस रंगमंच पर अन्य नाट्य संस्थाएँ भी नाटक खेला करती थीं। इस थियेटर की ओर से अनेक नाटक अभिनीत हुए थे जिनमें से १४ अगस्त १८७५ ई० को 'दुर्गेश नंदिनी' नाटक के अभिनय का विवरण उपलब्ध है। काशी पत्रिका में 'दुर्गेश नंदिनी' के अभिनय के संबंध में लिखा गया था—'१४ वीं अगस्त की रात में रेलवे थियेटर ने 'दुर्गेश नंदिनी' नामक नाटक अभिनय किया। जितने अभिनय अब तक किये गये हैं उन सबसे यह अच्छा हुआ। दुर्ग और कारागार के दृश्य अति प्रशंसनीय थे। राजा वीरेंद्रसिंह का रंगभूमि में बड़ी होशियारी से सिर काटा गया। विद्यादिग्गज, तिलोत्तमा, विमल और रहीम भी अपनी-अपनी बारी पर बहुत अच्छे उतरे, परन्तु हम को बड़ा सोच है कि इन लोगों का बाजा (कंसर्ट) अच्छा नहीं था। इस अभिनय को देखने को बहुत से लोग इकट्ठे हुए थे। रेलवे थियेटर बिलकुल भर गया था।[1]

इसके पश्चात् इस रंगमंच द्वारा किसी अभिनय की सूचना नहीं मिलती। यह रंगमंच सन् १८८८-८९ ई० में बंद हो गया।[2]

श्री रामलीला नाटक मंडली—

श्री रामलीला नाटक मंडली की स्थापना तिथि के बारे में अलग-अलग मत पाये जाते हैं।

डा० विश्वनाथ शर्मा ने 'भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ' नामक पुस्तक में लिखा है 'इस संस्था का सन् १८८९ ई० में उदय

१. काशी पत्रिका भाग १ संख्या ६, ३१ अगस्त १८७५ ई०।

२. उपर्युक्त दोनों थियेटर की सामग्री नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ७३, अं० १-४, संवत् २०२५, पृ० ३१-३२ से उद्धृत है।

होने का उल्लेख मिलता है।[1] यह उल्लेख उन्हें धीरेंद्रनाथ सिंह द्वारा संपादित 'जानकी मंगल' के पृ० ३० पर मिला है। श्री धीरेंद्रनाथ सिंह का कथन इस प्रकार है—

इस नाट्य मंडली के संगठन में शिवपूजन सहाय ने लिखा है—'बात बहुत पुरानी है—लगभग सन् १८८६ ई० के जमाने की। यह इंदरसभा, गुलबकावली और लैला मजनू का युग था। प्रयाग के तीन हिंदी-प्रेमी उत्साही बालकों ने विचार किया कि शुद्ध हिंदी में नाटक खेलना चाहिए।' श्री धीरेंद्रनाथसिंह ने उपर्युक्त वाक्यों को उद्धृत किया है। (शिवपूजन रचनावली। तीसरा खंड, सन् १९५७ पृ० ४०१ से)। किन्तु शिवपूजन सहाय का लेख 'प्रयाग की हिंदी नाट्य समिति' मूल रूप में छपा था 'माधुरी' के वर्ष ८, खड १, संख्या ५ के अंक में। उसमें उपर्युक्त पंक्तियाँ इस रूप में हैं- 'बात पुरानी है—लगभग सन् १८९८ ई० के जमाने की। वह इंदर सभा, गुलबकावली और लैला मजनू का युग था। प्रयाग के तीन हिंदी प्रेमी उत्साही बालकों ने विचार किया कि शुद्ध हिंदी में नाटक खेलना चाहिए।'[2] शिवपूजन जी ने १८९८ ई० लिखा है न कि १८८६ ई०। इसलिए श्रीकृष्ण दास ने लिखा है कि·······के उद्योग से सन् १८९८ ई०में इसका जन्म हुआ।[3] डा० कुंवर चंद्रप्रकाशसिंह ने यह तिथि १८९३ ई० बतलायी है।[4] संभवतः इकाई के स्थान में '३' मुद्रादोष है, वास्तव में वह '८' चाहिए था। क्योंकि उन्होंने भी 'माधुरी' में से पृ० ८५३ का ही हवाला दिया है।

इस 'रामलीला नाटक मंडली' के संस्थापक ये तीन उत्साही बालक थे—पं० माधव शुक्ल, बालकृष्ण भट्ट के द्वितीय सुपुत्र पं० महादेव भट्ट और अलमोड़ा निवासी गोपालदत्त त्रिपाठी। शिवपूजन जी आगे लिखते हैं—खैर निश्चित हुआ कि रामलीला के अवसर पर नाटक अवश्य ही खेला जाय। अभिनय के प्रबंध का कुल भार पं० माधव शुक्ल को सौंपा गया। उन्ही को एक नया नाटक भी लिखकर तैयार करना पड़ा। उन्होंने तुलसी कृत रामायण के आधार पर 'सीता स्वयंवर' नामक नाटक लिख डाला।[5]

---

१. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्यशालाएं पृ० २।
२. शिवपूजन सहाय : प्रयाग की हिंदी नाट्य समिति-माधुरी पृ० ८५३।
३. श्रीकृष्ण दास : हमारी नाट्य परंपरा पृ० ६२५।
४. डा० कुंवर चंद्रप्रकाशसिंह : हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३५२।
५. शिवपूजन सहाय : प्रयाग की हिंदी नाट्य समिति, माधुरी पृ० ८५३।

इन संस्थापक त्रय के सहयोग के लिए कुछ और मित्र जुट गये । उनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं—लक्ष्मीकांत भट्ट (पं०बालकृष्ण भट्ट के सुपुत्र), रमाकांत मालवीय (महामना मालवीय जी के सुपुत्र), कृष्णकांत मालवीय, वेणीप्रसाद गुप्त, देवेन्द्रनाथ बनर्जी । इस संगठित मित्र मंडली का नामकरण हुआ—'श्री रामलीला नाटक मंडली' । शिवपूजन सहाय के अनुसार "रामलीला के साथ-साथ प्रारंभ ही से, शुक्लजी और भट्टजी का यह भी उद्देश्य था कि प्रसंगवश लीला में वर्तमान राजनीति की भी आलोचना की जाय । उन लोगों ने प्रथम अभिनय के एक प्रसंग में ही तत्कालीन राजनीति का थोड़ा पुट रख दिया । यद्यपि आरंभिक अभिनय वड़े उत्साह से सम्पन्न हुआ, तथापि थोड़ा-सा विघ्न पड़ ही गया । उस विघ्न की कथा विचित्र है—

'सीता स्वयंवर' पहला खेल था । पात्रों की उमंग-तरंग अगाध थी । दर्शकों का ठट्ट दर्शनीय था । माननीय मालवीयजी, पूज्य भट्टजी, पं०श्रीकृष्ण जोशी आदि महानुभाव दर्शकों में विराजमान थे । धनुषभंग का प्रकरण था । राजा लोग शिवजी का धनुष उठाने में असमर्थ होकर हताश हो वैठे । इसी प्रसंग पर शुक्ल जी की बनाई हुई एक जोशीली कविता राजा जनक जी के मुख से निकल पड़ी, जिसका आशय कुछ इस तरह का था—

'ब्रिटिश कूटनीति के समान कठोर इस शिव-धनुष को तोड़ना तो दूर रहा, वीर भारतीय युवक इसे टस से मस भी न कर सके, यह अत्यन्त दु:ख का विषय है । हाय !'

फिर क्या, आफत मच गई । मालवीय जी महाराज उन दिनों पूरे माडरेट थे—उठ खड़े हुए । ड्राप गिरवा दिया । भट्ट जी आदि ने उन्हें बहुत समझाया, किंतु वह शांत न हुए । आखिर उस दृश्य को बंद ही कर देना पड़ा । फिर भी अभिनेताओं और मंडली संचालकों का उत्साह कम न हुआ ।

यह रामलीला नाटक मंडली लगभग सन् १९०७ ई० तक कायम रही । यद्यपि मण्डली के तीनों संस्थापकों पर ही सारे कार्य का भार रहता था, तथापि पं० माधव शुक्ल ही मुख्य संचालक थे और हर एक काम में अर्थ से इति तक वह प्रधान भाग लेते थे । पं० महादेव भट्ट के जिम्मे चिट्ठी पत्री आदि लिखने का काम था और पं० गोपालदत्त रिहर्सल के लिए पात्रों को एकत्र कर पार्ट वगैरह बाँटने का काम करते थे । शुक्ल जी को तो मण्डली की हर एक बात में नवीनता लाने की धुन सवार रहती थी । उन्होंने भाषा, भेष, भूषा, भाव आदि में सामयिकता एवं नवीनता का

समावेश करके मंडली की ओर जनता को भली-भाँति आकृष्ट कर लिया। थोड़े ही दिनों में मण्डली की यथेष्ट प्रसिद्धि हो गई।"[1]

इस मंडली द्वारा खेले गये नाटकों में भारतेंदु हरिश्चन्द्र कृत 'सत्य हरिश्चंद्र' उल्लेखनीय है।[2] बालकृष्ण भट्ट के इसके अभिनय संबंधी उद्‌गार द्रष्टव्य हैं—मंडली ने अभिनय बहुत उत्तम किया। हरिश्चंद्र, शैव्या, रोहित नारद, विश्वामित्र, कलि, सबों ने अपना-अपना भाग बहुत अच्छा दरसाया। अभिनय भी इन सबों का सब भाँति निर्दोष था—छोटे से बालक रोहित का अभिनय देख दर्शक बड़े चकित और मुदित हुए।[3] यह नाटक ७ जनवरी को अभिमंचित हुआ।[4]

बालकृष्ण भट्ट ने अपने उपर्युक्त उद्‌गार के प्रारम्भ में यह भी कहा है कि.......तीन रात तक बराबर रामायण का बड़ी सफाई के साथ नाटक के आकार में अभिनय किया जो दर्शकों को बहुत ही रुचा।[5] इसके आधार पर डा० विश्वनाथ शर्मा ने निष्कर्ष निकाला है—इस मतमतांतर की ओर ध्यान देने से अनुमान लगाया जा सकता है कि 'रामायण' और 'सत्य-हरिश्चंद्र' ही आरंभिक नाट्य कृतियाँ हैं।[6] श्री रामलीला नाटक मंडली ने वास्तव में 'सीता स्वयंवर' ही खेला। यह स्पष्ट है कि यह रामायण से संबन्धित है। बालकृष्ण भट्ट जी ने 'रामायण' नाटक नहीं कहा है लेकिन—'रामायण का बड़ी सफाई के साथ नाटक के आकार में' कहा है।

कुछ बात को लेकर मंडली में खटपट हो गई और मालवीय जी के घराने के लड़के अलग हो गये। फिर माधव शुक्लजी ने 'हिंदी नाट्य समिति' के रूप में सन् १९०८ ई० में नया संगठन तैयार कर लिया।

हिंदी नाट्य समिति—

डॉ० कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह ने एक जगह उल्लेख किया है कि प्रयाग में बालकृष्ण भट्ट और मुरलीधर मिश्र जैसे साहित्य सेवियों की प्रेरणा से

१. शिवपूजन सहाय : माधुरी व० ८, खं० १ संख्या ५ पृ० ८५३-८५४।
२. शिवपूजन सहाय : माधुरी, व० ८, खं० १, संख्या ५, पृ० ८५५।
३. बालकृष्ण भट्ट : हिंदी प्रदीप, जनवरी-फरवरी सन् १९०५ ई० (उपर्युक्त उद्धरण डा० कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह कृत 'हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३५३ से लिया गया है।)
४. डा० चंद्रप्रकाश सिंह : हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच मीमांसा।
५. वही पृ० ३५३।
६. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्यशालाएँ पृ० ३।

'नागरी प्रवर्द्धिनी सभा' की स्थापना हुई थी। इसी के अवधान में सन् १६०० ई० के आसपास वहाँ 'हिंदी नाट्य समिति' की स्थापना हुई जिसके मुख्य संचालक माधव शुक्ल थे।[1] इसी पुस्तक में अन्यत्र आपने लिखा है—"किन्तु मालवीय जी के परिवार के नवयुवकों से कुछ मतभेद हो जाने के कारण यह मंडली (अर्थात् श्री रामलीला नाटक मंडली) भंग हो गई फिर भी अप्रतिहत उत्साह संपन्न पं० माधव शुक्ल ने सन् १६०८ ई० में 'हिंदी नाट्य समिति' के नाम से इसका पुनर्गठन किया।'[2] शिवपूजन सहाय ने भी लिखा है कि.........मालवीय जी के घराने के लड़के अलग हो गये। तब शुक्ल जी, भट्टजी आदि ने फिर से नवीन संगठन किया। यह संगठन सन् १६०८ ई० में हुआ और इस संगठित समुदाय का नाम पड़ा—"हिंदी नाट्य समिति"।[3] इसे पं० बालकृष्ण भट्ट का संरक्षण प्राप्त था। नवयुवकों को प्रोत्साहन देने के लिए पंडित जी कभी-कभी सूत्रधार का पार्ट करते थे और कई दफे पं० श्रीकृष्ण जोशी ने भी किया था।[4] इनके अतिरिक्त समिति को प्रधानचंद्र प्रसाद, बा० भोलानाथ, बा० मुद्रिका प्रसाद, पं० लक्ष्मी नारायण नागर और मैत्रेय बाबू का सहयोग मिला। बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन, पं० सत्यानंद जोशी, पं० मुरलीधर मिश्र ('प्रेमधन' जी के ज्येष्ठ पुत्र) इस समिति के सदस्य थे। डा० कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह की सूची में और भी नाम मिलते हैं—रासबिहारी शुक्ल, देवेंद्रनाथ बनर्जी, प्रमथनाथ भट्टाचार्य।[5]

हिंदी नाट्य-समिति के प्रथम अभिनीत नाटक का वर्णन शिवपूजन सहाय के शब्दों में इस प्रकार है—"....... समिति ने भारतेन्दु जी के फुफेरे भाई बाबू राधा कृष्णदास का 'महाराणा प्रताप" नाटक खेलना तय किया। सौभाग्य वश उस समय बाबू राधाकृष्णदास भी जीवित थे। यद्यपि क्षय रोग ग्रस्त होने के कारण वह नितांत अस्वस्थ थे, तथापि अभिनय देखने के लिए, साग्रह निमन्त्रण पर काशी से प्रयाग आये थे। उनके साथ और भी कई हिंदी प्रेमी सज्जन थे। 'हिंदू पंच' प्रवर्तक बाबू रामलाल बर्मन भी उन्हीं के साथ पधारे थे। अपूर्व समारोह था।

---

१. डा० कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह : हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमच की मीमांसा, पृ० ३४३
२. वही : पृ० ३५४।
३. शिव पूजन सहाय : माधुरी व० ८, खंड १, संख्या ५, पृ० ८५४।
४. वही : पृ० ८५५।
५. डा. कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह : हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा, पृ० ३५४।

पं० माधव शुक्ल ने 'महाराणा प्रताप' नाटक में जहाँगीर के पार्ट में अपनी बनाई हुई कुछ नई कविता जोड़ दी थी। उसे बाबू राधाकृष्ण दास ने बहुत पसंद किया और यहाँ तक कहने की उदारता दिखाई कि "पुस्तक यदि छप न गई होती, तो शुक्ल जी के इस नवीन परि-वर्द्धित अंश को मैं अवश्य ही उसमें सधन्यवाद जोड़ देता।[1]

'महाराणा प्रताप' का पात्र-नियोजन निम्न प्रकार था—

माधव शुक्ल	:	महाराणा प्रताप
मिर्जापुर निवासी प्रमथनाथ	:	भामाशाह
बा० देवेंद्रनाथ बनर्जी	:	मालती
पं० लक्ष्मीकांत भट्ट	:	गुलाबसिंह
पं० महादेव भट्ट	:	कविराज

सभी पात्रों का नाट्य-कौशल देखकर दर्शक बड़े प्रसन्न हुए, पर शुक्ल जी और पं० महादेव भट्ट के अभिनय से सहृदय दर्शक विशेष प्रभावित हुए।

'महाराणा प्रताप' के अभिनय के साथ एक प्रहसन भी खेला गया था। उसमें एक मुशायरा हुआ था। मिसरा था—"नहूसत का कौवा उड़ा चाहता है।" उसमें भट्ट भ्राताओं का अभिनय कौशल देखने ही योग्य था। पं० महादेव भट्ट ने तो सचमुच अपनी बगल से "नहूसत का कौवा" उड़ा कर कमाल कर दिया था।[2]

हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के द्वितीय वार्षिकोत्सव पर २४ सितम्बर १९११ ई० को इसी नाटक का मंचन हुआ था। हिंदी साहित्य सम्मेलन के पंचम अधिवेशन के अवसर पर लखनऊ में २७ नवंबर १९१४ ई० को इस समिति ने 'सत्य हरिश्चंद्र' को मंचस्थ किया था। प्रत्यक्ष दर्शी के नाते शिव पूजन सहाय ने लिखा है कि उसमें स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट के ज्येष्ठ सुपुत्र स्व० महादेव भट्ट का किया हुआ 'पाप' का पार्ट और 'चांडाल' की भूमिका धारण करके अपने अत्यंत स्वाभाविक नाट्य कौशल से साहित्यिक वृन्द को मुग्ध करने वाले मुद्रिका प्रसाद नवयुवक का पार्ट इतना सुन्दर हुआ कि आज तक वह दृश्य आँखों के सामने नाच रहा है।[3]

---

१. शिवपूजन सहाय : माधुरी व० ८, खं० १ संख्या ५, पृ० ८५५।
२. वही : पृ० ८५५।
३. शिवपूजन सहाय: शिवपूजन रचनावली तीसरा, खंड पृ० १६६।

सन् १६१५ ई० में प्रयाग में हिंदी साहित्य सम्मेलन का छठा अधिवेशन हुआ। बा० श्याम सुन्दर दास जी अध्यक्ष थे। इस अवसर पर पं० माधव शुक्ल कृत 'महाभारत' (पूर्वार्द्ध),[1] प्रयाग के हार्डिंज थियेटर में खेला गया। कलाकार निम्नलिखित के अनुसार थे—

माधव शुक्ल	:	भीम
महादेव भट्ट	:	धृतराष्ट्र
रासविहारी शुक्ल	:	दुर्योधन
प्रमथनाथ भट्टाचार्य	:	युधिष्ठिर
लक्ष्मीकांत भट्ट	:	शकुनि
बा० पुरुषोत्तमदास नारायण चड्ढा	:	अर्जुन
रामकृष्ण सूरी	:	संजय
वेणी शुक्ल	:	विदुर
देवेंद्रनाथ बनर्जी	:	द्रौपदी

प्रत्यक्षदर्शी के रूप में शिवपूजन सहाय ने इस नाटक के अभिनय का भी सुन्दर विवरण प्रस्तुत किया है। "मैं जोर देकर इतना कह सकता हूँ कि आज तक मैंने किसी हिंदी रंगमंच पर वैसा सफल एवं प्रभावशाली अभिनय नहीं देखा है।"

उक्त अभिनय में शुक्ल जी ने 'भीम का पार्ट' करने में अद्भुत कौशल प्रदर्शित किया था। शुक्ल जी की अभिनय कुशलता देख कर दर्शकों के सामने महा-भारतीय कौरव सभा का वास्तविक चित्र अङ्कित हो गया था। फिर पं० महादेव भट्ट ने तो 'धृतराष्ट्र' के पार्ट में इतनी स्वाभाविकता दिखलाई कि जिन सहृदय साहित्यिकों ने उस सफल अभिनय को देखा है, वे उस अतीत घटना की कल्पना करके आज भी मुक्त कंठ से धन्य-धन्य कह उठेंगे।.......हाँ, उसी अभिनय में पं० रासबिहारी शुक्ल का 'दुर्योधन' का पार्ट भी बड़े कमाल का हुआ था। यदि मैं बलपूर्वक इतना कह सकता हूँ कि पं० माधव शुक्ल जैसा 'भीम' और पं० महादेव भट्ट जैसा 'धृतराष्ट्र' आज तक मैंने किसी हिंदी रंगमंच पर नहीं देखा है, तो मैं यह भी जोर देकर कहना चाहता हूँ कि पं० रासबिहारी शुक्ल जैसा 'दुर्योधन' भी मैंने कहीं

१. "............... प्रायः एक वर्ष या कुछ अधिक समय के अनन्तर गत वर्ष हिंदी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर यह नाव किनारे लगी और महान परिश्रम से लाई गई वस्तु को विद्वान मंडली के सम्मुख रखने में समर्थ हो सका।"

—माधव शुक्ल: महाभारत पूर्वार्द्ध, भूमिका पृ०२ (सन १६१६ ई०) प्रथम संस्करण

नहीं देखा है। तारीफ तो यह है कि उस अभिनय के सभी प्रधान पात्रों का नाट्य सर्वथा दर्शनीय हुआ था। बाबू प्रमथनाथ भट्टाचार्य ने 'युधिष्ठिर' के पार्ट में जो शांतिप्रियता दिखाई वह कुछ कम प्रशंसनीय नहीं थी और 'शकुनि' की भूमिका में पं० लक्ष्मीकांत भट्ट ने भी धूर्तता का सच्चा स्वाँग दिखाकर छोड़ा। पं लक्ष्मीकांत जी वास्तव में बड़े ही सुयोग्य और सुक्ष अभिनेता हैं।[1]

हिंदी नाट्य समिति में माधव शुक्ल वीर एवं करुण रस का वहुत अच्छा अभिनय करते थे और प्रमथनाथ भट्टाचार्य शांत के तथा महादेव भट्ट हास्य रस के सफल अभिनेता थे। रासबिहारी शुक्ल खलनायक के अभिनय के लिए प्रसिद्ध थे तथा देवेंद्रनाथ वनर्जी और मुद्रिका प्रसाद स्त्री-पात्रों का अभिनय वड़ी स्वाभाविकता से करते थे :[2]

हिंदी नाट्य समिति ने 'मुद्राराक्षस' का मंचन किया था जिसमें बालकृष्ण भट्ट ने भी अभिनय किया था। सन् १९१६ ई० में इस समिति ने लोकमान्य तिलक को 'महाराणा प्रताप' का अभिनय दिखाया। नाटक आरंभ हुआ था।—'जय जय श्री तिलक देव भारत हितकारी'—से। अतः समिति को शासन का कोपभाजन होना पड़ा और प० माधव शुक्ल को प्रयाग से हटना पड़ा।[3] सन् १९१६ ई० में माधव शुक्ल कलकत्ता चले गए। कुछ समय के बाद महादेव भट्ट की इहलीला भी समाप्त हो गई। सक्रिय कार्यकर्ताओं के अभाव में यह संस्था धीरे-धीरे निष्क्रिय बनती गई।

नागरी प्रवर्द्धिनी सभा—

पं० वालकृष्ण भट्ट ने इस सभा की स्थापना की थी। यह सभा वर्ष में एकाध बार नाटकों के अभिनय कर लेती थी। दशहरे के अवसर पर यह सभा मालवीय जी के निवास स्थान पर कोई नाटक अवश्य खेलती थी। वसंत पंचमी के अवसर पर पं० गंगानाथजी के निवास स्थान पर संस्कृत, हिंदी, अंगरेजी आदि के नाटकों के अभिनय के लिए वे माधव शुक्ल आदि को बुलाया करते थे। सन् १९१० ई० में प्रेमघनजी का 'प्रयाग रामा गमन' खेला गया था। मालवीय जी ने एक बार शकुंतला का अभिनय किया था।

१. शिवपूजन सहाय : माधुरी व० ८, खंड १ संख्या ५ पृ० ८५५-८५६।
२. डा० कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह : हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३५४-३५५।
३. वही : पृ० ३४३।

पुरुषोत्तमदास टंडन भी अभिनेता के रूप में इस संस्था से संवद्ध थे।[1] (यह विवरण अप्राप्य है कि इसकी स्थापना कब हुई थी और यह सभा कब समाप्त हुई। उपर्युक्त विवरण से लगता है कि माधव शुक्ल की 'हिंदी नाट्य समिति' के यह समकालीन थी।)

हिंदू बोर्डिंग हाउस, इलाहाबाद विश्वविद्यालय—

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के वार्षिक पदवीदान समारंभ के अवसर पर कुछ मनोरंजन कार्यक्रम रखने की प्रथा रही। इसके लिए विश्वविद्यालय के छात्रावास 'हिंदू बोर्डिग हाउस' ने नाटक प्रस्तुत करने का उपक्रम आरंभ किया। यहाँ के छात्र द्विजेंद्रलाल राय के सभी अनुदित नाटक खेल चुके हैं। इसी मंच पर सुमित्रानंदन पंत ने भी स्त्री की भूमिका निभाई थी। विश्व-विद्यालय के मिलिटरी साइंस विभाग के पं० गोविंद तिवारी एम० एस०सी० और अंगरेजी विभाग के केवल कृष्ण मेहरोत्रा एम० ए० बि० लिट् (आक्स-फोर्ड) अपने समय के सफल अभिनेता थे। स्त्री-अभिनय के लिए मेहरोत्रा विशेष लोकप्रिय थे। हिंदू बोर्डिग हाउस के नाटक इतने सफल रहते थे कि जनता भी इन्हें देखने जाया करती थी। द्वितीय महायुद्ध के समय उत्पन्न कुछ कठिनाइयों के कारण इस उपक्रम में बाधा पड़ गई।[2] डा० विश्वनाथ शर्मा ने भी उल्लेख किया है कि डा० रामकुमार वर्मा ने बताया कि इस संस्था (अर्थात् सन् १९२५-२६ ई० के बीच स्थापित इलाहाबाद यूनिवर्सिटी एसोसिएशन) से पूर्व होस्टल्स में अंग्रेजी नाटकों के हिंदी नाट्य अनुवाद खेले जाते थे तथा बंगला नाट्यकार श्री डी० एल० राय के नाटक भी प्रस्तुत होते थे।[3]

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी एसोसिएशन—

डा० रामकुमार वर्मा सन् १९२५-२६ ई० के बीच जब इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्र थे, तब उन्होंने इस संस्था की स्थापना की। इस संस्था ने हिंदी नाटक खेलना प्रारम्भ किया। जब 'मेवाड़पतन' प्रस्तुत हुआ था रामकुमार वर्मा ने दुर्गादास का अभिनय किया था।[4]

---

१. डा० कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह : हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३५७-३५८।
२. डा० सोमनाथ गुप्त : हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास पृ० १६९-१७० के आधार पर।
३. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्यसंस्थाएं एवं नाट्यशालाएं पृ० १३।
४. वही : पृ० १३।

कल्चर सेंटर—

सन् १९३८-३९ ई० में इलाहाबाद सम्पन्न वर्ग ने 'कल्चर सेंटर, नाम से एक संस्था स्थापित की। इस संस्था ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ रंगमंच एवं रूपकाभिनय को भी स्थान दिया। २४-२५ सितम्बर १९५३ ई० को 'कल्चर सेंटर' द्वारा 'विराज बहू' का मंचन व्हीलर मैदान में हुआ।

मूल कृति (उपन्यास) लेखक		शरत् चंद्र चटर्जी
रूपांतरकार	:	नेमिचंद जैन
अनुकूल बनर्जी	:	नीलांबर (नायक)
श्रीमती सादिका सरन	:	नायिका
नित्य चौधरी	:	पीतांबर
विजय बोस	:	साहुकार (तथा निर्देशक)

श्रीमती रेखा जैन, जितेंद्र चटर्जी, सुरेश, बिहारीलाल, श्रीराज जोशी, र्उमिला जैन, ललिता चटर्जी, पंचानन पाठक आदि अन्य रंगकर्मी थे। इस नाटक में सादिका सरन का अभिनय सराहनीय रहा।

३, ४ सितंबर १९५४ को रात्रि के साढे नौ बजे इस संस्था ने 'नीटा' के रंगकर्मियों के सहयोग से 'अनारकली' नाटक को पैलेस थियेटर में प्रस्तुत किया। इसकी टिकट दर थी—७), ५), २)। प्रेमचंद के गोदान का रूपान्तर भी इस मंच ने प्रस्तुत किया था।

श्रीमती तेजी बच्चन, गोपाल कौल भी इस संस्था के महत्व के सहयोगी थे। कुछ ही नाटक खेलकर इस संस्था ने विश्राम ले लिया।[1]

डा० रामकुमार वर्मा की कृतियों का मंचन—

—'१८ जुलाई की शाम'

इस नाटक का सर्व प्रथम अभिनय कायस्थ पाठशाला युनिवर्सिटी कालेज के विद्यार्थियों द्वारा १९ दिसम्बर सन् ३८ ई० में डा० ताराचंद M. A. D. Phil. और लेखक के निर्देशन में हुआ। भूमिका[2] इस प्रकार थी :—

---

१. इस सामग्री का आधार :
   (अ) प्रयाग रंगमंच द्वारा प्रकाशित नाट्य-समारोह-पुस्तिका में समाविष्ट लेख 'प्रयाग का रंगमंचीय आंदोलन'—ले० लक्ष्मीकांत वर्मा।
   (आ) डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ पृ० १३-१४।

२. डा० रामकुमार वर्मा : रेशमी टाई से उद्धृत।

भुवनेश्वर प्रसाद	:	प्रमोद
हरिश्चंद्र	:	उषा
मोहनलाल	:	अशोक
ब्रजभूषण	:	राजेश्वरी
अवधविहारी लाल	:	पोस्टमैन

रूप की बीमारी—डा० रामकुमार वर्मा

इस नाटक का सर्वप्रथम अभिनय इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सर-पी० सी० बैनर्जी हॉस्टल के विद्यार्थियों द्वारा सन् १९४०ई० में श्री एम० डी० ममगेन और श्री एल० एम० थपलियाल के निर्देशन में हुआ। भूमिका[1] इस प्रकार थी:—

जी० सी० जोशी	:	रूपचन्द
जे० एन० स्वामी	:	सोमेश्वर
सी० सी० रस्तोगी	:	डा० दासगुप्त
डी० आर० गुप्त	:	डा० कपूर
पी० एस० राघवन्	:	जगदीश
आइ० बी० सिंह	:	हरभजन

परीक्षा—डा० रामकुमार वर्मा

इस नाटक का सर्वप्रथम अभिनय इलाहाबाद विश्वविद्यालय के म्योर हॉस्टल के विद्यार्थियों द्वारा सन् १९४० ई० में श्री आर० एन० देव के निर्देशन में हुआ। भूमिका[2] इस प्रकार थी—

जी० सी० चतुर्वेदी	:	डा० राजेश्वर रुद्र
एम० एस० दत्त	:	प्रो० केदारनाथ
दयासागर	:	मिसेज रत्ना
एच० सी० वर्मा	:	किशोर
एच० के० सिंह	:	रोशन

पृथ्वी का स्वर्ग—

नवम्बर सन् १९५४ ई० में विश्वविद्यालय ड्रैमैटिक एसोसिएशन के तत्त्वावधान में 'पृथ्वी का स्वर्ग' (विनोद) नाटक प्रस्तुत किया गया। विश्व-

१. डा० रामकुमार वर्मा : रेशमी टाई से उद्धृत :
२. वही :

विद्यालय के कलाकारों के सहयोग से इस नाटक को अभूतपूर्व सफलता मिली।[1]

चारुमित्रा—(एकांकी)—डा० रामकुमार वर्मा

इस नाटक का सर्वप्रथम अभिनय इलाहाबाद युनिवर्सिटी 'विमेन्स' हॉस्टल द्वारा कु० चंद्रावती त्रिपाठी M. A. के निर्देशन में १६ नवम्बर १९४१ ई० को हुआ। भूमिका[2] इस प्रकार थी—

कु० कुमुदिनी गुप्ता	:	अशोक
कु० शकुंतला चतुर्वेदी	:	तिष्य रक्षिता
कु० लवंगलता जोशी B. A.	:	चारुमित्रा
कु० सुरेंद्र मोहिनी सिनहा	:	उपगुप्त
कु० चंद्रकांता कोचर	:	राजुक
कु० सत्या मेहता	:	स्वयंप्रभा
कु० कमल सक्सेना B. A.	:	स्त्री
कु० राजकुमारी कोहली	:	पुष्य

रजनी की रात—डा० रामकुमार वर्मा

इस नाटक का सर्वप्रथम अभिनय इलाहाबाद युनिवर्सिटी डेलीगेसी वीमेन्स एसोसिएशन द्वारा डेलीगेसी के वार्षिक समारोह के अवसर पर कु० शांति सिनहा B. A. और कुमारी मीना आनंद B. A. के निर्देशन में ४ दिसंबर १९४१ को हुआ।

भूमिका[3] इस प्रकार थी:—

कु० सुशील मालवीय	:	रजनी
कु० कुमुदिनी पांडेय	:	मनक
कु० राजरसी शुक्ला	:	आनंद
कु० स्वर्णलता मीत्तल B. A.	:	बूढ़ा आदमी
कु० एम० वेन्सन	:	केसर
कु० कमल शुक्ल	:	मंगल

आदर्श कला मंदिर—

सन् १९४३ ई० में विश्वविद्यालय के कुछ छात्रों ने मिलकर 'आदर्श कला मंदिर' नामक संस्था की स्थापना की। इसके संस्थापकों में रामचंद्र

---

१. डा० रामकुमार वर्मा : रिमझिम (भूमिका से) पृ० १७।
२. डा० रामकुमार वर्मा : चारुमित्रा।
३. वही।

शुक्ल (चित्रकार) अमर वर्मा (सिने निर्देशक) और अमरेश चन्द्र वनर्जी (वकील) थे। उमेश माथुर ने सचिव के रूप में और पं० जगतनारायण शर्मा ने अध्यक्ष के रूप में संस्था की सेवा की।

प्रथम वर्ष संस्था ने लक्ष्मीकांत वर्मा द्वारा लिखित 'भूख' और 'रात की मंजिल' नामक नाटकों का मंचन 'प्रयाग संगीत समिति' के 'हाल' में किया। इस संस्था ने कई नाटक खेले जिनमें निम्नांकित उल्लेखनीय हैं। 'कोणार्क' (जगदीश चन्द्र माथुर), 'छटा वेटा' (उपेंद्रनाथ 'अश्क'),'सिकंदर' (सुदर्शन), 'चंद्रगुप्त', 'दुर्गादास' 'जहाँगीर', 'रक्षा वंधन'।

'देवीशंकर अवस्थी इस संस्था के भी सक्रिय रंगकर्मी थे। इन्होंने 'सिकदर' में पौरुष की, 'चंद्रगुप्त' में चंद्रकेतु' की, 'रक्षा वंधन' में विक्रमसिंह की और 'दुर्गादास' में 'शाहजादा' की भूमिकाएँ निभाई थीं।[1]

इंडियन पीपल्स थियेटर (इप्टा) प्रयाग शाखा—

नेमिचंद्र जैन, ओंकार शरद् आदि के प्रयत्नों से प्रयाग में सन् १९४३ ई० में इप्टा की स्थापना हुई। रेखा जैन, प्रेमधवन, वलराज साहनी का सहयोग इस संस्था को प्राप्त रहा। उपेंद्रनाथ 'अश्क' ने 'तूफान के पहले' नामक नाटक इस संस्था को दिया। स्वयं अश्क जी ने बिलकुल नये अभिनेताओं को लेकर निर्देशन का भी काम किया। अपने सामने लगभग दो महीने तक उन्होंने इसके रिहर्सल कराये और तब प्रसिद्ध अभिनेता वलराज साहनी के सहयोग से यह सफलता से मंचित किया गया।[2] सन् १९४९ ई० में इसने 'जादुई कुर्सी' नाटक प्रस्तुत किया। इस पर प्रतिवंध लगा दिया गया था। सन् १९५० ई० तक यह थियेटर जागृत रहा।[3]

---

१. आदर्श कला मंदिर की सामग्री का आधार:—
   (अ) प्रयाग रंगमंच द्वारा प्रकाशित नाट्य-समारोह-पुस्तिका में समाविष्ट लेख 'प्रयाग का रंगमंचीय आन्दोलन'—लेखक—लक्ष्मीकान्त वर्मा।
   (आ) डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्यशालाएँ पृ० १४।

२. नाटककार अश्क (सं०गोपालकृष्ण कौल पृ० ५१।

३. आदर्श कला मंदिर की सामग्री का आधार:—
   (अ) प्रयाग रंगमंच द्वारा प्रकाशित नाट्य-समारोह—पुस्तिका में समाविष्ट लेख 'प्रयाग का रंगमंचीय आन्दोलन'—लेखक—लक्ष्मीकांत वर्मा।
   (आ) डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्यशालाएँ पृ० १४।

भारतीय नाट्य संघ, प्रयाग—

इसकी स्थापना सन् १९४८ ई० में हुई। यह संस्था 'इंटर नेशनल थियेटर इंस्टीट्यूट, युनेस्को से संबद्ध है। भारत में इसके २३ केंद्र हैं। पालनपुर के नवाव इसके अध्यक्ष हैं और ए० आर० कृष्ण मंत्री हैं।[1]

रंगमंच—

इप्टा ने शासन के प्रतिवंध के कारण सन् १९५० ई० में अपना नाम वदल कर 'रंगमंच' रखा। इसने पैलेस थियेटर में 'राहगीर' खेला। कुछ रवींद्रनाथ टैगोर कृत नाटक भी खेले। रंगकर्मियों के विखरने के कारण यह संस्था वंद हो गई।[2]

नीटा—

North Indian Theatrical Association.

लक्ष्मीकांत वर्मा ने इसका नाम 'नार्दर्न इंडिया थियेटर्स' दिया है।[3] लगभग सन् १९५० ई० के आस-पास उपेंद्रनाथ 'अश्क' और विजय वोस ने इस संस्था की स्थापना की। प्रारंभ में इसके मंच पर उपेंद्रनाथ 'अश्क' के 'पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ', 'मरके वाजों का स्वर्ग', भगवतीचरण वर्मा के 'दो कलाकार', 'सवसे वड़ा आदमी' मंचस्थ हुए। १९ दिसंवर १९५३ को पैलेस थियेटर में मध्याह्न ३ वजे उपेन्द्रनाथ 'अश्क' का 'अलग-अलग रास्ते' खेला गया। इसमें भाग लेने वाले कलाकार थे। राज जोशी, कौशल विहारी, ललिता चटर्जी, के० वी० लाल, मनोज, अव्वास, विजय विंदु अग्रवाल व विजय वोस।[4]

किन्तु गोपाल कृष्ण कौल ने 'अलग-अलग रास्ते' के अभिनय की तिथि १८ दिसंवर १९५३ ई० वतायी है। आप लिखते हैं कि उस समय न केवल अश्क ने निर्देशकों की सहायता की, अन्तिम रिहर्सलें कराईं, वल्कि परदा खींचने से काल वैल (समय से) वजाने तक का काम किया। नाटक ऐसा सफल हुआ कि एक ही महीने में दूसरी वार उसे खेलना पड़ा।[5]

---

१. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्यसंस्थाएँ एवं नाट्यशालाएं पृ० १५।
२. वही : पृ० १६।
३. प्रयाग रंगमंच की समारोह-पत्रिका में लेख।
४ डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्यशालाएं पृ० १६।
५. 'नाटककार अश्क' पृ० ५४-५५।

२६ सितंबर १९५४ ई० को रवींद्रनाथ टैगोर की कृति 'चिर कुमार सभा' का हिंदी रूपांतर पैलेस थियेटर में प्रस्तुत किया गया। इसमें जगदीश, कुंज बिहारीलाल, विजय बोस, आशा पाल, देवी सेठ, ललिता चटर्जी, इंदू अग्रवाल, शनी आनंद आदि कलाकार थे। इसके निर्देशक थे भारत भूषण अग्रवाल और संयोजक सुमित्रानंदन पंत। यह नाटक चार घण्टों तक अभिनीत होता रहा। इसमें आशा पाल का अभिनय अच्छा था। ४ दिसबर १९५७ ई० को भगवतीचरण वर्मा का 'दो कलाकार' और वनफूल कृत 'नया पुराना' प्रस्तुत हुआ।[1]

परिमल का रंगमंच—

सन् १९५२ ई० में 'परिमल' पर्व के अवसर पर एक साहित्यिक रंगमंच की कल्पना की गई। तदनुसार चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' का नाट्य रूपांतर खेला गया। डा० धर्मवीर भारती ने रूपांतर किया था। अभिनेता के रूप में डा० रघुवंश, विजयदेव नारायण साही, डा० धर्मवीर भारती, गोपाल कृष्ण 'गोपेश' ने कार्य किया। यह नाटक प्रयाग विश्वविद्यालय के हाल में खेला गया था।[2]

बालकनजी बारी—

बालकनजी बारी के मंत्री विजय बोस ने १५ अगस्त १९५४ ई० को एलगिन रोड स्थित गर्ल्स हाई स्कूल के सभा भवन में 'वीर दुर्गादास' नाटक प्रस्तुत किया था। बाल कलाकार देवव्रत दीक्षित ने निर्देशन किया था।[3]

भारतीय विद्या भवन—

२६ सितंबर १९५५ ई० को लक्ष्मी टाकीज में तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष यू० एन० ढेबर की अध्यक्षता में विद्या भवन के नाटक-विभाग ने 'विराज बहू' प्रस्तुत किया था। विजय बोस इसके निर्देशक थे। पात्र रचना इस प्रकार है—

विजय बोस : भोलानाथ
श्रीमती सादिक सरन : विराज

---

१. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्य शालाएं पृ० १६-१७।
२. प्रयाग रंगमंच द्वारा प्रकाशित नाट्य-समारोह पत्रिका में समाविष्ट लेख 'प्रयाग का रंगमचीय आंदोलन'— लेखक—लक्ष्मीकांत वर्मा।
३. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्य शालाएं पृ० १७-१८।

अन्य रंगकर्मियों में नीलांवर, कु० ललिता चटर्जी, अनुकूल वनर्जी, नित्या चौधरी, जितेन चटर्जी, राजा ज्युस्सी आदि थे।[1]

रंगशाला—

श्रीमती विमला रैना ने सन् १९५५-५६ ई० में इस संस्था को स्थापित किया। इस संस्था में अधिकतर विमला रैना के नाटक खेले जाते थे। ७, ८ सितंबर १९५६ ई० को 'न्याय' तथा 'खली साहब' खेले जा चुके हैं। इसके वाद 'तीन युग', 'सवेरा', 'खंडहर', 'समस्या', 'रोटी और कलम का फूल', 'अंधेरी राहें' आदि नाटक मंचित हुए थे। सन् १९५७ ई० में 'रंग-शाला' ने 'बहादुर शाह जफ़र' नामक नाटक का अभिनय किया।[2]

इलाहाबाद युनिवर्सिटी डेलीगेसी कल्चरल असोसिएशन—

सन् १९५२ में प्रो० यू० एस० कोचक की अध्यक्षता में इस संस्था की स्थापना हुई। 'खोज', 'उत्सर्ग', 'ताजमहल के आँसू', 'नदी प्यासी थी', 'मौसेरा भाई', 'साँझ सबेरा', 'जन्म कैद' आदि इस संस्था द्वारा मंचित नाटक हैं। बुधवार अप्रैल १९५६ ई० को 'साँझ सबेरा' का मंचन हुआ। इसका विवरण[3] निम्न प्रकार है—

नाटककार	:	डी० पी० सिन्हा
निर्देशक	:	आर० एस० तिवारी
रूपसज्जा	:	जे० आर० सिंह
रूपसज्जा सहायक	:	शिव मंगल
कला	:	सतीश श्रीवास्तव
वेषभूषा	:	आर० एन० सिंह
सम्पत्ति	:	बी० के० मुकर्जी
संगीत और प्रभाव	:	पी० आर० भट्टाचार्य
संगीत सहायक	:	चित्रा सिन्हा

---

१. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थायें एवं नाट्य शालायें पृ० १८।

२. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ पृ० १६-१७।
और प्रयाग रंगमंच द्वारा प्रकाशित नाट्य-समारोह पत्रिका में समाविष्ट लेख 'प्रयाग का रंगमंचीय आंदोलन'—लेखक—लक्ष्मीकांत वर्मा के आधार पर।

३. प्रदर्शन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका के आधार पर।

दृश्य योजना	:	बब्बन
		नैम्फाम
प्रकाश	:	चंद्रा
पार्श्व पाठक	:	विजय
		एन० एस० रावत
डी० पी० सिन्हा	:	निखिल
उना पीटर्स	:	सीमा
बी० मालवीय	:	शीतला प्रसाद
हीरा चड्ढा	:	शोभन
रमाशंकर	:	घनीराम
मास्टर राकेश	:	मुन्ना
रुक्मिणी सेठ	:	माँ
सरनबली श्रीवास्तव	:	मौलाना
पी० नारायण	:	कर्नल
रमेश भटनागर	:	मुरारी
डी० के० जोहरी	:	अंधे बाबा
जय रोपन	:	पंडित जी
शशि श्रीवास्तव	:	प्रेमा चाची
सरोज	:	भाभी
कमलेश मनोचा	:	नीलो
कुसुम	:	माया
सुधीर	:	मुकुल
एस० एम० फेक	:	मुनीम
विजय श्रीवास्तव	:	घसीटे लाल
विनय कृष्ण	:	अजनबी

'रंगवाणी'—

२३ सितंबर १९५५ ई० को प्रयाग में मामा वरेरकर की अध्यक्षता में 'रंगवाणी' का उद्घाटन कराया। महादेवी वर्मा इसकी अध्यक्ष रहीं। सलाहकार समिति में सुमित्रा नंदन पंत, जयशंकर सुन्दरी, शंभु मित्र तथा आद्यरंगाचार्य को रखा। इस संस्था ने अमृतलाल नागर के 'युगावतार' का मंचन किया। इसमें विजय बोस भारतेंदु हरिश्चंद्र बने थे। रवीन्द्र बनर्जी, संचाल जगन्नाथ राव, के० बी० चंद्रा, नलिन कुमार सिन्हा, बालकृष्ण राव,

श्रीमती उमा राव, डा० लक्ष्मीनारायण लाल, वानीराम चौधरी, डा० धर्म-वीर भारती आदि का संबंध 'रंगवाणी' से रहा है। 'युगावतार' के मंचन के वाद संस्था शिथिल हो गई।[१]

इलाहाबाद आर्टिस्ट एसोसिएशन—

इसकी स्थापना अप्रैल १९५५ ई० में इलाहाबाद विश्व विद्यालय के कला विभाग के अध्यक्ष उमाशंकर कोचक की अध्यक्षता में हुई। इस संस्था के संरक्षक सुमित्रानंदन पंत हैं। के० वी० चंद्रा निर्देशक के रूप में काम करते हैं। डा० प्रभात कुमार मंडल और डा० ज्ञानेंद्र नाथ इसके सचिव हैं। सुरेशचंद्र उपरेती नाट्य सचिव के रूप में काम करते हैं। इस संस्था ने नीचे लिखे नाटकों को मंचस्थ किया :—

तिथि	नाटक	नाटककार
१९५५	अंधा कुआँ	डा० लक्ष्मीनारायण लाल
१९५६	सरहद	के० वी० चंद्रा
१९५७	सरहद	के० वी० चंद्रा
१९५८	कोणार्क	जगदीशचंद्र माथुर
१९५८	साँझ सवेरा	
१९५९	रजत रेखा	
१९६०	भँवर	दया प्रकाश सिन्हा
१९६१	नये हाथ	विनोद रस्तोगी
१९६२	अंजोदीदी	उपेंद्रनाथ 'अश्क'
१७,१८-८-६१	चाँदनी	सरनवली श्रीवास्तव
१९६३	काचन रंग	
१९६४	एंटिगनी	सोफोक्लीज
१९६५	बिच्छू	
१९६५	भँवर	दयाप्रकाश सिन्हा
१०-१-१९६६	तीन फरिश्ते	
१९६६	अपने-अपने दाँव	
१९६७	वे तीन	
१९६८	चेरी की वगिया	

---

१. लक्ष्मीकांत वर्मा का लेख 'प्रयाग का रंगमंचीय आंदोलन और डा० विश्वनाथ शर्मा कृत भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ पृ०-२२।

१९६८	पहचाना चेहरा	केशवचंद्र
१९६८	एक और दिन	शांति मेहरोत्रा
१९६९	शुतुर मुर्ग	ज्ञानदेव अग्निहोत्री
१९७०	बाकी इतिहास	बादल सरकार
१९७०	बिच्छू	

विनोद रस्तोगी, जे० पी० वर्मा, वेणुकांत व्यास, यूनी पीटर्स, सुश्री सुनीति ओबेराय, हीरा चड्ढा, सुश्री शशि श्रीवास्तव, डा० सुधीर चंद्र, डा० बालकृष्ण मालवीय, डा० प्रभात मंडल, सरनबली श्रीवास्तव, कपिल देव सांई, मधुर कुमार, सुश्री सुधा सिन्हा, सुश्री शोभा सिन्हा, बृजकिशोर शुक्ल, शिवमंगल प्रसाद, अजय श्रीवास्तव इस संस्था के प्रमुख रंगकर्मी हैं ।[1]

प्रथम अभिनीत नाटक 'अंधा कुँआ' का विवरण[2] निम्न प्रकार है—

यह नाटक ११ नवंबर १९५५ ई० को श्री के० वी० चंद्रा के निर्देशन में स्थानीय लक्ष्मी टाकीज में निम्नलिखित भूमिका से प्रस्तुत किया गया—

ज्वालाप्रसाद वर्मा	:	भगौती
उषा आर्य्या	:	सूका
दयाप्रकाश सिन्हा	:	अलगू
शील बाधवानी	:	राजी
जगदीश भटनागर	:	इन्दर
कांता भारती	:	नंदो
निर्मला पॉल	:	लच्छी
रबिन बनर्जी	:	मिनकू
कैलाशचंद्र सक्सैना	:	हरखू
भारत भूषण रायजादा	:	तेजई
डेनिस	:	मूरत
वी० मालवीय	:	हीरा

---

१. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ पृ० १८, १९, २० ।

२. डा० लक्ष्मीनारायण लाल : अंधा कुँआ प्रथम संस्करण सं० २०१२ वि० से उद्धृत ।

तीन औरतें क्रमशः	:	उषा भटनागर
		माया भटनागर
		लक्ष्मी मेहरोत्रा

शनिवार, २५ अप्रैल १९५९ ई० को फाइन आर्ट्स थियेटर दिल्ली में 'सरहद' का मंचन हुआ जिसका विवरण निम्न प्रकार है—

नाटककार	:	के० वी० चंद्रा
निर्देशक	:	जे० पी० वर्मा
रूप सज्जा	:	जे० आर० सिंह
रूप सज्जा सहायक	:	शिव
वेषभूषा	:	ऋषिराम
दृश्य योजना	:	निजाम और वब्बन
प्रभाव भोजक	:	वद्रुक प्रसाद
पार्श्व पाठक	:	डी० के० विसारिया
प्रकाश योजना	:	दरबारी
वी० के० व्यास	:	सलीमा
देशी सेठ	:	नसीमन
हीरा चड्ढा	:	नूरी
कांति टण्डन	:	कांचन
उर्मिला टण्डन	:	रजिया
सूर्य	:	रूही
रजनी	:	मालू
डी० पी० सिन्हा	:	शराफत
जे० पी० वर्मा	:	पठान
जे० के० भटनागर	:	चौधरी
प्रकाश नारायण	:	मुराद
गया प्रसाद	:	मौलवी
एस० आर० तिवारी	:	पयंदा खान
शिवेंद्र कुमार	:	याकूब खान
विमल विहारी	:	अमजद
एस० एम० फेक	:	फत्तू
कैलाश नारायण	:	यासीन
एस० एस० भटनागर	:	सरदार
इकलाश जौहर	:	जमील

मास्टर चतुर्वेदी : शमशेर
जे० श्रीवास्तव : दूल्हा भाई

सन् १९६५ में अभिनीत 'भँवर' के निर्देशक स्वयं नाटककार दया-प्रकाश सिन्हा के अतिरिक्त डा० सुधीर चन्द्र भी थे। पात्र-योजना इस प्रकार थी।

बालकृष्ण मालवीय : डाक्टर वशिष्ट
कुमार इंदु चौफिन : वशिष्ट की पत्नी पूनम
सरनवली श्रीवास्तव : पागल
कपिल देव : आदित्य

३० जनवरी १९६६ ई० अभिनीत 'तीन फरिश्ते' का निर्देशन डा० सुधीर चन्द्र ने किया था। इस नाटक के प्रस्तुतीकिरण के बारे में दयाप्रकाश सिन्हा की समीक्षा[1] निम्न प्रकार है—

डॉ० सुधीर चंद्र के निर्देशन में नाटक मंच पर बहुत ही सजीव और सबल उतरा। सादे किंतु उपयुक्त मंच-विधान, सुनियोजित प्रकाश-योजना तथा कुशल ध्वनि-प्रभावों के साथ अभिनेताओं के हृदयग्राही अभिनय ने 'तीन फरिश्ते' को इलाहाबाद में पिछले कुछ वर्षों में हुए सर्वश्रेष्ठ नाटकों की कोटि में खड़ा कर दिया। डा० मंडल का दार्शनिक अपराधी करतार और मधुरकुमार का जाल-साज जगन्नाथ बहुत दिनों तक याद रहेंगे। दुर्बल व्यक्तित्व के अनिल के रूप में डा० बालकृष्ण मालवीय ने सबल अभिनय प्रस्तुत किया। संकट पड़ने पर हाथ-पैर छोड़कर भाग्य के सहारे बैठ जाने वाले, सांसारिक, विवेकहीन और उदारमना सत्यदेव का सरनवली का चित्रण भी हृदयग्राही था। उमा सप्रू और इंदु चौफिन माँ-बेटी के रूप में उपयुक्त थीं। नाटक में जो बात खटकती थी, वह है सत्यदेव की पत्नी का उसके संवादों द्वारा अपराधी करतार के प्रति आक्रमण का संकेत। कुल मिलाकर 'तीन फरिश्ते' पिछले वर्षों की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध हुआ।

नाट्य केन्द्र—

नाट्य केंद्र की स्थापना सन् १९५० ई० में सुमित्रानंदन पंत की अध्यक्षता में हुई। डा० धीरेंद्र वर्मा, डा० रामकुमार वर्मा, डा० धर्मवीर भारती डा० जगदीश गुप्ता, डा० रघुवंश, डा० सत्यव्रत सिन्हा, डा० रामस्वरूप चतुर्वेदी, श्री वाचस्पति पाठक, डा० लक्ष्मीनारायण लाल आदि इस संस्था के संस्थापक सदस्य थे।

---

१. दयाप्रकाश सिन्हा : नटरंग व० २ अं० ५ पृ० ९३।

४ नवंबर १९५८ ई० को पैलेस थियेटर में डा० लक्ष्मीनारायण लाल लिखित 'सुन्दर रस' का अभिनय हुआ। इसकी भूमिका में निम्नलिखित रंगकर्मियों ने कार्य किया[१]—

जीवनलाल गुप्त	:	पंडितराज
देशी सेठ	:	देवी माँ
डा० सत्यव्रत सिन्हा	:	भट्टाचार्य
रामचंद्र गुप्त	:	शुकदेव
शिवाजी मिश्र	:	जयनाथ
पुष्पा वर्मा	:	वीना
हृदयनारायण टंडन	:	केदार वकील
राजेश्वर प्रसाद	:	सुमिरन
राजकरन सिंह	:	अध्यापक

डा० लक्ष्मी नारायण लाल ने ही इस अपने नाटक का निर्देशन किया था। इसके अतिरिक्त संस्था ने 'मृच्छकटिकम्'. 'शारदीया' (जगदीशचंद्र माथुर) 'अषाढ़ का एक दिन' (मोहन राकेश), 'ईडली', 'मादा कैक्टस' (डा० लक्ष्मी नारायण लाल) 'रक्तकमल' 'रातरानी (१९६१ ई०), 'अंधेर नगरी' आदि कई नाटकों का मंचन किया।[२]

के० पी० ड्रामेटिक संघ—

२८ नवम्बर १९५७ ई० को डा० रामकुमार वर्मा का 'फीमेल पार्ट' तथा ब्रनफूल का 'नया पुराना' इस संस्था द्वारा मंचित हुए। इनका निर्देशन विजय बोस ने किया था।[३]

थ्री आर्ट्स सेंटर (रंगशिल्पी)—

डा० विश्वनाथ शर्मा के अनुसार पहले इस संस्था का नाम 'रंग-शिल्पी' था, बाद में 'थ्री आर्ट्स सेंटर' रखा गया जब कि डा० अज्ञात के अनुसार सेंटर का हिंदी नाम है 'रंगशिल्पी'।[४] इसकी स्थापना डॉ० पी० वर्मा ने की। 'ढोंग' (रमेश मेहता), 'अंडर सेक्रेटरी', 'किताबों का कफन,' 'ये

१. डा० लक्ष्मीनारायण लाल : सुन्दर रस द्वितीय संस्करण १९६३ से प्राप्त विवरण
२. आधार : उपर्युक्त 'प्रयाग का रगमंचीय आंदोलन' और डा० विश्वनाथ कृत भारतीय हिंदी नाट्यसंस्थाएँ एवं नाट्यशालाएँ पृ० २२।
३. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारतीय हिंदी नाट्यसंस्थाएँ एवं नाट्यशालाएँ पृ० २२।
४. डा० 'अज्ञात' : रंगभारती अगस्त ७३, प्रवेशांक पृ० ११।

जी हुंदाये', 'पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ', 'सरहद,' 'उलझन', 'जमाना,' 'फैसला,' 'उसने कहा था' (नाट्य रूपांतर),' 'एक घूँट,' 'आकाशदीप' (नाट्य रूपांतर), 'लोहसिंह' (भोजपुरी में), 'ज्ञानदेव अग्निहोत्रीकृत' 'नेफा की एक शाम' (१९६५ ई०), 'अपराधी कौन' (१९६६ फरवरी), 'सनोवर के फूल' (नरेश मेहता), 'अंगुलिमाल,' 'धर्मवीर भारती कृत 'सृष्टि का आखिरी आदमी' (१०-३-६८), लक्ष्मीकांत वर्मा का 'तीसरा आदमी' (१०-३-१९६८), दुष्यंतकुमार का 'एक कंठ विषपायी (१९६९), विनोद रस्तोगी कृत 'दैनिक जनतंत्र' आदि नाटकों का मंचन इस संस्था द्वारा हुआ। जे० पी० वर्मा, मुरारीलाल, अवधेशचंद्र, विनोद रस्तोगी आदि इसके रंगकर्मी हैं।

'नेफा की एक शाम' की पात्र योजना निम्न प्रकार थी—

अनिमा भट्टाचार्य : मातई
सतीश अग्रवाल : खेल
एल० किंग्सले : शीकाकाई
रामलाल गुप्त : गोगो
कृष्णस्वरूप दुबे : फौजी
ओमप्रकाश बोहरा : सुहासी
मुरारीलाल : वांगचू

इस नाटक के निर्देशक थे अवधेशचंद्र।

१० मार्च १९६८ ई० को मंचित 'सृष्टि का आखिरी आदमी' का निर्देशन अवधेश चंद्र ने किया था। इस नाटक के प्रस्तुतीकरण में निर्देशक ने काफी सतर्कता से नाटक के कथन को चित्रित करने का प्रयास किया और वे पूर्णरूप से सफल भी हुए। निर्देशन के अनुकूल मंच का सभायोजन एवं उसके प्रतीकात्मक अंगों को विभिन्न मंचीय धरातलों पर स्थापित करके निर्देशक ने उसकी जटिलता को ज्ञेय बना दिया।[२] भूमिका निम्न प्रकार थी—

निमाई बोस : शासक
गोविंद बनर्जी : वैज्ञानिक
जे० पी० वर्मा : उद्घोषक

मुरारीलाल एवं नारसिंह भट्टाचार्य अन्य रंगकर्मी थे। इसमें संगीत निर्देशक थे असित डेनियल्स।

---

१. कल्याण चंद्र : नटरंग खंड २ अं० ७ पृ० ७२।

उसी दिन प्रस्तुत 'तीसरा आदमी' के भी निर्देशक अवधेश चंद्र ही थे। कुमारी श्रीलेखाधर, मनोजकुमार, सुबोध कुमार आदि इस नाटक के रंगकर्मी थे।

सन् १९७० ई० में रंगशिल्पी ने विनोद रस्तोगी का 'दैनिक जनतंत्र' प्रस्तुत किया। कलाकार निम्नरूप में थे—

सुरेंद्र तिवारी	:	कसूर
क्षमा दुबे	:	सुमन
निमाई बोस	:	वर्मा
कृष्णस्वरूप दुबे	:	शर्मा
हिमांशु कुमार	:	वोटर
देवी शंकर अवस्थी	:	चोपड़ा
मुरारीलाल	:	मेहरोत्रा
अवधेशचंद्र	:	गुप्ताजी
कृष्णविहारी	:	पाड़
गोपाल त्रिपाठी	:	रिजवी

अवधेशचंद्र के निर्देशन में प्रस्तुत यह प्रयोग सफल रहा। सुरेंद्र-तिवारी के अतिरिक्त अन्य सभी का अभिनय ठीक रहा।'[1]

२६ और २७ मार्च १९७० ई० को इलाहाबाद के उच्च न्यायालय के मैदान में भारतेंदु कृत 'अंधेर नगरी' का मंचन हुआ।[2] 'अंधेर नगरी' को बंगाल की जाला शैली में प्रस्तुत किया था जिसमें सांकेतिक मंच सज्जा का प्रयोग किया गया था। इसमें वाद्यवृंद विदेशी था, संगीत भी पश्चिमी था। संगीत निर्देशन साधन चटर्जी ने किया था। नाटक के निर्देशक अवधेशचंद्र ही थे।

कृष्णचन्द्र दुबे	:	नट
शांता तिवारी	:	नटी
फँयाद अहमद	:	कुँजड़ा
कल्याणचंद्र	:	कल्लू बनिया, कारीगर, चूने वाला, किश्ती, कसाई, गड़रिये
अवधेशचंद्र	:	चौपट राजा
वशिष्ठ नारायण	:	महामंत्री

१. असित डेनियल्स : नटरंग : खं० ४ अं० १५-१६ पृ० ४२-४३।
२. वही : पृ० ४३-४४।

रामटाल गुप्त	:	महंत
अफजल खाँ	:	प्यादा
देवीशकर अवस्थी	:	चनाजोर गरम वाला
जे० आर० सिह	:	नारायणदास
रघुनाथ चंद्र गौर	:	गोवर्धनदास

इसका मंचन फिर २७, २८ मई, १९७० ई० को हुआ।

सन् १९७० ई० में रंगशिल्पी ने मंच प्रशिक्षण का शिविर आयोजित किया था। उसके अंतर्गत रत्नाकर मतकरी के मराठी नाटक 'शैय्या' का हिंदी अनुवाद तथा गिरिराज किशोर का 'बादशाह-बेगम गुलाम' मंचस्थ हुए। फिर ब्राजील की मादाम मारिया मागाड़ो के पुर्तगाली नाटक 'नीला घोड़ा' का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया किया। ईशान शुक्ल ने वीसेंट की भूमिका निभाई थी। अवधेशचन्द्र मसीहा बने थे। उन्होंने नौकर की भूमिका की थी। पुष्पा आनंद, उर्मिला श्रीवास्तव, प्रमिलासिह, कृष्णस्वरूप दुबे, अनीता डैनियल्स अन्य रंगकर्मी थे। नरेश मेहता के अनुसार मंच संस्थान के लिए इसका मंचन एक उपलब्धि ही मानी जायेगी।[1]

सेतुमंच—

'सेतु मच' की स्थापना सन् १९५९ ई० में हुई। 'चंद्रगुप्त' (जयशंकर प्रसाद), 'अधा-युग' (धर्मवीर भारती), 'सीमांत के बादल', 'संगमरमर पर एक रात', 'नीली झील' आदि नाटक 'सेतु मंच' ने खेले।[2] प्रयाग नाट्य संघ ने अप्रैल १९६५ ई० में नाट्य महोत्सव मनाया। इस अवसर पर सेतु मंच ने 'अपना-अपना जूता' प्रस्तुत किया। इसके लेखक तथा निर्देशक लक्ष्मीकांत वर्मा थे। खुले मच में अभिनीत इस नाटक में दर्शक सम्पूर्ण प्रदर्शन में ऊबता रहा। अभिनेताओं में बाँकेलाल का अभिनय उत्कृष्ट था किंतु शेष कलाकारों के अभिनय को नाटक की अनाटकता ने एक विचित्र सी हास्यास्पद स्थिति में लाकर छोड़ दिया था।[3]

किशलय मंच—

देवीशकर अवस्थी एवं देवदत्त शास्त्री ने मिल कर १४ नवंबर १९५९ ई० को किशलय मंच की स्थापना की। इसकी विशेषता यह है कि

---

१. नरेश मेहता : नटरंग, खंड ४, अंक १५-१६ पृ० ४५-४६।

२. लक्ष्मीकांत वर्मा : प्रयाग का रंगमंचीय आन्दोलन (लेख)।

३. रामचंद गुप्त : 'नटरग' वर्ष १, अंक ३, पृ० ६५।

यह बाल कलाकारों के लिए निर्मित संस्था है। इसके द्वारा मंचित कृतियों का विवरण निम्न प्रकार है—

१८-१२-६०	पाँच एकांकी—जेब खर्च, अच्छा लड़का, माँ, मास्क-प्ले, करवट दम तक, हंस-मयूर	इसमें ५० बालक थे। इसमें उमेश माथुर, आत्मानंद, शकुन्तला सिरोठिया. कु० पुष्पमाला कराले सहयोगी रंगकर्मी थे।
४-१-६१	'राम वन गमन', 'हंस-मयूर', 'अनोखी सूझ', 'किताबों का दमन' (कृष्णचंदर)	निर्देशक — देवीशंकर अवस्थी, महिला विद्या पीठ के मंच पर प्रस्तुत हुआ।
नवंबर १९६१	ताशों का दरबार	प्रमीला, सरला शर्मा, निर्देशक थीं। ७० बालक मंच पर थे।
१५-११-६२	समय चचा	देवीशंकर अवस्थी के निर्देशन में।

इसके बाद वयस्कों की 'रूपक' नामक शाखा तैयार हुई।

५-१०-१९६२	बारह सयाने (मूलः नारायण गंगोपाध्याय, — अनु० जे० आर० सिंह
७-१०-१९६२	— ,,
७-८-९. अक्तू१९६२,	ममता, समानता, पगड़ी, एंटी ड्रामा, इंजेक्शन, सूम के घर धूम, समय चक्र, एक थी राजकुमारी।

इनके अतिरिक्त मरीज हकीम, हम सब बराबर हैं, जवान जिंदाबाद, अच्छा लड़का, चुनाव चला, कंजूस, अनोखी सूझ, समानता, धूल की बेटी, कंभन, भूखी, भूखी प्रेतात्मा, यह धरती हिंदुस्तान की आदि नाटक खेले गये।

देवीशंकर अवस्थी, बली बलराम, आचार्य मोहन मिश्र, यमुनाप्रसाद, विद्याधर कुलश्रेष्ठ 'कुसुम', जितेंद्र, विजय आदि इस संस्था के प्रमुख सहयोगी रहे हैं। किशलय मंच में अब बाल रंगमंच, रूपक, काव्यलोक, सरगम और लोकायन पांच विभाग सम्मिलित हैं।[1]

---

१. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाटक संस्थायें एवं नाट्यशालाएं पृ० २४-२६।

अजन्ता—

इसने १६-१२-१६५६ ई० को 'अधूरी आवाज' (कमलेश्वर) का मंचन किया। ३, ४ मई १६६१ ई० को 'रोटी और कमाल' (गरजा कुमार माथुर) खेला गया।[1]

ड्रामेटिक आर्ट्स क्लब—

सन् १६६० ई० में विपिन टंडन ने ड्रामेटिक आर्ट्स क्लब की स्थापना में महत्व का योगदान दिया। बड़ुआ, पृथ्वी का स्वर्ग, बावा काले शाह, नये हाथ, उसे मालूम था, जाने अनजाने (ओंकार शरद), पाँव लगी मेंहदी (इकबाल सिदीकी), नये हाथ (विनोद रस्तोगी ३१-७-७०) आदि नाटक इस संस्था द्वारा मंचित हुए।

विपिन टंडन, आशा, सुकोष बोस, नीटा टंडन, ए० एन० रिज्वी, वीरेंद्र शर्मा, प्रभा टंडन, एस० एम० फैक, राजकुमारी दत्ता, मीरा रीता, मंजू, सुधा आदि इस संस्था के रंगकर्मी हैं। श्री विपिन टंडन निर्देशक और ओ० डी० राम शर्मा संचालक हैं।[2]

भरत नाट्य संस्थान—[3]

भरत नाट्य संस्थान को सन् १९६० ई० में डा० रामकुमार वर्मा ने स्थापित किया। इस संस्था द्वारा अभिनय सम्बन्धी एक पाठ्य-क्रम भी तैयार किया गया था। १५ सितंबर १६६२ ई० को डा० रामकुमार वर्मा जी का जन्म दिन श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की अध्यक्षता में मनाया जा रहा था। अध्यक्ष जी ने सुझाया कि १५ सितंबर को एकांकी दिवस के रूप में मनाना चाहिए। तब से संस्थान वार्षिक कार्य-क्रम में एकांकियों को प्रस्तुत करता आ रहा है। 'हीरे के झुमके' (१९६२), 'पानीपत की हार' (१९६३), 'मन मस्त हुआ तब क्या बोले' (१९६४), 'चक्कर का चक्कर' (१९६५), 'पृथ्वी का स्वर्ग' (१६६६), 'कलंक रेखा' (१६६७), 'महाभारत में रामायण' (१६६८) नाटकों का मंचन हुआ। सन् १६६६ ई० में कार्य-क्रम

---

१. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थायें एवं नाट्य शालायें पृ० २९।

२. वही : पृ० २६।

३. सामग्री डा० रामकुमार वर्मा के सौजन्य से प्राप्त।

हुआ। उसका विवरण जो प्राप्त है निम्न प्रकार है। नाट्य प्रस्तुतीकरण के वाह्य रंगकर्मी निम्न प्रकार थे :—

मंच व्यवस्था		
		चंद्रभूषण अस्थाना
		रामकृष्ण निर्भय
		अजय भौमिक
		राजेंद्र तिवारी
		देव कुमार मुखर्जी
रूप सज्जा	:	रामकृष्ण 'निर्भय'
वस्त्र सज्जा	:	कु० राजलक्ष्मी वर्मा
		राजेंद्र तिवारी
ध्वनि एवं प्रकाश व्यवस्था	:	सर्व श्री प्रकाश एण्ड को
		राजेंद्र तिवारी
पार्श्व संगीत	:	साधन चटर्जी
उद्घोषक	:	अवधेश अवस्थी, जितेंद्र 'इन्दु'

दिनांक ३० सितंबर १९६९ ई० को डा० रामकुमार वर्मा का नाटक 'सायं' खेला गया।

पात्र-परिचय

अवधेश अवस्थी	:	नाटककार
पूरनचंद्र शुक्ल	:	इतिहासकार
मंजु अस्थाना	:	कस्तूरी
मिथिलेश अस्थाना	:	राम सुमिरनी
सुभाष मिश्र	:	गुंडे—तेजा
देवकुमार मुकर्जी	:	गुलारी
वद्रीप्रसाद चंचल	:	नरेंद्र विद्यार्थी
मनोज कुमार	:	विनोद—विद्यार्थी
सी० भूषण	:	चाचा
अजय भौमिक	:	पार्श्व वक्ता
रुद्रकांत मिश्र	:	,,
सी० भूषण	:	निर्देशक
सी० भूषण	:	मंच सज्जा
रामकृष्ण 'निर्भय'	:	रूप सज्जा

प्रयाग रंगमंच—

प्रयाग रंगमंच की स्थापना ३०-७-१९६१ ई० को हुई हुई। प्रयाग रंगमंच ने कई नाट्य-समारोहों का भी आयोजन किया है। इस संस्था द्वारा अभिनीत नाटक निम्नांकित रूप में हैं :—

रवींद्रनाथ ठाकुर के उपन्यास 'गोरा' का श्री जीवनलाल गुप्त कृत हिंदी नाट्य-रूप	चार प्रदर्शन	७-१०-१९६१ ई० ८-१०-१९६१ ई० २४-११-१९६१ ई० २५-११-१९६१ ई०
श्री पु० ल० देश पाँडे कृत प्रसिद्ध हास यव्यंग्य मराठी नाटक 'तुझे आहे तुजपाशी' का हिंदी नाट्य-रूपांतर 'कस्तूरी मृग'	दो प्रदर्शन	१७-२-१९६२ ई० १२-१०-१९६२ ई०
श्री उपेंद्रनाथ 'अश्क' कृत "कैद"	एक प्रदर्शन	४-१०-१९६२ ई०
श्री कृष्णचंद्र कृत "सराय के बाहर"	एक प्रदर्शन	२१-४-१९६३ ई०
डा० विपिन अग्रवाल कृत 'तीन अपाहिज'	एक प्रदर्शन	२१-४-१९६३ ई०
श्री जीवनलाल गुप्त कृत 'मंच के पीछे'	एक प्रदर्शन	२१-४-१९६३ ई०
श्री बसंत कानेटकर के प्रसिद्ध हास्य व्यग्य नाटक 'प्रेमा तुझा रग कसा' श्री नाना परांजये कृत हिन्दी नाट्य रूपांतर 'प्रेम तेरा रंग कैसा'	दो प्रदर्शन	५-१०-१९६३ ई० १५-१०-१९६४ ई०
श्री मोहन राकेश कृत 'लहरों के राजहस'	एक प्रदर्शन	१५-१२-१९६३ ई०
श्री उपेंद्रनाथ 'अश्क' कृत 'कस्बे के क्रिकेट क्लब का उद्घाटन	एक प्रदर्शन	२५-१०-१९६४ ई०
केशवचद्र वर्मा कृत 'तवेले के सिर	एक प्रदर्शन	२५-१०-१९६४ ई०

डा० विपिन अग्रवाल कृत 'ऊँची-नीची टाँग का जांघिया'	एक प्रदर्शन	२५-१०-१९६४ ई०
श्री टेनेसी विलियम्स के 'दि ग्लास मिनेजरी' का श्री ललित सहगल द्वारा किया गया हिंदी रूपांतर 'काँच के खिलौने'	दो प्रदर्शन	२२-१२-१९६४ ई० २३-१२-१९६४ ई०
श्री विजय तेंडुलकर के मराठी नाटक का वसंत देव कृत हिंदी रूपांतर 'चार दिन'	एक प्रदर्शन	२५-४-१९६५ ई०
भारतेंदु हरिश्चंद्र कृत 'अंधेर नगरी'	एक प्रदर्शन	२६-१२-१९६५ ई०
भुवनेश्वर कृत 'ताँबे के कीड़े'	एक प्रदर्शन	२६-१२-१९६५ ई०
डा० विपिन अग्रवाल कृत 'एक स्थिति'	एक प्रदर्शन	२६-१२-१९६५ ई०

'प्रेम तेरा रंग कैसा' के मंचीकरण का विवरण—

यह नाटक १५-१०-१९६५ ई० को जीवनलाल गुप्त के निर्देशन में प्रदर्शित हुआ। इसके प्रस्तुतीकरण के संबंध में नटराजन का दृष्टिकोण[1] उल्लेखनीय है जो इस प्रकार है—

"जीवनलाल गुप्त का यह पहला अवसर था, पूरे नाटक के निर्देशन का। इस कारण कुछ त्रुटियाँ, विशेष रूप से अभिनेताओं के अंग-संचालन और प्रवेश-प्रस्थान की, रह गईं। ये त्रुटियाँ शायद इस कारण भी थीं कि जीवनलाल गुप्त प्रो० गुप्ते की भूमिका कर रहे थे। यह भूमिका प्रमुख थी और जीवनलाल गुप्त ने अत्यन्त कुशलता के साथ प्रोफेसर गुप्ते की भूमिका निभाई। इस नाट्य प्रस्तुति की सबसे बड़ी उपलब्धि थी एक नई कलाकार वनिता सेठी की खोज। प्रोफेसर गुप्ते की बेटी की भूमिका में पहली बार मंच पर आकर वनिता सेठी ने यह प्रदर्शित कर दिया कि उनमें अभिनय की पूरी क्षमता है और भविष्य में वे एक अच्छी कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित हो सकती हैं। प्रोफेसर गुप्ते के 'न्यूरोटिक' पुत्र के रूप में शान्तिस्वरूप प्रधान के अभिनय ने प्रेक्षकों का रंजन तो अवश्य किया, लेकिन उनके अभिनय में आभिजात्य की कमी बराबर खटकती रही। प्रोफेसर गुप्ते के कंजूस समधी की भूमिका में शांताराम महादाणे, प्रोफेसर गुप्ते के दामाद

१. नटराजन : नटरंग वर्ष १, अं० ४, पृ० १२८।

के रूप में प्रदीपकुमार और प्रोफेसर की पत्नी के रूप में मिथिलेश मेहरा ने अपनी-अपनी भूमिका को सहज रीति से पूरा किया। इस नाटक में श्री प्रधान द्वारा निर्मित दृश्यबंध, हास्य-व्यंग्य नाटक के अनुकूल नहीं था। दृश्य-वंधों पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ कामेडी को नहीं उभारती है।"

२६ दिसंबर १९६५ ई० को जीवनलाल गुप्त के निर्देशन में मंचित 'अंधेर नगरी' (भारतेन्दु हरिश्चंद्र), 'ताँवे के कीड़े' (भुवनेश्वर) तथा 'एक स्थिति' (विपिन अग्रवाल) की जो समीक्षा उपलब्ध हुई है[1] उसे नीचे दिया जा रहा है जिससे उन नाटकों की पात्र-योजना, प्रस्तुति तथा सफलता सम्वन्धी जानकारी भी स्पष्ट हो जाती है:—

भारतेन्दु के 'अंधेर नगरी' को आधुनिक वेशभूषा और सांकेतिक मंच सज्जा के साथ प्रस्तुत किया गया। इस नाटक में मुखौटों का भी प्रयोग किया गया। मुजरिम के रूप में कल्लू वनिया, भिश्ती, गड़रिया आदि का अभिनय एक ही व्यक्ति ने आधुनिक चेहरों के मुखौटे लगाकर किया। चौपट राजा के रूप में जीवनलाल गुप्त ने अर्थहीन सत्ता की अद्‌भुत व्याख्या प्रस्तुत की और इसी के साथ शान्तिस्वरूप प्रधान ने घूसखोर एवं दायित्वहीन मंत्री की भूमिका अत्यंत सफलता के साथ व्यक्त की। 'राम भजो, राम भजो' तथा 'फाँसी हम चढेंगे' को नारों का रूप देकर वर्तमान के सभी विकृत संदर्भों को उभारा गया। चूरन वाले (सूर्यप्रताप) का ट्विस्ट, जाति वाले (मनोहर पुरी) की 'सेलसमैन शिप' और सब्जीवाली (वनिता सेठी) का 'सेल्स गर्ल' का रूप, सन् १८८१ ई० में रचे इस नाटक को और भी उजागर कर गया। चेला गोवर्धन दास के रूप में हरिराम ने जेरी लुई और डेनी के मिश्रित रूप को पकड़ने की कोशिश की। चेला नारायण दास, गुरुजी, कोतवाल, पानवाला तथा फरियादी की भूमिकाएँ रामचंद्र गुप्त, गजानन मित्रे, द्वारकाप्रसाद, रामगोपाल तथा सूर्यप्रताप ने सुन्दर ढंग से प्रस्तुत की।

'तांवे के कीड़े' में भुवनेश्वर ने केवल 'अनाउन्सर' के मंच पर आने की व्यवस्था की है, शेष सभी स्वर के रूप में हैं। निर्देशक जीवनलाल ने प्रकाश-योजना और सांकेतिक समग्रियों का सहारा लेकर रिक्शावाला, थका अफसर, मसरूफ पति परेशान रमणी और निर्मला—इन प्रतीकात्मक चरित्रों को मंच पर प्रस्तुत किया। पागल आया का तथा कुछ अन्य स्वर पृष्ठभूमि में ही थे। 'तांवे के कीड़े' एक नितांत प्रयोगशील और संश्लिष्ट संवेदनाओं का नाटक है जिसमें अस्त व्यस्त समाज की पीड़ा को, अंतर्व्यथा को नाटक

१. नटराजन : नटरंग व० 1 अं० ४ पृ० १२६-१३०।

के रचनाबंध से मुक्त होकर व्यक्त किया गया है। इस अतिप्रयोगशील नाटक को जिस तैयारी के साथ प्रस्तुत किया गया, उसे देखकर समझ पाने वाले और न समझ पाने वाले—दोनों वर्ग के प्रेक्षक स्तंभित रह गये। जीवन लाल गुप्त ने मसरूफ पति की भूमिका अत्यंत कलात्मक ढंग से व्यक्त की। थके अफसर के रूप में मनोहरपुरी, रिक्शा वाले के रूप में शान्तिस्वरूप प्रधान, निर्मला के रूप में ज्योति शुक्ल और 'अनाउंसर' के रूप में सुनीति ओबेराय ने अपने कठिन चरित्रों को सफलतापूर्वक व्यक्त किया। शोभा पंजाबी द्वारा दिया गया पागल आया का स्वर वास्तव में विस्मयकारी था। भूले हुए भुवनेश्वर के इस नाटक की प्रस्तुति के साथ यह बात स्पष्ट रूप से उभरकर आयी कि प्रयोगशील रंगमंच की स्थापना में भुवनेश्वर का हाथ सबसे सबल है।

'एक स्थिति' में माधो के रूप में जीवनलाल गुप्त का और माधो की बहू के रूप में ज्योति शुक्ल का अभिनय अत्यन्त कलात्मक था। अन्य चपरासियों की भूमिका में शांतिस्वरूप प्रधान, रामचंद्र गुप्त, द्वारिकाप्रसाद, सूर्य प्रताप और अशोक सेठ, पंचायत के वातावरण को निर्मित करने में सफल थे। इस नाटक की एक कलात्मक उपलब्धि थी रस्सियों से घर का खाका देकर पूरे नाटक को संप्रेषित कर देना। शांतिस्वरूप प्रधान ने तीनों नाटकों का दृश्यबंध तैयार किया था, किन्तु 'एक स्थिति' का दृश्यबंध वास्तव में अनोखा था।

दि० १ अक्तूबर १९६९ ई० को 'समय-चक्र' का अभिनय हुआ।

पात्र-परिचय—

बद्रीप्रसाद 'चंचल'	:	राजेंद्र
मनोज कुमार	:	विजय
अवधेश अवस्थी	:	समय-चक्र
देवकुमार मुखर्जी	:	भटार्क
सुश्री अंजु अस्थमा	:	चारुमित्रा
सुभाष मिश्र	:	सम्राट अशोक
सुरेश बिहारी लाल	:	चाणक्य
,, ,, ,,	:	निर्देशक
अजय भौमिक ललित कुमार	:	पार्श्व-वक्ता

अन्तिम नाटक डा० रामकुमार वर्मा प्रणीत "महाभारत में रामायण" दिनांक २, अक्तूबर १९६९ को खेला गया।

पात्र—

डा० राजेंद्र मिश्र	महाकवि जयदेव कपूर
कुमारी आरती श्रीवास्तव	श्रीमती रंजना कपूर
पूरन शुक्ल	घोष
सुभाष मिश्र	बद्री
कु० राजलक्ष्मी वर्मा	निर्देशन
मनोज कुमार, अजय भौमिक	पार्श्व वक्ता
ओम वोहरा	प्रकाश संचालन

प्रयाग रंगमंच द्वारा आयोजित नाट्य-समारोह में 'नेशनल स्कूल आफ ड्रामा एंड एशियन थियेटर इंस्टीट्यूट' ने 'कंजूस' को प्रस्तुत किया। मूल नाटक मोलियर कृत 'दि माइजर' के रूपांतरकार थे हजरत आवारा

पात्र—

वीरेंद्र शर्मा	नासिर
प्रमिला सचदेव	आजरा
राजेश शर्मा	फारूक
ओम शिवपुरी	मिर्जा सखावत
के० एम० सोनटक्के	नब्बू
जि० वी० ठकार	दलाल
सुधा शर्मा	फर्जिना
दुलाल रॉय	नाथू
कुमार वर्मा	खैरा
एस० रामानुजम्	डब्बू
रामगोपाल बजाज	अल्फू
उषा साठे	मरियम
वी० एल० चोपरा	हवलदार
मोहन महर्षि	असलम
निर्देशक	ई० अल्काजी

नेपथ्य

रंगमंच व्यवस्था	वी० राममूर्ति
सेट	ई० अल्काजी
निर्माण	टी० एल० शर्मा और दलीपचंद
वेश-सज्जा सहायक	अंजला चिटनीस

संगीत	:	पंचानन पाठक
प्रकाश	:	जी० एन० दास गुप्त
रूप सज्जा	:	इंद्रभूषण घोष

इस नाटक के प्रस्तुतीकरण के बारे में दयाप्रकाश सिन्हा ने कहा है कि[1] इसमें शैली के अनुरूप ही अभिनेताओं का अभिनय अतिरंजना का नमूना था। नाटक की गति, व्यवस्था और व्यावसासिक स्तर की पूर्णता प्रशंसनीय थी। अभिनय में कंजूस की भूमिका में ओम शिवपुरी की व्यक्तिगत सफलता उल्लेखनीय है। उनकी चाल, कंधे का झुकाव, गले की खरखराहट, भावावेगों के साथ परिवर्तित होने वाला स्वर और हृदय में उठने वाली छोटी से छोटी घृणा, क्रोध, संतोष, प्रेम, स्वीकृति आदि की भावना को दर्पण के समान उजागर करने वाली आकृति ने मिल जुलकर एक ऐसे परिचित से चरित्र का निर्माण किया जिससे हम सभी कभी न कभी अवश्य मिले हैं। सुधा शर्मा का अभिनय भी अच्छा था, यद्यपि फरजीना की भूमिका उनकी प्रतिभा के साथ न्याय नहीं कर सकी।

इसी संस्था द्वारा प्रस्तुत 'सुनो जनमेजय'

मूल लेखक	:	श्री रंग (आद्य रंगाचार्य उर्फ प्रो० आर० वी० जहाँगीरदार)
नाट्यानुवाद	:	एन० सी० जैन तथा बी० बी० कारंथ
निर्देशक	:	मोहन महर्षि

पात्र

ओम शिवपुरी	:	सूत्रधार
रामगोपाल बजाज	:	नेता
हरजीत	:	अनुभवी राम
ओ० पी० कोहली	:	युवक
अंजला चिटनीस	:	युवती
सुरिंदर सिद्धू	:	मामूली राम

नेपथ्य

रंगमंच व्यवस्था	:	जे० एन० कौशल
सेट	:	मोहन महर्षि
निर्माण	:	टी० एल० शर्मा और दलीपचंद

१. दयाप्रकाश सिन्हा : नटरंग वर्ष २, अ० ५, पृ० ६४।

वेश सज्जा	:	कोकिला भवानी
संगीत	:	जे० एन० कौशल
प्रकाश	:	बी० राममूर्ति
रूप सज्जा	:	इन्दुभूषण घोष

'कंजूस' के ही समीक्षक के अनुसार 'सुनो जनमेजय' सफल प्रयोग का एक उज्ज्वल उदाहरण है, जिसको निर्देशक ने अपनी कल्पना, कला और रचनात्मक प्रतिभा से एक उच्चकोटि की मंचकृति का रूप दिया। सूत्रधार के द्वारा नाटककार ने आज के अहंवादी एवं स्वयंसिद्ध राजनैतिक नेतृत्व के विरुद्ध जन जीवन में व्याप्त क्रूर आक्रोश को व्यक्त किया। आज का हर व्यक्ति चाहे वह अनुभवी वृद्ध हो, युवक हो, नारी हो या मामूली आदमी. अपनी प्रतिभा और सामर्थ्य के विपरीत गलत नेतृत्व के कारण गलत स्थान पर है। त्रुटिहीन अभिनय ने नाटक में चार चाँद लगा दिये।[1]

इस नाट्य-समारोह में २८-२-१९६६ ई० को प्रयाग रंगमंच ने कुँवर नारायण का लिखा 'खाली जगह' नामक नाटक खेला।

भूमिका

सुनीति ओबेराय	:	अमिता
जीवनलाल गुप्त	:	विजय
वनिता सेठी	:	शेफाली राय
गजानन पित्रे	:	कालिन्स
मनोहर पुरी	:	खोसला
शान्ति स्वरूप प्रधान	:	डंडेकर
हरीराम	:	श्रीवास्तव
सोमनाथ मिश्र	:	सक्सेना
सदाशिव वेहरे	:	टण्डन
रामगोपाल	:	वेरा
निर्देशक	:	डा० सत्यव्रत सिन्हा
मंच	:	शांति स्वरूप प्रधान

प्रयाग रंगमंच ने ११-१२-१९६६ ई० को डा० विपिन अग्रवाल कृत 'आँख रोशनी कोण' और १२-३-१९६७ ई० को डा० शंभुनाथ सिंह कृत 'दीवार की वापसी' नाटक मंचित किया।

---

१. दयाप्रकाश सिन्हा : नटरंग वर्ष २, अं० ५, पृ० ९४।

अभिनीत अन्य नाटक—

मिहौल सेवेस्वियन कृत "छपते छपते", भारतेन्दु कृत 'अंधेर नगरी' नई शैली में' पु० ल० देशपांडे की कृति का हिंदी अनुवाद 'अबकी मोहि उवारो', जगदीशचंद्र माथुर कृत 'पहला राजा',

विजय तेंडुलकर—'पंछी ऐसे आते हैं'

सेम्युअल बेख्त—'गोडो के इन्तजार में'

सन् १९७२ ई० के प्रारंभ में प्रयाग रंगमंच द्वारा विजय तेंडुलकर के मराठी नाटक का हिंदी रूपांतर 'पंछी ऐसे आते हैं' प्रस्तुत किया गया। जीवनलाल गुप्त के निर्देशन में इस नाटक को दो बार प्रस्तुत किया गया।[१] कलाकार निम्न रूप में थे—

जीवनलाल गुप्त	:	अरुण सरनाईक
शान्तिस्वरूप प्रधान	:	अन्नासाहब पराड़कर
शान्तिबेन	:	माँ
शशि शर्मा	:	सरु

इसके बाद सेम्युअल बैख्त कृत 'वेटिंग फॉर गोडो' का हिंदी अनुवाद 'गोडो के इन्तजार' में खेला गया। इसका निर्देशन डा० सत्यव्रत सिन्हा ने किया था। पात्र-योजना नीचे लिखे अनुसार थी—

सत्यव्रत सिन्हा	:	डीडी
पुष्पेंद्रसिंह	:	गोगो
सोमनाथ मिश्र	:	पोजो
गोपाल कृष्ण श्रीवास्तव	:	लकी
अरुण गुलवाडी	:	लड़का

सबका अभिनय सुन्दर था।[२]

त्रिवेणी नाट्य मंच—

त्रिवेणी नाट्य मंच सन् १९६३ ई० से एक सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था के रूप में जनसाधारण की सेवा में रत है। त्रिवेणी नाट्य मंच के द्वारा मंचस्थ नाटक—जमघट, जाल, सपना रहल अधूरा, नय की पीढ़ी, लोहे की दीवार, लोहासिंह, बाबू कुँवर सिंह हैं।

कलेक्टरेट असोसिएशन—

९ जनवरी १९६६ ई० को इस संस्था ने सुरक्षा कोष के लिए शील द्वारा लिखित 'किसान' का मंचन किया। इससे पैंसठ हजार रुपये एकत्रित

१. सत्यप्रकाश मिश्र : नटरंग खं० ५, अं० १८, पृ० ५४।
२. वही : पृ० ५४-५५।

कर तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती सुचेता कृपलानी को दिया गया। इस नाटक का अभिनय नितांत 'शौकिया' प्रयत्न था। सुखिया की भूमिका में सूर्या अवस्थी ने दर्शकों को बहुत प्रभावित किया।[1]

अभिनय—

नरेश मेहता ने इसकी स्थापना की। इस संस्था ने 'खंडित यात्राएँ' (नरेश मेहता) मंचित किया।

इस नाटक का प्रथम प्रदर्शन[2] 'अभिनय' संस्था द्वारा प्रयाग के ओ० टी० एस० हाल में ८ जनवरी १९६१ ई० को आमंत्रित विशिष्ट अभ्यागतों के सम्मुख हुआ था। नाटक की परिचालना श्री नरेश मेहता ने की थी। जे० पी० ग्रुप मंच सहायक के रूप में सहयोगी था। नाटक की भूमिका में थे—

विपिन टंडन	:	सुरेश बाबू
महिमा मेहता	:	नंदिता
विपिन शर्मा	:	महेन
मालती सक्सेना	:	वीना
मनहर पुरी	:	शशांक
जगदीश वाजपेयी	:	श्री वर्मा
कुसुम गौड़	:	श्रीमती वर्मा
के० बी० लाल	:	मेहरा
नरेश मेहता	:	डा० घोषाल
बलवीर भूटानी	:	श्री मुखर्जी
सी० व्हाइट	:	श्रीमती मुखर्जी
सुधा टंडन	:	बुआ माँ
कुल भूषण दुआ	:	भगतराम
अनिल टंडन	:	हरखू

कलादर्पण—

२८-१२-६९ ई० को विनोद रस्तोगी का 'वर्फ की मीनार' 'कलादर्पण' द्वारा प्रस्तुत हुआ।

---

१. दयाप्रकाश सिन्हा : नटरंग व० २, अ० ५, पृ० ९३।

२. नरेश मेहता : खंडित यात्राएँ : सन् १९६२ प्रथम संस्करण, प्रकाशक-यशोधर मोदी, हिंदी ग्रन्थ रत्नाकर बम्बई-४।

संरक्षक	:	डा० रामकुमार वर्मा
अध्यक्ष	:	प्यारेलाल 'आवारा'
सचिव	:	वनवारी लाल
समायोजन सचिव	:	डा० शिशिर रंजन अरोड़ा
निर्देशक	:	कुमार नरेंद्र

मंजुल वर्मा, श्रीमती मधु अरोड़ा, चंद्रमोहन रतन, सुरेंद्र सिंह, गोपाल त्रिपाठी, रवींद्र वर्मा आदि इस संस्था के रंगकर्मी है।[१]

१४-११-१९७१ ई० को 'जरूरत है श्रीमती' का मंचन हुआ। निर्देशक थे सुरेंद्र सिंह। लेखक थे राजकुमार 'अनिल'। कुमारी पूनम नायिका नंदा बनी थी। मलय की भूमिका में सिन्हा थे। पारसनाथ ने गोपाल एवं सेठजी का अभिनय किया।[२]

भोजपुरी नाट्य मंच, इलाहाबाद—

भोजपुरी नाट्यमंच ने 'श्री नाट्यम्' के तत्त्वावधान में ७-३-१९७० ई० को भोलानाथ 'गेहमरी' कृत 'लंबे हाथ' नाटक खेला। 'लंबे हाथ' के रंगकर्मियों का विवरण[३] इस प्रकार है—

निर्देशक	:	ए० एन० रिजवी
अभिनय की भूमिका में—		
मुरारीलाल घुसिया	:	मुन्ने मियाँ
कमरुज्जमा	:	असगर अली
ए० एन० रिजवी	:	रौनक अली
रामजी सिंह	:	पुलिस इंस्पेक्टर
एस० ठाकुर	:	मामा जी
मुद्रिका सिंह	:	चंद्रमा सिंह (नेताजी)
शुभ्रजीत चंद्र	:	लेखक रतन सिंह
एफ० अहमद	:	जहीर
जी० एस० शर्मा	:	पं० दीनानाथ शर्मा
एम० ए० सिद्दिकी	:	रऊफ

१. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्य शालाएं पृ० ३०।

२. असित डेनियल्स : नटरंग खं० ५, अं० १७, पृ० ६९।

३. श्री नाट्यम् पत्रिका वर्ष ७०, पृ० ५९।

एस० पी० पांडेय	:	सेठ जी
देवेंद्र	:	देवेंद्र बाल कलाकार
रानी वार्नर	:	रंजना
श्रीमती वेलफ्रेड	:	रजिया बेगम
कुसुम जुत्सी	:	रुखसाना

कालिदास अकादमी, इलाहाबाद—

१६ नवंबर १६६८ ई० को इस संस्था ने भारतेंदु जयंती का आयोजन भारतेंदु जी के नाटक 'सत्य हरिश्चंद्र' की मंच-प्रस्तुती से किया। उपस्थापन सफल ही रहा, किन्तु सम्पूर्ण उपस्थापन में और विकास की गुंजाइश थी। लक्ष्मीकांत वर्मा तथा अवधेश चंद्र के कुशल निर्देशन ने नाटक को सफलता की सीढ़ी तक पहुँचा दिया। प्रकाश व्यवस्था कलकत्ता के विमल बोस ने बड़ी कुशलता से सम्हाली। किन्तु प्रकाश को लेकर किये गये कुछ प्रयोग अनावश्यक लगे। कुसुम अग्रवाल (नारद), दिनेश मिश्र (रोहिताश्व), रामनरेश त्रिपाठी (ब्राह्मण), कमलेश दत्त त्रिपाठी (हरिश्चंद्र) और सूर्या अवस्थी (शैव्या) का अभिनय सराहनीय रहा।[1]

---

१. हीरा चड्ढा : नटरंग खंड २, अं० ८, पृ० ४८-४६।

षष्ठम अध्याय

उत्तर-प्रदेश का रंगमंच—तृतीय विभाग

(शेष शहरों का रंगमंच)

षष्ठम अध्याय
(अन्य शहरों का रंगमंच)

लखनऊ

शाही नाट्य-दल—

लखनऊ की नाट्य परंपरा काफी पुरानी है। इस परंपरा में उल्लेखनीय कड़ी है नवाव वाजिद अली शाह। वे नाच-गाने के वड़े शौकीन और ललित कलाओं के वहुत वड़े प्रेमी थे। उन्होंने वहुत-सी मधुर कंठवाली औरतों को रखकर नाच-गाने में उन्हें शिक्षित करने के लिए गुरु नियुक्त किये। 'परीखाना' नामक एक महल में उनके रहने तथा शिक्षा एवं अभ्यास करने का प्रवंध किया।

वाजिद अली शाह की जन्म-पत्री देखकर ज्योतिषियों ने यह वताया था कि इनकी कुंडली में जोग का वियोग है। इसलिए इनको पहले से जोगी वना दिया जाय। अतः सावन के महीने में उनके जन्म-दिन पर उनकी माता उनको जोगी वनाती थीं। उनके उत्तराधिकारी नियुक्त होने के वाद 'हुजूर वाग' में जोगी वनने का यह पर्व वड़ी धूमधाम से मनाया जाने लगा। वाजिद अली शाह जोगी वनते और उनकी वेगमें जोगिनें वनती थीं। जोगी छिप जाते, जोगिनें गाना गाकर, नृत्य करतीं और उनको ढूँढ़ती फिरतीं। तरह-तरह की झाँकियाँ प्रस्तुत की जातीं और वारह एक बजे रात तक यह समारोह चलता रहता।

रासलीला के आधार पर वाजिद अली शाह ने खुद 'रहस' तैयार किया। सन् १८४३ ई० में लखनऊ के हुजूरवाग में इस 'रहस' का मंचन हुआ। इस अभिनय में भाग लेने वाले कुछ कलाकार निम्नरूप में थे। सुलतान परी, जिसने राधा का अभिनय किया, लखनऊ की मशहूर नर्तकी दिलवर की छोटी वहन हैदरी थी। माहरुख परी प्रसिद्ध नर्तकी महवूव जान थी, जिसने कन्हैया का अभिनय किया। दिलरुवा परी का असली नाम चुन्नी था। हूर परी अमीरन डोमिनी की लड़की थी, जिसका असली नाम जज्जा था। इसमें वाजिद अली शाह या उनकी वेगमें अभिनय नहीं करती थीं। लोगों ने गलती से रहस और जोगिया मेले को परस्पर मिला दिया है और इसलिए यह गलत वात फैल गई है कि वाजिद अली शाह स्वयं कन्हैया का पार्ट करते थे।

वाजिद अली शाह ने अपने इस पहले नाटक के निर्देशन के साथ सब पात्रों के वस्त्रों और आभूषणों की सूची भी दी है। उन्होंने राधा के लिए लहँगा, मक्खनवालियों के लिए साड़ी निर्धारित की है।

राज्य छिनजाने के बाद जब वाजिद अली शाह मटिया बुर्ज में अंग्रेजों की तनख्वाह पर रहने लगे थे, तब रहस खेलने के लिए उनके यहाँ पाँच मंडलियाँ थीं, जिनमें ८४ स्त्रियाँ नौकर थीं। सिखाने वालों तथा अन्य कार्य करने वालों को मिलाकर कुल संख्या ३६१ थी और उनका संपूर्ण वेतन १२८५६ रुपये मासिक था।

सन् १८५० ई० में जब अंग्रेजों ने उनके काम में रुकावटें डालीं तब वे शासन-कार्य से विमुख हुए। फिर उन्होंने नाच-गाने की ओर ध्यान देना शुरू कर दिया और अपनी एक काव्य-रचना 'दरियाए तअस्सुक' का नाट्य-रूपांतर किया। मंचन की तैयारी प्रारंभ हुई। परियों, शिक्षकों और नौकरों को मिलाकर एक लाख रुपये मासिक खर्च होते थे। इसकी तैयारी में लगभग एक साल लग गया। फिर कैसर बाग और अलग-अलग स्थानों में बीच-बीच में कुछ दिन छोड़कर इसके विभिन्न दृश्यों को चालीस दिनों में खेला गया, जिसको राजघराने के सदस्यों और बड़े-बड़े लोगों ने देखा और बहुत पसंद किया।

इसकी सफलता देखकर वाजिद अली शाह ने अपनी दूसरी काव्य-रचना 'अफसानये इश्क' का नाट्य रूपांतर किया। लगभग एक साल की तैयारी के बाद तीन शहजादियों के ब्याह के अवसर पर उन्होंने 'अफसानये इश्क' का मंचन किया। इस शुभ अवसर पर शाही घराने और दरबारियों के अतिरिक्त जनता के प्रमुख व्यक्तियों ने भी इस प्रकार का नाटक पहले पहल देखा और शाही रहस की धूम सारे लखनऊ में फैल गई। इसके पश्चात् वाजिद अली शाह ने 'बहरे-उल्फत' का नाट्य-रूपांतर किया। इसकी तैयारी के लिए ४०-५० सुंदर नर्तकियों को नौकर रखा जो गाने और नाचने में निपुण थीं। इनके राज्यकाल में इसके बाद और किसी नाटक का पता नहीं लगता।

वाजिद अली शाह के नाटकों में सेट भी लगाये जाते थे। 'अफसानये इश्क' के पाठ-रूपांतरों में दो सेटों का पता चलता है। एक में बाग का दृश्य प्रस्तुत किया गया था और दूसरे में जंगल का। इस सेट में केवल रंगे पर्दे ही न थे, वरन् कागज और मोम के पौधे, फूल और जानवर भी अंकित थे, जिससे जंगल या बाग का पूरा दृश्य सामने आ जाता था। वास्तविकता लाने के लिए आदमियों को भी खाल पहनाकर मंच पर लाया जाता था।

शासन-काल के अंतिम समय में वाजिद अली शाह ने 'कैसर बाग' में एक 'रहस मंजिल' बनवायी थी, जिसमें उनके मनोरंजन के लिए नाटक खेले जाते थे। इससे यह प्रतीत होता है कि वाजिद अली शाह ने नाटक खेलने के लिए एक प्रकार के थियेटर हाल की भी स्थापना सबसे पहले की।[1]

'इन्दर सभा' का मंचन—

लखनऊ में वाजिद अलीशाह के नाटकों की चर्चा साधारण जनता उत्सुकता से करती थी। लेकिन शाही दरबार तक पहुँचकर उन्हें देख नहीं सकते थे, क्योंकि वहाँ केवल राजघराने, दरबारियों और विशेष निमंत्रित लोगों को ही जाने की अनुमति थी।

सन् १८५३ ई० आगा हसन 'अमानत' लखनवी ने 'इंदर सभा' की रचना की। 'इंदर सभा' के मंचन के बारे प्रो० सैयद मसऊद हसन रिज़वी ने 'अमानत' के एक समकालीन शायर सआतखाँ'नासिर' के कथन का आधार लेकर कहा है—

"मालूम होता है कि 'इंदरसभा' पहले पढ़कर सुनाई जाती थी, जिसको सुनकर एक कश्मिरी पंडित और मीर हाफ़िज ने विहारी की मैयत में इसका पहला उत्सव किया। इस उत्सव में कोई औरत पार्ट नहीं करती थी, खूबसूरत लड़के परियाँ बनाये जाते थे। यह नई तरह का जलसा बहुत पसंद किया गया। हजारों आदमी इसको देखने के लिए जमा हो जाते थे। जलसा दिखाने की उजरत १५ रुपये थी।"

'नाटक सागर' के लेखक मुहम्मद उमर और दर इलाही ने जाने कैसे वाजिदअली शाह के नाटकों को जो 'कैसर बाग' के 'रहसखाने' में खेले जाते थे और 'इंदर सभा' जो लखनऊ के विभिन्न मुहल्लों में खेली जाती थी, मिलाकर गड़बड़ कर दिया और यह लिख दिया कि 'इंदर सभा' एक गीति-नाटक (ऑपेरा) है, जिसे वाजिद अली शाह ने 'अमावत' से इसलिए लिखवाया था कि वह फ्रांस के गीत-नाटकों के ढंग पर इसको तैयार करें। उन्होंने यह भी लिखा है कि किसी फ्रांसीसी के निर्देशन में यह नाटक 'कैसर बाग' में खेला गया, जिसमें वाजिद अली शाह ने स्वयं राजा इंदर का अभिनय किया और दूसरे दरबारियों ने दूसरे अभिनय किये। प्रो० सैयद मसऊद हसन रिजवी ने अपने अनुसंधान द्वारा 'नाटक-सागर' की बातों को गलत साबित किया है।

१. समस्त सामग्री श्री मसउज्जमा के 'नवाबी रंगमंच' से प्रस्तुत है। (पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रंथ : सं० देवदत्त शास्त्री) पृ० २७९-२८१।

वास्तव में 'अमानत' का संबंध वाजिद अली शाह के दरबार से नहीं था। यदि बादशाह के आदेश से लिखा गया होता तो पुस्तक की भूमिका में इस बात का उल्लेख रहता। यह बताने के लिए कि 'अमानत' का संबंध दरबार से नहीं था उन्हीं के पुत्र फसाहत के बयान का भी उल्लेख किया जाता है।

"इस सिलसिले में इस बात पर भी नज़र रखना चाहिए कि बीस बरस की उम्र में यानी १२५१ हि० में 'अमानत' की जबान बंद हो गई थी। १२६० हि० में खुल तो गई मगर लुकनत मरने दम तक बाकी रही। वह लुकनत भी इस हद की थी कि उसकी वजह से 'इंदर सभा' की तसनीफ के वक्त तक यानी १२६८ हि० तक वह घर से निकलते न थे। शरह इंदर सभा में वह खुद कहते हैं "कहीं जाता था न आता था। जबान की बावस्तगी से घर में बैठे-बैठे जी घबराता था।" वाजिद अली शाह १२५७ हि० में वली अहद और १२६२ हि० में बादशाह हुए। यह क्योंकर मुमकिन था कि एक गूंगा या इंतहा का हकला आदमी जो कहीं जाने आने के काबिल न हो शाही दरबार में रसूख हासिल कर ले?"

चूँकि इंदर सभा का ढाँचा बहुत कुछ 'रहस' से मिलता जुलता था इसलिए इसे भी 'रहस' ही कहा जाने लगा। 'रहस' का सीधा संबंध बादशाह अवध वाजिद अली शाह से था। इसलिए धीरे-धीरे उसे लोगों ने उनके नाम के संग जोड़ना शुरू कर दिया।

'अमानत' की 'इदर सभा' का लगभग सत्तर-अस्सी वर्षो तक बोलबाला रहा और इस कृति ने रंगमंच पर काफी लोकप्रियता पाई।[1]

विद्यांत नाट्यशाला—

लखनऊ में सन् १८७७ ई० में बंगाली थियेटर 'विद्यांत नाट्यशाला' था। इसमें इसके स्वामी रामगोपाल विद्यांत द्वारा बंगला से अनुदित नाटक 'रामाभिषेक' का अभिनय प्रस्तुत किया गया था।[2]

प्रबोधिनी परिषद्—

गंगाप्रसाद अग्रवाल, श्यामसुंदर कपूरिया के प्रयत्न से सन् १९०२ ई०

---

१. सामग्री का आधार :—

(अ) मसीउज्ज्मा : नवाबी रंगमंच (पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रंथ-सं० देवदत्त शास्त्री) पृ० २८१-२८३।

(आ) श्रीकृष्णदास : हमारी नाट्य परंपरा। पृ० २०५-२०८।

२. डा० भानुदेव शुक्ल : भारतेंदु युगीन हिंदी नाट्य साहित्य पृ० ३१३।

में प्रबोधिनी परिषद् की स्थापना हुई। नाटक खेलने की दृष्टि से अल्प प्रयास हुआ।[1]

हिन्दू यूनियन क्लब—

अमृतलाल नागर के अनुसार 'हिंदू यूनियन क्लब' की स्थापना सन् १९०८ ई० में हुई।[2] डा० विश्वनाथशर्मा ने इस संस्था की अवधि '१९०९-१९२१' बताई है।[3] आप आगे लिखते हैं कि श्री कालिदास कपूर के अनुसार इस क्लब की स्थापना 'स्वस्थ मनोरंजन' हेतु हुई। इसके पीछे पं० माधव शुक्ल की प्रेरणा बलवती थी। उस समय प्रमुख अभिनेता गण गोपाल लाल और राजाराम नागर (भारत प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री अमृतलाल नागर के पिता श्री) थे। इस संस्था ने सन् १९१२ ई० में अपना प्रथम वार्षिकोत्सव मनाया। सन् १९१३ ई० में 'रामचरित मानस' से उद्धृत 'राम-लक्ष्मण संवाद' को अभिनीत किया। इस क्लब के अन्य रंगकर्मी सर्वश्री माधव शुक्ल, पं० शिवराम, पं० ज्वालाप्रसाद कर्पूरिया, मास्टर काशीनाथ, पं० माधवप्रसाद, गोपाललाल पुरी, राजाराम नागर तथा कालिदास कपूर थे। शरद नागर ने बब्बी दलाल का भी उल्लेख किया है।[4] उन्हीं दिनों पं० माधव शुक्ल कृत 'पूर्व महाभारत' तथा पुरोहित ज्वालाप्रसाद कर्पूरिया कृत 'राजसिंह' नाटक खेले गये।[5] सन् १९१३ ई० में अभिनीत 'पूर्व महाभारत' में पं० राजाराम नागर ने अर्जुन का अभिनय किया था।[6] अमृतलाल नागर के अनुसार पं० माधव शुक्ल के निर्देशन में पहली बार 'राणा प्रताप' (राधाकृष्णदास कृत) नाटक खेला गया। राजाराम नागर ने राणा प्रताप का और गोपाललाल पुरी ने भामाशाह का सुन्दर अभिनय किया।[7] शरद नागर के अनुसार सन् १९१४ ई० में यह मंचस्थ

---

१. अमृतलाल नागर : हिंदी का शौकिया रंगमंच (पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रंथ : सं० देवदत्त शास्त्री) पृ० ३०७।

२. अमृतलाल नागर : कल्पना, सितम्बर-अक्टूबर १९६२, पृ० ४३।

३. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ पृ० ४२।

४. शरद नागर : नटरंग. वर्ष ३ अंक ९, पृ० ६३।

५. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ पृ० ४२।

६. शरद नागर : नटरंग, वर्ष ३, अंक ९, पृ० ६३।

७. अमृतलाल नागर : कल्पना, सितंबर-अक्तूबर १९६२, पृ० ४३।

हुआ ।[1] सन् १९१४ ई० में ही हिंदी साहित्य सम्मेलन के पाँचवें अधिवेशन (जो लखनऊ के कालीचरण स्कूल में हुआ था) में पं० माधव शुक्ल ने 'सत्य हरिश्चंद्र' में हरिश्चंद्र की भूमिका की थी। 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक सन् १९१५ ई० में भी इस क्लब की ओर से वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में खेला जिसमें राजाराम नागर हरिश्चंद्र बने और गोपाललाल पुरी विश्वामित्र। निर्देशन माधव शुक्ल का था। इस क्लब के अभिनेता शेक्सपियर के भी नाटक खेलते थे। सन् १९१५ ई० में ही शेक्सपियर के 'मर्चेंट आफ वेनिस' के कुछ दृश्य मंचस्थ हुए। शायलाक का अभिनय पं० राजाराम नागर ने तथा एंटोनियो का अभिनय शिवनाथसिंह ने किया।[2] सन् १९१६ ई० में 'जूलियस सीजर' के दो दृश्य प्रस्तुत हुए। कालिदास कपूर कैसियस बने थे। इसी वर्ष पुनः राधाकृष्णदास कृत 'राणा प्रताप' खेला गया। (डा० विश्वनाथ शर्मा के अनुसार सन् १९१७ ई० में खेला गया।) बाबू श्याम-सुंदरदास भी इस संस्था से संबंधित थे। बाबू श्यामसुंदरदासजी ने सन् १९१९ ई० में द्विजेंद्रलाल राय का 'मेवाड़-पतन' इस सस्था की ओर से अभिनीत करवाया जिसमें राजाराम नागर ने (शरद नागर के अनुसार गोपाललाल पुरी ने) अमरसिंह का, चंद्रधर शर्मा गुलेरी के भतीजे राजगुरु रमाशंकर गुलेरी ने गोविंद सिंह का अभिनय किया था। सन् १९२१ ई० में इस क्लब ने माधव प्रसाद कृत 'बनवीर' का मंचन किया जो इस क्लब का अंतिम नाटक था।[3] पात्र योजना[4] निम्न रूप में थी—

राजाराम नागर	:	विक्रम
रमाशंकर गुलेरी	:	गोविंदसिंह
बब्बी दलाल	:	बनवीर
गोपाललाल पुरी	:	अजयसिंह
योगेंद्रनाथ शर्मा 'मधुप'	:	सगरसिंह
मुनुआजी वैद्य	:	चारणी
बल्देव जैतली	:	जहाँगीर
चंद्रशेखर पंड्या	:	सिपहसालार

१. शरद नागर : नटरंग, वर्ष ३, अंक ९, पृ० ६३।
२. वही : पृ० ६४।
३. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ पृ० ४३।
४. शरद नागर : नटरंग, वर्ष ३, अंक ९, पृ० ६४।

डाक्टर मोहन : मानसी
बिश्शे बाबू : कल्याणी

अमृतलाल नागर ने इस क्लब के अन्य कलाकारों में बब्बी दलाल, विश्वनाथ वर्मा, डा० मोहन, चंद्रशेखर पंड्या, बलदेवप्रसाद जैतली. योगेंद्र-नाथ शर्मा और मुनुआजी के नाम भी गिनाये हैं।[1]

सन् १९२१ ई० के बाद हिंदू यूनियन क्लब के संस्थापक-सदस्यों के बिखर जाने से संस्था समाप्त हो गई।

हिन्दी नाट्य समिति—

सन् १९१५ ई० के आसपास गोपाललाल खत्री और उनके मित्रों के प्रोत्साहन एवं पं० माधव शुक्ल के प्रयत्नों से ही हिंदी नाट्य समिति की स्थापना हुई। समिति का कार्यालय चौक में बानवाली गली में था।[2]

इंडियन हीरोज एसोसिएशन—

सन् १९३०-४० ई० के बीच यह संस्था सक्रिय रही।[3] इस संस्था ने गोलागंज थियेटर में कई नाटक खेले। बाबू मुरारीलाल एडवोकेट इस एसोसिएशन के प्राण थे।[4]

यंगमैन्स म्यूजिकल सोसाइटी—

Youngmen's Musical Society—

इस संस्था की स्थापना सन् १९२५ ई० में हुई।[5] शरद नागर का कथन है कि इस संस्था की रंगमंचीय हलचलें इस शताब्दी के तीसरे दशक से आरम्भ होती दिखती हैं। इस संस्था की स्थापना संभवतः पेशेवर पारसी नाटक मंडलियों की अभूतपूर्व सफलता को देखकर ही हुई थी।[6] इस संस्था के संचालक और संगठन कर्ता बाबू तुलसीराम वैश्य थे और निर्देशक बाबू जोगेंद्र प्रसाद सक्सेना थे।[7]

---

१. अमृतलाल नागर : कल्पना. सितबर-अक्टूबर १९६२, पृ० ४३।
२. शरद नागर : नटरंग, वर्ष ३, अंक ९, पृ० ६४।
३. वही : पृ० ६५।
४. अमृतलाल नागर : कल्पना, सितंबर-अक्टूबर १९६२ पृ० ४३।
५. वही।
६. शरद नागर : नटरंग, वर्ष ३, अंक ९, पृ० ६४।
७. वही : पृ० ६५।

सन् १९२५ ई० में संस्था द्वारा 'चंद्रगुप्त' का मंचन हुआ। सन् १९३२ ई० में 'बिल्वमंगल' को मंचस्थ किया। इस नाटक के प्रदर्शन के बाद संस्था का कार्यालय बाबू तुलसीराम जी वैश्य के माडल हाउस स्थित मकान से उठकर नजीराबाद में किराये के कमरे में आ गया और बाकायदा दफ्तर कायम किया गया। रायसाहब रामप्रसाद एडवोकेट और चौधरी सदानंद एडवोकेट इसके कर्ता-धर्ता थे। जनाब अली कादर उर्फ बब्बन साहब संस्था के स्थायी संगीत निर्देशक थे। सोसाइटी के नाटकों के पूर्वाभ्यास में नौशाद साहब पैंतीस रुपये मासिक वेतन पर बाजा बजाते थे।[1]

रायसाहब रामप्रसाद वर्मा, चौधरी सच्चिदानंद वर्मा, जोगेश प्रसाद सक्सेना, उमेश प्रसाद सक्सेना, अवतार कृष्ण गुंजूर, तुलसीराम वैश्य, कृष्णकुमार श्रीवास्तव उर्फ मन्नी बाबू, राधे बिहारी लाल, बी० एन० सिनहा, प्रयाग नारायण श्रीवास्तव, कृष्णलाल दुआ इस सोसाइटी के रंग-कर्मी थे।[2] शरद नागर ने सक्रिय सदस्यों में नंदन साहब का भी नाम गिनाया है।[3]

बाबू तुलसीराम वैश्य खलनायक की भूमिका में सिद्धहस्त थे। अव-तार कृष्ण गुंजूर खलनायक की भी भूमिका निभाते थे और वे चरित्राभिनय में भी चतुर थे। बिल्वमंगल' में मंगल के पिता रामदास की भूमिका का उन्होंने बहुत सुन्दर अभिनय किया था। इसी नाटक में बाबू जोगेश प्रसाद का अभिनय भी बहुत सराहा गया था। इस संस्था द्वारा अभिनीत नाटक थे, आगा 'हश्र' कश्मीरी के 'सैदे हवस' और 'असीरे हिर्स', जिनेश्वर प्रसाद 'मायल' का 'तेगे-तिलिस्म'।[4] अमृतलाल नागर ने 'यहूदी की लड़की' का भी उल्लेख किया है।[5] इस संस्था का अंतिम नाटक था 'गौतम बुद्ध'। शरद नागर ने एक जगह लिखा है कि यह संस्था सन् १९३५-३६ ई० तक सक्रिय रही[6] और अन्यत्र उल्लेख किया है कि सन् १९३३ ई० के लगभग इस संस्था का विघटन हुआ।[7]

---

१. शरद नागर : नटरंग, वर्ष ३, अंक ९, पृ० ६४।
२. अमृतलाल नागर : कल्पना, सितंबर-अक्टूबर १९६२, पृ० ४३।
३. शरद नागर : नटरंग, वर्ष ३, अंक ९, पृ० ६५।
४. वही।
५. अमृतलाल नागर : कल्पना, सितंबर-अक्टूबर १९६२।
६. शरद नागर : नटरंग वर्ष ३, अंक ९, पृ० ६५।
७. शरद नागर : नटरंग वर्ष १, अंक ३, पृ० ६२।

इंडियन रेलवे इंस्टीट्यूट[1] क्लब–

Indian Railway Institute Club.

यंगमेन्स म्यूजिकल सोसाइटी जब जिनेश्वर प्रसाद 'मायल' का नाटक 'तेगे-तिलस्म' की तैयारी कर रही थी तब संस्था के सदस्यों में मतभेद हो गया। जो सदस्य रेलवे में कर्मचारी थे उन्होंने अलग होकर इंडियन रेलवे इंस्टीट्यूट क्लब की स्थापना कर ली। कालांतर में इस क्लब ने अपने प्रेक्षागृह "रेलवे इंस्टीट्यूट हाल" का निर्माण भी कर लिया।

इस संस्था ने 'जहरी साँप' का मंचन उत्तर रेलवे के हजरत गंज स्थित कार्यालय के हाल में किया। फिर 'बिल्वमंगल' का प्रदर्शन हुआ। इन नाटकों के अतिरिक्त आगा हश्र के नाटक 'खूबसूरत बला' और 'सिल्वर किंग' का मंचन किया गया। उपर्युक्त हाल के उद्घाटन के अवसर पर जिनेश्वर प्रसाद 'मायल' कृत 'चंद्रगुप्त' और आगा हश्र का 'खूबसूरत बला' मंचस्थ हुए थे। 'यहूदी की लड़की' भी सफलता पूर्वक इस संस्था द्वारा खेला गया। कैसर मिर्जा, प्यारे नवाब, हसन अब्बास तारा इस संस्था के रंगकर्मी थे।

लक्ष्मी क्लब—

लक्ष्मी क्लब के संस्थापक थे महावीर प्रसाद अग्रवाल। इन्होंने लगभग बीस वर्षों तक यह नाट्य संस्था चलाई। इनके गुरु थे श्री ताजउद्दीन 'जख्मी'। इस क्लब का अंतिम नाटक था 'काशी विश्वनाथ'। इसे खेलते समय महावीर प्रसाद अग्रवाल को रंगमंच पर ही गहरी चोट लग गई जिसके फलस्वरूप वे बीमार हो गये और सदा के लिए इस दुनिया के रंगमंच से भी बिछुड़ गये।[2]

राष्ट्रीय नाट्य परिषद्—

इसकी स्थापना सन् १९४६ ई० में हुई थी। कुँवर कल्याण सिंह के निर्देशन में उनके तथा अन्य लेखकों के प्रायः सौ नाटक खेले गये जिनमें प्रमुख हैं—क० मा० मुंशी कृत 'शंबर कन्या', डा० कंचनलता सब्बरवाल कृत 'भीगी पलकें', 'आँधी और तूफान', 'हमारा देश', कुँवर कल्याणसिंह कृत 'बंदी', 'गद्दार', 'शिवाजी', 'कलिंग विजय की एक शाम', शिव सिंह

---

१. शरद नागर : नटरंग, वर्ष ३, अंक ९, पृ० ६५।

२. अमृतलाल नागर : कल्पना, सितंबर-अक्तूबर १९६२ ई०।

सरोज कृत 'लवकुश', विनोद रस्तोगी का लिखा, 'वरफ की मीनार', ललित सहगल का 'हत्या एक आकार की'।[1] २२, २३ नवंबर १९६५ ई० को कंचनलता सव्वरवाल द्वारा लिखित 'माँ की लाज' का मंचन हुआ। कुँवर कल्याणसिंह इस नाटक के निर्देशक थे।

'नशे की वात' का मंचन—

यशपाल द्वारा लिखित 'नशे की वात' का मंचन ३१ अप्रैल १९५१ ई० की संध्या को लखनऊ के 'छतर मंजिल हाल' में हुआ था।[2]

भारतीय जन-नाट्य-संघ (इप्टा)—[3]

भारतीय जन-नाट्य-संघ ने सन् १९५३ ई० में मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' का वेगम रजिया जहीर कृत नाट्यरूपांतर रिफाह-ए-आम क्लब के भवन में प्रस्तुत किया। इसके निर्देशक थे अमृतलाल नागर। ठीक नाट्य प्रदर्शन के समय सरकारी कर्मचारियों ने १८७६ के ड्रैमेटिक परफोर्मेन्स एक्ट के अन्तर्गत नाट्य प्रदर्शन स्थगित करने का आदेश दिया, लेकिन आयोजकों ने अधिकारियों के हस्तक्षेप की परवाह न करते हुए नाटक का प्रदर्शन किया। नाट्य प्रदर्शन के वाद जन-नाट्य-संघ के तत्कालीन पदाधिकारी सर्वश्री गोकुल चंद्र रस्तोगी, वावूलाल वर्मा, अमृतलाल नागर तथा वेगम रजिया सज्जाद ज़हीर के विरुद्ध सरकार की ओर से कानून के उल्लंघन के अपराध में मुकदमा कायम किया गया। सन् १९५६ ई० में इस मुकदमे का फैसला हुआ और हाईकोर्ट की लखनऊ वेंच के तत्कालीन न्यायाधीश पं० आनंद नारायण मुल्ला ने अपने फैसले द्वारा १८७६ की इस धारा को स्वाधीनता के उपरांत भारतीय संविधान की मूल भावना के विरुद्ध वताते हुए खारिज कर दिया। फिर इस संस्था की गतिविधियाँ शिथिल पड़ती गईं।

लखनऊ रंगमंच—

सन् १९५३ ई० में लखनऊ रंगमंच ने अपना अस्तित्व पाया। अमृतलाल नागर के निर्देशन में इसी वर्ष 'परिवर्तन' खेला गया।[4] सन् १९५४ ई० में 'परित्याग' का मंचन हुआ।[5] सन् १९५६ ई० में प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान'

---

१. डा० अज्ञात : रंग भारती अगस्त १९७३ प्रवेशांक पृ० ७।
२. यशपाल : नशे की वात की भूमिका (प्रसंगवश) पृ० ५।
३. शरद नागर : नटरंग, वर्ष ३, अंक ९, पृ० ६६।
४. अमृतलाल नागर : कल्पना. सितंबर-अक्टूबर १९६२।
५. डा० अज्ञात : रंग भारती, अगस्त १९७३ प्रवेशांक पृ० ८।

का नाट्यरूपांतर नवयुग कन्या विद्यालय के सहायतार्थ मंचित हुआ। विष्णु प्रभाकर ने नाट्यरूपांतर तैयार किया था। निर्देशन अमृतलाल नागर ने किया। राधे विहारी लाल, पी० एन० श्रीवास्तव, वी० एन० सिन्हा, के० एस० दुआ, सन्तराम, श्रीमती कृष्णा मिश्र और कमर जहाँ इस नाटक के रंगकर्मी थे। लखनऊ में पहली वार चक्रीमंच पर 'गोदन' की प्रस्तुति हुई थी।[1] इस संस्था ने भगवती चरण वर्मा का 'रुपया तुम्हें खा गया' को भी मंचस्थ किया।[2]

'विक्रमादित्य का विशिष्ट मंचन—

१६, २० और २१ दिसम्वर १६५५ ई० को भातखंडे सङ्गीत विद्यापीठ में अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी द्वारा पं० सीताराम चतुर्वेदी और वी० एन० सान्याल के निर्देशन में लखनऊ में पहली वार "Sky line Composite Setting Stage" पर 'विक्रमादित्य का मंचन हुआ। काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर', शिवप्रसाद मिश्र, सीताराम चतुर्वेदी, सुनीति कुमार बनर्जी, डी० एन० सान्याल तथा श्रीमती स्वरूप कुमारी वख्शी इस नाटक के रंगकर्मी थे।[3]

नटराज—

सर्वदानंद ने सन् १९५६ ई० में 'नटराज' नामक अव्यावसायिक नाट्य-संस्था की स्थापना की। २२ और २३ अगस्त १६५६ ई० को सदानंद का लिखा नाटक 'चेतसिह' प्रस्तुत हुआ।[4] अमृतलाल नागर ने इस नाटक का निर्देशन किया। इसमें सर्वदानंद चेतसिह वने थे। कृष्णलाल दुआ बसावन की भूमिका में उतरे थे। कुमारी कांता पंजानी ने कजली की भूमिका निभाई थी।[5] सन् १६५८ ई० में सर्वदानंद लिखित 'सिराजुद्दौला' का मंचन हुआ। २३ फरवरी १६५६ ई० को इसी लेखक का लिखा 'भूमिजा' का प्रयोग हुआ। उत्तर-प्रदेश सरकार के विज्ञान संग्रहालय के रंगमंच पर

---

१. शरद नागर : नटरग, वर्ष ३, अंक ९, पृ० ६६।

२. अमृतलाल नागर : कल्पना सितंबर-अक्तूबर ९६६२।

३. शरद नागर : नटरंग, वर्ष ३, अंक ६, पृ० ६६।

४. डा० झब्बूलाल सुल्तानिया : बगाली, मराठी और गुजराती रंगमंच के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन पृ० ५२६।

५. सर्वदानंद : रंगमंच पृ० ६४।

इसका मंचन हुआ। इसके निर्देशक थे सर्वदानंद और विश्वनाथ मिश्र। भाग लेने वाले कलाकार[1] निम्न रूप में थे—

कृष्णलाल दुआ	:	कंचुकी
बेंजमिन गजन	:	लक्ष्मण
कुसुम शुक्ल	:	उर्मिला
ओमप्रकाश सेठी	:	प्रतिहारी
विश्वनाथ मिश्र	:	दुर्मुख
मनमोहन शर्मा	:	भरत
सर्वदानंद	:	राम
प्रताप नारायण 'प्रवीण'	:	शत्रुघ्न
कृष्णा मिश्र	:	कौशल्या
सोना चटर्जी	:	सीता
राजकुमार शर्मा	:	वाल्मीकि
किशोरीलाल पांडे	:	लव
गंगाराम पाल	:	कुश
के० के० सिंह	:	वासन्ती
दिनकर	:	चंद्रकेतु
लक्ष्मी नारायण वाजपेयी	:	सैनिक

इन नाटकों के अतिरिक्त नटराज ने जगदीशचंद्र माथुर का 'कोणार्क' एवं डा० रामकुमार वर्मा का 'कौमुदी महोत्सव' का भी मंचन किया।[2] राधे बिहारी लाल, कृष्ण लाल दुआ, पी० एन० श्रीवास्तव, सन्तराम, श्रीमती कृष्णा मिश्र, सोना चटर्जी, कमला पंजानी, मीरा शर्मा, कमर जहाँ, प्रमोद वाला आदि नटराज के रंगकर्मी थे।[3]

भारती—

सन् १६५८ ई० में भगवतीचरण वर्मा ने 'भारती' नामक संस्था को स्थापित किया। वे स्वयं इसके प्रधान मंत्री थे। प्रेमचंद के उपन्यास गोदान का विष्णु प्रभाकर कृत नाट्यरूपांतर 'भारती' द्वारा प्रस्तुत किया गया।

---

१. सर्वदानंद : भूमिजा पृ० १३।

२. डा० झब्बूलाल सुल्तानिया : बंगला, मराठी और गुजराती रंगमंच के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन पृ० ५३०।

३. अमृतलाल नागर : कल्पना, सितंबर-अक्तूबर १६६२ ई०।

अमृतलाल नागर ने निर्देशन का कार्य किया था। इसमें चक्री दृश्यबंध का प्रयोग था।[1] इसके बाद १७ नवम्बर १९५८ ई० को भगवतीचरण वर्मा के नाटक 'रुपया तुम्हें खा गया' का मंचन अमृतलाल नागर के निर्देशन में हुआ। इस नाटक के प्रस्तुतीकरण की विशेषता यह थी कि इसमें अतीतावलोकन दृश्य (फ्लैशबैक सीन) प्रस्तुत करने के लिए पहियेदार गाड़ियों (ट्रालियों) पर स्थित दृश्यबंध का प्रयोग किया गया था। राधेविहारी लाल, के० एल० दुआ, पी०एन० श्रीवास्तव, संतराम, धीरेंद्र वर्मा, राजेंद्र श्रीवास्तव, कुमुद नागर, श्रीमती स्वरूप कुमारी बख्शी इस नाटक के रंगकर्मी थे।[2]

सांस्कृतिक रंगमंच—

इस संस्था ने 'रक्तदान' का मंचन सन्तराम के निर्देशन में किया।[3] 'शांति का मूल्य (१९६६) और 'सपने' का मंचन भी इस संस्था द्वारा हुआ है।

नवकला निकेतन—

इस संस्था ने के० वी० चंद्रा कृत 'सूखी डार, फूली लतर' को सन् १९६५ ई० में पच्चीसवीं बार रंगमंच पर प्रदर्शित किया।[4] इस संस्था द्वारा १३ दिसम्बर १९६७ ई० को अशोक अंगरा कृत 'सपने' का मंचन हुआ।[5]

नाट्य समाज—

किंग जार्ज मेडिकल कालेज के, नाट्य समाज ने कुमुद नागर कृत 'बुद्ध और सुजाता' (१९६०), 'नींव के चहे' (१९६२), रमेश मेहता कृत 'उलझन' तथा 'अंडर सेक्रेटरी' (१९६६), कृष्णचंदर का 'दरवाजे खोल दो' (१९६४) आदि नाटकों का मंचन किया।[3]

भारतीय नाट्य परिषद—

इसने कुँवर कल्याणसिंह के निर्देशन में कृष्णकुमार श्रीवास्तव का लिखा नाटक 'नींव की दरारें' सन् १९६५ ई० में प्रस्तुत किया। देवीशंकर

---

१. शरद नागर : नटरंग वर्ष १, अंक ३, पृ० ६२।
२. ,, ,, वर्ष ३, अंक ९, पृ० ६७।
३. ,, ,, वर्ष १, अंक ३, पृ० ६२।
४. ,, ,, वर्ष १, अंक ३, पृ० ६४।
५. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ पृ० ४५।
६. डा० अज्ञात : रंगभारती अगस्त १९७३, प्रवेशांक पृ० ८।

त्रिपाठी, यज्ञदेव पंडित, सूर्यनारायण मिश्र, निहालचंद्र श्रीवास्तव, सीपू भट्टाचार्य तथा सोना चटर्जी का अभिनय सुंदर था।[1]

नागरिक संघ—

इसके मंत्री राजेंद्रकुमार अग्रवाल हैं। इस संस्था ने ८ अप्रैल १९६५ ई० को जे० एन० चोपरा के निर्देशन में रवींद्रालय में हरि जुत्सी कृत 'अभी तो रात है' प्रस्तुत किया। अभिनय की दृष्टि से उर्मिला सक्सेना, नवाबू तथा चोपरा सफल रहे। काशीनाथ वाजपेयी का 'मुजाहिद' हरि जलोत्रा ने सन् १९६६ ई० के प्रारंभ में प्रस्तुत किया। इसका आलेख और प्रस्तुतीकरण अत्यन्त साधारण रहा। किंतु एस० एम० रजा (अनवर) तथा उर्मिला श्रीवास्तव (माँ) का अभिनय उल्लेखनीय था।[2]

मानसरोवर कला केंद्र—

मानसरोवर कला केंद्र ने रमेश मेहता का लिखा 'फैसला' ६ अगस्त १९६५ ई० को मंचस्थ किया। उसके बाद 'हम एक हैं' ८ जनवरी १९६६ ई० को प्रस्तुत किया। यह नाटक कणाद ऋषि भटनागर का लिखा हुआ है। इस नाटक का निर्देशन प्रेम तिवारी ने किया था।[3]

कम्फर कल्चरल एसोसिएशन[4]—

इस एसोसिएशन ने के० एम० पाठक के निर्देशन में २७ एवं २८ नवंबर १९६५ ई० को रवींद्रालय, लखनऊ में 'रोटी न बेटी' का मंचन किया।

स्वर्णमंच—

१६ दिसम्बर १९६५ ई० को 'जवान' नाटक नारी कला केंद्र के रंगमंच पर खेला गया। इसके लेखक एवं निर्देशक थे विश्वरूप चटर्जी। इसका प्रस्तुतीकरण अत्यंत भोंडा और आलेख अत्यन घटिया रहा।[5] जी० सी० श्रीवास्तव 'स्वर्णमंच' के मंत्री हैं।

---

१. शरद नागर : नटरंग. वर्ष १ अंक ३, पृ० ६३।
२. ,, ,, वर्ष २, अंक ५, पृ० ९७।
३. वही।
४. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ पृ० ४५।
५. शरद नागर : नटरंग, वर्ष २, अंक ५, पृ० ९७।

नक्षत्र अंतर्राष्ट्रीय—

इसकी स्थापना सन् १९६६ ई० में हुई। शरद नागर इसके संचालक है। प्रारंभ में भगवतीचरण वर्मा इसके अध्यक्ष थे। २५ दिसम्बर १९६६ ई० को रवीन्द्रालय में शंभु मित्रा कृत 'कांचनरंग' जिसका हिंदी रूपांतर नेमिचद्र जैन ने किया था, मंचस्थ हुआ। इसके बाद २६ मई १९६८ ई० को जगदीशचंद्र माथुर कृत 'कोणार्क' का मंचन हुआ।[1] जून १९७३ ई० में डा० लक्ष्मीनारायण लाल कृत 'काफी हाउस में 'इंतजार' और 'हाथी, घोड़ा और चूहा' रवींद्रालय में मंचस्थ हुए।[2]

कमला कला कुंज—

२६ दिसम्बर १९६६ ई० को इस संस्था ने 'रोते फूल' को प्रस्तुत किया। एस० एम० जहीर इसके निर्देशक थे।[3]

श्रुति मंडल—

२२ और २३ जुलाई १९६७ ई० को के० एम० मुंशी कृत 'जय सोमनाथ' का मंचन हुआ।[4]

नाट्य शिल्पी (उत्तर रेल्वे मंच)—

नाट्य शिल्पी ने सन् १९६३ से १९७० ई० तक अधिक सजगता से प्रगति की। सन् १९६७ ई० में 'तबेले के सिर' और 'नाटक के पहले' का मंचन हुआ। २४ दिसम्बर १९६७ ई० को इस संस्था ने रमेश मेहता कृत 'उलझन' तथा 'ढोंग' (१९६८ ई०) नाटकों को प्रस्तुत किया। पु० ल० देशपांडे के 'कस्तूरी मृग' के हिंदी रूपांतर के प्रदर्शन के बाद १४ सितम्बर १९६९ ई० को रवीन्द्रालय में 'प्रेम तेरा रंग मेरा' का मंचन हुआ। इसका निर्देशन किशन खन्ना और मनहर पुरी ने किया था। फिर जगदीश वाजपेयी का 'माँ का आँचल' (१९६९ ई०) खेला गया। ८ फरवरी १९७० ई० को के० पी० सक्सेना लिखित 'अँधेरे साये' तथा २४ अप्रैल १९७० ई० को मनहर पुरी कृत 'अभयदान' का मंचन हुआ।[5] 'अंधेरे साये' में जगदीश

---

१. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्य शालाएं पृ० ४३।

२. डा० अज्ञात : रंगभारती, अगस्त १९७३ प्रवेशांक पृ० ८।

३. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाटक संस्थाएं एवं नाट्यशालाएं पृ० ४५।

४. वही।

५. डा० अज्ञात : रंगभारती अगस्त १९७३ प्रवेशांक पृ० ९।

वाजपेयी हरी काका बने थे और अरुणा खन्ना सरला भाभी बनी थीं तो ममता लिलोरी मंजु। 'अभयदान' में किशन खन्ना ने अजीत का अभिनय किया था और मनहर पुरी ने राजकुमार का। दोनों नाटकों के सहनिर्देशक किशन खन्ना थे।

महाराष्ट्र समाज—

२६ जनवरी १९६६ ई० को गणराज्य समारोह में उत्तर प्रदेश सरकार के सूचना-विभाग के संगीत एवं नाटक विभाग ने नाट्य-समारोह आयोजित किया था। इस अवसर पर 'महाराष्ट्र समाज' द्वारा मधुकर शंकर प्रधान द्वारा लिखित और उन्हीं के द्वारा निर्देशित नाटक 'वह आया था' प्रस्तुत हुआ। आलेख एवं प्रस्तुतीकरण दोनों ही दृष्टि से इस नाटक का प्रदर्शन अत्यंत महत्त्वपूर्ण और परिकृष्ण रहा। अहिंदी भाषी कलाकारों द्वारा हिंदी नाटक की इतनी सुन्दर प्रस्तुति निस्संदेह स्तुत्य था। समारोह के सर्वश्रेष्ठ नाटक निर्देशन का शाकुन्तल पुरस्कार प्रधान को प्रदान किया गया।[1] ३१ अगस्त १९६८ ई० को रवींद्रालय में इस संस्था ने 'कस्तूरीमृग' खेला।[2]

कलाकेत—

'कलाकेत' ने २२ सितंबर १९६८ ई० को रवींद्रालय में 'ताशों का देश' मंचित किया। सन् १९६९ ई० में ज्ञानदेव अग्निहोत्री कृत 'शुतुरमुर्ग', कुसुमलता मिश्र का 'माँझी' तथा सन् १९७३ ई० में इब्सन का 'प्रेत' खेला।[3]

विविध कला संगम—

आर० गोविंद और श्रीमती माया गोविंद ने जनवरी १९६९ ई० में इसकी स्थापना की। फरवरी १९६९ ई० में '२० बरस का दूल्हा दुल्हन ६० की' प्रस्तुत किया गया।[4] सन् १९७१ ई० में यशपाल के उपन्यास का 'अमिता' का रूपांतर प्रस्तुत हुआ। उपन्यास का नाट्य रूपांतर प्रयाग नारायण 'अशोक' लखनवी ने किया था।

१. शरद नागर : नटरंग, वर्ष २, अंक ९, पृ० ९८।
२. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्य शालाएं पृ० ४४।
३. डा० अज्ञात : रंगभारती अगस्त १९७३, प्रवेशांक पृ० ९।
४. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थायें एवं नाट्य शालायें पृ० ४४।

पात्र-योजना निम्न प्रकार थी—

राज भसीन	:	सम्राट अशोक
प्रकाश वर्मा	:	महास्थविर जीवक
बेबी सुमन	:	शिशु अमिता
पूनम चतुर्वेदी	:	बालिका अमिता
आशा शर्मा	:	महारानी नंदा

इसमें कुसुमलता गोयन तथा आभा वर्मा ने पार्श्वगायन दिया था।[1]

उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य परिषद्—

इस संस्था ने सन् १९६८ ई० में मोहन राकेश का 'लहरों का राजहंस', सन् १९७० ई० में 'अडर सेक्रेटरी', 'मवूलिका' प्रस्तुत किया। फिर उसी वर्ष १० अगस्त को तुलसी जयती के अवसर पर सुमित्रा कुमारी सिन्हा कृत 'रत्नावली नाटिका राजभवन के दरवार हाल में राज्यपाल प्र० वी० गोपाल रेड्डी के समक्ष प्रस्तुत की। इस नाटिका का निर्देशन डा० घनश्यामदास ने किया था। छवि विश्वास ने युवक तुलसीदास तथा निकुज रस्तोगी ने रत्नावली की भूमिका की।

परिषद् ने १३ एवं १४ अगस्त १९७० ई० को रवींद्रालय में मानस पर आधारित रामलीला भाव-नाट्य का मंचन किया। इसके निर्देशक थे डा० घनश्यामदास और गणेशप्रसाद।

भरत नाट्य संस्थान—

(इलाहाबाद की शाखा)

७ फरवरी १९७१ ई० को लखनऊ शाखा के कलाकारों ने उद्घाटन के अवसर पर डा० रामकुमार वर्मा कृत व्यग एकांकी 'महाभारत में रामायण' नवयुवक कन्या विद्यालय डिग्री कालेज के प्रेक्षागार में मंचस्थ किया।

उदयन संघ—

इस संघ ने सन् १९७२ ई० को 'अंडर सेक्रेटरी' तथा सन् १९७३ ई० को वसंत कानिटकर कृत 'ढाई आखर प्रेम का' मचस्थ किया। द्वितीय अन्तर जिला नाटक प्रतियोगिता (१९७३) में 'ढाई आखर प्रेम का' पर ५०० रुपये का पुरस्कार प्राप्त हुआ।[2]

---

१. डा० अज्ञात : नटरंग, खंड ५, अंक १७, पृ० ७०।

२. डा० अज्ञात : रंगभारती अगस्त १९७३, प्रवेशांक पृ० ९।

दर्पण—

कानपुर की एक शाखा, इसी नाम से लखनऊ में भी सन् १९७२ ई० में स्थापित हुई। उसी वर्ष विनायक पुरोहित का 'स्टील फ्रेम' और गिरीश करनाड का 'हयवदन' रवींद्रालय में खेले गये।[1]

अल्पना—

१४ सितंबर १९७० ई० को उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के तत्वावधान में 'गुनाह के साये' का प्रस्तुतीकरण हुआ। यह नाटक बंगला नाटक का आर० गोविंद कृत हिंदी रूपांतर था। प्रमुख पात्र-योजना निम्न-रूप में थी—

कुंकुम टंडन	:	रंजना राम
विमल कुमार बनर्जी	:	सुधीर

इस नाटक का द्विखंडीय दृश्यबंध कुंवर कल्याणसिंह ने तैयार किया था।[2]

दुश्मन का मंचीकरण—

दयाप्रकाश सिन्हा द्वारा लिखित 'दुश्मन' का प्रथम मंच प्रदर्शन ३० दिसंबर १९६७ ई० को रवींद्रालय, लखनऊ में के० वी० चंद्रा के निर्देशन में नीचे लिखे पात्रों द्वारा[3] हुआ—

जे० एन० चोपरा	:	हिकमत सिंह
अरुण बनर्जी	:	गोली
विश्वनाथ मिश्र	:	मामू
मिथिलेश श्रीवास्तव	:	माँ
सुमन श्रीवास्तव	:	लीला

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा इसके एक सौ दस प्रदर्शन हो चुके हैं। संगीत और नाटक विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा देश के विभिन्न भागों में इसके लगभग सौ प्रदर्शन हो चुके हैं।[4]

---

१. डा० अज्ञात : रंगभारती अगस्त १९७३, प्रवेशांक पृ० ९।

२. डा० अज्ञात : नटरंग खंड ४ अंक १५-१६ पृ० ४८।

३. दयाप्रकाश सिन्हा : दुश्मन (पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर अंकित)

४. वही।

झाँसी

राजमहल का रंगमंच—

डा० वृन्दावनलाल वर्मा ने माना है कि महारानी लक्ष्मीवाई के पति महाराज गंगाधर राव ने झाँसी के रंगमंच का प्रवर्तन किया। उनके अनुसार महाराष्ट्र के रंगमंच की परंपरा, झाँसी में आई। राजमहल में ही नाट्यशाला थी। गंगाधर राव नाटक खेलने-खिलाने के शौकीन थे। वे स्वयं स्त्री का अभिनय करते थे। यों स्त्रियाँ भी उस समय रंगमंच पर काम करती थीं। उनमें मोतीवाई और जूही के नाम उल्लेखनीय हैं। इस रंगशाला में 'शकुंतला' और 'हरिश्चंद्र', खेले गये। 'शकुंतला' सस्कृत 'अभिज्ञान शाकुंलतम्' का हिन्दी अनुवाद था। 'हरिश्चंद्र' मूल मराठी नाटक था। उसका भी हिंदी अनुवाद खेला गया था। हिंदी अनुवाद सदोवा की महाराष्ट्रीय मंडली द्वारा खेला गया था।

उस समय नाटक पर्दों पर खेले जाते थे। झाँसी का सुखलाल इन पर्दों को तैयार करता था। डा० वृन्दावनलाल वर्मा ने इसका भी उल्लेख किया है कि नाटक का प्रारंभ किस रूप में होता था—"रंगमंच के अगले पर्दे यवनिका पर किसी पौराणिक प्रसंग का रंगीन चित्र रहा करता था। अभिनय के आरंभ होने के पहले यवनिका उठती और पुष्पमालाओं से सजाई सिंहासनासीन गणेशमूर्ति दिखलाई जाती। वस्त्रों और आभूषणों से अलंकृत नर-नारी पात्र गणेश-वंदना करते, आकर्षक वेश में तिलकधारी ब्राह्मण आरती उतारता हुआ 'मंगल करण विघ्न हरण जय गणेश देवा माता जाकी पार्वती पिता महादेवा' इत्यादि सुरीले कंठ से गाया करता था, सारंगी मृदंग मजीरों और वीच-वीच शंखध्वनि के साथ, दर्शक भी नतमस्तक रहते थे। इस मंगलाचरण के बाद नाटक की कथा का थोड़ा-सा परिचय दिया जाता था। इसके उपरांत यवनिका गिरायी जाती थी और कुछ समय पश्चात् फिर उसे उठाकर नाटक का आरंभ होता था।"[१]

डा० वर्मा के संस्मरण से उनके वचपन के समय झाँसी में होने वाले नाट्य-प्रस्तुतियों का चित्र स्पष्ट हो जाता है। "........फिर १९०५ तक झाँसी में वरावर हिंदी के नाटकों का अभिनय देखा। राजा लक्ष्मणसिंह द्वारा अनुवादित शकुंतला और हरिश्चंद्र के सत्य हरिश्चंद्र के अभिनय सुंदर

१. डा० वृन्दावनलाल वर्मा : झांसी के राजमहल का रंगमंच : (पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रंथ—सं० देवदत्त शास्त्री) पृ० २७६।

पर्दे पर देखे। रंगमंच, पर्दे और अभिनय के उत्पादन सब यहीं के उत्साही लोगों द्वारा तैयार कर लिए जाते थे। 'कट सीन्स' सामने नहीं आये थे। पर्दे बाँस के मोटे टुकड़ों पर लिपटकर उठ जाते थे और वैसे ही धीरे-धीरे खुलकर गिर जाते थे। प्रांम्पटर की आवाज पीछे बैठने वालों तक को सुनाई पड़ जाती थी। यदि अभिनेता ने उठने या चलने फिरने की कोई गलती की, तो पर्दे के पीछे से आने वाली 'डाँट 'क्या करता है ?' साफ सुनाई पड़ जाती थी। परंतु यह सब होते हुए भी उस रंगमंच की प्रतिक्रिया दर्शकों में उत्साह और उत्सुकता उत्पन्न करती थी। रंगमंच, अभिनेता और दर्शकों में भाईचारा स्थापित करती थी। दर्शकों में स्पष्ट लालसा अपने अभिनेता और रंगमंच को सुधारने और आगे बढ़ाने की ओर रहती थी। हिंदी रंगमंच का निर्माण और विकास हो रहा था।"[1]

कानपुर

भारतेंदु मंडल[2]—

पटकापुर निवासी पं० रामनारायण त्रिपाठी 'प्रभाकर' उर्फ लल्लू मास्टर ने बाबू बिहारीलालजी परोपकारी (बल्लू बाबू) की सहायता से भारतेंदु कृत 'सत्य हरिश्चंद्र' और 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' का अभिनय सन् १८७६ ई० में किया। प्रतापनारायण मिश्र जैसे विरोधियों के रहते हुए भी त्रिपाठी जी रंगमंच की ओर से सजग थे। उन्होंने 'रामाभिषेक' का भी अभिनय किया। बाद में प्रतापनारायण मिश्र भी नाट्य-कला के अनुकूल हो गये थे। उसके बाद त्रिपाठीजी कार्यवश गोरखपुर चले गये। तब उनके सहयोगियों ने सन् १८८२ ई० में 'नीलदेवी' और 'अँधेर नगरी' नाटक खेले। १५-१०-१८८५ ई० को त्रिलोकीनाथ बैनर्जी, हरिश्चंद्र मुखर्जी आदि बंगाली सज्जनों ने रोटी गुदाम की दुर्गा पूजा पर भारतेंदु कृत 'भारत-दुर्दशा' मंचस्थ किया। अभिनय असफल रहा।[3]

भारत एंटरटेनमेंट क्लब—

कानपुर में सन् १८८५ ई० में भारत एंटरटेनमेंट क्लब की स्थापना हुई। इस क्लब ने दो बार 'अन्जामे बदी' नाटक खेला। 'अन्जाने बदी'

---

१. डा० वृन्दावनलाल वर्मा . झाँसी के राजमहल का रंगमंच : हिंदी रंगमंच (पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रंथ) पृ० २२९।

२. यह नाम केवल डा० विश्वनाथ शर्मा ने अपनी पुस्तक भारत की हिंदी नाट्य-संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ पृ० ४७ में दिया है।

३. डा० छब्बूलाल सुल्तानिया : बंगला, मराठी, गुजराती के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन पृ० १४७।

पारसी कंपनी वाले नाटक का आभास था। इस क्लब के सदस्यों की आपसी फूट के कारण एक के दो क्लब हो गये।[1]

भारत मनोरंजनी सभा—

'भारत एंटरटेनमैंट क्लव' से विभक्त एक शाखा का नाम रखा गया 'भारत मनोरंजनी सभा'। वास्तव में मूल नाम 'भारत एंटरटेनमैंट क्लव' से कुछ हिंदी रसिक उत्साहियों ने अंग्रेजी शब्दों को हटाकर उसका हिंदीकरण कर दिया। इसमें प्रताप नारायण मिश्र का मुख्य हाथ था। इस सभा के अध्यक्ष थे बाबू पप्पनलाल और मैनेजर थे बाबू राबेलाल। २६ नवंबर १८८७ को इस संस्था द्वारा 'हठी हम्मीर' (प्रतापनारायण मिश्र) और 'जय नारसिंह की' (पं० देवकीनंदन त्रिपाठी) दो नाटक अभिनीत हुए। २८ नवंबर १८८७ ई० को 'कलिप्रवेश' (प्रतापनारायण मिश्र) और 'गोसंकट' (अम्बिकादत्त व्यास) मंचस्थ हुए। उन दिनों कानपुर में हिंदी नाटक अंग्रेजों के द्वारा बनाये गये 'थियेटर हाल' में कभी-कभी हुआ करते थे।[2]

एम० ए० क्लब—

'भारत एंटरटेनमैंट क्लब' से विभक्त दूसरी शाखा का नाम पड़ा 'एम्० ए० क्लब'। अप्रैल १८८८ ई० में इस क्लव ने गोरक्षा संबंधी एक नाटक खेला जो काफी सफल रहा।

ए० बी० क्लब—

सन् १८८७ ई० में ए० बी० क्लव की स्थापना हुई। इसका श्रेय मुख्य रूप से भैरवदास वर्मा को जाता है। ९ अगस्त को इनका पहला प्रयोग हुआ। पर उस समय अभिनेताओं को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। एम० ए० क्लव के कुछ सभासद खेल के समय आपे से बाहर होकर, उठ गये। अशिक्षित प्रेक्षकों ने शोरगुल मचाया। लेकिन अली हुसेन साहव के प्रयत्न से खेल सुचारू रूप से संपन्न हुआ। इस संस्था ने 'सदमए-इश्क' और 'गोरक्षा' का भी अभिनय किया।

विजय-नाट्य-समिति[3]—

सन् १९१५ ई० में नारायणप्रसाद अरोड़ा ने इसकी स्थापना की थी। इस समिति ने कुछ नाटक खेले।

---

१. डा० झब्बूलाल सुल्तानिया : बंगला, मराठी और गुजराती रंगमंच के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन पृ० १४७।

२. वही। ३. वही : पृ० २९४।

विक्रम नाट्य-समिति[1] —

इसकी स्थापना सन् १९७६ ई० में हुई। इस समिति ने नारायणप्रसाद 'बेताब' लिखित 'महाभारत' और आगा हश्र 'कश्मीरी' कृत 'अछूता दामन' का अभिनय प्रस्तुत किया। इसके कलाकार थे गोवर्द्धन खन्ना, बाबूराम जैन, नारायणप्रसाद अरोड़ा आदि थे।

विक्रम-विजय-नाट्य-समिति[2] —

विक्रम नाट्य-समिति और विजय नाट्य-समिति समकालीन समितियाँ थीं। अन्त में दोनों समितियाँ मिल गईं और एक नई समिति बनी जिसका नाम रखा गया विक्रम-विजय नाट्य-समिति। इसके द्वारा 'सन्मित्र' नाटक खेला गया।

भारत नाट्य-समिति—

इस समिति ने 'महाराणा राजसिंह' नाटक का आठ बार अभिनय किया।[3] इस समिति के कलाकार थे—कुंवर कृष्ण कौल, रघुनाथ वाजपेयी, नारायणप्रसाद अरोड़ा।

कैलाश क्लब—[4]

इसकी स्थापना सन् १९१८ ई० में हुई। इसके मूल संस्थापक थे—कैलाश मंदिरवाले राय साहब गंगाप्रसाद वाजपेयी जो स्वयं एक कुशल नाट्य-निर्देशक एवं व्यवस्थापक थे। रामलीला के अवसर पर आश्विन शुक्ल सप्तमी, अष्टमी और नवमी को कैलाश मंदिर में अस्थायी रंगमंच बनाकर हिंदी नाटक खेले जाते थे। इस संस्था द्वारा नारायणप्रसाद 'बेताब' कृत 'जहरी साँप' (१९१८ ई०) खेला गया। इसके कुछ रंगकर्मी इस प्रकार थे—

गंगाप्रसाद वाजपेयी	:	नायक नाहरसिंह
हरिशंकर	:	नायिका खुरशीद

१. डा० छन्नूलाल सुलतानिया : बंगाली, मराठी, गुजराती के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन पृ० २९४।

२. वही : पृ० २९४।

३. नागरी प्रचारिणी पत्रिका व० ७३, पृ० ४१।

४. (i) डा० छन्नूलाल सुलतानिया : बंगला, मराठी, गुजराती के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन पृ० २९५ और ५२६।
(ii) वही : नटरंग खं० ३, अं० ९ पृ० ७०।

सन् १९२० ई० में राधेश्याम कथावाचक कृत 'वीर अभिमन्यु, आगा हश्र कृत 'ख्वाबे हस्ती' (१९२१ ई०),अहसन का 'शरीफ बदमाश(१९२१ई०) खेले गये। रायसाहब के ज्येष्ठ पुत्र शिवप्रसाद और पत्नी का निधन हो जाने के कारण सन् १९२२ ई० से १९२८ ई० तक नाटक बंद कर दिये गये। सन् १९२९ ई० में तुलसीदत्त शैदा का 'जनक नंदिनी' और राधेश्याम कथावाचक कृत 'कृष्णावतार' नामक नाटक खेले गये।

'जनक नंदिनी' के रंगकर्मी—

गंगाप्रसाद वाजपेयी	:	राम
रुद्रप्रसाद	:	लव
नौरोजी	:	सीता

'कृष्णावतार' के कलाकार—

गंगाप्रसाद वाजपेयी	:	वासुदेव
रुद्रप्रसाद	:	कृष्ण
नौरोजी	:	देवकी

इस संस्था द्वारा अभिनीत अन्य नाटक:—भक्त प्रह्लाद (१९३०), रुक्मिणी मंगल (१९३१), परिवर्तन, उषा-अनिरुद्ध, चलता पुर्जा, मशरिकी हूर, ईश्वर-भक्ति।

इस क्लब के कलाकार थे—गंगाप्रसाद वाजपेयी, रुद्रप्रसाद, नौरोजी, हरिशंकर, राजकिशोर मिश्र, शिवकुमार वाजपेयी, शैलेंद्रनाथ दत्त।

सन् १९३७ ई० में रायसाहब गंगाप्रसाद वाजपेयी का निधन होने से सन् १९४७ ई० तक कोई नाटक मंचस्थ नहीं हो सका। सन् १९४९ ई० से फिर यह क्लब नाटक खेलने लगा। सन् १९४९ ई० में इस संस्था ने 'ईश्वर-भक्ति' (राधेश्याम कथावाचक), 'कृष्ण सुदामा' (बेताब)' नामक दो नाटक खेले। अन्य अभिमंचित नाटक—'चंद्रगुप्त' (द्विजेंद्रलाल राय' १९५० ई० में, देवीप्रसाद धवन कृत 'चंद्रशेखर आजाद', 'दिल्ली की रानी उर्फ पृथ्वीराज' १९५६ में, 'तुलसीदास' (१९५७ ई० में), राधेश्याम कथावाचक लिखित 'श्रवणकुमार' और 'परिवर्तन', सुदर्शन द्वारा लिखित'सिकंदर'१९५५ ई० में, राधाकृष्णदास का 'राणा प्रताप' (१९५७ ई० में), सेठ गोविंददास कृत 'कर्ण' (१९५७ ई० में)।

सन् १९५९ ई० में गृहविवाद के कारण नाटकाभिनय पुनः बन्द हो गया।

कानपुर नाट्य-समिति—[1]

इसकी स्थापना सन् १९२७ ई० में हुई। २६ अक्तूवर १९२७ ई० को इस समिति ने राधाकृष्णदास का 'महाराणा प्रताप' खेला।

रवींद्र परिषद—[2]

सन् १९४२ ई० में विश्वनाथ त्रिपाठी 'विश्व' और अमरनाथ भट्टाचार्य ने इस परिषद की स्थापना की। इसने 'विश्व' लिखित 'स्वतंत्रता या वलिवेदी,' 'हमारा समाज, 'हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान', 'पहला कदम नाटक' खेले। सन् १९४६ ई० में यह संस्था बंद हो गई।

भारतीय जन-नाट्य-संघ—[3]

जन-नाट्य-संघ की कानपुर शाखा सन् १९४३ ई० में स्थापित हुई। एस० सी० चक्रवर्ती इसके प्रधान सचिव वने। इसी वर्ष 'भूखा कंगाल' ('नवान्न का रूपांतर) प्रस्तुत किया। इस संस्था द्वारा 'वेकारी', 'संघर्ष', 'वदला', 'मशाल' (१९४६ ई० में), 'गुनहगार कौन ?' (१९४७ ई० में), 'धानी वाँके (१९४८ ई० में), 'घर' (१९४८ ई० में)', जादू की कुर्सी (१९४९ ई० में), तूफान से पहले', 'मैं कौन हूँ' आदि नाटक अभिमंचित हुए। सभी नाटकों का निर्देशन मुकुंदलाल वनर्जी ने किया था।

हिन्दुस्तानी विरादरी नाटक मंडली—[4]

इस मंडली ने परिपूर्णानन्द के 'नाना फड़नवीस' (१९४६ ई०), 'सन् सत्तावन की क्रांति' (१९४९ ई०) तथा 'वाजिद अलीशाह' नाटक खेले। इन नाटकों में वर्माजी के परिवार की स्त्रियाँ माया, मीरा, लीला अभिनय करती थीं।

भारतीय कला-निकेतन—[5]

सन् १९४७ ई० में इसकी स्थापना विश्वनाथ त्रिपाठी 'विश्व', डा० अज्ञात तथा वालकृष्ण वलदुआ ने की। इसने 'विश्व' कृत 'सीधा

---

१. डा० झब्बूलाल सुलतानिया : बंगला, मराठी, गुजराती के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन पृ० २९६।

२. वही : पृ० १४६। ३. वही पृ० १४६।

४. डा० अज्ञात : रंगभारती खंड १ अंक १, प्रवेशांक १ अगहन १९७३, पृ० ५।

५. डा० झब्बूलाल सुलतानिया : बंगला, मराठी, गुजराती के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन पृ० १४६।

रास्ता' और डा० रामकुमार वर्मा लिखित 'कौमुदी महोत्सव' प्रस्तुत किये। कुछ ही काल बाद निकेतन का अस्तित्व समाप्त हुआ।

अभिमन्यु कला-परिषद्—[1]

सन् १९४७ ई० में 'अभिमन्यु कला-परिपद्' ने डा० सुरेश अवस्थी का 'आजादी का कारवाँ' खेला। यह संस्था शीघ्र ही विघटित हुई।

लिटिल थियेटर—[2]

सन् १९५३-१९५४ ई० में प्रो० यशपाल और लालसिंह मिथला ने इसकी क्राइस्टचर्च हाल में 'वतसिया', 'अंजोदीदी' (उपेंद्रनाथ 'अश्क') नाटक मंचस्थ किये। इन नाटकों में प्रसन्नलता मेहरोत्रा, शीला रमानी, शारदा शर्मा, ऊषा सक्सेना, अनवरी, हर्पलता तलवार आदि स्त्रियों ने भूमिकाएँ की हैं।

चेतना—[3]

सन् १९५४ ई० में यह संस्था अस्तित्व में आई। इसके द्वारा उपेंद्रनाथ 'अश्क' रचित 'अलग-अलग रास्ते' खेला गया। यह नाटक दो वार कानपुर में और एक वार औरैया (जिला इटावा) में प्रर्दशित हुआ।

नूतन कला मंदिर—

नूतन कला मंदिर की स्थापना सन् १९५७ ई० को हुई। १ अक्तूबर १९५७ को विनोद रस्तोगी के पाँच एकांकी खेले गये—'शैतान का दिल', 'खोपड़ी और वम,' 'और मुन्ना मर गया,' 'इंटरव्यू' और 'धुँए की परछाइयाँ।' इनमें स्त्रियों की भूमिकाएँ स्त्रियों ने की। मई १९५८ में कानपुर में हुए उत्तर प्रदेश जन-नाट्य-संघ के छठे अधिवेशन में नूतन कला मंदिर को डा० रमेश श्रीवास्तव द्वारा निर्देशित कृष्णचंद्र के 'कुत्ते की मौत' पर सर्वोत्तम उपस्थापन (Production) का सम्मान मिला।

भारतीय कला मंदिर—

डा० झब्बूलाल सुलतानिया 'अज्ञात' ने १५ सितंबर १९५७ ई० को इसकी स्थापना की। इस मंदिर ने २९ दिसंबर १९५७ को 'अज्ञात' लिखित

१. डा० झब्बूलाल सुलतानिया : वंगला, मराठी, गुजराती के संदर्भ में हिंदी मंच का अध्ययन पृ० १४६।

२. डा० अज्ञात : नटरंग खंड ३, अंक ६, पृ० ७२।

३. वही : पृ० ७२।

'तूफान, नौका और घाटी' नामक नाटक के० ई० एम० फूलबाग में अभिनीत किये। इसमें सोना चटर्जी, रवि बाला, प्रमोद बाला, तथा कृष्णा मिश्र, सतीश शर्मा आदि कलाकार थे। ८ नवंबर १६५८ को 'विवाह का बंधन' (प्रह्लाद केशव अत्रे कृत 'लग्नाची बेड़ी' का अनुवाद) खेला गया। १७ जनवरी १६६० को भगवतीचरण वर्मा का 'दो कलाकार' और डा० रामकुमार वर्मा का 'औरंगजेब की आखिरी रात' दो एकांकी प्रस्तुत किये गये। २० नवंबर १६६० को डा० लक्ष्मीनारायण लाल कृत 'मादा कैक्टस' मंचस्थ हुआ। इन नाटकों का निर्देशन जे० पी० सक्सेना ने किया था। सन् १६६१ ई० में करतार सिह दुग्गल का 'दिया वुझ गया' तथा सन् १६६४ ई० में 'कानून' खेले गये। सन् १६६४ ई० के वाद यह संस्था निष्क्रिय हुई।

नवयुवक सांस्कृतिक समाज—

इसकी स्थापना सन् १६५७ ई० में हुई। दिसंवर १६५८ ई० 'घर' और 'वावू' का अभिनय हुआ। 'वावू' का निर्देशन मुकुन्दलाल बनर्जी ने किया था और ललितमोहन अवस्थी ने इसमें नायक की भूमिका की थी।

परफारमर्स—

ज्ञानप्रकाश अहलूवालिया और मदन चोपड़ा ने सन् १६६० ई० में इसकी स्थापना की। चौपड़ा कृत एवं निर्देशित 'चक्कर का चक्कर' प्रहसन खेला गया। इसके ५३ प्रयोग हो चुके है। इसका दूसरा मंचन 'मिट्टी की गाड़ी' प्रशंसनीय रहा। इनके अतिरिक्त रमेश श्रीवास्तव कृत 'चीन का चक्कर' मदन चौपड़ा का 'कयामत का चक्कर' तथा 'महँगाई का चक्कर' आदि प्रस्तुत हुए।

कानपुर अकाडेमी आफ ड्रामेटिक आर्ट्स (काडा)—

सन् १६५६ ई० में इसकी स्थापना मुहम्मद इब्राहिम ने की। श्रीमती प्रमिला गोखले ने संस्था की अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। प्रारंभ में मुहम्मद इब्राहिम के 'अक्लभेदी' और 'मुनीम जी' खेले गये। फिर ज्ञानदेव अग्निहोत्री इसमें आ मिले। ११ सितंबर १६६० ई० को विनोद रस्तोगी कृत 'नये हाथ' का मंचन हुआ। इसके निर्देशक थे ज्ञानदेव अग्निहोत्री। हरुण रशीद, रेणु वाला, राजेद्र कौर, डेनिस क्लेमेंट, प्रभा मलिक, मो० इब्राहिम खान, प्रेमलता दास, रोशन अरोड़ा, शिवकुमार शुक्ला, अफसर अली आदि इसके रंगकर्मी थे। ६ फरवरी १६६४ ई० को गणेश उद्यान (फूलबाग) में निर्मित मंच पर ज्ञानदेव अग्निहोत्री कृत 'नेफा की एक शाम'

मंचित हुआ। नाटककार ही दिग्दर्शक थे। इसकी पात्र-योजना[1] निम्नांकित रूप में थी—

ज्ञानदेव अग्निहोत्री	:	नीभो (नायक)
राधेश्याम दीक्षित	:	गोगो
कुमारी यासमीना दाजी	:	सुहाली
कुमारी आगा	:	मातई
डेनिस क्लीमेंट	:	देवल

ललितमोहन अवस्थी के अनुसार निर्देशन की दृष्टि से 'नेफा की एक शाम' का प्रस्तुतीकरण असफल रहा। दर्शकों के कौतूहल, रुचि एवं जिज्ञासा को पकड़े रखने में उसे अधिक सफलता मिली। इसमें ज्ञानदेव अग्निहोत्री का अभिनय उच्च-स्तर का था।[2]

सन् १९६४-६५ ई० में संस्था ने अपना नाम बदल कर 'नाट्यभारती' रखा।[3] राममोहन सिंह ने 'नाट्य भारती' की जगह 'नाट्य निकेतन' का प्रयोग किया है।[4]

एंबेसडर—

'एंबेसडर' की स्थापना जनवरी १९६१ ई० में हुई।[5] डा० विश्वनाथ शर्मा ने इसका प्रारंभ सन् १९६२ ई० माना है।[6] इस संस्था ने उद्घाटन के समय 'नई समस्या', 'दिया बुझ गया' एकांकी मंचस्थ किये। फिर कृष्ण-चंदर के एकांकी 'सराय के बाहर' पर आधारित 'जाड़े की एक रात' जून १९६२ में खेला गया। इसमें भास्कर वंधु, भूषण, पारो आदि रंगकर्मी थे। सिद्धेश्वर अवस्थी ने दृश्यबंध तैयार किये थे।[7] सन् १९६२ ई० की नाट्य-

---

१. ललितमोहन अवस्थी : नवरंग वर्ष १, अंक २, पृ० १०७।

२. वही : पृ० १०८।

३. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्य शालाएं पृ० ५१।

४. राममोहन सिंह : नटरंग वर्ष १, अंक ३, पृ० ६६।

५. डा० 'अज्ञात' : रंगभारती : खंड १, अंक १, (प्रवेशांक) अगस्त १९७३, पृ० ६।

६. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्य शालाएं पृ० ५१।

७. डा० 'अज्ञात' : नटरंग खंड ३, अंक ९, पृ० ७४।

गोष्ठि में इसने रामनारायण लाल कृत नौटंकी 'माधवानल कामकंदला' प्रस्तुत की।[1] अक्तूबर १९६२ ई० में के० बी० चंद्रा का 'सरहद' प्रस्तुत हुआ जिसका निर्देशन बी० एन० सेठ ने किया था। दृश्य बंध सिद्धेश्वर अवस्थी के थे। सन् १९६४ ई० के प्रारंभ में एंबेसडर ने डा० लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा लिखा 'दर्पन' नाटक वी० आई० सी० क्लब के रंगमंच पर प्रदर्शित किया। इसका निर्देशन ज्ञानदेव अग्निहोत्री ने किया था। इसमें सेट के निर्माता थे सिद्धेश्वर अवस्थी। इस नाटक की पात्र योजना[2] निम्न रूप में थी—

कु० कविता रोहतगी	:	पूर्वी (दर्पन) नायिका
भारत भूषण	:	छोटे भाई सुजान
जयशंकर सिकंदर	:	पिता
सुरेंद्र तिवारी	:	नौकर
कमल कपूर	:	हरिपदम
कुमारी परवीन अटल	:	ममता

डा० विश्वनाथ शर्मा ने उपर्युक्त नामों के अतिरिक्त ममता और राकेश वर्मा के भी नाम गिनाये हैं।[3] ललितमोहन अवस्थी ने इसको अभिनय के बारे में कहा है[4] कि कुमारी कविता तथा भारतभूषण का अभिनय कुछ हद तक सफल रहा। उनमें अभिनय-प्रतिभा के दर्शन अवश्य हुए और वे दर्शकों को आकर्षित कर सके। कमल कपूर अपनी भूमिका बिलकुल नहीं निभा सका।

राममोहन सिंह ने 'नटरंग' के पहले वर्ष के तीसरे अंक में नाट्य-वृत्त के रूप में दिया है कि पिछले दिनों कानपुर की प्रसिद्ध नाट्य-संस्था, 'द एम्वेसडर्स' ने बंगला के प्रसिद्ध नाट्य-शिल्पी शभु मित्र और अमित मैत्र का नाटक 'कांचन-रंग' हिंदी में प्रस्तुत किया। इस नाटक का अनुवाद नेमिचंद्र जैन ने किया है। भारत भूषण ने अत्यंत कुशलता से इसका

---

१. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ पृ० ५१।

२. ललितमोहन अवस्थी : नटरंग वर्ष १, अंक २, पृ० १०७-१०८।

३. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाटक संस्थाएँ एवं नाट्यशालाएँ पृ० ५१।

४. ललितमोहन अवस्थी : नटरंग वर्ष १, अंक २, पृ० १०७-१०८।

प्रस्तुतीकरण किया। यह उनकी पहली नाट्य-प्रस्तुति थी अतः उनकी प्रशंसा और भी होनी चाहिये।[1]

इसमें सुरेंद्र तिवारी (पाँचू), रीना कर (तरला), कमल कपूर (वट्टु) के अभिनय लगभग व्यावसायिक स्तर के थे। संगीत निर्देशक असित डेनियल्स ने हास्य और करुणा की विभिन्न स्थितियों को अत्यंत कुशलता से उजागर किया था।[2]

सन् १९६५ ई० में इस संस्था ने 'अब की मोहि उबारो' को प्रस्तुत किया। इस नाटक के मूल लेखक पु० ल० देशपांडे हैं और भारत भूषण ने इसका निर्देशन किया था। इसके वाद गोगोल कृत 'इंस्पेक्टर जनरल' पर आधारित 'अफसर' खेला गया। इसका निर्देशन भी भारत भूषण ने ही किया था। पात्र-योजना—

राकेश वर्मा	:	दीवान
कमल कपूर	:	नकली अफसर
सुरेंद्र तिवारी	:	पंडित लछेंद्र
संतोष कुमार	:	पोस्ट मास्टर अय्यर[3]

इस संस्था द्वारा अभिनीत अन्य नाटकों में 'जाड़े की एक रात', 'सरहद' आदि हैं। के० वी० चंद्रा कृत 'सरहद' का निर्देशन वी० सेठ ने किया था। भास्कर दत्त, बालेश्वर शर्मा, विजयकुमार, सत्य किशोर, संतोष कुमार आदि 'सरहद' के रंगकर्मी थे। ए० के० मित्र और शेखर बनर्जी ने संगीतज्ञ का कार्य किया।[4]

दर्पण—

अक्तूबर १९६७ ई० में 'एंबेसडर' का नाम वदलकर 'दर्पण' रखा गया। दर्पण ने १२-१०-६८ को कलकत्ते में हिंदी रंगमंच की शताब्दी महोत्सव में 'एंटिगनी' प्रस्तुत किया। इस नाटक को १००१) का प्रथम भारतेंदु पुरस्कार प्राप्त हुआ।

---

१. राममोहन सिंह : नटरंग वर्ष १, अंक ३, पृ० ६५।

२. राममोहन सिंह : नटरंग वर्ष १, अंक ३, पृ० ६५।

३. राममोहन सिंह : नटरंग वर्ष १, अंक ४, पृ० १३२-१३३।

४. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्य शालाएं पृ० ५१।

५ अक्तूबर १९६९ को दर्पण ने डा० लक्ष्मीनारायण लाल का 'मिस्टर अभिमन्यु'[१] प्रस्तुत किया। इसके निर्देशक राकेश वर्मा ने अभिमन्यु की भूमिका की थी। अन्य रंगकर्मी थे :—

किशन गांधी	:	आत्मन
निहाल सिद्दीकी	:	गयादत्त
उषा वर्की	:	श्रीमती विमल
तृप्ता अरोड़ा	:	पुलिस अधीक्षक की पत्नी

दर्पण ने २७ नवंबर १९७० ई० को लखनऊ के रवींद्रालय में 'एंटिगनी' प्रस्तुत किया। इसका निर्देशन प्रो० सत्यमूर्ति ने किया था। पात्र योजना इस प्रकार थी—

वर्षा महाजन	:	एंटिगनी
राकेश वर्मा	:	क्रियाँन
करुणा दीक्षित	:	इज़्मेनी[२]

अगस्त-सितंबर १९७१ में दर्पण ने 'कायाकल्प' और 'खामोश अदालत जारी है' का मंचन किया। 'कायाकल्प' के लेखक राजेंद्रकुमार शर्मा हैं तथा इसके निर्देशक थे राकेश वर्मा। कलाकार थे[३] —

जितेंद्र मेहता	:	लाला गोवर्द्धनदास
संतोष श्रीवास्तव	:	अनिल
सुरेंद्र तिवारी	:	ढोंगी पंडित
तृप्ता अरोरा	:	पत्नी
राकेश वर्मा	:	सुनील
निहाल सिद्दीकी	:	मिर्जा
करुणा दीक्षित	:	उषा

'खामोश, अदालत जारी है' की भूमिकाएँ—

हरीकृष्ण अरोरा	:	काशीकर
मंजु तनेजा	:	श्रीमती काशीकर
माया	:	बेणारे बाई
उर्मिला थपल्याल	:	पोंटते
सुदेश वतन	:	सुखात्मे वकील

---

१. डा० 'अज्ञात' : नटरंग खंड ३, अंक १२, पृ० ७४।
२. डा० 'अज्ञात' : नटरंग खंड ४, अंक १५-१६, पृ० ४७।
३. सुशीलकुमार सिंह : नटरंग खण्ड ५, अंक १७, पृ० ६९।

विमल बनर्जी	:	सामंत
गिरीश श्रीवास्तव	:	रोकडे
चंद्रमोहन	:	कर्णिक

रामगोविंद ने निर्देशन किया था।[1]

सन् १९७१ ई० 'खामोश, अदालत जारी है' के बाद १९७२ ई० में 'स्टील फ्रेम' तथा 'हयवदन' खेले गये। 'खामोश, अदालत जारी है' पर दर्पण को उत्तर प्रदेश सांगीत नाटक अकादमी की प्रथम नाट्य प्रतियोगिता (१९७२ ई०) में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। अकादमी की दूसरी अंतर जिला नाट्य-प्रतियोगिता (१९७३ ई०) में बादल सरकार कृत 'एवं इंद्रजीत' पर दर्पण को एक हजार रुपये का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।[2]

नाट्य-भारती—

'काडा' का नाम बदल कर 'नाट्य-भारती' को जन्म दिया गया। ९, १० और १७ अक्तूबर १९६५ ई० को 'नाट्य-भारती' ने ज्ञानदेव अग्निहोत्री कृत 'वतन की आबरू' को वी० आई० सी० क्लब हाल में प्रस्तुत किया। यही नाटक २ नवंबर १९६५ को रवींद्रालय लखनऊ और १७, १८ दिसंबर १९६५ ई० को आई० एम० ए० हाल कानपुर में खेला गया। लेखक ही निर्देशक थे। असित डेनियल्स संगीत निर्देशक थे।[3]

पात्र-योजना

राधेश्याम दीक्षित	:	मौलाना इलाही बख्श
वीना बाली	:	पश्मीना (नायिका)
दिलरोजा दाजी	:	रेशमा
डेनिस क्लेमेंट	:	महबूब
निहाल सिद्दिकी	:	मेजर जानेद
विजयवंत सिंह	:	कैप्टन याकुब
आनंद वल्लभ	:	रज़ाकार
नरेंद्र सचदेव	:	मुजाहिद
प्रेमकुमारी	:	पगली

१. सुशीलकुमार सिंह : नटरंग खण्ड ५, अंक १७, पृ० ६९।
२. डा० 'अज्ञात' : रंगभारती अगस्त ७३, पृ० ६-७।
३. ललित मोहन अवस्थी : नटरंग वर्ष १, अंक ४, पृ० १३२।

हिंदी रंगमंच शताब्दी के अवसर पर नाट्य-भारती ने ज्ञानदेव अग्निहोत्री की कृति 'शुतुरमुर्ग' का मंचन किया। निर्देशक ज्ञानदेव अग्निहोत्री ने संवाद निवेदन में विशुद्ध यथार्थवादी शिल्प अपनाया और नाटकीय प्रभाव बढ़ाने के लिये विशेष भाव-भंगिमाओं वाली संरचनाओं का सफल प्रयोग किया। इस रंगशिल्प ने 'शुतुरमुर्ग' के इस प्रस्तुतीकरण को अद्भुत अर्थवत्ता प्रदान की। राजा की भूमिका में ज्ञानदेव अग्निहोत्री ने प्रभावशाली अभिनय किया। अंजलि मित्तर की महारानी, शुभा, सूबेदार की दासी, सभी सुसंयत और सफल अभिनय थे।[1]

इसी संस्था द्वारा इसी वर्ष 'मैं वह नहीं हूँ' का मंचन हुआ। मूल नाटक आचार्य अत्रे कृत 'तो मी नव्हेच' मराठी में है। डा० प्रमिला गोखले ने इसका निर्देशन किया था। डेनिस क्लेमिंट ने नाटक में पाँच भूमिकाएँ अत्यंत कुशलता के साथ अभिनीत कीं। विजयवंत का मारवाड़ी, श्यामली मित्तर की बिंदिया, शुभा, अंजु पामेला, दिलरोज, सभी की भूमिकाएँ दर्शकों ने बहुत पसंद कीं। राधेश्याम दीक्षित का सरकारी वकील और गोपाल मालवीय का न्यायाधीश के साफ-सुथरे अभिनय थे। दृश्यबंध के लिये कला-निर्देशक श्याम राठौर बधाई के पात्र है।[2]

इस संस्था के अध्यक्ष तारकबंधु भौमिक है और मंत्री है विजय गुप्ता। राधेश्याम दीक्षित, निहाल सिद्दीकी, नरेंद्र सचदेव और आनंद वल्लभ त्रिपाठी आदि इसके रंगकर्मी हैं।[3]

नाट्य-भारती को उत्तर-प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा २१ से २७ फरवरी १९७२ ई० तक रवींद्रालय, लखनऊ में आयोजित प्रथम आंतर-जिला नाट्य प्रतियोगिता में ज्ञानदेव अग्निहोत्री कृत 'अनुष्ठान' पर एक हजार रुपये का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। अकादमी की आंतर-जिला नाटक प्रतियोगिता में (१२ से २० जनवरी १९७३) में नाट्य भारती द्वारा प्रस्तुत 'मैं वह नहीं हूँ' (मराठी मूल कृति पी० के० अत्रे कृत 'तो मी नव्हेच) पर ७५० रुपये का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।[4]

---

१. देवप्रिय पंत : नटरंग खण्ड २, अंक ८, पृ० ४९।

२. वही : पृ० ४९।

३. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएँ एवं नाट्य शालाएँ पृ० २२।

४. डा० अज्ञात : रंगभारती अंक १, प्रवेशांक (अगस्त १९७३) पृ० ६।

'फोनोवीजन्स'-'रंगवाणी'—[1]

सन् १९६६ ई० में असित डैनियल्स ने 'फोनोविजन्स' की स्थापना की। इसका उद्‌घाटन विष्णु प्रभाकर के 'सवेरा' तथा 'उसने कहा था' के नाट्य रूपांतर से हुआ। फिर बंगला नाटक के रूपांतर 'मि० डायरेक्टर' को प्रस्तुत किया। सन् १९६७ ई० में संस्था का नाम रखा—'रंगवाणी'। रगवाणी के 'तीन फरिश्ते' (१९६७), मोहन राकेश कृत 'आषाढ़ का एक दिन'(१९६७),आदि नाटक मचित हुए। 'आषाढ़ का एक दिन' के कलाकार निम्न रूप में थे—

असित डैनियल्स : कालिदास
रीटा कैम्फर : मल्लिका
कांतिकृष्ण वाजपेयी : विलोम
प्रमोद लाला : अंबिका
भगवती प्रसाद आर्य : मातुल

कुछ समय वाद यह संस्था विघटित हुई।[2]

वेद प्रोडक्शंस—

इसकी स्थापना १९६७ में हुई। इसने सन् १९६७ ई० में मेडिकल कालेज के प्रेक्षागार में डा० अज्ञात का 'वह देश जहाँ भूख नहीं है' को मंचस्थ किया। यह संस्था भी अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकी।[3]

प्रतिध्वनि—

'प्रतिध्वनि' की स्थापना सन् १९६६ ई० में हुई। इसने सुशीलकुमार सिह के तीन नाटक मंचस्थ किये—'वापू की हत्या हजार वीं वार' (१९६९) 'सूरज जला धरती पर' (१९६९), 'अ धेरे के राही (१९७०)। 'सूरज जला धरती पर' के प्रस्तुतीकरण के बारे में ललित मोहन अवस्थी ने निम्नांकित राय दी है—"अभिनय के क्षेत्र में आचार्य रामानुज के रूप में कुमार का अभिनय अत्यधिक सफल एवं प्रभावी रहा। स्त्री-पात्रों में रामानुज की पत्नी रक्षकांमा के रूप में आभा गुहा और सेविका सुरभि के रूप में सजनी साहू का अभिनय आकर्षक था। अन्य पात्रों में माता कातिमती के रूप में मोहनी विष्णोई एवं चितक के रूप में विजय दीक्षित का अभिनय सर्वश्रेष्ठ

---

१. डा० अज्ञात : नटरंग, खंड ३, अंक ९, पृ० ७५।

२. डा० अज्ञात : रंगभारती अंक १ प्रवेशांक (अगस्त १९७३,) पृ० ७।

३. वही : पृ० ७।

रहा, तथा अनिल वाजपेयी (गोविंद), अरुण गुप्त (यामुनाचार्य एवं आत्माराम), सूर्यप्रकाश अग्रवाल (महापूर्वाचार्य) और विजय निवासी (शिष्य) के अभिनय उल्लेखनीय रहे। पार्श्वगायन में कुमारी आभा गुहा ने नाटक की प्रभावोत्पादकता में पर्याप्त वृद्धि की।[1]

इसी लेखक के तीन एकांकी भी खेले गये जिनके नाम हैं–'भारत, महान भारत', 'पत्नी-पुत्र निरोधक संस्था' और 'इंशा अल्लाह फतह हमारी होगी'। जुलाई १९७३ ई० में संतोष नारायण नौटियाल कृत 'एक मशीन जवानी की' मर्चेन्ट्स चेंबर के प्रेक्षागार में खेला गया।[2]

नाटिका—

'नाटिका' को सन् १९७० ई० को स्थापित किया गया। इसी वर्ष इस संस्था ने राजेंद्र शर्मा का लिखा नाटक 'अपनी कमाई' का मंचन किया। सन् १९७१ ई० में इसी लेखक का 'परदा उठने से पहले', रमेश मेहता कृत 'अंडर सेक्रेटरी' का मंचन हुआ। तदुपरांत सन् १९७२ ई० में रामकुमार 'भ्रमर' लिखित 'खून की आवाज' खेला गया। 'अफसर', 'अटैची केस', 'एक दिन की छुट्टी', 'नया मोड़', 'दाल में काला' आदि एकांकी भी प्रस्तुत किये गये।[3]

कला संगम—

'कला संगम' की स्थापना सन् १९७३ ई० हुई। ४ मार्च १९७३ ई० को राजेंद्रकुमार शर्मा कृत 'काया कल्प' के० ई० एम० हाल में कला-संगम द्वारा खेला गया।[4]

बलिया

बलिया-नाट्य-समाज—

इस नाट्य-समाज की स्थापना का विवरण उपलब्ध न होने पर भी स्थापना संबंधी तिथि का संकेत निम्नांकित वाक्य से मिलता है--"........ ....गत ददरी के मेले में विराजमान होकर यहाँ बलिया नाट्य-समाज की जो उस समय नया स्थापित हुआ था बड़ी सहायता की"[5] यह वाक्य ६

---

१. ललितमोहन अवस्थी : नवरंग वर्ष ४, अंक १५-१६, पृ० ५० ।

२. डा० अज्ञात : रंगभारती प्रवेशांक (अगस्त १९७३), पृ० ७ ।

३. वही : पृ० ७ ।

४. वही : पृ० ७ ।

५. रविदत्त शुक्ल : बलिया से शोक पत्र : भारत जीवन (साप्ताहिक) ९ फरवरी १८८५ पृ० ३ (दूसरा स्तंभ)

फरवरी १८८५ ई० में लिखा गया था, 'गत' शब्द से संकेत मिलता है कि सन् १८८४ ई० में नया स्थापित नाट्य-समाज। इस समाज द्वारा अभिनीत नाटकों की जानकारी प्राप्त है। सन् १८८४ ई० के नवम्बर में ददरी मेले के अवसर पर भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा लिखित 'सत्य हरिश्चंद्र' और 'नीलदेवी' नाटक खेले गये। 'सत्य हरिश्चंद्र' में स्वयं भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने हरिश्चंद्र की भूमिका ग्रहण की थी। इस नाटक के बारे में गोपालराम गहमरी ने लिखा है कि "बयालीस वर्ष पहले की बात है, जब काशी के भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र ने बलिया में 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक स्वयं हरिश्चंद्र बनकर खेला था जिसमें हिंदी के सुलेखक—'दुःखिनी बाला' के लेखक बाबू राधाकृष्ण दास सरीखे हिन्दी सेवक और रविदत्त शुक्ल जैसे कवि ने पार्ट लिया था उस समय पर्दों और सीनों का सुन्दर जनाव नहीं था, लेकिन जो कुछ स्टेज उस समय बना था—बजाज के कपड़े तानकर जो काम भारतेन्दुजी ने कर दिखाया, उसकी महिमा यूरोपियन लेडियों तक ने गायी थी। उस समय के कलेक्टर साहब की मेम ने आँसुओं से भरा रूमाल निचोड़कर जब साहब की मारफत भारतेन्दु जी से आग्रह किया था कि रानी शैव्या का श्मशान विलाप अब धीरज छुड़ा रहा है—सीन बदला जाय तो इस पर 'सत्य हरिश्चंद्र' बने हुए भारतेन्दु ने स्वयं 'ओवर एक्ट' किया था और दर्शक मंडली में करुणा के मारे त्राहि-त्राहि मच गई थी।[1]

रविदत्त शुक्ल कृत 'देवाक्षर चरित्र' (सन् १८८४ ई०) की भूमिका से ज्ञात होता है कि उक्त नाटक का अभिनय हो चुका था।[2]

मथुरा

यंग मेन्स एसोसिएशन—[3]

यह संस्था सन् १९१४ ई० से १९२४-२५ ई० तक नाट्याभिनय करती रही। मूँगाजी ने १९१४ ई० में पहला नाटक 'खूबसूरत बला' खेला था। इन दिनों चंदा एकत्रित करके नाटक खेलते थे और दर्शक वर्ग मुफ्त में ही मनोरंजन पाता था। एक खेल टिकट लगाकर खेला था और 'वारफंड' के

१. गोपालराम गहमरी : 'कुंभ की यात्रा'—दैनिक 'आज' गुरुवार दि० २८ अप्रैल, १९२७ पृ० ६ तीसरा कालम।

२. डा० भानुदेव शुक्ल : भारतेन्दु युगीन हिंदी नाट्य साहित्य, पृ० ३१४।

३. श्री रामचंद शर्मा (मूंगाजी) से २४-१०-६९ को मथुरा में लेखक द्वारा ली गई मुलाकात के आधार।

लिए ४५०००) जमा करके दिये थे । इसमें डा० रामस्वरूप सरीन, डा० मंगीलाल, रामचंद्र शर्मा (मूंगाजी) आदि रंगकर्मी काम करते थे । मूँगाजी स्त्री की भूमिका में उतरते थे। डा० मंगीलाल अच्छे अभिनेता थे। डा० गंगोली वायवोलिन वजाते थे ।

हिन्दी नाट्य परिषद्—[1]

इसका भी कार्य-काल सन् १९१४ ई० से सन् १९२५ ई० तक रहा है। इसका उद्देश्य हिंदी प्रचार भी था। इसके नाटक 'सेठवाडा' में हुआ करते थे। आज उस स्थान पर इलाहाबाद बैंक है । इसमें कुंजबिहारी नाम के सज्जन थे ।

व्रज नाट्य परिषद्—[2]

इसकी स्थापना सन् १९२४ ई० में लक्ष्मीनारायण मंदिर, छत्ता-बाजार, मथुरा में हुई। यह संस्था तत्कालीन विदेशी सरकार के खिलाफ थी। इस संस्था द्वारा 'कंस अत्याचार', 'भक्त प्रहलाद', 'वीर सुधन्वा' आदि नाटक मंचित हुए थे ।

आगरा

श्रीकृष्ण थियेट्रिकल कंपनी आफ आगरा

मास्टर हर नारायण ने सन् १९१९-१९२० ई० के आसपास आगरा में श्रीकृष्ण थियेट्रिकल कंपनी आफ आगरा की स्थापना की। सन् १९१९ ई० से सन् १९३५ ई०तक पं०तोताराम इस कंपनी के निर्देशक थे । यह कंपनी अव्याव-सायिक थी। लेकिन निमंत्रण पर कंपनी नाट्यप्रदर्शनार्थ बाहर भी जाती थी। मास्टर हर नारायण इस कंपनी को लेकर रियासत करौली, भदावर, ग्वालियर, बीकानेर और अजमेर गये थे ।

'सती वेश्या अथवा नेक अबला,' 'गरीब अथवा दौलत का नशा', 'राजपूत रमणी', 'देवी देवयानी', 'कल्ले जीवन', इस कंपनी के कुछ नाटक थे। इनमें 'राजपूत रमणी' और 'देवी देवयानी' लोकप्रिय नाटक थे ।

ज्ञान शर्मा, पुरुषोत्तम लाल तिवारी, विशन दयाल गुप्ता, जतन बाबू, राम प्रकाश, रोशन लाल, हरी शंकर मिश्र, लच्छूमल और शहजाद कंपनी के रंगकर्मी थे ।

---

१. श्री रामचंद्र शर्मा (मूंगाजी) से २४-१०-६९ को मथुरा में लेखक द्वारा ली गई मुलाकात के आधार पर ।

२. वही ।

सन् १९३५ ई० से सन् १९५० ई० तक इस कंपनी की गतिविधियाँ प्राय: बंद रहीं। सन् १९५१ ई० में यह कंपनी पुन: श्रीकृष्ण ड्रैमेटिक सोसाइटी के नाम से संगठित हुई और अपने पुराने नाटक खेलने लगी। सन् १९६२ ई० में मास्टर हर नारायण की मृत्यु के उपरांत संस्था के नाट्य-प्रदर्शन बंद हुए।[1]

नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा—[2]

सन् १९१७-१९१८ ई० के आसपास गोकुलपुरा तथा वल्का बस्ती के रंगमंच प्रेमी युवकों ने नागरी प्रचारिणी सभा में 'महाभारत' का मंचन किया। इस नाटक में रामकृष्ण दवे, करनैल नागर, त्रिलोकीनाथ वैद्य, श्यामसुन्दर दवे, राधेलाल जौहरी, बड़े भैयाजी, छोटे भैयाजी और ठाकुर उदयसिंह आदि रंगकर्मी थे। इस नाटक का प्रदर्शन लगभग सप्ताह चला। इसमें लगभग १०-१५ हजार रुपया खर्च हुआ। नाटक के अन्तिम प्रदर्शन के दिन कुछ झगड़ा हो गया और कुछ लोगों ने रंगमंच को आग लगा दी। अत: नाट्याभिनय का जोश यहीं ठण्डा पड़ गया।

जन-नाट्य-संघ—

आगरा स्थित जन-नाट्य-संघ के कर्णधार हैं राजेंद्र रघुवंशी। इन्हीं के नेतृत्व में निम्नांकित नाट्यकृतियाँ मंचित हुई हैं।—

'राजाजी, दिल बैठा जाय' (१५ अगस्त १९४७), 'पाँच बहनें' (१९४९) [अमृता प्रीतम कृत 'जिंदगी' का नाट्य रूपाँतर], 'प्लानिंग या गिरती दीवारें, अमृतलाल नागर कृत 'नवाबी मसनद' का नाट्यरूपांतर (१९५५), उदयशंकर भट्ट कृत 'दस हजार' (१९५५), 'गोदान' (प्रेमचंद की कृति का नाट्य रूपांतर), 'सूरे की आँखें' (प्रेमचंद के 'रंगभूमि' का नाट्य-रूपांतर), 'सेवासदन,' 'चौपाल', 'आखिरी धब्बा,' 'पंचशील,' 'विजय पर्व' (१९५३)।

दिसंबर १९६९ ई० को उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित समारोह में जन-नाट्य-संघ ने राजेंद्र रघुवंशी कृत प्रेमचंद के उपन्यास 'रंगभूमि' का नाट्य रूपांतर 'सूरे की आँखें' प्रस्तुत किया। राजेंद्र रघुवंशी ने ताड़ी विक्रेता भैरों का सुन्दर अभिनय किया। इस नाटक का प्रदर्शन बहुत प्रशंसनीय रहा।[1]

१. शरद नागर : नटरंग, वर्ष ३, अंक ९, पृ० ७८-७९ (के आधार पर)।
२. वही : पृ० ७८।
३. डा० अज्ञात : नटरंग, वर्ष ३, अंक, १२ पृ० ७५।

ब्रजकला केंद्र, नीलकमल कला मंदिर, भारतीय कला परिषद् और कला संगम आगरा की अन्य नाट्य-संस्थाएँ हैं।

वृन्दावन

मित्र मंडल नाट्य समिति—

६ नवंबर १९२५ ई० रात्रि को १२ बजे से स्थानीय मित्र मंडल नाट्य-समिति ने 'शाहजहाँ' नाटक का अभिनय कर समागत प्रतिनिधियों का मनोरंजन किया।[१]

रायबरेली

रायबरेली अमेच्युअर थियेट्रिकल सोसाइटी—

इस संस्था ने असर लखनवी द्वारा अनूदित नाटक 'जंगारी बेगम' को डिस्ट्रिक्ट हेल्थ एंड मेटर्निटी लीग की मदद के लिए २६ नवंबर १९२९ ई० को खेला।[२]

मेरठ

मुक्ताकाश संस्थान—

मुक्ताकाश संस्थान की स्थापना सुरेंद्र कौशिक ने सन् १९६४ ई० में की। संस्थान का अपना मुक्ताकाश रंगमंच है। इसे मेरठ के युवा नाट्य-प्रेमियों को एकत्रित कर के श्रमदान द्वारा निर्मित किया गया। इस संस्था की विशेषता यह है कि प्रदर्शन के समय पिछले नाटकों की चित्रवीथि (आर्ट गैलरी) का आयोजन किया जाता है। संस्था द्वारा अभिनीत नाटकों की सूची निम्न प्रकार है—

क्रम	नाटक का नाम	लेखक	प्रदर्शन संख्या
१.	नीली झील	डा० धर्मवीर भारती	१० बार
२.	अछरियों का तालाब	डा० ललित मोहन थपल्याल	८ बार

१. षोडश हिंदी सम्मेलन, वृन्दावन के कार्य विवरण से, पृ० ५३।

२. डा० ए० ए० नामी : उर्दू थियेटर, तीसरा भाग, पृ० १२३।

क्रम	नाटक का नाम	लेखक	प्रदर्शन संख्या
३.	इडिपस रैक्स	सफोक्लीज	१० बार
४.	पंच परमेश्वर	मुन्शी प्रेमचंद	५० बार
५.	उसने कहा था	चंद्रधर शर्मा गुलेरी	४ बार
६.	रक्तचंदन	विष्णु प्रभाकर	४ बार
७.	उलझन	रमेश मेहता	८ बार
८.	ज़माना	रमेश मेहता	१ बार
९.	अपराधी कौन	रमेश मेहता	८ बार
१०.	खून की आवाज	रामकुमार भ्रमर	४ बार
११.	औरंगजेब की आखिरी रात	डा० रामकुमार वर्मा	४ बार
१२.	नव ज्योति की नई हीरोइन	सत्येंद्र शरत्	४ बार
१३.	कफ़न	प्रेमचंद	४ बार
१४.	गाँव का ईश्वर	डा० लक्ष्मी नारायण लाल	४ बार
१५.	सुबह होती है शाम होती है	ललित मोहन थपल्याल	४ बार
१६.	रजनी गधा	धनंजय वैरागी	४ बार
१७.	पैसा बोलता है (कांचन रंग)	शंभु मित्र	४ बार
१८.	सराय के बाहर	कृश्नचंद्र	२ बार
१९.	चाँदनपुर के महावीर	मुनि विद्यानंद	१ बार
२०.	ढोंग	रमेश मेहता	२ बार
२१.	एक डाक्टर सौ मरीज	अरुण	२ बार
२२.	नक़ाब	वनफूल	४ बार
२३.	नया पुराना	पंचानन पाठक	४ बार
२४.	पद्मश्री	आई० एस० जौहर	२ बार
२५.	दिया बुझ गया	करतार सिंह दुग्गल	४ बार
२६.	बाहर का आदमी	डा० लक्ष्मी नारायण लाल	४ बार

२७.	फिर बाजेगी शहनाई	सतीश डे
२८.	दामाद	रमेश मेहता

इनके प्रदर्शन प्रायः साप्ताहिक या पाक्षिक होते हैं। अधिकांश दर्शक वर्ग संस्था के सदस्य ही होते हैं। इस संस्थान द्वारा एक नाट्य-विद्यालय संचालित है। इसमें दो वर्षीय शैक्षिक एवं क्रियात्मक पाठ्यक्रम है।

सुरेंद्र कौशिक, श्रीमती डा० इन्दु, कुमारी रजनी शर्मा, कुमारी मनोरमा गर्ग, कुमारी मंजु शर्मा, महेंद्र कौशिक, देवेंद्र गौड़, गंगाशरण शर्मा, जगदीश सिंह, जगभूषण वढ़ेरा, विक्रांत कुमार, जहीर अहमद, महेश चंद्र जैन, कुलभूषण, राजकुमार आदि इस संस्थान के रंगकर्मी है।[1]

नवंबर १९६८ ई० में प्रस्तुत 'दिया बुझ गया' के कलाकार निम्नांकित रूप में थे—

रजनी राठौर	:	बूढ़ी माँ
सलीम	:	सुल्तान
राजेंद्र मनोज	:	अली जू
सुमन	:	राजी

इस नाटक का निर्देशन सुरेंद्र कौशिक ने किया था। प्रकाश-योजना देवेंद्र गौड़ की थी। प्रदर्शन में अभिनय, वेशभूषा, दृश्यबंध, रूपसज्जा सभी कुछ व्यवस्थित और सराहनीय था।[2]

सीतापुर

सन् १९६४ ई० के बाद निम्नांकित नाटक सीतापुर के शौकिया रंगकर्मियों द्वारा प्रदर्शित हुए :—

कोणार्क (जगदीश चन्द्र मायुर)
अजात शत्रु (जयशंकर प्रयाद)
कांचन रंग (शंभु मित्र, अमित मैत्र)
नेफा की एक शाम (ज्ञानदेव अग्निहोत्री)
गुनाह के साये ('फिगर प्रिंट' का अनुवाद)
मिस्टर अभिमन्यु (डा० लक्ष्मी नारायण लाल)
सुन्दर रस (डा० लक्ष्मी नारायण लाल)
अंडर सेक्रेटरी (रमेश मेहता)

---

१. उपर्युक्त जानकारी श्री सुरेंद्र कौशिक के सौजन्य से प्राप्त।
२. नटरंग : वर्ष २, अंक ८, पृ० ५०।

और घंटी बजती रही
लघु केशती तिरुव
छोटे मियाँ
अटैजी केस
सफर के साथी
दो कलाकार (भगवती चरण वर्मा)

शिवपुर

ललित कला संगम—[1]

'ललित कला सङ्गम' की स्थापना नवंबर १९६९ ई० में श्री महेश्वर पति त्रिपाठी की प्रेरणा तथा श्री रामलषन केसरी एवं बुधिराम वर्मा की लगन व उत्साह से श्री अर्जुनलाल जालान की अध्यक्षता में शिवपुर में हुई। श्री सुशील भद्र शाह, श्री राधेश्याम जालान ने अपने सहयोग से इसे पुष्पित एवं पल्लवित किया। संगम ने 'अनहोनी', 'कैदी की कराह', 'लव-कुश' नाटक खेले। 'लवकुश' का अभिनय ६-३-७० ई० को 'श्री नाट्यम्' के तत्त्वावधान में उसके तेरहवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित पंच-दिवसीय नाट्य-समारोह के अवसर पर हुआ।

---

१. श्री नाट्यम् पत्रिका वर्ष ७०, पृ० ५६ (से उद्धृत)।

सप्तम अध्याय

राजस्थान, मध्यप्रदेश और बिहार का रंगमंच

सप्तम अध्याय

राजस्थान, मध्यप्रदेश और बिहार का रंगमंच

राजस्थान

झालावाड़ की नाट्य-संस्था—

झालावाड़ के महाराजा सर भवानी सिंह जी ने इस संस्था की स्थापना की। इस संबंध में डा० कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह ने विवरण दिया है—"सन् १६०३ ई० के दिल्ली दरबार में बंबई, कलकत्ता, इलाहाबाद, मेरठ, कानपुर, आगरा आदि से बहुत सी नाटक कंपनियाँ गई थीं। यहीं आगरा की एक कंपनी के डाइरेक्टर मिर्जा नजीर बेग महाराजा के होम मिनिस्टर के विशेष कृपापात्र बन गये। अतएव अपने होम मिनिस्टर की संस्तुति के फलस्वरूप महाराजा भवानीसिंह ने नजीर बेग को अपने कुछ चुने हुए अभिनेताओं के साथ झालावाड़ बुलाया। इनके झालावाड़ पहुँचते ही वहाँ नाट्य-शाला की नींव पड़ी।"[1] सन् १६०४ ई० तक डाइरेक्टर नजीर बेग ने चार नाटकों के अभिनय की तैयारी कर ली। ये नाटक थे—गुलरूजरीना, गुलेनार फिरोज, खूने नाहक और हरिश्चन्द्र। आगे के दो वर्षों में नजीर बेग ने अपने निर्देशन में चंद्रावली, लैला मजनू, अलीबाबा चालीस चोर, मोरध्वज, गुलबकावली, चित्रावकावली, हकीकतराय, पूरन भक्त, फिसाना अजायव, खुदा दोस्त, इन्द्र सभा, नलदमन, जहर इश्क, शीरी फरहाद, भूलभुलैया, माहीगीर, अलादीन का चिराग और कत्ल नजर प्रस्तुत किये। एक दिन विशिष्ट खेल देखने के लिए महाराज आने वाले थे। पर रात को राजमाता की मृत्यु हुई। उस खेल को अशुभ मानने के कारण नजीर वेग तथा उनके साथियों को झालावाड़ छोड़ना पड़ा। सन् १६०६ ई० में इस नाट्य संस्था का प्रबंध तुलसीराम का स्वर्गवास हो गया। अतः संस्था फिर वंद पड़ गई।

---

१. डा० कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह : हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३६७।

अमेच्योर ड्रामेटिक कंपनी—

१९०८ ई० में इस कंपनी की स्थापना हुई। महाराजा के जन्मदिवस पर इस कंपनी ने कुछ अभिनय प्रस्तुत किये इससे सन्तुष्ट होकर महाराजा ने स्थायी नाट्यशाला बँधवायी। इस नाट्यशाला में 'गुलनार-फीरोज' खेला गया। स्वयं महाराजा प्रेक्षकों में से एक थे। इससे प्रभावित होकर उन्होंने आगरा से फिर नजीर बेग को बुला लिया। सन् १९१४ ई० में महाराज भवानीसिंह ने अभिनेताओं को प्रशिक्षित करने के लिए बंबई से मास्टर पुरुषोत्तमदास को बुलवा लिया और सन् १९१५ ई० में सोहराब जी की कंपनी से अब्दुल रऊफ को। मृत्यु तक ये दोनों कलाकार झालावाड़ में ही रहे। १६ जुलाई १९२१ को 'सिकंदर' खेला गया। सन् १९३२ ई० में महाराजा राजेंद्रसिंह ने स्वयं 'अभिमन्यु' लिखा। सफलता पूर्वक यह नाटक खेला गया। फिर सन् १९४० ई० में युवराज के विवाह के अवसर पर 'कृष्ण कमला' का अभिनय हुआ। राणा राजेंद्र सिंह की मृत्यु से यह नाट्य-संस्था समाप्त प्रायः हुई।[1]

जयपुर—[2]

जयपुर में मोहन महर्षि ने 'भूमिजा', 'कौआ चला हंस की चाल', 'एवं इंद्रजित', 'आषाढ़ का एक दिन', 'शुतुरमुर्ग', आदि नाटकों का मंचन करवाया। १९६९ ई० में 'कस्तूरी मृग', (पु० ल० देशपांडे), 'सुनो जनमेजय' (आद्य रंगाचार्य), के हिन्दी रूपांतर मंचित हुए। 'कस्तूरी मृग' के निर्देशक थे पिंचो कपूर' और 'सुनो जनमेजय' का निर्देशन किया था मोहन महर्षि ने। 'अफसास हम न होंगे' को हनुमान प्रसाद सक्सेना के निर्देशन में खेला गया। यह नाटक Send me no Flowers का रूपांतर था और रणवीर सिंह ने इसे हिन्दी का जामा पहनाया था। सन् १९७० ई० में ब्रेख्त के 'दी मदर' का हिंदी अनुवाद 'माँ' खेला गया। जार्ज बर्नार्ड शॉ के 'पिगमेलियन' का रूपांतर 'आजर का ख्वाब' (रूपांतरकार : श्रीमती कुदसि जैदी) के नाम से मंचित हुआ। इसके निर्देशक थे मोहन महर्षि। अमृतराय की रचना 'चिंदियों की झालर' का प्रदर्शन एच० पी० सक्सेना के निर्देशन में

---

१. डा० कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह : हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ० ३६९ से सामग्री सचित।

२. सामग्री का आधार : डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्य शालाएं, पृ० ६९-७३।

हुआ। 'मरजीवा' का निर्देशन एस० वासुदेव ने किया था। कृष्णचंदर के 'दरवाजे खोल दो' का निर्देशन हनुमान प्रसाद सक्सेना ने किया था और 'ईश्वर अल्ला तेरो नाम' के निर्देशक थे रणवीर सिंह।

जयपुर के रवीन्द्रालय में नीचे लिखे नाटक मंचित हुये—

१९६६—कंजूस, तुगलक, ढोंग, अंडर सेक्रेटरी, भूमिजा, उधार का पति, जलन, प्यार का मिलन, अपनी-अपनी करनी, कोणार्क।

१९६७—रेत की दीवार, नेफा की एक शाम, सोना सोना सोना, कांचन, रंग कठ-घरे माटी जागीरे।

१९६८—गुस्ताखी माफ, एवं इंद्रजित, सोना सोना सोना, कोहिनूर का लुटेरा, छपते-छपते, आषाढ़ का एक दिन, पत्थर की आँखें, दीवार, धर्मशाला, ढाई आखर प्रेम का, उलझन।

१९६९—शुतुरमुर्ग, शारदीया, आधे अधूरे, उलझन, एक और दिन, खामोश अदालत जारी है, धर्मशाला, सुनो जनमेजय, कस्तूरी मृग, कदम-कदम बढ़ाए जा, अजंता से पेरिस तक।

अमेच्योर आर्टिस्टस एसोसिएशन,[1] जयपुर—

सितंबर १९६८ में मोहन महर्षि के निर्देशन में रवींद्र मंच की छत्त पर खुले रंगमंच पर 'आषाढ़ का एक दिन' प्रस्तुत हुआ। प्रेक्षकों के लिए ऐसा मुक्ताकाश प्रदर्शन एक नई बात थी। लगातार चार संध्याओं तक विविध वर्ग के प्रेक्षकों ने उसे देखा। नाटककार मोहन राकेश भी प्रदर्शन में उपस्थित थे। पात्र-योजना निम्नरूप में थी—

मीनाक्षी शर्मा	:	मल्लिका
नंदलाल शर्मा	:	मातुल
अरूण माथुर	:	विलोम
रमा पांडे	:	अंबिका
सरताज माथुर	:	कालिदास
इला पांडे	:	राजमहिषी

अभिसारिका—

९ नवंबर १९७१ को अभिसारिका ने हमीदुल्ला कृत 'एक और युद्ध'

१. (विवरण) हरिराम आचार्य : नटरंग वर्ष ३, अंक ९, पृ० ८८।

का प्रदर्शन किया। इसके निर्देशक थे वासुदेव। मुख्य पात्र का अभिनय अलका राव ने किया।[1]

जोधपुर[2]

नाट्य-रंगलोक—

डॉ० विश्वनाथ शर्मा के अनुसार सन् १९५७ ई० से वह संस्था कार्यरत है।

इस संस्था ने निम्नांकित कृतियों का मंचन किया है—

'तुझ बिन सूना रे जग सारा' 'चार उंगलियाँ एक अंगूठा', 'काबुली-वाला', 'खून और पसीना', 'राजपूत की हार', 'जिंदगी और मौत', 'परमवीर चक्र', 'धरती स्वर्ग है,' 'तलाशे जोरू', ।

गिरीश के सुमन, प्रकाश नागर, नरेंद्र सांखला, उर्मिला नागर, सुभाष लूथरा, कमलेश शर्मा, सुरेश जंगिड, डा० विश्वनाथ शर्मा, कमल कांता शर्मा आदि इस संस्था के रंगकर्मी हैं।

श्री भास्कर नाट्य मंडल—

विश्वनाथ शर्मा (अब डाक्टर) ने सन् १९५८ ई० में इस अव्यवा-सायिक मंडली की स्थापना की। 'मुनीम चटपटलाल', 'प्रो० हिचू मिचू', 'शतरंज के खिलाड़ी' (अतुल नारायण नाखरे द्वारा रूपांतरित), 'दुनिया के दो इन्सान', 'अदालत', 'घर-घर की बात', 'रोटी और बेटी', 'बुद्ध काम शुद्ध', 'कोयना नगर का भूकम्प'. आदि नाटक इस मंडल द्वारा खेले गये।

विश्वनाथ शर्मा, गिरीश के सुमन, अतुल नारायण नाखरे इस मंडल के निर्देशक के रूप में काम करते हैं। गोयल, कुमारी मधु, बेला, सध्या चेतन आदि अन्य रंगकर्मी है। शेरसिंह, इब्राहिम, तेजसिंह इसके सगीतज्ञ हैं।

श्री एज—

(Amateur Artists' Association)

इसके संस्थापक हैं अनिल गुप्त, बाबूलाल बोहरा और लालसिंह। 'हकीम लुकमान' इनका प्रमुख प्रदर्शन रहा।

---

१. हरिराम आचार्य : नटरंग खंड ६, अंक २१, पृ० ७२।

२. आधार : डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्य शालाएं, पृ०७६-७९।

एकलव्य नाट्यदल—

मदनमोहन माथुर ने इस दल की स्थापना की। नाट्यदल ने 'स्वप्न बोध', 'आधी के अनाथ', 'कार्बन कापी', 'ग्राँड रिहर्सल', 'पेपर वेट', 'कस्तूरी मृग', 'मिस्टर अभिमन्यु' (डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल) को मंचस्थ किया है।

विजय माथुर, श्याम पंवार, रामेश्वर सिंह, आनंद शेखर व्यास, अल्ताफ, चेतन मायुर, रूपकिशोर, विजय भटनागर, अरविंद व्यास, साधना गुप्ता, दीपिका दुग्गड, रेणु माथुर, शशि माथुर, प्रमिला गुप्ता आदि इस नाट्यदल के रगकर्मी हैं।

माडर्न संगीत नाट्य संस्था—

सन् १९६४ ई० से यह संस्था कार्यरत है। इसने 'समय चक्र', 'आशा का दीप', 'मेहमान' आदि का मंचन किया। अभेसिंह गहलोत, गिरीश के सुमन, चिरंजीलाल माथुर, संतोष कालरा, सुभाष लूथरा आदि इसके कलाकार हैं।

मयूर नाट्य संघ—

इसकी स्थापना १४-१-१९७१ को अब्दुल गफूर खान ने की। इस संस्था ने 'उजले शरीफ' और 'ओबे आदमखोर' खेला। इन दोनों के लेखक एवं निर्देशक अब्दुल गफूर खान ही हैं। इसके कलाकार हैं—रघुवीर, श्याम पंवार, रवि, महेश माथुर, अशोक माथुर, बहादुर चंद, आशा पाराशर, मधु ललिता जोशी और गोवर्द्धन दैया आदि हैं। डॉ० विश्वनाथ शर्मा परामर्शदाता एवं निर्देशक के रूप में इस संस्था की सेवा करते हैं।

बीकानेर

नवयुग नाट्य निकेतन—[1]

कुछ उत्सुक कार्यकर्ताओं ने मिलकर सन् १९४८ ई० में नवयुग नाट्य निकेतन की स्थापना की। १९४८ से १९५४ तक इसने पाँच नाटक तथा संगीत समारोहों का आयोजन किया। नेशनल थियेटर की स्थापना से नवयुग नाट्य निकेतन का अस्तित्व समाप्त हुआ।

---

१. रामनरेश सोनी : साप्ताहिक सेनानी, बीकानेर-(नव वर्ष प्रवेश दीपावली विशेषांक)-पृ० २३।

नेशनल थियेटर—

बीकानेर की अन्य छोटी-मोटी संगीत तथा नाटक से संबंधित संस्थाएँ नवयुग नाट्य निकेतन में मिली और सभी ने मिलकर १९५५ में नेशनल थियेटर के नाम से नयी संस्था को जन्म दिया। २५ दिसम्बर १९५५ को पृथ्वीराज कपूर की अध्यक्षता में इस संस्था का उद्घाटन हुआ। इस संस्था ने कई नाटक मंचस्थ किये।

भास्कर नाट्य मंडल—[1]

विश्वनाथ शर्मा (अब डा०) ने १९५६ ई० में इस मंडल की स्थापना की। इस संस्था ने इन्ही का लिखा 'इंसान' इन्ही के निर्देशन में खेला। शिवरतन शर्मा, चाँदरतन सेवक, फैजी, बिसन लालजी, जुगलजी सेवक, कृष्णा, अख्तर, मुस्तर आदि इसके रंगकर्मी थे। विश्वनाथ शर्मा के चले जाने से संस्था शिथिल हो गई।

अनुराग कला केंद्र—[2]

१९५७ ई० से यह केन्द्र कार्यरत है। 'देश की सीमा', 'कफन' इसके बहुचर्चित नाटक थे। जयकृष्ण व्यास, निर्मोही धनंजय वर्मा, वेद प्रकाश राही, नानक हिंदुस्तानी, यतीश शर्मा, मधु अग्रवाल, आनंद कबीर, देवकृष्ण व्यास आदि इस संस्था के रंगकर्मी है।

भरतपुर

नाट्य-समिति, भरतपुर—

भरतपुर की हिंदी साहित्य समिति ने अपने वार्षिकोत्सव पर नाट्याभिनय के लिए सन् १९१३ ई० में एक 'नाट्य-समिति की स्थापना की। इस नाट्य समिति के प्रेरणा-सूत्र थे पन्नालाल उपाध्याय। इन्हीं का लिखा नाटक 'सावित्री-सत्यवान्' खेलने की तैयारी हुई। कहा जाता है कि इस नाटक का प्रचार लगभग तीस मील दूर तक हो गया था। जनता इस नाटक को देखने के लिए काफी अधीर थी। अतः नाटक खेलने के दिन इतनी भीड़ हो गई कि समय पर अभिनय आरंभ करना असंभव हुआ और उसे स्थगित करना पड़ा। फिर दूसरे दिन, भीड़ को कम करने के लिए, टिकट लगाकर नाट्याभिनय किया।

१. डा० विश्वनाथ शर्मा : भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्यशालाएं पृ० ७४-७५।
२. वही।

टिकट की दर आठ आना,चार आना और दो आना थी। उसके वाद विशेष उत्सवों के अवसर पर भी नाटक खेले जाने लगे। देखने के लिए काफी लोग आया करते थे। इन नाटकों का उद्देश्य मनोरंजन करने के अतिरिक्त हिंदी-उत्थान के आंदोलन को और भी उग्र करना था। इस मंच पर राधेश्याम कथावाचक के भी नाटक खेले जाते थे। कन्हैयालाल के 'अंजना सुन्दरी', 'रत्न सरोज', 'शील-सावित्री'. 'प्रेममयी नाटक', और 'रसिक सुन्दरी' नामक नाटक नाट्य-समिति ने मचस्थ किये। अस्थायी रंगमंच तैयार करके नाट्याभिनय करते थे।

इस नाट्य-समिति का दूसरा उद्देश्य तत्कालीन सत्ताधारियों को खटक रहा था। अग्रेजी राज्य एवं उसकी राजनीति की दृष्टि में यह कार्य संदेहयुक्त था। इसी कारण उस समय के महाराज किशनसिंह जी ने इस समिति को कांग्रेस समर्थन संस्था मानकर, अपनी संरक्षता हटा ली।

वाट्सन एम्यूजमेंट हाल—

महाराज किशनसिंह जी ने सन् १९१८ ई० में 'वाट्सन एम्यूजमेंट हाल' नामक नाटक-मंडली की स्थापना की। इस नाटक मंडली में महाराजा ने ऐसे लोगों को रखा जिन्हें वेतन तो अपने विभाग से मिलता था. लेकिन उन्हें रंगकर्मी के रूप में ही काम करना पड़ता था। विभागीय कर्मचारियों के अतिरिक्त वाहर के कलाकारों को भी इस मंडली में समाविष्ट कर लिया गया था जिन्हें वेतन दिया जाता था। माना जाता है कि इस मंडली में डेढ़ सौ के लगभग कुल कलाकार थे। वाद्यवादकों की संख्या साठ के करीव थी। स्त्री-भूमिका के लिए इसमें स्त्रियाँ भी थीं जिनमें कल्लोवाई और श्यामात्राई के नाम उल्लेखनीय हैं। कल्लोबाई को प्रतिमास डेढ़ सौ रुपये मिलते थे।

इस मंडली के आडंबर के बारे में डा० सोमनाथ गुप्त कहते हैं[1]—"सत्य तो यह है कि नाट्यमंडल का उद्देश्य रसिक और मनोरंजनप्रिय महाराज का रुचि-प्रदर्शन तो था ही, साथ ही उसके द्वारा महाराज अपनी समृद्धि और शक्ति का प्रकाशन भी करना चाहते थे। वह प्रायः कहा करते थे—'पारसी नाटक कंपनियों और उनके चमत्कार की क्या प्रशंसा करते हो ? आकर जरा मेरे यहाँ के नाटक तो देखो।' धन और साधन का इस मंडली के लिए कोई अभाव न था। एक घटना वताई जाती है कि किसी

१. सोमनाथ गुप्त : सम्मेलन पत्रिका, भाग ५६ संख्या २,३, पृ० २।

व्यक्ति ने नाटक के एक पर्दे की ओर महाराज का ध्यान आकर्षित करते हुए कह दिया कि यदि चन्द्रमा इस स्थान की अपेक्षा अमुक स्थान पर चित्रित किया जाता तो दृश्य और अधिक सुन्दर वन जाता। महाराज के मस्तिष्क में वात वैठ गई। तुरंत दो अधिकारी वायुयान द्वारा वंवई भेजे गये और चित्रकार द्वारा परिवर्तित करा कर तत्काल वापिस आने का आदेश उन्हें दिया गया, क्योंकि अगले दिन उस पर्दे पर नाटकाभिनय होना था।" अस्तु : इस मंडली द्वारा अभिनीत नाटकों का विवरण अनुपलव्ध है।

भरतपुर ड्रामेटिक सोसाइटी—

महाराज किशनसिंह जी ने सन् १९२० ई० में 'वाट्सन एम्यूजमेंट हाल' को पुनर्गठित किया। इस पुनर्गठित मंडली का नाम आपने 'भरतपुर ड्रामेटिक सोसाइटी' रखा। अव यह सोसाइटी राजा की निजी संपत्ति न होकर शासकी संस्था वन गई। नाटक का एक अलग सरकारी विभाग खुल गया। सर्वप्रथम मेवाराम की नियुक्ति इस विभाग में सुपरिटेंडेंट के रूप में हुई। ताजगंज, आगरा के निवासी उमराव खाँ डायरेक्टर नियुक्ति हुए। मुंशी अहमद को दृश्यनिर्माण तथा रंग-स्थल की साज-सज्जा का काम सोंपा गया था। गेंदालाल संगीत-अधिकारी के रूप में कार्य करने लगे। वृजविहारीलाल, रूपा, श्यामावाई, कल्लोवाई आदि प्रमुख रंगकर्मी थे। उस समय श्यामावाई को २५०) का मासिक वेतन मिलता था।

'सैदे हविस', 'असीरे हिर्स', 'खूने नाहक', 'विल्वमंगल', 'श्रीमती मंजरी', 'चंद्रावली', मिर्जा नजीरवेग 'नजीर' लिखित 'हरिश्चंद्र', 'गुलवकावली', 'सफेद खून' और पं० नारायणप्रसाद 'वेताव' कृत 'महाभारत' आदि इस सोसाइटी द्वारा मंचित कुछ प्रमुख नाटक थे।

टिकट लगाकर नाटक खेले जाते थे। टिकटों की दर ५), ३), २), १) और आठ आने थी। कुछ अधिकारी वर्गों को 'फ्री पास' दिये जाते थे। राजा के पोलिटिकल एजेन्ट निमन्त्रितों में से हुआ करते थे।

सन् १९२६ ई० में महामना मालवीय जी के सम्पर्क तथा अन्य प्रभावों के कारण महाराज हिंदी और हिंदी के प्रति सजग हुए। सन् १९२७ ई० में हिंदी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर राधेश्याम कृत 'भक्त प्रहलाद' का मंचन हुआ। इस अवसर पर मालवीय जी, रवींद्रनाथ टैगोर, गणेश शंकर विद्यार्थी और ओझाजी भी प्रत्यक्षदर्शी थे।

प्रमुख पात्र निम्नरूप में थे—

बृजविहारीलाल : प्रहलाद

श्यामावाई : प्रहलाद की माता

बृजबिहारीलाल को सुन्दर अभिनय के लिए ११००) का पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस समय पर अंग्रेजी में एक परिचय-पत्र छपवाकर वितरित किया गया था।

राजा साहब की नाट्य-रुचि अंग्रेज सरकार को नहीं भाई। उन पर कई आरोप लगाकर उन्हें भरतपुर से दिल्ली भेज दिया गया। सन् १९२८ई. में नाटक मंडली समाप्त हो गई और नये रेजिडेंट मेकेंजी ने समस्त सामान साढ़े छः हजार रुपये में नीलाम कर दिया।

कोआपरेटिव ड्रामा क्लब—

सन् १९३३ ई० में इस क्लब की स्थापना हुई। इस नाम का अस्तित्व एक वर्ष रहा। अगले वर्ष इसका रूपांतर 'अमेच्योर क्लब' के रूप में हुआ। कोआपरेटिव ड्रामा क्लब के अन्य विवरण उपलब्ध नहीं हैं।

अमेच्युअर क्लब—

सन् १९३४ ई० में भरतपुर कौंसिल ने 'कोआपरेटिव ड्रामेटिक क्लब' का नाम 'अमेच्योर क्लब' के रूप में बदल दिया। इस क्लब ने महाराज बृजेन्द्रसिंह की वर्षगांठ पर नाटकों का मंचन किया। इनमें भरतपुर निवासी श्यामकिशोर का 'गंगावतरण', आगा हश्र कश्मीरी का 'सूरदास', राधेश्याम कथावाचक का 'ईश्वर भक्ति' और 'मशरकी हूर' प्रमुख नाटक थे। सन् १९३९ ई० में 'कृष्णावतार' मंचस्थ हुआ। राजबहादुर ने इसमें अम्बरीष का अभिनय किया था।

आजकल इस क्लब की समस्त सामग्री राजस्थान सहकारी विभाग के पास है।[1]

मध्यप्रदेश—

रीवाँ

व्याघ्रवध—

'व्याघ्रवध' की स्थापना सन् १९०३ ई० में रीवाँ नरेश महाराज

---

१. भरतपुर की सभी नाटक-मंडलियों का विवरण डा० सोमनाथ गुप्त के लेख 'भरतपुर और नाट्य-समितियाँ' (सम्मेलन पत्रिका, प्रयाग भाग ५६, संख्या—२,३—चैत्र-भाद्रपद—शक १८९२) के आधार पर दिया गया है।

वेंकटरमण सिंह ने सेना के मनोरंजन हेतु की थी। इस संस्था ने पहली बार 'सत्य हरिश्चंद्र' का मंचन किया। इसके उपरांत 'नैकहाट युद्ध' का अभिनय हुआ। पंद्रह वर्षों में इस संस्था ने बाईस नाटकों का अभिनय किया। महाराजा न केवल निर्देशन का काम किया करते थे अपितु अभिनय भी करते थे। नाटक के प्रदर्शन फौजी छावनी में होते थे।[१]

जबलपुर

खंडवा नाट्य मंडली—

हिंदी साहित्य सम्मेलन के सातवें अधिवेशन के अवसर पर इस नाट्य-मंडली ने माखनलाल चतुर्वेदी का 'कृष्णार्जुन युद्ध' खेला। इस नाटक में (अब डा०) रामकुमार वर्मा ने कृष्ण का अभिनय किया था।[२]

जबलपुर शहर नाटक का शौकीन तो है। लेकिन नेतृत्व के अभाव में नाट्य मंडलियाँ बनती हैं और अल्पायु हो कर मिट जाती है। यहाँ शहीद स्मारक के परिक्रामी रंगमंच के अतिरिक्त दोनों विश्वविद्यालयों के दो रंगमंच, मेडिकल कालेज, इंजीनियरिंग कालेज, होम साइंस कालेज, डा० हर्ष रंगमंच, नर्मदा क्लब आदि विभिन्न रंगमंच है। इनमें से शिक्षण संस्थाओं के रंगमंच वार्षिकोत्सव तक ही सीमित रहते है।

सन् १९७१ में करुणाकर पाठक ने चक्री-मंच पर मोहन राकेश का 'आधे-अधूरे' और शंकर-शेष का 'फंदी' अभिनीत कराया। नायक का अभिनय स्वयं करुणाकर त्रिपाठी ने ही किया था।

१९७२ में तरुण नाट्य संघ ने हिंदी एवं बंगाली एकांकी प्रतियोगिता आयोजित की थी।

अनुपम कला मंदिर—

१९७२ में किशन पिल्लै का लिखा 'विद्रोही' मंचित हुआ। लेखक ने ही नाटक का निर्देशन किया था। अभिनेताओं में रवींद्र मोरे ने दर्शकों से प्रशंसा पाई। शेष में हरीश, गोपालकाका, सूरदास एवं सलीम की भूमिका

---

१. धीरेंद्रनाथ सिंह : नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ७३, अंक १-४ पृ० ५३ (के आधार पर)

२. धीरेंद्रनाथ सिंह : नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ७३, अंक १-४ पृ० ५३ लेकिन शिवकुमार चवरे के अनुसार यह मंडली खंडवा की थी। (खंडवा मंच संबंधी विवरण देखिए।)

में क्रमशः मदनगोपाल, किशन पिल्लै, विष्णु अरजरिया और नवाब आलम का अभिनय अच्छा रहा। रीना के अभिनय में हास्यास्पद स्थितियों का उभार स्पष्ट था, जबकि रसीद उस्मानी और शारदादेवी अति नाटकीयता में फँसे रहे। कुल मिलाकर नाटक संतोषप्रद था।[1]

तांडव कला मंदिर—

जून १९७२ में इस संस्था ने विनोद रस्तोगी का नाटक 'बर्फ की मीनार' मंचित किया। विलियम के चरित्र को विश्वनाथ सराफ ने अपने अभिनय से जीवित कर दिया। मम्मी के रूप में श्रीमती अशोक पूरे नाटक को अंत तक बड़े जीवट के साथ सम्हाले रहीं। राज की भूमिका में विनोद तिवारी, सरोज के रूप में जीतेंद्र महाजन तथा डेविड और अल्बर्ट की भूमिकाओं का गुप्तेश पालीवाल तथा राजेंद्र दानी ने प्रशंसनीय निर्वाह किया। रोहिणी वर्मा मोना के रूप में फबीं और सफल रहीं। सराफ और विनोद तिवारी को छोड़कर सभी प्रथम बार ही रंगमंच पर आये थे। संगीत पृथ्वीराज का और मंच सज्जा ऋषिकुमार की थी।[2]

पुष्पांजलि—

जुलाई १९७२ में राजेन्द्र शर्मा का नाटक 'अपनी कमाई' खेला सुरेश बाथरे ने इसका निर्देशन किया था।

रंगकर्मी निम्न प्रकार थे।

रवि शर्मा	:	मिस्टर वर्मा
सुरेश बाथरे	:	काका
आशा पिल्ले	:	रमा
महेश भार्गव	:	चंपतराय
आशा जाधव	:	चंदा

विजय शर्मा, अमरनाथ, सुरेश गुप्ता, सुरेंद्र चौहान मोहम्मद हनफी और अनिल अन्य कलाकार थे। संगीत पृथ्वीराज का था। नाटक में बीच-बीच में शिथिलता खटकती रही।[3]

---

१. विश्व भावन देवलिया : नटरंग, खंड ५, अंक १९, अप्रैल-जून १९७२, पृ० ५८-५९।
२. वही : पृ० ५९।
३. वही : नटरंग खंड ५, अंक २०, जुलाई-सितम्बर ७२, पृ० ७१-७२।

खंडवा

'कृष्णार्जुन युद्ध' का मंचन—[1]

पं० माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने नाटक 'कृष्णार्जुन युद्ध' का अभिनय अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर खंडवा के ही कलाकारों की मदद से जबलपुर में कराया। इसके बाद यह नाटक खंडवा में भी अभिनीत हुआ। उसमें रघुनाथ सिंह ने शशि की भूमिका की थी।

नर्मदेश्वर प्रासादिक नाट्य मंडल—

सन् १६२० ई० में डा० बद्रीनारायण के निर्देशन में नर्मदेश्वर प्रासादिक नाट्य मडल की स्थापना हुई। 'कृष्णार्जुन युद्ध' के कुछ कलाकार जैसे—बलराम पगारे, बाबूलाल मारकडे, देवीप्रसाद तिवारी आदि इस मंडल में सम्मिलित हुए। इस मडल का अपना सुसज्जित रंगमंच था। हजारों रुपयों के परदे, कपड़े अन्य साधन इस मंडल ने जुटाए थे। कुछ नाटक अभिनीत हुए। लेकिन आपसी मतभेद के कारण मंडल टूट गया।

माणिक्य मंडली—

सन् १६२८ ई० में माणकचद जैन वकील के सुपुत्र हरिश्चंद्र जैन ने माणिक्य मंडल प्रारंभ किया। इस मंडल ने 'संसार चक्र', 'सत्य विजय', 'वीर अभिमन्यु' आदि प्रयोग किये।

आर्य सुबोध नाटक मंडली का रंगमंच—

नर्मदेश्वर प्रासादिक नाट्य मंडल के कुछ उत्साही कलाकारों ने सन् १६४२ ई० आर्य सुबोध नाटक मंडली के रंगमंच पर 'रणचंडी' एव 'अनोखा बलिदान' खेला जिसकी प्रशसा आर्य सुबोध के सचालक सोहराब मादी ने की थी।

शिवचरण लाल मालवीय का दिनेश नाट्य मंडल, भी कुछ वर्षो तक नाटक खेलता रहा।

बालिका कला मन्दिर—

कुंजविहारी सरमंडल, बाबूलाल मारकडे, मूलचंद शर्मा, वी० शास्त्री और शिवकुमार चवरे के सहयोग से सन् १६४५ ई० में इसकी स्थापना

---

१. खंडवा की समस्त सामग्री शिवकुमार चवरे के नवभारत टाइम्स, बंबई में छपे लेख 'खंडवा में रंगमंच कला का विकास और नाट्य मंडलों का योगदान' पर आधारित है।

हुई। इनके नाटकों में केवल बालिकाएँ ही अभिनय करती थीं, पुरुष भूमिका भी वे ही निभाती थीं। इस बालिका कला मंदिर द्वारा सन् १९५० ई० में 'ज्वाला' और सन् १९५५ ई० में 'तमसातट' गीति रूपक भूकंप पीड़ितों के सहायतार्थ खेले गये तथा हजारों का योगदान किया गया। सन् १९६५ ई० के आसपास मंडल समाप्त हुआ।

ग्वालियर

आर्टिस्ट कंबाइन—

यादवराव सदाशिवराव भागवत ने सन् १९३७ ई० में 'आर्टिस्ट कंवाइन' की स्थापना की और प्रथम नाटक 'वन्दे मातरम्' का मंचन किया। सन् १९३८ ई० में इन्होंने स्त्री-पात्रों के लिए अपनी पुत्रियों एवं बहनों को रंगमंच पर उतार कर साहस का कदम उठाया। सन् १९५१ ई० से मराठी के साथ यह संस्था हिंदी के भी नाटक खेलने लगी। १२ अगस्त १९४७ को यादवराव भागवत का स्वर्गवास हुआ। 'आर्टिस्ट कंवाइन' का अपना नाट्य मंच तथा प्रेक्षागृह है।

सन् १९६८ ई० में इस संस्था ने वार्षिक समारोह के अवसर पर मन्नू भंडारी लिखित 'बिना दीवारों के घर' का मंचन किया। भैया साहब भागवत ने इस नाटक का निर्देशन किया था। कलाकार निम्न प्रकार थे—

पुरुषोत्तम खानवलकर : अजित
उषा सुर्वे : जीजी

१२ अगस्त १९७१ ई० को 'नमस्ते मैडम फाल्सीजी' को प्रस्तुत किया। श्याम फड़के के मराठी नाटक 'खोटे बाई आता जा' का हिंदी रूपांतर राम जोगलेकर ने किया था। रंगकर्मी निम्न रूप में थे—

निर्मला देशमानकर : मैडम फाल्सी
भैया भागवत : मुखिया
उर्मिला दाते : मुखिया की पत्नी
कृष्णराव वोकिल : ससुर
सरिता देशमानकर : पुत्री
अजय भागवत : पुत्र
निर्देशक : भैया भागवत
दृश्य सज्जा : बालकृष्ण करड़ेकर

नाटक सभी दृष्टियों से सुन्दर था।[1]

इस संस्था ने अक्टूबर १९७१ ई० में बादल सरकार के 'बाकी इतिहास' को मंचस्थ किया। राम जोगलेकर, उर्मिला दाते, वसंत परांजपे, शशि ओदक आदि रंगकर्मियों ने इसमें भाग लिया था।

मंच सज्जा	:	बालकृष्ण करडेकर
प्रकाश	:	रवींद्र पुंडे
संगीत	:	शशि ओदक

इस नाटक का मंचन सफल रहा।[2]

कला मन्दिर—

सन् १९६८ ई० के वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रेमचंद कश्यप लिखित 'शहीदों की बस्ती' प्रस्तुत हुआ। रंगकर्मी निम्नांकित रूप में थे—

दिनेश दीक्षित	:	करीमा
संतोष शर्मा	:	सोहनी
उषा सुर्वे	:	बुवा
रमेश उपाध्याय	:	मूसा

जुलाई १९७१ ई० में कला मंदिर ने कृष्ण किशोर श्रीवास्तव की कृति 'रास्ते, मोड़ और पगडंडी' का मंचन किया। इसके नीचे लिखे कलाकार थे—

सत्यपाल बत्रा	:	पिता
नवकुमार बागची	:	नौकर
नलिनी शर्मा	:	अचला
कुमारी कुसुम गर्ग	:	बहू
सुभाष कश्यप	:	नायक
केशव नायक	:	खलनायक
निर्देशक	:	प्रभात गांगुली
रंग सज्जा	:	कमल वाशिष्ठ
रूप सज्जा	:	केशव श्रीवास्तव
प्रकाश	:	शिवदासानी
संगीत	:	विजय दलवी

नाटक का प्रस्तुतीकरण सुन्दर था।[3]

---

१. कमल वाशिष्ठ : नटरंग खंड ५, अंक १८, पृ० ६२-६३।

२. कमल वाशिष्ठ : नटरंग खंड ५, अंक १८, पृ० ६२-६३।

३. कमल वाशिष्ठ : नटरंग खंड ५, अंक १८, पृ० ६२।

कला भारती—

जनवरी १९७१ ई० में इस संस्था ने ज्ञानदेव अग्निहोत्री का 'चिराग जल उठा' का मंचन किया। रंगकर्मी निम्न प्रकार थे—

सुनीता गौड	:	रुहि बेगम
सुशील दादू	:	नाना साहब पेशवा
सुनील गौड	:	टीपू सुल्तान
अखिल पारिक	:	हरि पंत
अशोक दुलानी	:	जनरल वर्ड
निर्देशक	:	के० सी० वर्मा एवं रमेश उपाध्याय

इस नाटक की प्रस्तुति सफल रही।[1]

इंदौर

नाट्य भारती—

नाट्य भारती की स्थापना १५ अगस्त १९५५ ई० को इन्दौर में हुई थी। इस संस्था का उद्देश्य हिंदी और मराठी रंगमंच तथा अभिनय-कला का सम्वर्द्धन करना है। संस्था अपने इस उद्देश्य की पूर्ति लिटिल थियेटर के माध्यम से करती है जिसे इस संस्था की प्रयोगशाला कहा जा सकता है। यह थियेटर आधुनिक तथा क्लासिकल नाटक प्रस्तुत करता है और अब तक ६०० नाटक प्रदर्शित कर चुका है।

नाट्य भारती के प्रमुख संचालक तीन व्यक्ति हैं—राहुल बारपुते, विष्णु चिंचालकर और बाबा डिके जो मराठी भाषी हैं। ये ही अभिनय में प्रमुख अभिनेता और निर्देशक भी होते हैं। चिंचालकर जी मंच-निर्माण, मंच व्यवस्था, साज-सज्जा, प्रसाधन आदि सम्हालते हैं। निर्देशन का मुख्य दायित्व राहुल बारपुते निभाते हैं, प्रमुख नट या अभिनेता की भूमिका बाबा डिके।

इस नाट्य संस्था के सब कार्यक्रम इसके अपने सदस्यों के सम्मुख होते हैं। सभी सदस्य सुसंस्कृत और सुशिक्षित हैं। जिनमें अधिकतर उच्च सरकारी अधिकारी या महाविद्यालयों के अध्यापक और साहित्यकार हैं।

नाट्य भारती ने सन् १९६१ ई० में विराज के किये 'मालविकाग्निमित्र' का अनुवाद अभिनीत किया। फिर सन् १९६२ ई० में 'अभिज्ञान शाकुन्तल'

---

१. कमल वाशिष्ठ : नटरंग खण्ड ५, अंक १८, पृ० ६४।

और 'विक्रमोर्वशीय' के हिंदी अनुवादों के कुछ अंशों का आरंगण हुआ। इन तीन नाटकों में भूमिकाएँ निभाने वाले प्रमुख रंगकर्मी निम्न रूप में थे—

शाकुन्तल में—

राहुल बारपुते	:	दुष्यन्त
सुमन धर्माधिकारी	:	शकुन्तला
तारा चिंचालकर	:	प्रियंवदा
बाबा डिके	:	निर्देशक

मालविकाग्नि मित्र में—

राहुल बारपुते	:	अग्निमित्र
सुमन धर्माधिकारी	:	धारिणी
डा० वसुन्धरा कालेवार	:	मालविका
सुमन दांडेकर	:	कौशिकी
वसन्त	:	विदूषक
निर्देशक	:	बाबा डिके

विक्रमोर्वशीय में—

राहुल बारपुते	:	पुरूरवा
निर्मला दाणी	:	उर्वशी
विदूषक	:	अरूण डिके

इन नाटकों के प्रस्तुतीकरण के बारे में श्यामू सन्यासी का कथन है कि दर्शकों ने तीनों ही नाटकों को पसंद किया। अभिनय और प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से ये वास्तव में निर्दोष थे।[1]

सागर (मध्य प्रदेश)

कल्चर—

सागर विश्वविद्यालय में प्रारंभ में 'कल्चर' नामक संस्था थी। उसने 'कलंक रेखा', 'उधार का पति' का मंचन किया।

---

१. समस्त सामग्री का आधार : डा० देवेन्द्र कुमार : संस्कृत नाटकों के हिंदी अनुवाद, पृ० २५४ तथा २६१-२६२।

प्रयोग—[1]

'प्रयोग' की स्थापना श्रीमती फ्रेन्साइन्न वर्मा, जितेंद्र शर्मा और अभय सिनहा के प्रयत्नों से सन् १९६३ ई० में हुई। बी० रमन्ना, सत्येन, कीर्ति व्यास और विवेकदत्त झा कार्यकारी मंडल में थे। बाद में मंदा हर्डीकर, साधना गुप्ता (अब साधना सिनहा), शमशेर कौर, कमलाशंकर शुक्ला और अमेरिका से लौटने पर विजय चौहान इसके सदस्य बने। नरेंद्रसिंह, माया शाह, प्रकाश हर्डीकर और कल्पना तिवारी बाद में सदस्य बने।

'प्रयोग' ने एंटव चेखव के 'प्रपोसल' (शादी का प्रस्ताव) 'एनिवर्सरी' (रजत जयंती), 'बियर' (भालू), टेनिसी विलियम्स का 'लेडी आफ लाक्स-परलोशन' और 'उधार का पति' का मंचन किया। इन पाँचों नाटकों के निर्देशक थे जितेंद्र शर्मा। धर्मवीर भारती के 'अन्धा युग', 'संगमरमर पर एक रात', अमृत राय के 'चिंदियों की झालर', 'मेकबेथ', 'वेटिंग फॉर गोडो' (अँग्रेजी में) के निर्देशक थे प्रो० विजय चौहान। बादल सरकार के 'बाकी इतिहास' का मंचन सन् १९६९ ई० में हुआ। इसका निर्देशन कमला शंकर शुक्ल ने किया था। इसमें सुभाष शर्मा कनक के पिता बने थे और माया शाह ने कनक की भूमिका निभाई थी। 'एवं इंद्रजीत' २८ जनवरी १९७१ ई० को मंचस्थ हुआ जिसका निर्देशन प्रकाश हर्डीकर ने किया था।

युवक कल्याण परिषद्—

युवक कल्याण परिषद सागर विश्वविद्यालय की अपनी संस्था है जिसका अध्यक्ष किसी विभाग का अध्यक्ष होता है। डा० देवेंद्रनाथ मिश्र ने इस पद पर रह कर प्रशंसनीय कार्य किया है। सन् १९६९ ई० से नाटकों का आरंगण प्रारंभ हुआ। उसी वर्ष शंभु मित्र और अमित मैत्र का नाटक 'कांचन रंग' हिंदी में प्रस्तुत किया गया। इसका निर्देशन मिहिर कुमार चटर्जी ने किया था। उत्पल दत्त का 'फरारी फौज' ६ और ८ अक्तूबर १९७० ई० को मंचस्थ हुआ। इसके निर्देशक थे विवेकदत्त झा और मिहिरकुमार चटर्जी। इसके कलाकार[2] निम्नरूप में थे—

मिहिर चटर्जी : शांति राय
विवेकदत्त झा : पुलिस इन्स्पेक्टर हितेंद्र

---

१. प्रयोग और युवक कल्याण परिषद की जानकारी प्रो० विवेकदत्त झा के सौजन्य से प्राप्त।

२. विवेकदत्त झा : नटरंग खंड ४, अंक १५-१६ पृ० ५३।

रमेश चौबे	:	सब इन्स्पेक्टर
सुनीला वर्मा	:	राधा
मनजीत रंधावा	:	अशोक की माँ
बलभद्र तिवारी	:	अशोक
प्रेमशंकर	:	अशोक के पिता

रायपुर

हस्ताक्षर—[१]

सितंबर १९७१ ई० में 'हस्ताक्षर' ने 'बाकी इतिहास' का मंचन किया। इस नाटक के निर्देशक थे विमल अवस्थी और विभुकुमार। कलाकार निम्न रूप में थे—

किशोर	:	वासुदेव
परवीन	:	कनक
वीरेंद्र भारद्वाज	:	विजय और बूढ़ा
श्रीनिवास नायडू	:	आगंतुक
भारती	:	वसती
इक़बाल	:	निखिल
बदामी	:	विधुभूषण

प्रकाश-व्यवस्था अशोक भट्टाचार्य की थी।

३० अगस्त ७१ ई० को 'एक सड़क' नाटक प्रस्तुत हुआ। नाटक के लेखक एवं निर्देशक सुव्रत बोस ने याह्याँ की भूमिका निभायी थी तो करुणाशंकर आइच मुजीबुर्रहमान बने थे। जलील रिजवी, राजेंद्र मिश्र, कामेश अग्निवंशी अन्य कलाकार थे।[२]

अग्रगामी तथा प्रयास—

इन दोनों नाट्य संस्थाओं के संयुक्त प्रयास से हताहत सैनिकों के सहायतार्थ 'एवं इंद्रजीत' का अभिनय जनवरी ७२ में रंगमंदिर में हुआ। अनिल पटेरिया ने निर्देशन किया था। कलाकार निम्नरूप में थे।—

सुव्रत बोस	:	इंद्रजीत
माया अरोरा	:	मानसी
करुण पांडेय	:	अमल

---

१. समरकुमार सरकार : नटरंग खण्ड ५ अंक १७, पृ० ७४।

२. अनिल कुमार पटेरिया। नटरंग खण्ड ५ अंक १८, पृ० ६५-६६।

महेश व्यास	:	विमल
इकरार हैदर जावेद	:	कमल
बीना नाथ	:	मौसी

कीर्ति व्यास और चंद्रमोहन वर्मा ने पार्श्व संगीत दिया था। जी० एम० खान ने रूप-सज्जा की व्यवस्था की। मंचसज्जा दशरथ सिंह ठाकुर की थी। अब्दुल कलाम तथा जमाल अहमद रिजवी की प्रकाश-योजना सराहनीय थी।[1]

बिलासपुर

नवनाट्यम्—

यह संस्था बँगला नाटकों के साथ हिंदी नाटक भी खेलती है। इस संस्था ने ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटक 'माटी जागी रे' को छः बार मंचस्थ किया। 'दरवाजे खोल दो' (कृष्ण चंदर) और 'ढोंग' (रमेश मेहता) नाटक भी सफलता पूर्वक मंचित हुए हैं। इस संस्था को सरकार से अनुदान भी प्राप्त है।[2]

हिन्दी साहित्य समिति—

हिंदी साहित्य समिति ने 'सरहद' (कृष्णकुमार गौड़), 'हिमालय ने पुकारा' (सतीश डे), 'इंसान और शैतान' (सतीश डे), 'अंडर सेक्रेटरी' (रमेश मेहता), 'दामाद' (रमेश मेहता) आदि नाटक मंचस्थ किये। इन नाटकों के मंचन में इंद्रदत्त वाजपेयी और विनय मुखर्जी ने विशेष योग दिया।[3]

रंगमंच—

रंगमंच की स्थापना १९६६ ई० में हुई। इसने 'स्वाँग' (रमेश मेहता), 'मौत के साये में' (राजकुमार अनिल) आदि को मंचस्थ किया।[4]

नवप्रभात कला संगम—

सन् १९६८ ई० में इसने सतीश डे कृत 'संजोग' खेला। इसका निर्देशन हामिद अली खाँ ने किया।[5]

---

१. प्रभाकर चौबे : नटरंग खण्ड ५ अंक १८, पृ० ६५।

२. चंद्र : नटरंग खण्ड २, अंक ८, पृ० ५२।

३. वही। ४. वही। ५. वही।

'हस्ताक्षर'—

'हस्ताक्षर' के युवा कलाकारों ने १३ जुलाई १९७० ई० को सागर के निर्देशन में सड़क के नाटक 'भिखमंगे' का प्रदर्शन किया। अपने आप में यह एक नया प्रयोग था। नाटक में भाग लेने वाले युवा कलाकारों में विभुकुमार, भारद्वाज, समीर, कपासी, प्रेम मिश्र, नंदकिशोर तिवारी तथा सर्वेश सक्सेना प्रमुख थे।[१]

भोपाल

'बंधन अपने-अपने' का अभिनय—

नाटककार : डा० शंकर शेष

इस नाटक का प्रथम मंचीकरण 'नाट्य सुधा' के चतुर्थ वार्षिक समारोह के अवसर पर दिनांक २५ सितंबर १९७१ ई० को रवींद्र नाट्यगृह, भोपाल में हुआ। रंगकर्मी निम्न प्रकार थे—

भानु चंदवासकर : डा० जयंत
माधव टोकेकर : डा० तर्कतीर्थ
यशवंत मरूडकर : अनादि
राकेश जैमिनी : चंदन
सौ० मोहिनी मरूडकर : चेतना
रंगमंच एवं प्रकाश व्यवस्था : विनायक चासकर
रंगभूषा : वसंत कानिटकर
व्यवस्था : पंडित, गिरीश सावरकर, राम पाटिल, भैय्या साहब मटकेला, अशोक गरुड़
दिग्दर्शन : कु० शि० मेहता, भानु चंदवासकर
प्रस्तुति : गजानन नागचंडी

बिहार—

पटना

पटना नाटक मंडली—

पं० केशवराम भट्ट ने सन् १८७६ ई० में 'पटना नाटक मंडली' की

१. सागर एवं नंदकिशोर तिवारी : नटरंग खण्ड ४ अंक १५-१६, पृ० ५८ और ६३।

स्थापना की। दिसंबर १८७६ ई० में केशवराम भट्ट लिखित 'शमशाद सौसन' खेला गया।[1] केशवराम भट्ट, दामोदर शास्त्री सप्रे, बाल गोविंद चरण एम० ए०, बाबू शिवशरण लाल बी० ए० के प्रयत्न से इस नाटक का अभिनय काफी सफल रहा। पटना की 'विहार बंधु' साप्ताहिक पत्रिका ने इस नाटक के बारे में लिखा था कि "पहले पहल 'विहार बंधु' छापाखाने में यहाँ के सभ्य और शिक्षित रईसों ने अभिनय देखकर बड़ी संतुष्टता प्रकट की थी। बल्कि इस प्रांत में नाटक का ख्याल उसी वक्त से लोगों को हुआ था।"[2]

इस मंडली का दूसरा अभिनीत नाटक था 'सज्जाद सुंबुल'। इसमें केशवराम भट्ट ने भी भूमिका ग्रहण की थी। कई बार यह नाटक सफलतापूर्वक खेला गया।

इंडियन पीपल्स थियेटर असोसिएशन--

भारतीय जन नाट्य संघ की यह विहार शाखा है जिसकी स्थापना सन् १९४७ ई० में हुई। पूरे प्रदेश पर भ्रमण कर इसने नाट्य अभिनीत किये हैं। अभीनीत नाटकों में प्रमुख हैं—

'ब्लैंक चैक', 'रोबोट', इत्यादि। रविवार ३ मई, १९५९ ई० को फाइन आर्ट्स थियेटर, दिल्ली में 'पीर अली' का मंचन हुआ। इसका विवरण निम्न रूप में है—

नाटककार	:	लक्ष्मी नारायण
मंच एवं दृश्य	:	सव्यसाची राय
		सतीश
		कालिदास
		मुरारी प्रसाद
प्रकाश व्यवस्था	:	राय शंकर लाल
संगीत	:	इनायत हुसेन
वेषभूषा	:	अली अहमद
संपत्ति	:	वीजन मुखर्जी
मंच व्यवस्थापक	:	सव्यसाची राय

१. डा० भानुदेव शुक्ल के अनुसार दिसंबर १८७७ ई० में नाटक खेला गया। 'भारतेंदु युगीन नाट्य साहित्य', पृ० ३१२।

२. विहार बंधु : १८ दिसम्बर १८८४ ई०, पृ० ३।

रूप सज्जा	:	राजेन दत्त
		सरोज गुप्त

पात्र योजना निम्न प्रकार थी—

टी० एन० शुक्ल	:	रामसिंह
राज आनंद	:	अहमद
वासी अहमद	:	जसवंत
ए० डब्लू० खान	:	सुल्तान
सतीश के सिन्हा	:	पुलिस
काशी शर्मा	:	पुलिस
आशीष मुखर्जी	:	मेजर नेशन
विनोदानंद ठाकुर	:	हिदायत अली
रामशरन चौपड़ा	:	पीर अली
आशाद अली	:	धनी
ए० सालम	:	गजरवाला
हम्मद गफार	:	नौकर
अली अहमद	:	पीर मुहम्मद हुसेन
अमीर	:	अली करीम
शिप्रा कर्मकार	:	जुबेदा
राम मोहन प्रसाद	:	जोधा सिंह
कल्यान हज़ारी	:	विलियम टेलर
टी० एम० शुक्ल	:	सेठ मोतीचंद
एम० प्रसाद	:	सिपाही
विश्वनाथ कुमार	:	मौला बक्स
ए० डब्यू० खान	:	अर्जुन सिंह
वीरत दत्त	:	लुत्फ अली
आशाद अली	:	डा० लाल
जगदीश चौधरी	:	रहीम
विश्वनाथ कुमार	:	माणिक
कालीदास	:	पान वाला
रघुवीर	:	डुग्गी वाला
अशोक चौपड़ा	:	रहमान
वीरत दत्त	:	करमत
रामप्रसाद	:	शराबी

मालिक शौकत	:	मेहदी अली
ए० सलाम, ए० आर० खान०, पी० एन० शुक्ल, अली अहमद, गफरी इत्यादि	}	भीड़[1]

उदयकला मंदिर (सब्जी बाग) पटना—

'उदयकला-मंदिर' की स्थापना सन् १९४७ ई० हुई। २६-१-१९५६ ई० को इस संस्था ने 'शेरशाह का न्याय', 'अंबपाली' (रामवृक्ष बेनीपुरी) खेला। सन् १९५८ ई० में 'अशोक का न्याय', 'कुँवर सिंह', 'टीपू सुल्तान' नाटक खेले गये।[2]

कला निकेतन (पृथ्वीराज-पथ, पटना-३)—

'कला निकेतन' की स्थापना दिसंबर १९५४ ई० में हुई। १५ सितंबर १९५७ ई० भगवती चरण वर्मा कृत 'रुपया तुम्हें खा गया' खेला गया।[3] नवंबर १९६८ ई० में रवींद्र भवन में राजेंद्र कुमार शर्मा कृत 'रेत की दीवार' का मंचन हुआ। इस नाटक के निर्देशक थे आर० रमण। पात्र योजना निम्न प्रकार थी—

कुमारी ज्योतिर्मयी	:	रेखा
कुमारी सविता	:	कमला
शिवकुमार	:	रामनाथ

बिहार जन नाट्य संघ—

सन् १९५६ ई० में संघ ने 'भोजपुरी सभ्यता का विकास' एक गीति-नाट्य खेला। इसके उपरांत रामेश्वर सिंह कश्यप कृत 'रोबट' प्रस्तुत हुआ।[4]

चतुरंग—

२० जुलाई १९६६ को पटना में 'चतुरंग' की स्थापना हुई। इसकी एक शाखा मुजफ्फरपुर में भी है। इस संस्था के प्रायः सभी सदस्य अहिंदी भाषी हैं। 'चतुरंग' मुख्यतः बंगला नाटक खेला करता है। लेकिन पटना में

---

१. समस्त विवरण प्रदर्शन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका के आधार पर है।
२. बिहार थियेटर (पत्रिका) मई ५९, पृ० ९१।
३. वही : पृ० ८६।
४. डा० झब्बूलाल सुल्तानिया : बंगला, मराठी और गुजराती रंगमंच के सन्दर्भ में हिंदी मच का अध्ययन (अप्रकाशित) पृ० ५३४।

रहने के कारण, बहुसंख्य हिंदी भाषियों के मनोरंजनार्थ 'चतुरंग' साल में एकाध बार हिंदी के नाटक भी खेलता रहता है। इस संस्था द्वारा अभिनीत नाटकों का निम्नांकित विवरण प्राप्त है—

१२ जून १९६९ को 'लहरें' खेला गया।

मूल कथा	:	रवींद्र भट्टाचार्य
हिंदी अनुवाद	:	काशीनाथ वर्मा
परिचालक	:	श्यामादास भट्टाचार्य
सह परिचालक	:	दिलीप घोष
आलोक	:	शिशिरदास, दिलीप चौधरी
मंच	:	देवेनदास, असीम दे

पात्र योजना—

श्यामादास भट्टाचार्य	:	सूरज
निरंजनदास	:	दीनदयाल अग्रवाल
स्वाधीन दास	:	केशा
गोपालचंद्र राय	:	निताई
सुव्रत सेन गुप्त	:	महमुद
स्वरूप विश्वास	:	श्री राजा
रथींद्रकुमार बनर्जी	:	जनार्दन
समेंद्र दास	:	रतन

प्रयाग नाट्य संघ द्वारा आयोजित अखिल भारतीय तृतीय लघुनाटक प्रतियोगिता में 'चतुरंग' ने १४ जनवरी १९७० को भोजपुरी में 'फैसला' नाटक खेला।

मूल नाटककार	:	पनु पाल
हिंदी अनुवाद	:	आनंदकिशोर अग्रवाल
निर्देशक	:	आशिष घोषाल
उप-निर्देशक	:	शिवशंभु मंडलवार
मंच	:	मृणाल कार
ध्वनि	:	अमित राय
सज्जा	:	रुनु बिस्वास
व्यवस्था	:	संतोष मुखर्जी
प्रकाश	:	दीपनकर दास गुप्ता

पात्र योजना—

प्रसांत चटर्जी	:	सिपाही
आशीष घोषाल	:	वटेसर
स्वप्न बनर्जी	:	प्रथम दर्शक
मृणाल कार	:	द्वितीय दर्शक
दिलीप मलिक	:	पीडा
मलय कार	:	पेशकार
वरूण सरकार	:	बिल्टू
फाल्गू घटक	:	शकर
मालविका घोषाल	:	रामपति
निखिल घोष	:	दारोगा
रतन सरकार	:	रामावतार
रूनु बिस्वास	:	जनार्दन
अमित राय	:	हकीम

यही नाटक ४-५ अप्रैल और २० जून १९७० को पटना में अभिनीत हुआ। दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय द्वितीय सर्वभाषा नाटक प्रतियोगिता में ८-५-७० को 'गाँव की ओर' खेला गया।

नाटककार	:	रामसिंह 'लमगोडा'
निर्देशक	:	आशीष घोषाल
प्रकाश	:	दीपनकर दास गुप्ता
संगीत	:	तपन चटर्जी
ध्वनि	:	दिलीप मलिक
व्यवस्था	:	सुभाष सन्याल

पात्र योजना—

आशीष	:	पागल
शिवशंभु	:	घीसा
विनोद	:	जेठु
श्यामल	:	विभूति
सुशील	:	धरमचंद
सुवीर	:	न्यूरा
देवप्रसाद	:	पुजारी
सालिग्राम	:	सेवक शर्मा
अरुन	:	जनार्दन
सुदीप	:	सूरदास

रतन	:	रंजन
शिवजी	:	चेतन
भोला	:	सौखी

८ नवंबर १९७० को 'ज्वाला' नामक नया नाटक खेला गया।

'ज्वाला' के मूल नाटककार	:	पद्मश्री ऋत्विक घटक
अनुवाद	:	श्यामल चक्रवर्ती
कथा और सुर	:	प्रेम धवन
निर्देशन	:	आशीष घोषाल
सह निर्देशन	:	वरूण सरकार
मंच व्यवस्था	:	श्री स्वर्णकमल मुखर्जी
प्रकाश	:	संजीत मुखर्जी
रूप सज्जा	:	प्रदोष घोष
सज्जा	:	विनोद विहारी सिन्हा
ध्वनि	:	मलय कर

कलाकार—

स्वपन बनर्जी	:	मुन्ना
श्रीमती मालविका घोषाल	:	सावित्री
शिवजी सिंह	:	पूर्ण
विनोद विहारी सिनहा	:	भोला
सुहृद घोष	:	पीऊन
आशीष घोषाल	:	पागल

२२ जून १९७१ को पटना में 'रक्त करवी' अभिनीत हुआ। यह 'चतुरंग' का षष्ठ जन्म दिन था—

नाटककार	:	रवींद्रनाथ ठाकुर
हिंदी अनुवाद	:	राजेश दीक्षित
निर्देशन	:	आशीष घोषाल
सहायक निर्देशन	:	मृणाल कार
आलोक	:	दीपशंकर दास गुप्ता
शब्द	:	सुदत्त घोष
मंच	:	आसित बागची तथा स्वप्न बनर्जी
रूपसज्जा	:	मणि प्रकाश
पोशाक	:	श्यामल मित्र

२३ जून १९७१ ई० को 'उगता सूरज' का अभिनय हुआ।

निर्देशन : बिनोद बिहारी सिन्हा
संगीत : सुदीप नियोगी
मंच : सुहृद घोष

पात्र योजना—

शिवजी सिंह : पुलिस इंस्पेक्टर
सीताराम सिंह : पुलिस नं० १
भोला प्रसाद गुप्ता : पुलिस नं० २
विनोद बिहारी सिन्हा : क्रांतिकारी

'चतुरंग' द्वारा अभिनीत समस्त हिंदी नाटकों की सूची निम्नांकित है—

गाँव की ओर ६ प्रदर्शन
लहरें ७ प्रदर्शन
भगतसिंह २ प्रदर्शन
फैसला ८ प्रदर्शन
यादें ६ प्रदर्शन

बिहार आर्ट थियेटर—

सन् १९६८ ई० के उत्तरार्द्ध में मेडिकल एसोसिएशन के हाल में आर्थर मिलर के नाटक 'डेथ आफ ए सेल्समन' (Death of a Solesman) का हिंदी रूपांतर प्रस्तुत किया गया था। इस नाटक के प्रस्तुतीकरण में हर प्रकार की तकनीकी एवं कलात्मक उपकरणों का प्रयोग किया गया था। खासकर पूर्वविलोकन के दृश्यों को बहुत सफलता से मंचस्थ किया गया। इसके लिए कलाकारों की प्रकाश योजना सराहनीय थी।

अभिनय एवं रंगशिल्प की दृष्टि से निस्संदेह यह नाटक काफी सफल रहा। सेल्समैन की प्रभावशाली भूमिका में मोहम्मद समी खाँ बहुत दिनों तक याद किये जायेंगे। ओलिव फौंसिस ने भी लिंडा के रूप में असाधारण अभिनय किया। खासकर हिंदी शब्दों का उच्चारण इन्होंने बड़ी सहजता एवं कुशलता के साथ किया। नाटक के शेष पात्र, बनार्ड के रूप में असित विश्वास, चार्ली के रूप में निरोध घोषाल आदि ने भी सराहनीय अभिनय किया।[1]

१५-८-१९६९ को इस संस्था ने अनिलकुमार मुखर्जी का 'पालकी' प्रस्तुत किया।

---

१. राधेश्याम : नटरंग वर्ष २, अंक ८, पृ० ५१।